राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता

राजस्थान के
उन तेजस्वी पत्रकारों को
जिनकी तपश्चर्या ने
इस सामन्ती प्रदेश में
लोक-जागरण का अलख जगाया।

राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता

डॉ० मनोहर प्रभाकर

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

आमुख

समकालीन समाज को प्रतिबिम्बित करने, विभिन्न राजनीतिक, धार्मिक और सास्कृतिक विचारधाराओ को अभिव्यक्ति देने तथा भाषा एव साहित्य के स्वरूप-विकास की प्रक्रिया मे योगदान करने की दृष्टि से पत्रकारिता की प्रभावी भूमिका को सभी विद्वानो ने एक स्वर से स्वीकार किया है। किन्तु यह सचमुच चिन्तनीय है कि विपुल सभावनाओ से परिपूर्ण इस महत्वपूर्ण क्षेत्र मे अध्ययन के बहुत कम प्रयत्न हुए हैं। किसी भी अध्येता के लिए किसी एक ग्रथ मे किसी प्रदेश विशेष की समूची पत्रकारिता का इतिहास और समीक्षात्मक मूल्याकन प्रस्तुत करना एक दुष्कर कार्य है। व्यापक परिप्रेक्ष्य म सूक्ष्म दृष्टि से गहन और स्तरीय अध्ययन के लिए यह परम आवश्यक है कि पत्रकारिता के क्षेत्र मे देश के विभिन्न प्रदेशो मे वहा की विविध भाषाओ मे पत्र-पत्रिकाओ का जो क्रमिक विकास हुआ है, उसका पृथक्-पृथक् अध्ययन प्रस्तुत किया जाय और साथ ही उसके विभिन्न अगो-उपागो का पृथक्-पृथक् अनुशीलन और विश्लेषण किया जाय। जहाँ तक राजस्थान का सम्बन्ध है, इस प्रदेश का योगदान तो हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास का एक उपेक्षित अध्याय ही रहा है।

सत्य तो यह है कि राजस्थान की लोक-चेतना, राजनीतिक उथल पुथल तथा सामाजिक, साहित्यक और सास्कृतिक पुनरुत्थान का इतिवृत्त इस प्रदेश से पिछली एक शताब्दि मे प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओ मे ही बिखरा पड़ा है। इस सामग्री का अनुशीलन और विवेचन न केवल भारत की हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास के अनेक अज्ञात पहलुओ पर प्रकाश डालने मे समर्थ हो सकता है, अपितु हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास के इतिहास की दृष्टि से भी मूल्यवान योगदान कर सकता है। प्रस्तुत ग्रथ का लेखन इसी दिशा मे एक विनम्र प्रयास है।

गत एक शताब्दि मे हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप—विकास इस प्रदेश मे किस प्रकार हुआ है और जन मानस को जाग्रत करने, जनमत को प्रभावित करने तथा भाषा और साहित्य के क्षेत्र मे इसका विभिन्न युगो मे क्या योगदान रहा है, इसी का सोदाहरण विवेचन प्रामाणिक सामग्री के आधार पर आगामी पृष्ठो म समाविष्ट है।

इस ग्रन्थ मे लेखक द्वारा हिन्दी के बहुविश्रुत विद्वान् डा० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' के निदेशन मे उदयपुर विश्वविद्यालय की पी०-एच० डी० की उपाधि के

लिये किये गये शोधकार्य का भी समुचित उपयोग किया गया है। राजस्थान की हिन्दी पत्रकारिता पर डा० महेन्द्र लोढा और डा० भवर सुराणा द्वारा किये गये सर्वेक्षणात्मक शोध-कार्य से भी जो सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं, उनके लिए लेखक आभारी है। यह ग्रंथ अपने आपमे किसी प्रकार की पूर्णता का दावा नहीं करता, तथापि विनय पूर्वक इतना निवेदन अवश्य किया जा सकता है कि राजस्थान की पत्रकारिता पर मूल स्रोतो से प्राप्त सामग्री के विश्लेषण पर आधारित अपने प्रकार का यह पहला प्रयत्न है। यदि इससे विद्वानों को इस क्षेत्र मे और अधिक गहन अनुसधान करने की तनिक भी प्रेरणा मिल सकी, तो लेखक अपने श्रम को सार्थक समझेगा।

कृतज्ञता की भावना ज्ञापित करने की नहीं, अनुभव करने की है, तथापि औपचारिक शिष्टाचार के निर्वाह के लिए मैं उन सभी विद्वानो, लेखको, सम्पादको और पत्रकारो का ऋणी हू, जिन्होने मुझे सामग्री तथा सद् परामर्श द्वारा इस कार्य मे उदारतापूर्वक सक्रिय सहयोग प्रदान करने की अनुकम्पा की है।

मैं यहाँ उन सम्मान्य पत्रकार बन्धुओ के प्रति भी क्षमा-प्रार्थी हू, जिनके पत्रों के महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख मेरी अपनी अल्पज्ञता अथवा स्थानाभाव के कारण सम्भव नही हो सका है।

पचशील प्रकाशन के स्वामी श्रीयुत मूलचन्द गुप्ता के उपकार का अन्त नही, जिन्होने मेरे वर्षों के परिश्रम को सार्थकता प्रदान करने मे इतनी तत्परता दिखा कर मेरे मन को कृतज्ञता से भर दिया।

मनोहर प्रभाकर

अनुक्रम

अध्याय 1

पीठिका

जिज्ञासा की वृत्ति मानव-मस्तिष्क को सदियो से आलोडित करती रही है। इसी चित्त-वृत्ति से प्रेरित होकर मनुष्य यह जानने को उत्सुक रहा है कि उसके आसपास क्या घटित हो रहा है, क्यो घटित हो रहा है और जो कुछ घटित हो रहा है, उसका प्रभाव उसके अपने जीवन और कार्य-व्यापारो पर क्या होने वाला है। उसे अपने स्वय के तथा अपने परिचय-क्षेत्र के लोगो और स्थानो के विषय मे ही जानने की उत्सुकता नही रहती, अपितु अपरिचित व्यक्तियो, स्थलो, नगरो और ग्रामो, यहा तक कि सात समुद्र पार बसे लोगो और देशो के जीवन की हलचल के बारे में भी वह जानना चाहता है। इसीलिए हर्बर्ट ब्रूकर ने पत्रकारिता की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क मे उस दुनिया के बारे मे समस्त सूचनाए सकलित करते हैं, जिसे हम स्वतः कभी नही जान सकते।[1]

मुद्रण यन्त्रो के आविष्कार से पूर्व जब आधुनिक अर्थ मे समाचार-पत्रो की परिकल्पना तक सम्भव नही थी, तब भी विश्व के विभिन्न भागो मे सूचना-प्रसार किसी न किसी माध्यम से अवश्य होता था। पत्रकारिता के प्रादुर्भाव से पहले इस प्रकार के प्रमुख माध्यम क्या थे, इसकी चर्चा करना यहा अप्रासंगिक न होगा। सक्षेप मे इन माध्यमो का उल्लेख निम्न प्रकार किया जा सकता है :—

(1) पारस्परिक मिलन पर बातचीत के द्वारा।

(2) सार्वजनिक स्थानो पर सूचना पट्टो के द्वारा।

(3) पत्राचार द्वारा।

(4) राज्य की महत्वपूर्ण घोषणाओ को सर्व साधारण की सूचनार्थ पाषाण-स्तम्भो पर खुदवा कर, जैसे—अशोक के शिलालेखो आदि के द्वारा।

---

1. फ्रीडम आफ इन्फर्मेशन : हर्बर्ट ब्रूकर, पृ० 4

(5) विभिन्न राज दरबारो मे नियुक्त सन्देश-वाहको तथा सूचना सकलित करने वाले अन्य राज्य-सेवियो द्वारा।

इस सन्दर्भ मे जहाँ तक हमारे देश का सम्बन्ध है, पौराणिक काल से ही हमारे यहा सूचना सेवाओ के महत्व को स्वीकारा गया है। पौराणिक आख्यानो के अनुसार महर्षि नारद एक विशेष सवाददाता की तरह स्थल मार्ग को न अपना कर आकाश मार्ग से भ्रमण करते थे और एक राजा से दूसरे राजा के दरबार तक खबरें पहुचा कर स्वर्ग लोक और मर्त्य लोक के बीच सीधा सचार-सम्बन्ध स्थापित करने मे समर्थ थे। वे उन लोगो की कीर्ति-कथा सुनाते थे जो अपने धैर्य, शौर्य, आत्म त्याग और धर्म परायणता के लिए विशिष्ट सराहना के पात्र थे।[1]

'महाभारत' मे सजय की भूमिका भी एक रिपोर्टर की है, जो धृतराष्ट्र को युद्ध-स्थल मे घटित सपूर्ण घटनाओ की जानकारी देते थे।[2]

इसी प्रकार सन्त, सूत, मागध, भाट और चारण भी आशिक रूप से पत्रकार की भूमिका का निर्वाह करते थे। ये लोग एक प्रकार से काव्यमय समाचारो के सवाहक थे और इनकी पद्यबद्ध सूचनाए एक स्थान से दूसरे स्थान तक मौखिक माध्यम से सुगमता पूर्वक पहुच जाती थी।

प्राचीन भारत मे ये सेवाए राजकीय स्तर पर विविध माध्यमो से उपलब्ध की जाती थी। दूसरे देशो मे भारत के जो कूटनीतिज्ञ और राजदूत नियुक्त होते थे[3] वे अपने अधीन ऐसे कर्मचारी नियोजित करते थे, जो उन्हे रोजमर्रा की घटनाओ के साथ राजनैतिक और प्रशासनिक क्षेत्र मे होने वाले परिवर्तनो आदि के बारे मे जानकारी प्राप्त करके दे सकें। ये कूटनीतिज्ञ इन सूचनाओ को न केवल अपने देश के राजा अथवा सम्राट को प्रेषित करने की व्यवस्था करते थे, अपितु उन्ही के आधार पर अपने कूटनीतिक आचरण और व्यवहार का निर्धारण करते थे, ताकि अपने देश के हितो का अधिकाधिक सरक्षण हो सके।[4] विदेशो की तरह देश मे भी प्राय सभी हिन्दू राजा और सम्राट अपने गुप्तचर रखते थे, जो उन्हे सभी प्रकार की उपादेय सूचनाए सुलभ कराते रहते थे। एक प्रकार से इन गुप्तचरो को ही आधुनिक पत्रकारो का पूर्वज कहा जा सकता है।

---

1 वेंकटलाल ओझा, हिन्दी समाचार पत्र निर्देशिका, 1956, पृ० 4

2 वही

3 एम्बेसीज इन एनशियन्ट इण्डिया, आर० सी० अग्रवाल, जर्नल आफ इन्डोलोजी, वर्ष 1, अक 1, पृ० 4

4 राइज एण्ड ग्रोथ आफ हिन्दी जर्नलिज्म, रामरतन भटनागर, पृ० 3

भारत मे जब मुगल-साम्राज्य की स्थापना हुई तो मुगल शासकों ने प्राचीन भारत की इस सवाद-सकलन परम्परा को अपना कर न केवल उसे व्यवस्थित रूप दिया, बल्कि एक बडे अ श तक विकसित भी किया। वस्तुत मुगल काल मे सवाद-सकलन और प्रेषण कार्य एक सगठन के रूप मे विकसित हुआ और एक पृथक् विभाग इस कार्य के लिए खोला गया, जिसके अन्तर्गत 'वाकिया निगार' विभिन्न दरबारों को महत्वपूर्ण घटनाओ, समारोहो, शिकायतो, जनता के अभाव-अभियोगो तथा प्रशासन के प्रति उसकी प्रतिक्रिया के बारे मे नियमित रूप से 'वाकियात' अथवा समाचार चिट्ठिया' (न्यूज लेटर्स) प्रस्तुत करते थे। ये वाकियात वाकिया नवीसो द्वारा उन समाचार-पुस्तिकाओ मे लिखे जाते थे, जो शासन के प्रमुख केन्द्रो पर उपलब्ध रहती थी। इस प्रकार के विभागाध्यक्ष को 'वाकिया निगार' की सज्ञा दी जाती थी। अकबर के शासन काल में इस सस्था के स्वरूप का उल्लेख करते हुए बर्नियर ने लिखा है :—

"बादशाह हर जिले मे वाकया नवीस नियुक्त करते थे, जो महत्वपूर्ण घटनाओ की रिपोर्ट साडनी सवारो, काफिलो अथवा हरकारो के मार्फत भिजवाई जाती थी। इन्ही दस्तावेजो के आधार पर बादशाह नीति-निर्धारण करते थे और निर्णय लेते थे। वाकया नवीस प्रान्तो के सूबेदारो से मिल जाते थे, जिससे इनके द्वारा की गई ज्यादतियों की खबरें बादशाह तक नहीं पहुच पाती थी। इसीलिए जनता की किसी शिकायत की जाच या उसका निराकरण नही हो पाता था।"[1]

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे जब बगाल मे मुगलो की सरकार बरकरार थी, अंग्रेजी कारखानों के सचालक अपने अभाव-अभियोगो को दरबार तक पहुचाने मे इन्ही सवाद-लेखकों की सहायता लेते थे। औरगजेब के कार्यकाल में सवाद-सेवाओ की स्थिति कितनी विकसित थी, इसका विवरण देते हुए सीरूल मुतखरीन ने लिखा है —

"वाकया नवीस, सावा नवीस तथा हरकारे अपने-अपने कार्य-क्षेत्र मे विभिन्न प्रान्तो, जिलो तथा इलाको की महत्वपूर्ण घटनाए लिखने के लिए नियुक्त किये जाते जाते थे। ये उन प्रमुख नगरों और कस्बो मे रहते थे, जो प्रशासन के प्रमुख केन्द्र होते थे और प्रतिदिन प्रात से लेकर सायकाल तक की घटनाओं को लिख कर बादशाह तक पहुचाने की व्यवस्था करते थे। जगह-जगह पर चौकिया बनी हुई थी, जो सवादों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक त्वरा के साथ ले जाने मे सहायक होती थी। ये खबरें बादशाह तक पहुचाने से पूर्व एक दारोगा अथवा निरीक्षक द्वारा

1. ट्रैवेल्स इन मुगल एम्पायर : बर्नियर, पृ० 231

जाँची जाती थी। उन तात्विक महत्व के तथ्यों को जिन्हे बादशाह तक पहुँचाया जाना आवश्यक समझा जाता, उनका संक्षिप्तीकरण कर प्रस्तुत किया जाता और साथ में प्रादेशिक गुप्तचर द्वारा भेजा गया विस्तृत विवरण भी। फिर भी इस सामग्री में जो विशेष कागजात केवल बादशाह के नाम व्यक्तिगत होते थे उन्हे खोलने की किसी को भी अनुमति नहीं थी। इसको बादशाह स्वयं खोलते थे और अवलोकन करने के बाद उस पर आवश्यक निर्देश देते थे। इस प्रकार बादशाह प्रत्येक आदमी के हालातो से वाकिफ रहता था और उसे ज्ञात होता था कि कहा क्या घटित हो रहा है।"[1]

एक इतालवी यात्री नीकोला मैनुक्की ने भी, जो औरंगजेब के दरबार में कुछ वर्षों तक रहा था, इस प्रकार के संवाद-लेखको की प्रवृत्तियो का विवरण दिया है। इन संवाद लेखको की भेजी हुई रिपोर्ट नियमित रूप से बादशाह द्वारा सुनी जाती थी। वह लिखता है

"ये संवाद सामान्यत बादशाह की उपस्थिति मे महल की औरतो द्वारा लगभग रात्रि को 9 बजे पढ़कर सुनाये जाते हैं ताकि उन्हे यह जानकारी मिल सके कि राज्य मे कहा क्या हो रहा है। इसके अतिरिक्त गुप्तचर भी नियुक्त हैं, जिन्हे प्रति सप्ताह महत्वपूर्ण घटनाओ की रिपोर्ट भेजनी होती है, मुख्य रूप से शहजादो की कारगुजारियो के बारे में और उनके काम के बारे मे। बादशाह आधी रात बीतने तक बैठे रहते हैं और इस प्रकार खबरें सुनने मे मशगूल रहते हैं।"[2]

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भी इस तरह के वाकया नवीसो की महिमा न्यूनाधिक रूप मे बनी रही। मुगल काल मे दिल्ली से प्रसारित अखबाराते दरबारे मुअल्ला' तथा पूना से निकलने वाले 'पुर्णे अखबार' तो सुविदित हैं। 'अखबाराते दरबारे मुअल्ला' की कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ राजस्थान के पुरालेख विभाग मे भी सुरक्षित हैं।[3] इन अखबारो मे बादशाह की रोजमर्रा की गतिविधियो के विस्तृत समाचार अंकित होते थे।

इसी प्रकार वाक्यात को कलमबद्ध करने की परम्परा राजपूत दरबारो में भी मिलती है। भूतपूर्व जयपुर रियासत मे एक अलग कार्यालय इस बात के लिए

---

1 एस० सी० सान्याल, कलकत्ता रिव्यू 1907 मे प्रकाशित लेख से उद्धृत—पृ० 350

2 स्टोरिया दे मोगार मैनुक्की ('इण्डियन प्रेस' मे एम० वान्स का अनुवाद) पृ० 331–32

3 एच० सी० टिक्कीवाल, जयपुर एण्ड दी लेटर मुगल्स, पेज 191

स्थापित था जो शासकों की दिनचर्या और राज्य की प्रमुख गतिविधियों का लेखा-जोखा रखता था। ये हालात जयपुर की पुरानी लिपि में छोटे-छोटे कागजों पर लिखे हैं। 'शाह वाक्या' के अन्तर्गत लिखे गये संवादों के कुछ नमूने इस प्रकार हैं —[1]

1 "श्री महाराज जी पुलन्दरगढ लियो अर श्री जी की फतह हुई—अर सैवो, श्राणि मिल्यो। सावण बुदी 9 वि. सम्वत् 1722 (जून 26, 1665 ई०)।

2 हजूर न ज्यौ सइदा सू गड की खुबर दी अर पातसाह की फतह की कही वानै श्री जी जडाऊ पौंछी जोडी बक्सी अबदुला खा का पकडया की खुबर हजूर मैं ल्याया तानै अजख्य महरवानगी पगरखी बूटोदार वक्सी — भूभारसिंह, रावत देवसिंह को पोतो हमराह दीवाण जगराम की मिति मगसर बुद 1 सम्वत् 1777 न पातसाही जग मैं सइदा सू बहादरी सू लडता मरया गया।

(शुक्रवार मगसर बुदी 1, वि० सम्वत् 1777, 5 नवम्बर, 1720)।

3 फौजसिंह कलयानौत अर दूसरा सरदार जो फौज की लैर पातसाह महदम साहजी कैए भैज्या छा सो सईदा सू पातसाह की तरफा लडया-भला दिखाया अर अबदुला न पकडयो बुधवार, मिती मगसर बुदी 6, स० 1777 (11 नवम्बर, 1720)।

4 पातसाहजी हमीद अली कै लैर हजूर (इसरीसिंहजी) की मातमी मे सिरोपाव अर फुरमान भेज्यों छो जो जैपर सोमवार, काती बुदी 4, स० 1800 न पोंहच्यौं–हजूर बिस्पतवार मगसर बुदी 13 स० 1800 न दरबार म बैठया-बैठया इए माथा क लगायो। (न० 1277)।

5 भटवाडा की राड मे दखनया स बुधवार मगसर सुद 4 स० 1818 न हुई–मलहार की टाग में गोली लागी।

(क) मगसर सुदी 6, 1818 (दिसम्बर 2, 1761) (ख) पौष बुदी 13 1818 (दिसम्बर 24, 1761)।

6 बावत मृत्यु नवाब हमदानी नवाब हमदानी परथम सावण सुद 13 सनीचरवार न हजूर कै लैर तू गा की ओर रवाना हुया–तू गा सू तीन कोस पर तोपखाना की राड हुई–पहर सवा तीन ताई–उठै दिन तीन घडी गुजरया पाछै, पटेल की तोप को गोलो नवाब कै लाग्यो-हाथी हौदा कै पड़यो छो

1 एच० सी० टिक्कीवाल, जयपुर एण्ड दी लेटर मुगल्स, पृ० 197

मो काम ग्रायो—नवाब नजफग्रली खा क डेरै मातमी न हूजूर पधारया ।
दीतवार मिती मावए सुद 14, सं० 1843 ।"

संवाद-संचार के जन-माध्यम

इस सन्दर्भ मे सबसे पहले सवाद-सचार के जन-माध्यमो की चर्चा करना समीचीन होगा। जहा तक जन साधारए का प्रश्न है, यह कार्य सौदागरों के काफिलो, देश के एक भाग से दूसरे माग तक यात्राए करने वालो और बनजारो के माध्यम से सम्पन्न होता था। सौदागरो के काफिले और यात्री ग्राज की शब्दावली मे उस जमाने के 'न्यूज लैटर्स' एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुचाते थे और महत्वपूर्ण समाचार गाव-गाँव और गली गली झोपडी तक पहुच जाते थे। निजी पत्र, *सार्वजनिक महत्व के सवादो को ले जाये जाने वाले पत्र* और पार्सलो को भेजने का सबसे अधिक कारगर माध्यम घुमन्तु बन्जारे थे। बजारे न केवल लिखित माध्यमों से सवाद-प्रेपए का कार्य करते, अपितु मौखिक रूप से भी शासन और समाज से सम्बन्ध रखने वाली महत्वपूर्ण खबरें ग्राम ग्रादमी तक पहुचाने का सत्कार्य करते थे।

अपनी यात्रा के दौरान बन्जारे जिन सरायो मे ठहरते, वहा भी लोगो का अच्छा खासा जमघट हो जाता था और उनके पडाव की अवधि मे सवाद-सचार का अच्छा खासा प्रयोजन सिद्ध हो जाता था।

डाक-व्यवस्था के माध्यम से भी समाचारो का प्रसार एक स्थान से दूसरे स्थान तक होता था, इसके प्रमाए मुहम्मद तुगलक के शासन-काल से निरन्तर उपलब्ध होते हैं। अकबर के शासन-काल मे भी डाक-व्यवस्था पर बहुत ध्यान दिया गया और इस माध्यम से भी जनता तक खबरें पहुचने मे बडा महत्वपूर्ण योगदान मिला। स्लीमान ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "जर्नी थ्रू दी किंगडम ग्राफ अवध" मे लिखा है कि अवध-नरेश की सेवा मे 660 सवाद लेखक नियोजित थे, जिनका प्रति व्यक्ति औसत वेतन चार से लेकर पाच रुपये माहवार तक था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भी अपने प्रारम्भिक काल में दरबारो की गोपनीय बातें जानने के लिए इन सवाद लेखको की सहायता ली थी।

राजपूत, सिख और मरहठा शासको ने भी अपने ग्राश्रय मे इस प्रकार के सवाद लेखक नियुक्त किये थे। इन लोगो की भूमिका युद्ध के समय भी महत्वपूर्ण थी, तो शान्ति के समय भी। इन्ही के द्वारा दी गई सूचनाओं के ग्राधार पर युद्धो में जय और पराजय के परिणाम सामने ग्राते थे।

इस बात के भी प्रमाण मौजूद हैं कि हस्तलिखित दैनिक पर्चे भी राजकीय प्रयोजन के लिए निकाले जाते थे और बाद मे उनकी सामग्री सार्वजनिक रूप से

ापित कर दी जाती थी। सन् 1828 मे कर्नल जेम्स टाड ने लन्दन की रायल एशियाटिक सोसाइटी को मुगल दरबार के सैकडो हस्तलिखित 'समाचार पत्र' भेजे थे। एच० बेवैरिज[1] के अनुसार इन समाचार पत्रो का आकार 8 × 4½ होता था और ये विभिन्न हस्तलेखो मे लिखित होते थे। इन पत्रो मे बादशाह की धार्मिक यात्राओ, शिकार पर जाने, पदोन्नतिया देने तथा इनाम-इकराम बाटने आदि के वर्णन हैं। इस तरह की अखबार नवीसी ईस्ट इन्डिया कम्पनी का वर्चस्व स्थापित होने तक किसी न किसी रूप मे विद्यमान थी।

मुद्रण कला का आगमन

अब तक यह मान्यता रही है कि भारत मे आधुनिक मुद्रण कला का आगमन सन् 1550 मे उन ईसाई धर्म प्रचारको द्वारा हुआ, जिन्होने गोवा से पहली बार रोमन अक्षरो और पुर्तगाली भाषा मे धार्मिक साहित्य का प्रकाशन किया। यही से सन् 1655 मे देवनागरी लिपि मे मराठी की प्रथम पुस्तक 'सेंट पीटरचे चरित्र' प्रकाशित की गई। भीमजी पारेख नाम के सज्जन वे पहले भारतीय बताये जाते हैं, जिन्होने बम्बई मे 1674 मे देवनागरी मुद्रणालय खोल कर हिन्दू धर्म-ग्रथो के प्रकाशन की दिशा मे पहल की।[2]

किन्तु बाबू कार्त्तिक प्रसाद तथा बाबू श्याम सुन्दर दास की सहायता से श्री राधाकृष्णदास लिखित 'हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास' नामक पुस्तक मे श्री जोगेन्द्रनाथ घोष के 1870 मे लिखे गये एक लेख का हवाला दिया गया है, जिसमें यह उल्लेख किया गया है कि हैस्टिग्ज के शासन-काल मे बनारस मे एक मेजर के द्वारा खुदाई के दौरान ऐसा प्रेस मिला है, जिसमे कम्पोज किया हुआ टाइप मुद्रण के लिए तैयार रखा था। लेख मे कहा गया है कि इस प्रकार के मुद्रण यन्त्र के अस्तित्व का काल-निर्धारण करने की पूरी चेष्टा की गई, क्योकि प्रकटतः यह आधुनिक मुद्रण यन्त्र की भांति का नही था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह प्रेस जिस स्थिति मे खुदाई के दौरान पाया गया था, उस स्थिति में कम से कम एक हजार वर्ष से पूर्व गडा था। लेख का मूल अ श इस प्रकार है :—

" .. found a pair of printing presses set up in a vahet, and moveable types placed as if ready for printing. Every enquiry was set on foot to ascertain the probable period at which such an

---

1. जर्नल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी, 190-, पृ० 1121
2 वेंकटलाल ओझा, हिन्दी समाचार पत्र निर्देशिका, पृ० 2

instrument could have been placed there, for it was evidently not of modern origin, and from all the Major could collect, it appears probable that the press had remained there in the state in which it was found for at-least one thousand years' 1

उक्त सदर्भ मे दृष्टिपात करने पर भारत मे मुद्रणकला का अस्तित्व सातवी शताब्दी या इससे पूर्व मे भी हो सकता था किन्तु इस बारे मे और अधिक प्रमाण उपलब्ध नही होते। अत. विदेशी पादरियो को ही आधुनिक भारत मे मुद्रण कला का सूत्रधार मानना होगा।

आधुनिक पत्रकारिता का सूत्रपात

किन्तु यह बहुत आश्चर्यजनक प्रतीत होता है कि मुद्रण-यन्त्र के आविष्कार हो जाने और भारत की धरती पर अग्रेजो के सत्तारूढ होने के बावजूद भारतवर्ष मे आधुनिक पत्रकारिता का सूत्रपात बहुत विलम्ब से हुआ। इसका स्पष्ट कारण यह था कि ईस्ट इन्डिया कम्पनी से सबद्ध लोग यूरोप और मुख्यत इग्लैंड के रहने वाले थे और इन्ही देशो से प्रकाशित पत्रो के पाठक थे। उनकी रुचि और जिज्ञासा केवल यूरोप की हलचल तक सीमित थी। किन्तु शनै शनै भारतीयों के सम्पर्क मे आने के बाद और परस्पर विवाह और दाम्पत्य के बन्धन मे बधने के बाद एग्लो इन्डियन्स की जो एक नई बिरादरी उभर कर आई, उससे उनमे पारस्परिक मतभेद भी उत्पन्न होने लगे और अपने अभिमत और अभाव-अभियोगो को उजागर करने के लिए उन्हे समाचार-पत्रो की आवश्यकता अनुभव हुई।

इस दिशा म सबसे पहला साहसिक प्रयत्न मिस्टर विलियम बोल्ट्स ने किया।

सितम्बर, 1768 म कलकत्ता के कौन्सिल हाल और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर मिस्टर बोल्ट्स द्वारा एक नोटिस चिपकाये जाने का उपक्रम किया गया, जिसमे जनता से कहा गया कि प्रत्येक नागरिक से सम्बन्ध रखने वाले अहम मसलो पर महत्वपूर्ण सामग्री मिस्टर बोल्ट्स के पास है और जो भी चाहे प्रात दस बजे से बारह बजे तक उसका अवलोकन कर सकता है। नोटिस मे यह भी कहा गया कि नगर मे मुद्रण यन्त्र के अभाव म समाज के साथ सम्प्रेषण म बहुत कठिनाई हो रही है, अत जो भी व्यक्ति मुद्रण के व्यवसाय मे रुचि रखता हो, उसे पूरा

1. राधाकृष्णदास, हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रो का इतिहास, (1874) पृ० 7–8

प्रोत्साहन दिया जायेगा। बोल्ट्स द्वारा प्रचारित नोटिस का मूल अंश इस प्रकार है —[1]

"To the Public

Mr Bolts takes this method of informing the public that the want of a printing press in this city being of a great disadvantage in business and making extremely difficult to communicate such intelligence to the community, as is of importance to every British subject, he is ready to give the best encouragement to any person or persons who are versed in the business of printing, to manage a press, the types and utensils of which he can produce In the mean time he begs leave to inform the public that having in manuscript things to communicate, which most intimately concern every individual, any person who may be induced by curiosity or other more laudable motives, will be permitted at Mr Bolt's house to read or take copies o the same A person will give due attendance at the hours from ten to twelve any morning"

मिस्टर बोल्ट्स को अभिव्यक्ति की आजादी की यह ललक महगी पडी और उस पर विघटनकारी प्रवृत्तियो को प्रोत्साहित करने का अभियोग लगा कर निर्देश दिये गये कि वह तत्काल कलकत्ता छोड कर मद्रास चला जाय और वहा से सर्वप्रथम रवाना होने वाले जहाज से इग्लैड का रास्ता पकडले। निश्चय ही बोल्ट्स को अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्य की भारी कीमत चुकानी पडी, किन्तु वह दूसरो के लिए प्रेरणा-स्तम्भ बन गया।

बोल्ट्स के कटु अनुभव के लगभग डेढ़ दशक बाद 29 जनवरी, 1780 को पहला भारतीय समाचार पत्र "बंगाल गजट अथवा कलकत्ता एडवर्टाइजर" जेम्स हिक्की ने निकाला। यह पत्र हिक्की के गजट के नाम से लोकप्रिय होने लगा। पेशे से मुद्रक, हिक्की ने पत्र के प्रकाशन के समय यह घोषणा की कि वह 'मस्तिष्क और आत्मा' की स्वाधीनता के लिए अपनी देह को कठोर श्रम करने के लिए दास्य भाव से समर्पित करने मे आनन्द का अनुभव कर रहा है।

तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिग्ज के साथ भिडन्त मे आने के कारण हिक्की का यह गजट भी केवल दस माह की आयु प्राप्त करते ही सकट-ग्रस्त हो गया। चू कि हिक्की ने मदान्ध गवर्नर जनरल और अन्य भ्रष्ट अधिकारियो के विरुद्ध अपनी वाणी को स्वर देना चाहा, इसलिए उसके पत्र के नवम्बर अक पर

---

1 एम० नटराजन, हिस्ट्री आफ दी प्रेस इन इन्डिया, पृ० 10

प्रतिबन्ध लगा दिया गया और उस पर 80 हजार रुपये का जुर्माना किया गया, जिसे न चुका सकने के कारण उसे कारावास-दण्ड भुगतना पडा ।

हिक्की का यह गजट अल्पजीवी होकर बन्द हो गया, किन्तु उसने स्वस्थ पत्रकारिता के लिए एक धरातल अवश्य तैयार कर दिया ।

दूसरा भारतीय समाचार पत्र 'द इण्डियन गजट' नवम्बर 1780 मे बी० मसानिक द्वारा प्रारम्भ किया गया । इस पत्र का लक्ष्य हिक्की के गजट मे प्रकाशित व्यक्तिगत आक्षेपो के निराकरण के लिए सामग्री प्रकाशित करने का था ।

फरवरी, 1784 मे सरकारी पत्र के रूप मे 'कलकत्ता गजट' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इसके बाद *'ओरियन्टल गजट' और 'मद्रास काउरियर' का प्रकाशन* सन् 1785 मे प्रारम्भ हुआ । 1786 मे 'कलकत्ता क्रानिकल' और 1789 मे 'बबई-हैराल्ड' प्रकाशित किये गये । 1790 मे 'द बाम्बे काउरियर' प्रकाशित किया गया। इस पत्र को सरकारी मान्यता भी मिली और इसमे प्रशासनिक विज्ञप्तिया भी छपने लगी । यह पत्र डाक-व्यय से मुक्त होकर प्रचारित होने लगा ।

सन् 1780 से 1790 के बीच प्रकाशित सभी पत्र सरकार-समर्थक रहे । तथापि 'मद्रास गजट' मे कुछ सरकार विरोधी सामग्री छपने के कारण उसम सरकारी आदेशो को मिलीटरी सैक्रेटरी द्वारा पूर्व जाच किये बिना छापने पर पाबन्दी लगादी गई । जून 29, 1799 मे सभी पत्रो पर सैन्सरशिप लागू कर दी गई, क्योकि इन पत्रो मे *उत्तरोत्तर सरकारी रीति-नीति को आलोचना प्रकाशित होने लगी थी ।* इन पत्रो के मद्रास प्रेसीडैन्सी मे मुक्त प्रचार को भी प्रतिबन्धित किया जाने लगा ।

जैसाकि पहले उल्लेख किया जा चुका है, 'बाम्बे प्रेसीडैन्सी' मे सबसे पहला पत्र 'बाम्बे हैराल्ड' 1789 मे प्रकाशित हुआ था । इसके एक वर्ष बाद 'बाम्बे काउरियर' का प्रकाशन हुआ और सन् 1791 मे 'बाम्बे गजट' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, जो शीघ्र ही सरकारी पत्र बन गया ।

1786 मे लार्ड कार्नवालिस गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ । उसका दायित्व एक ओर ब्रिटिश सत्ता को भारत मे सुदृढ बनाना था, तो दूसरी ओर प्रशासन मे वाछित सुधार भी लाना था । यद्यपि वह समाचार पत्रो का पक्षधर था और सरकारी आलोचना के प्रति भी उतना असहिष्णु नही था, तथापि सैन्सरशिप का सिलसिला बराबर जारी रहा ।

वेलज़ली ने 1800 से 1801 तक के दो वर्षों मे यह पाया कि सम्पादक लोग सामग्री को पूर्व जाच के लिए प्रस्तुत करने मे आनाकानी का रवैया अख्तियार करने लगे थे, इसलिए उन्हे चेतावनी देने के लिए उसने 28 मई, 1801 को इस

सम्बन्ध मे ग्रावश्यक निर्देश जारी किये । सरकार नही चाहती थी कि युद्ध के समाचार और सेनाओं की जानकारी पत्रों मे छपे ।

लार्ड वेलजली से लेकर लार्ड मिन्टो तक (1810-1813) समाचार पत्रो की सख्या मे कोई वृद्धि नही हुई, क्योकि उनकी नीति समाचार पत्रो की शक्ति को कुचलने और कुण्ठित करने की थी । यद्यपि समाचार पत्रो मे प्रकाशित अधिकाश आलोचना अंग्रेजो और योरोपियन लोगो की ओर से होती थी, तथापि इसका प्रभाव शिक्षित भारतीय समुदाय पर भी होना स्वाभाविक था । इसीलिए कडी सेंसरशिप का सहारा लेना उनके लिए अनिवार्य हो गया था ।

सरकार और प्रेस के बीच यह द्वन्द्व सन् 1811 तक बराबर जारी रहा और इसी वर्ष एक नया कानून और लागू किया गया, जिसके अन्तर्गत न केवल समाचार अपितु विज्ञापन, पुस्तकें, पेम्फलेट और पर्चे आदि सभी प्रकार की मुद्रित की जाने वाली सामग्री की मुद्रण पूर्व सवीक्षा अनिवार्य करदी गई और इन नियमो का कडाई के साथ पालन किया गया ।

लार्ड हैस्टिंग्ज (1813-23) ने जो लार्ड मिन्टो का उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ, प्रेस के प्रति उदारतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाया । वह मुक्त प्रेस का समर्थक था और इसीलिए उसने सेंसरशिप भी उठाली । किन्तु आगे चल कर जो व्यावहारिक स्थिति सामने आई, उससे परिणाम अन्यथा ही निकले । सरकार ने 'कलकत्ता गजट' के सम्पादक मिस्टर बकिंघम को हटा दिया और यह अनुभव किया कि प्रेस की स्वच्छन्दता को सम्पादको द्वारा गलत समझा जा रहा है । फलस्वरूप सरकार के रुख मे फिर कडाई आई और अन्ततोगत्वा इसका परिणाम यह निकला कि जिस हैस्टिंग्ज को प्रेस की स्वाधीनता का मसीहा समझा गया था, उसे ही अपने कार्य-काल के अन्तिम दिनो मे 'प्रेस का हत्यारा' समझा गया ।

लार्ड हैस्टिंग्ज के उत्तराधिकारी एडम और एमहर्स्ट के कार्य-काल मे भी प्रेस की स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं रही ।

वैसे भी इस काल की पत्रकारिता पूर्णत. एग्लो इन्डियन थी ।

सन् 1818 मे दो बगाली समाचार-पत्र 'दिग्दर्शन' और 'समाचार-दर्पण' निकले । 1822 मे भारतीय राष्ट्रवाद के प्रमुख सूत्रधार और भारतीय राजनैतिक विचार-धारा के जनक राजा राममोहनराय ने ब्रह्म समाज के मुख पत्र 'सवाद कौमुदी' का कार्य-भार सभाला और फारसी मे भी एक पत्र 'मिरातुल अखबार' का श्रीगणेश किया । 1838 मे काशी प्रसाद घोष ने धर्म सभा की स्थापना कर राम मोहनराय की 'सवाद कौमुदी' के विरुद्ध कट्टर पथी पत्र 'सवाद तिमिर नाशक' निकाला । 1839 में देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 'तत्व बोधिनी सभा' की स्थापना कर 'तत्व बोधिनी पत्रिका' का प्रकाशन प्रारम्भ किया ।

मैटकाफे 1835 मे गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ और प्रेस को स्वाधीन करने मे उसका योगदान काफी महत्वपूर्ण माना जा सकता है। उसके समय तक देश मे छोटे-मोटे लगभग 600 पत्र निकलने लगे थे।

जहा तक हिन्दी पत्रो के प्रकाशन का सम्बन्ध है, सबसे पहला हिन्दी समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' सन् 1826 मे कलकत्ता से ही प्रकाशित हुआ। इसके बाद तो हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ के प्रकाशन का सिलसिला बराबर आगे बढता रहा और हिन्दी पत्रकारिता की जडें धीरे-धीरे जमने लगी।

चू कि प्रस्तुत ग्रन्थ का क्षेत्र हिन्दी पत्रकारिता और राजस्थान तक ही सीमित है, अत यहा अधिक विस्तार मे न जाकर अगले अध्याय मे हिन्दी पत्र-कारिता की प्रारम्भिक स्थिति और उसके सन्दर्भ मे राजस्थान की चर्चा करना अभीष्ट होगा।

अध्याय 2

हिन्दी पत्रकारिता का अभ्युदय और राजस्थान

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों और पत्रकारिता के पंडितों द्वारा यह तथ्य अब सर्व सम्मति से स्वीकार किया जा चुका है कि भारतवर्ष में हिन्दी पत्र-कारिता का श्री गणेश सन् 1826 में उदन्त मार्त्तण्ड के प्रकाशन के साथ ही हुआ था। 1831 के पार्लियामेन्टरी दस्तावेजों में देशी पत्रों का जो विवरण समाविष्ट किया गया था, उसमें पहली बार 'उदन्त मार्तण्ड' और 'बंगदूत' नामक दो हिन्दी पत्रों के अस्तित्व का उल्लेख किया गया है।[1]

'उदन्त मार्तंड' के प्रकाशक-सम्पादक पंडित जुगल किशोर का निम्न वक्तव्य भी इसके प्रथम हिन्दी समाचार पत्र होने का प्रतिपादन करता है :—

"यह 'उदन्त मार्तंड' अब पहिले पहल हिन्दुस्तानियों के हित के हेत जो आज तक किसी ने नहीं चलाया पर अंग्रेजी औ पारसी, औ बंगले में जो समाचार का कागज छपता है, उसका सुख उन बोलियों के जानने औ पढ़ने वालों को ही होता है। इससे सत्य समाचार हिन्दुस्तानी लोग देख कर आप पढ़ औ समझें और पराई अपेक्षा न करें औ अपने भाषे की उपज न छोड़ें, इसलिए बड़े दयावान करुणा और गुणनि के निधान सब के कल्याण के विषय गवरनर जैनरेल बहादुर की आयस से अैसे साहस में चित्त लगाय के अेक प्रकार से यह नया ठाट ठाटा।"

इस पत्र की उक्त घोषणा की पुष्टि बंगला के समकालीन पत्र 'समाचार-दर्पण'[2] से भी होती है। 'समाचार दर्पण' ने अपने पाठकों को सूचना देते हुए लिखा है कि "कलकत्ता नगर से 'उदन्त मार्तंड' नामक एक नागरी का नूतन समाचार पत्र

1 एस० डी० वेदालंकार, डवलपमेन्ट आफ हिन्दी प्रोज लिट्रेचर, पृ० 177-78
2 समाचार दर्पण, 17 जून, 1826

मैटकाफे 1835 मे गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ और प्रेस को स्वाधीन करने मे उसका योगदान काफी महत्वपूर्ण माना जा सकता है। उसके समय तक देश मे छोटे-मोटे लगभग 600 पत्र निकलने लगे थे।

जहा तक हिन्दी पत्रो के प्रकाशन का सम्बन्ध है, सबसे पहला हिन्दी समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' सन् 1826 मे कलकत्ता से ही प्रकाशित हुआ। इसके बाद तो हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का सिलसिला बराबर आगे बढता रहा और हिन्दी पत्रकारिता की जडें धीरे-धीरे जमने लगी।

चू कि प्रस्तुत ग्रन्थ का क्षेत्र हिन्दी पत्रकारिता और राजस्थान तक ही सीमित है, अत. यहा अधिक विस्तार मे न जाकर अगले अध्याय मे हिन्दी पत्रकारिता की प्रारम्भिक स्थिति और उसके सन्दर्भ मे राजस्थान की चर्चा करना अभीष्ट होगा।

अध्याय 2

हिन्दी पत्रकारिता का अभ्युदय और राजस्थान

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों और पत्रकारिता के पंडितो द्वारा यह तथ्य अब सर्व सम्मति से स्वीकार किया जा चुका है कि भारतवर्ष मे हिन्दी पत्रकारिता का श्री गणेश सन् 1826 मे उदन्त मार्त्तण्ड के प्रकाशन के साथ ही हुआ था। 1831 के पार्लियामेन्टरी दस्तावेजो मे देशी पत्रो का जो विवरण समाविष्ट किया गया था, उसमे पहली बार 'उदन्त मार्तण्ड' और 'बंगदूत' नामक दो हिन्दी पत्रों के अस्तित्व का उल्लेख किया गया है।[1]

'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशक-सम्पादक पंडित जुगल किशोर का निम्न वक्तव्य भी इसके प्रथम हिन्दी समाचार पत्र होने का प्रतिपादन करता है :—

"यह 'उदन्त मार्तण्ड' अब पहिले पहल हिन्दुस्तानियो के हित के हेत जो आज तक किसी ने नही चलाया पर अंग्रेजी ओ पारसी, ओ बगले मे जो समाचार का कागज छपता है, उसका सुख उन बोलियो के जानने औ पढने वालों को ही होता है। इससे सत्य समाचार हिन्दुस्तानी लोग देख कर आप पढ़ ओ समझें और पराई अपेक्षा न करें ओ अपने भाषे की उपज न छोडे, इसलिए बडे दयावान करुणा और गुणनि के निधान सब के कल्याण के विषय गवरनर जैनरेल बहादुर की आयस से अैसे साहस मे चित्त लगाय के अैक प्रकार से यह नया ठाट ठाटा।"

इस पत्र की उक्त घोषणा की पुष्टि बगला के समकालीन पत्र 'समाचार-दर्पण'[2] से भी होती है। 'समाचार दर्पण' ने अपने पाठको को सूचना देते हुए लिखा है कि "कलकत्ता नगर से 'उदन्त मार्तण्ड' नामक एक नागरी का नूतन समाचार पत्र

---

1 एस० डी० वेदालंकार, डवलपमेन्ट आफ हिन्दी प्रोज लिट्रेचर, पृ० 177-78

2. समाचार दर्पण, 17 जून, 1826

प्रकाशित हुआ है, इससे हमारे आल्हाद की सीमा नही है, क्योकि समाचार पत्र दूसरा सम्पत्ति सम्बन्धीय और नाना दिशाओ के देशो के राजसम्पर्कीय वृत्तान्त प्रकाशित हुआ करते हैं, जिनके जानने से अवश्य ही उपकार होता है।"

दुर्भाग्य से हिन्दी का यह पहला पत्र अपने मुद्रण-व्यय का भार भी वहन करने की स्थिति मे नही था और इसे किसी का संरक्षण भी प्राप्त नहीं हो सका। 79 अक निकालने के बाद भी जब सम्पादक को कोई उत्साहजनक परिणाम प्राप्त नही हुए, तो उसने अपनी अन्तर्वेदना को अपने एक सम्पादकीय लेख मे इस प्रकार व्यक्त किया

"शूद्र सेवा चाकरी आदि नीच काम करते हैं, उन्हे पढाई लिखाई से मतलब नही। कायस्थ फारसी, उर्दू पढा करते हैं और वैश्य भुण्ड अक्षर सीख कर बही खाता करते हैं, खत्री बजाजी आदि करते हैं और पढ़ते लिखते नही और ब्राह्मणो ने तो कलियुगी ब्राह्मण बन कर पठन पाठन को तिलाजलि दे रखी है फिर हिन्दी का समाचार मात्र कौन पढ़े और खरीदे।"[1]

अन्ततोगत्वा डेढ वर्ष चल कर 4 दिसम्बर, 1827 को यह पत्र बन्द हो गया। अन्तिम अक के सम्पादकीय मे पत्र के बन्द होने की घोषणा करते हुए निम्न-लिखित पद्याश प्रकाशित किया था ·

आज दिवस लौं उग चुक्यो मार्तण्ड उदन्त,
अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।

'उदत मार्तण्ड' के दो वर्ष बाद 1829 मे 'बगाल हैराल्ड' का साप्ताहिक हिन्दी सस्करण 'बगदूत' के नाम से प्रकाशित हुआ।[2] यह पत्र प्रति शनिवार को प्रकाशित होता था और इसके सचालको मे आर० एम० मार्टिन, राजा राममोहनराय, द्वारकानाथ टैगोर, पुरुषोत्तम कुमार टैगोर, नीलरत्न हलदार और राज किशनसिंह थे। राम मोहनराय इस पत्र के माध्यम से धार्मिक और समाज सुधारवादी विचारों को अभिव्यक्ति देते थे। 'बगदूत' का पहला अक 10 मई 1829 को प्रकाशित हुआ था और इसके सम्पादक नीलरत्न हलदार थे।

बगाल मे हिन्दी भाषियो की सख्या अच्छी होने के कारण ही वहा से 'बगदूत' का प्रकाशन किया गया था। इसके उपरान्त 1854 मे कलकत्ते से ही बगला और हिन्दी में 'समाचार सुधा वर्षण' नामक दैनिक का प्रकाशन किया गया। इस पत्र के

---

1 विशाल भारत मे फरवरी, 1939 मे प्रकाशित लेख से उद्धृत।

2 डैवलपमेन्ट आफ हिन्दी प्रोज लिट्रेचर, पृ० 180

सम्पादक श्री श्याम सुन्दर सेन थे। हिन्दी की शैशवावस्था मे बगाल के नेताओ का उसके प्रति यह ममत्व सचमुच उनकी उदारता और दूरदर्शिता का सूचक था।

बनारस अखबार

उत्तरप्रदेश, बिहार और महाकौशल हिन्दी के इन प्रदेशो मे पहला पत्र 'बनारस अखबार' था। इसे राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द का ही पत्र कहा जा सकता है। यह कहने को तो हिन्दी का पत्र था, पर इसके अक्षर ही हिन्दी या नागरी के थे, भाषा उर्दू थी। इसकी उर्दू बहुल भाषा का अनुमान इसमे प्रकाशित पाठशाला-भवन के निर्माण से सम्बन्धित निम्न सवाद से सहज ही लगाया जा सकता है :—

"यहाँ जो नया पाठशाला कई साल से जनाब कप्तान किट साहेब बहादुर के इहतिमाम और धर्मात्माओ के मदद से बनता है, उसका हाल कई दफा जाहिर हो चुका है। अब वह मकान एक आलीशान बन्ने का निशान तैय्यार हर चेहारतरफ से हो गया, बल्कि इसके नक्शे का बयान पहिले मुदर्ज है सो परमेश्वर के दया से सहाब बहादुर ने बडी तदेही और मुस्तैदी से बहुत बेहतर और माकूल बनवाया है।"[1]

यह 1845 में निकला था। इसके दूसरे ही वर्ष कलकत्ते से 'मार्तण्ड' नामक पत्र अग्रेजी, फारसी, बगला, हिन्दी और उर्दू मे निकला था। 1850 मे दो पत्र निकले-एक कलकत्ते से और दूसरा काशी से। पडित युगल किशोर ने ही कलकत्ते से 'सामदण्ड मार्तण्ड' नाम से साप्ताहिक निकाला था। काशी से दूसरा पत्र बाबू तारा मोहन मैत्र आदि ने निकाला था और उसका नाम 'सुधाकर' रखा था। इसमे हिन्दी और बगला दो भाषाए रहती थी। इसी पत्र के नाम पर प्रसिद्ध ज्योतिषी पडित सुधाकर द्विवेदी का नामकरण हुआ था। कहते हैं पडित जी के पिता के घर पर डाकिया ज्यों ही 'सुधाकर' की ताजा प्रति डाल कर गया, उन्हें पुत्र-जन्म की सूचना मिली। इस पर नवजात शिशु के चाचा ने उसका नाम 'सुधाकर' ही रख दिया।[2]

'सुधाकर' के दो वर्ष बाद आगरे से मुंशी सदासुखलाल के सम्पादकत्व मे 'बुद्धि प्रकाश' का जन्म हुआ। यह कई वर्षों तक चलता रहा।

हिन्दी का आन्दोलन

सन् 1848 मे इन्दौर मे हिन्दी उर्दू मे 'मालवा अखबार' पडित प्रेमनारायण के सम्पादकत्व मे निकला। 1849 मे कलकत्ते से 'जगद्दीपक भास्कर' बगला हिन्दी

---

1 राधाकृष्णदास, हिन्दी भाषा के समसामयिक पत्रो का इतिहास, पृ० 9
2. वही, पृ० 12

में, 1855 में आगरे से 'सर्वहितकारक' और 1856 में ग्वालियर से 'ग्वालियर गजट' प्रकाशित हुआ। 1857 में प्रसिद्ध देशभक्त अली मुल्लाखां ने 'पयामे आजादी' दिल्ली से प्रकाशित किया गया था। इसके मराठी संस्करण के प्रकाशन का प्रबन्ध झांसी में हुआ था। 1861 में सुप्रसिद्ध साहित्यिक राजा लक्ष्मण सिंह ने आगरे से 'प्रजाहितैषी' निकाला।

1866 में लाहौर से बाबू नवीनचन्द्र राय ने 'ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका' हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित की थी, पर दो वर्ष बाद इससे उर्दू निकाल दी थी। राय महाशय पंजाब विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार थे। उन्होंने 'नवीन चन्द्रोदय' नामक हिन्दी व्याकरण भी लिखा था। इनकी सुपुत्री श्रीमती हेमन्त चौधरानी ने भी 'सुगृहिणी' नाम की हिन्दी पत्रिका आसाम के शिलांग शहर से प्रकाशित की थी।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कारण हिन्दी के आन्दोलन को बड़ा बल मिला। साहित्य की सृष्टि करने के साथ ही उन्होंने तीन पत्रिकाएं प्रकाशित कीं 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' (बाद को 'चन्द्रिका'), 'कविवचन सुधा' और 'बाल बोधिनी।' परन्तु 1870 के बाद हिन्दी में पत्रों की बाढ़-सी आ गयी। 1871 में अल्मोड़े से मुंशी सदानन्द सनवाल के सम्पादकत्व में 'अल्मोड़ा अखबार' निकला। यह उल्लेखनीय बात है कि गढ़वाल भाग उत्तर प्रदेश में सबसे पीछे मिला था, परन्तु हिन्दी पत्र निकालने में सबसे आगे रहा। इसके दूसरे वर्ष कलकत्ते से दो पत्र निकले—एक का नाम था 'हिन्दी दीप्ति प्रकाश' और दूसरे का 'बिहार बन्धु'। पहले के सम्पादक बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री काशी के थे और दूसरे के प्रकाशक पटना जिले के बिहार शरीफ के निवासी भट्ट बन्धु तथा सपादक पंडित केशवराम भट्ट थे।

बिहार बन्धु का जन्म

सन् 1872 में कलकत्ता मानिकतला स्ट्रीट से यह पत्र प्रकाशित हुआ। कई वर्षों तक कलकत्ते से ही 'बिहार बन्धु' निकलता रहा, बाद को 1874 में बाकीपुर चला आया। इसके सम्पादक पण्डित केशवराम थे, जो बिहारी बोलियों के आचार्य थे।

1874 से 84 तक हिन्दी भाषियों के बहुत से पत्र निकले। 1874 में दिल्ली से लाला श्री निवासदास ने 'सदादर्श' नाम का पत्र निकाला। 1876 में भारतेन्दु के सहकर्मी बाबू बालेश्वर प्रसाद ने काशी से शिक्षा सम्बन्धी 'काशी पत्रिका' निकाली और अलीगढ़ से बाबू तोताराम वर्मा का 'भारतबन्धु' निकला। 1878 में काशी से मासिक 'आर्य मित्र' और कलकत्ते से पण्डित छोटूलाल मिश्र के सपादकत्व में पाक्षिक 'भारत मित्र' प्रकाशित हुआ। पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र इसके व्यवस्थापक थे और जो ग्राहक कहते थे कि हम इसे पढ़ नहीं सकते, उनकी गद्दियों में जा जाकर सुना आते थे।

भारत मित्र

1880 को समाप्त होने वाले दशक मे, 'भारत मित्र' सबसे अधिक दीर्घजीवी रहा। जन्म के दो ही तीन वर्षो बाद यह साप्ताहिक हो गया था और 1911 तक साप्ताहिक रहा। इस बीच मे वह तीन बार दैनिक हुआ—एक बार 1897 मे कुछ महीने, दूसरी बार 1898 मे साल भर और तीसरी बार नवम्बर 1911 से 17 जनवरी 1912 तक, 1912 मे चैत्र शु० 1 से इसके दो रूप रहे, एक पूर्ववत् साप्ताहिक और दूसरा दैनिक। 'भारतमित्र' 1933–34 तक चला। साप्ताहिक इसके पहले ही बन्द हो गया था।

1879 मे पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र 'भारतमित्र' से अलग हो गये और पंडित सदानन्द मिश्र, पण्डित गोविन्द नारायण मिश्र और पण्डित शम्भुनाथ मिश्र के सहयोग से 'सारसुधानिधि' निकला। इसके सपादक पण्डित सदानन्द थे। एक वर्ष मे 'सारसुधानिधि' को जितना घाटा हुआ, वह साझियो की शक्ति से अधिक था, इसलिए इसे बन्द कर देने का निश्चय किया गया। जब उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह को इसकी सूचना मिली, तो उन्होंने सदानन्दजी को लिखा कि आप पत्र बन्द न कीजिये, घाटा पूरा कर दिया जाएगा। परन्तु इस बीच मे साझी अलग हो चुके थे और जब महाराणा की ओर से रुपया आया, तब पण्डित सदानन्दजी ही उसके एक मात्र स्वत्वाधिकारी रह गए थे और उन्होने कई वर्षों तक 'सारसुधानिधि' चलाया। इस मण्डली मे पत्र सचालन से सच्चा अनुराग पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र को ही था। इसलिए *'सारसुधानिधि' जब बन्द हुआ, तब उन्होने अपने बल पर दूसरा* पत्र निकाल दिया। इसका नाम था 'उचित वक्ता'। आन्दोलन करना दुर्गाप्रसाद जी जानते थे, इसलिए उनके पत्र की उपयोगिता भी थी और उन्होंने 'उचित वक्ता' और अन्य पत्रो द्वारा काश्मीर-नरेश स्वर्गवासी महाराज प्रतापसिंह को फिर श्रीनगर की गद्दी पर बैठा ही दिया, जो अग्रेज रेजिडेंटो के षडयन्त्र के कारण श्रीनगर से हटाकर जम्मू भेज दिये गये थे। कलकत्ते के इन तीनों पत्रो की भाषा बगला के ढग पर सस्कृतनिष्ठ होती थी।

1878 में तीन और पत्र

1878 मे ही तीन पत्र और निकले थे—एक प्रयाग से पण्डित बालकृष्ण भट्ट का 'हिन्दी प्रदीप', दूसरा शाहजहाँपुर के मुशी बख्तावर सिंह का 'आर्य दर्पण' और तीसरा लाहौर के पण्डित कन्हैया लाल का 'मित्र विलास'। 'हिन्दी प्रदीप' न मासिक था और लुढ़कता-पुढ़कता 30 वर्षों तक चलता रहा। 1908 म पण्डित माधव शुक्ल की "जरा सोचो तो यारो यह बम क्या है ?" कविता प्रकाशित हो पर सरकार ने उसे बन्द कर दिया। इसके बाद 1879–80 म उदयपुर से 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' और फर्रुखाबाद से 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक' निकले।

तीन वर्षों मे अनेक पत्र

1881, 82 और 83 मे हिन्दी के बहुत से पत्र प्रकाशित हुए। 1881 म मिरजापुर के उपाध्याय पडित बदरी नारायण चौधुरी 'प्रेम घन' ने 'आनन्द कादम्बिनी' मासिक पत्रिका और इसके बाद 'नागरी नीरद' साप्ताहिक पत्र निकाला। 1883 मे लखनऊ से बाबूराम दास वर्मा ने 'दिनकर प्रकाश', प्रयाग से पण्डित देवकी नन्दन तिवारी ने 'प्रयाग समाचार', कानपुर से पण्डित प्रताप नारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण', कानपुर से ही बाबू सीताराम ने 'शुभ चितक', कालाकाकर के राजा रामपाल सिंह ने 'हिन्दोस्थान' दैनिक तथा कानपुर से बाबू सीताराम ने 'भारतोदय' दैनिक और कलकत्ते से पडित देवी सहाय ने 'धर्म दिवाकर' मासिक प्रकाशित किया। काशी से बाबू राम कृष्ण वर्मा ने 3 मार्च 1884 को 'भारत जीवन' निकाला था।

हिन्दी बगवासी का उदय

1890 और इसके बाद से हिन्दी पत्र जगत मे क्राति हुई। इस क्राति का अग्रणी हिन्दी बगवासी' था। इसके पहले तक जितने पत्र निकले थे, प्राय सबके सचालक ही उनके सम्पादक और स्वत्वाधिकारी होते थे। पर हिन्दी 'बगवासी' ने पहले पहल वैतनिक सपादक रखा और सचालन का काम 'बगवासी' के स्वत्वाधिकारी के हाथ म रहा। वैसे तो 'भारत मित्र' म भी वैतनिक सम्पादक पण्डित रुद्रदत्त शर्मा, पण्डित मुकुन्दराम शास्त्री आदि रहते थ। परन्तु दोनो मे यह भेद था कि हिन्दी 'बगवासी' की नीति उसके स्वत्वाधिकारी बाबू योगेन्द्रचन्द्र बसु निर्धारित करते थे और 'भारत मित्र' की सम्पादको के अधीन रहती थी। दूसरी विशेषता यह थी कि पहले के हिन्दी पत्र ग्राहको का भरोसा करते थे और छोटे आकार के होते थे। दाम भी अधिक रखते थे, इसलिए ग्राहक कम होते थे। पर हिन्दी 'बगवासी' बडे आकार मे निकला और इसका वार्षिक मूल्य भी कम रहा तथा कुम्भ जैसे मेलो पर इसका प्रचार भी किया गया, जिससे अन्य पत्रो की अपेक्षा इसे विज्ञापन भी अधिक मिले। कुछ ही समय बाद यह स्वावलम्बी हो गया।

श्री वेंकटेश्वर समाचार

1894 म बम्बई के श्री वेंकटेश्वर प्रेस से 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' निकला। इस पत्र के स्वत्वाधिकारी सेठ खेमराज श्री कृष्णदास थे। 19वी शती के हिन्दी पत्रो मे 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' आज भी जीवित है।

सन् 1905 और 1906 म कांग्रेस का जो काया पलट हुआ, उसमे हिन्दी पत्रो को लिखने के लिए काफी सामग्री मिल गई। इसके 10 वर्ष के बाद स्वराज्य

आन्दोलन ने जोर पकडा और नई शिक्षा और रोशनी के लोगो की रुझान पत्रकारिता की ओर होने लगी। परिणामत. नये-नये पत्रो का जन्म हुआ।

दैनिकों का जन्म

यो तो हिन्दी का पहला दैनिक पत्र बगला-हिन्दी दैनिक पत्र 'समाचार सुधावर्षण' ही था, परन्तु केवल हिन्दी मे दैनिक पत्र 1885 मे ही निकले। इस वर्ष मे कालाकाकर से राजा रामपालसिंह ने 'हिन्दोस्थान' और कानपुर से बाबू सीताराम ने 'भारतोदय' निकाला। 'हिन्दोस्थान' का प्रसार-क्षेत्र बहुत सीमित था और इलाहाबाद स्टेशन से आगे उसकी बिक्री नही के बराबर होती थी। थोडे समय के बाद यह पत्र भी बन्द हो गया।

इसके बाद देश मे राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रो मे तीव्र गति से जो परिवर्तन हुए, उनके फलस्वरूप नये-नये दैनिको साप्ताहिको, पाक्षिको और साहित्यिक मासिकों का उदय हुआ और हिन्दी पत्रकारिता निरन्तर सवर्द्धन को प्राप्त करती हुई विकास के पथ पर अग्रसर होने लगी।

राजस्थान

भारतवर्ष मे हिन्दी पत्रकारिता का प्रारम्भिक युग वस्तुत· 1826 मे 'उदन्त मार्त्तण्ड' के प्रकाशन से प्रारम्भ होकर 1885 मे दैनिक 'हिन्दोस्थान' के जन्म तक माना जाना चाहिए। किन्तु इस सन्दर्भ मे राजस्थान की स्थिति का आकलन करते समय यह आश्चर्यजनक किन्तु कटु सत्य सामने आता है कि जब बगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश मे हिन्दी पत्रो की सख्या बराबर बढ रही थी और हिन्दी पत्रकारिता आधी शती के ऐतिहासिक दौर से गुजर चुकी थी। राजस्थान मे हिन्दी पत्र-पत्रिकाए अपने उन्मेष के प्रथम चरण मे ही थी। तथापि उस युग मे जब रियासती राजपत्र फारसी बहुल उर्दू मे सामग्री प्रकाशितकर रहे थे और प्रशासन मे उर्दू-फारसी का बोलबाला था, राजस्थान जैसे प्रदेश से स्वल्पतम परिमाण मे भी हिन्दी पत्रो का प्रकाशन होना निस्सदेह महत्वपूर्ण था।

राजस्थान का सर्वप्रथम पत्र 'मजहरूल सरूर' माना जाता है। यह द्विभाषी पत्र उर्दू तथा हिन्दी मे सन् 1849 में भरतपुर से प्रकाशित होता था, किन्तु इसकी कोई प्रति उपलब्ध नही है। फ्रेंच लेखक तासी ने अपने 'डिसकोर्सेज' में इसका उल्लेख मात्र किया है। अत इस पत्र के स्वरूप के बारे मे प्रामाणिक रूप से कुछ नही कहा जा सकता। इसके बाद के सात वर्ष की अवधि मे राजस्थान से किसी पत्र के प्रकाशित होने का कोई उल्लेख कहीं भी उपलब्ध नही होता।

सन् 1856 मे जयपुर से हैडमास्टर कन्हैयालाल के सम्पादन मे एक द्विभाषी पत्र 'रोजतुल तालीम अथवा राजपूताना अखबार' प्रकाशित हुआ, जिसकी सामग्री

आधी हिन्दी मे और आधी उर्दू मे प्रकाशित होती थी। तथापि इस पत्र की जो सामग्री हिन्दी मे प्रकाशित होती थी, वह यथासभव उर्दू के प्रभाव से मुक्त होती थी।[1]

इसके बाद 1861 मे अजमेर से 'जगलाभ-चिन्तक' तथा सन् 1863 म 'जगहितकारक' का प्रकाशन हुआ। जैसा कि इन नामो से ही स्पष्ट है, ये पत्र पूर्णत हिन्दी मे निकलते थे तथा इनकी भाषा तत्कालीन हिन्दी के विकासमान स्वरूप को प्रतिबिम्बित करती थी। 1866 मे जोधपुर से प्रकाशित मारवाड गजट का भी एक भाग हिन्दी मे ही प्रकाशित होता था। इसके बाद 1868 मे जयपुर-गजट' और 1869 मे 'उदयपुर-गजट' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।

उदयपुर गजट के प्रकाशन के ठीक एक दशक बाद उदयपुर से ही महाराणा सज्जन सिंह के सरक्षण मे 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' उस ऐतिहासिक महत्व के साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू हुआ, जिसे राजस्थान मे हिन्दी पत्रकारिता का आलोक-स्तम्भ कहा जा सकता है।

इसके बाद 1882 मे अजमेर से 'देश हितैषी' और 1885 मे जयपुर स मासिक 'सदाचार मार्त्तण्ड' प्रकाशित हुए।

इस काल मे कुछ छुट-पुट प्रयत्न और भी हुए, किन्तु इन सभी का मूल स्वर धार्मिक और सुधारवादी था।

वस्तुत लोक-चेतना को प्रबुद्ध करने वाली विशुद्ध पत्रकारिता का सबसे अधिक महत्वपूर्ण और सार्थक प्रयत्न सन् 1885 मे मनीषी समर्थदान द्वारा 'राजस्थान समाचार' के प्रकाशन द्वारा किया गया था।[2]

राजस्थान मे लोकधर्मी पत्रकारिता की नीव भी यही से सुदृढ हुई मानी जानी चाहिये। इसका स्पष्ट आशय यह हुआ कि राजस्थान की हिन्दी पत्र-कारिता अन्य प्रदेशो की तुलना मे कम से कम पचास वर्ष पिछड गई थी। 1889 से 1900 के बीच उदयपुर से 'विद्यार्थी' सम्मिलित हरिश्चन्द्र पत्रिका और मोहन चन्द्रिका', 'सद्धर्म स्मारक,' 'भारत मार्त्तण्ड' आदि साहित्यिक पत्रो और अनेको साप्ताहिको का उदय हुआ।

---

1 रोजतुल तालीम, 6 अक्टूबर, 1856। द्रष्टव्य
• • "सत्य बोलने से वर्तमान लोक मे पुरुष का अधिकार और कीर्ति वर्द्धमान होते हैं और परलोक मे भी पुरुष मे सत्य वचन ही उपकारी होता है।

2. के० एस० सक्सेना पोलीटिकल मूवमेण्ट एण्ड अवेकनिंग इन राजस्थान, दिल्ली, 1971, पृ० 119

सन् 1900 से लेकर 1950 के बीच राजस्थान मे तीव्र गति से उस उद्देश्य-परक राजनीतिक पत्रकारिता का विकास हुआ, जिसने न केवल राजस्थान के सामती शासन मे रहने मे वाली जनता को जागरण का सन्देश दिया, अपितु नाना प्रकार के कष्ट सह कर भी स्वाधीनता-सग्राम के लिए विभिन्न भागो मे चलाये गये जन-आन्दोलनो को अपना पूर्ण समर्थन प्रदान किया।

इन पत्रो की मिशनरी भूमिका 1947 मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही पूरी नही हुई, बल्कि रियासतो के एकीकरण और राजस्थान सघ के निर्माण की प्रक्रिया मे सन् 1950 तक इन्होने अपना सक्रिय योगदान किया।

1950 के बाद के तीन दशको की अवधि राजस्थान मे पत्रकारिता के व्यावसायिक धरातल पर प्रतिष्ठापित होने के प्रयत्नो और सघर्षों की कहानी है।

उक्त विकास क्रम को ध्यान मे रख कर ही अगले अध्यायो मे राजस्थान मे हिन्दी पत्रकारिता की विकास-यात्रा का आलोचनात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया जा रहा है।

अध्याय 3

प्रारम्भिक प्रयत्नों की कथा

जैसा कि अन्यत्र उल्लेख किया जा चुका है, भारतीय पत्रकारिता का इतिहास यहां की राजनीतिक परिस्थितियों से अविच्छिन्न रूप से सम्बद्ध रहा है। राजनीतिक उथल पुथल, प्रशासनिक हेर-फेर और सामाजिक तथा धार्मिक आन्दोलनों ने यहा की पत्रकारिता को घनीभूत रूप से प्रभावित किया है। इसलिए राजस्थान मे पत्रकारिता का प्रादुर्भाव अनिवार्य रूप से इसी सन्दर्भ म दृष्टव्य है और इसी दृष्टिकोण से उसे मूल्याकित किया जाना चाहिये।

उस समय तक जब भारत के अन्य प्रदेशो–बगाल, बम्बई, मद्रास और उत्तर प्रदेश आदि मे पत्रकारिता अपनी जडें जमा चुकी थी और लगभग सात सौ से अधिक पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक अंग्रेजी सत्ता से प्रेस की स्वाधीनता के लिए सघर्ष कर रहे थे, राजस्थान मे किसी मुद्रणालय के दर्शन भी दुर्लभ थे। जन-जागरण की इस दयनीय स्थिति के कारणो के लिए यहा के राजनीतिक एव सामाजिक परिवेश तथा पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक होगा।

राजस्थान में अंग्रेजों का हस्तक्षेप

पूरी एक शताब्दी तक नेतृत्व विहीन राजस्थान के राजपूत शासक जब मराठो और पिण्डारियो की लूट-पाट से तग आ गये, तो उनके सामने सिवा इसके कोई विकल्प न था कि वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद का समर्थन करें और उसके बदले मे अपने सरक्षण को सुनिश्चित करें।

ब्रिटिश सरकार भी इस तथ्य से भलीभाति अवगत थी कि अपने साम्राज्य को सुदृढ बनाने और उसका विस्तार करने के लिये देशी राजाओं की सहायता अनिवार्य है। इस पारस्परिक आवश्यकता का प्रतिफलन यह हुआ कि 1803 से 1818 के बीच राजस्थान की विभिन्न रियासतो ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ ऐसी सन्धिया कर ली, जिनका अर्थ व्यावहारिक दृष्टि से अंग्रेजी प्रभुत्व को स्वीकार कर लेना था। अब यह स्पष्ट हो चुका था कि राजस्थान के राजा शान्ति एव व्यवस्था बनाये रखने मे अक्षम हो चुके थे और इसके लिए वे अंग्रेजी सत्ता के मुखा-

देशी बने थे। इन सन्धियो मे औपचारिक रूप से कहा तो यह गया कि बाह्य आक्रमणों की स्थिति मे अंग्रेजी हुकूमत उनकी रक्षा करेगी और आन्तरिक मामलों मे वे स्वतन्त्र रहेंगे, तथापि व्यावहारिक रूप मे इस आश्वासन पर अधिक लम्बी अवधि तक आचरण नही किया जा सका।

1818 से 1857 के बीच राजस्थान के प्रति अंग्रेजी सत्ता की जो नीति रही, वह कभी हस्तक्षेप की, कभी मौन धारण कर अपने हितो के प्रति जागरूक रहने की, कभी सरक्षण और सहयोग करने की और कभी अपनी शक्ति से आतंकित करने की था। इसी प्रक्रिया से इन पिछले पाँच दशको मे समूचा राजस्थान ब्रिटिश सत्ता के शिकजे मे आ चुका था। राजे-महाराजे नाम मात्र के शासक रह गये थे। वास्तविक सत्ता ब्रिटेन के हाथो मे जा चुकी थी। तथापि इस बीच ऐसे अवसर भी आये जब कुछ स्वाभिमानी तत्वो ने जयपुर, जोधपुर, कोटा और भरतपुर मे ब्रिटिश सत्ता का खुला विरोध किया। भले ही यह विरोध किसी व्यापक राष्ट्रीय भावना से अनुप्रेरित नही था, तथापि जनता और जागीरदारों के एक छोटे से वर्ग और कतिपय राजाओ के अन्तर्मन में निहित ब्रिटिश विरोधी आक्रोश का व्यजक अवश्य था।

1857 का विप्लव और राजस्थान

अंग्रेजी से लोहा लेने के लिए हताकाक्षी बहादुर शाह ने राजस्थान के राजपूत राजाओ, और सामन्तो को एक पत्र द्वारा सन् 1857 के स्वातन्त्र्य-समर के लिए *आह्वान करते हुए उनसे देश को नेतृत्व देने का अनुरोध निम्न शब्दो मे* किया था—

"स्वाधीनता के इस क्रान्ति युद्ध मे विजय माला तभी प्राप्त होगी जब कोई ऐसा व्यक्ति मैदान मे आये, राष्ट्र की विभिन्न शक्तियो को सगठित कर एक ओर लगा सके सारे आन्दोलन का दायित्व और सचालन सम्भाल सके और जो समूचे राष्ट्र के जन साधारण का प्रतिनिधित्व कर सके।........."यदि आप राजा लोग शत्रु को भगा देने के लिए अपनी तलवार उठा कर आगे आने को प्रस्तुत हो, तो मैं अपने तमाम शाही अख्त्यारात किसी ऐसे सघ या पचायत के हाथ मे सौंप दू गा, जिसे इस काम के लिए चुना जाय।[1]

किन्तु बहादुर शाह की राजपूत नरेशो से यह अपेक्षा, चट्टान पर दूब उगाने की कल्पना के सदृश थी। राजपूताने के भूतपूर्व ऐजेन्ट जनरल सर हेनरी लारेन्स

---

1 सर चार्ल्स मैटकाफ, 'दि नैटिव नेरेटिव' पृ० 226 पर उद्धृत सम्राट के पत्र का आंशिक अनुवाद।

के शब्दो मे यह एक अफीमचियो की जमात थी जिसमे बहादुरी और ईमानदारी कहीं शेष न थी।[1]

राजपूत राजाओ और सामन्तो को इस सत्यानाशी निद्रा से जगाने के लिए उस युग के सुविख्यात चारण कवि बाकीदास ने भी उन्हे नितान्त कटु शब्दों मे प्रताड़ना दी।[2] किन्तु जागरण के वे स्वर निरर्थक सिद्ध हुए।

सन् 1857 मे राजस्थान प्रदेश मे 18 देशी रियासतें थी, जिनमे अजमेर का ब्रिटिश शासित क्षेत्र और नीमच की छावनी सम्मिलित थी। यह गवर्नर जनरल के एजेन्ट पी० लारेन्स के राजनीतिक शासन के अधीन था। उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, भरतपुर और कोटा की पाच प्रमुख रियासतो मे पोलीटिकल एजेन्ट थे, जो ए जी. जी के अधीन सर्वोच्च सरकार का प्रतिनिधित्व करते थे। नसीराबाद, नीमच, देवली और एरिनपुरा मे फौजी केन्द्र थे, जहा सभी सैन्य टुकडियो मे देशी सिपाही थे। ब्रिटिश अधिकारियो की अधीनता मे केवल दो स्थानीय दल ब्यावर तथा खैरवाडा मे तैनात थे, जिनमे भील और मेर लोग थे।

जिन क्षोभपूर्ण परिस्थितियो मे अधिकाश राजाओ ने ब्रिटिश सत्ता से सधिया की थी, उन्हें देखते हुए 1857 के विद्रोह म राजाओं से किसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा करना व्यर्थ था। अधिकाश राजवश ब्रिटिश समर्थक थे और वे अग्रेजी सत्ता के हर कदम के प्रबल प्रशसक थे। ऐसी स्थिति मे यह कल्पना करना भी कठिन था कि राजस्थान का यह विशाल भू भाग अग्रेजी सत्ता के प्रति विद्रोह के उस महायज्ञ मे अपनी स्वैच्छिक आहुति देगा। किन्तु यह चित्र का केवल एक पहलू है।

जन आक्रोश का वातावरण

इस तथ्य के बावजूद कि अधिकाश राजा लोग अग्रेजी सत्ता के अधीन अपने स्वत्व को सुरक्षित मानकर उसके प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दे रहे थे, कुछ ऐसे राजा भी थे जो भीतर ही भीतर अग्रेजी सत्ता के प्रति आक्रोश से परिपूर्ण थे। उदाहरण के लिए जोधपुर का राजा मानसिंह सन्धि के गठबन्धन मे बधने के बाद ब्रिटिश सन्धि के दायित्वो के प्रति उपेक्षापूर्ण रहा और जब गवर्नर जनरल ने उसे ब्रिटिश विरोधी तत्वो को कारण न देने के आदेश प्रदान किये तो वह शरणागत वत्सलता के अपने अधिकार पर दृढ रहा। उसने चेतावनियो की चिट्ठियों को भी उपेक्षा भाव से देखा और अजमेर मे आयोजित दरबार का भी बहिष्कार किया। किन्तु अग्रेजो के सबसे बडे शत्रु वे सामन्त सरदार और जागीरदार थे, जिन्हे ब्रिटिश सत्ता ने राजनीतिक दृष्टि से अस्तित्व हीन कर दिया था।

1. पृथ्वीसिंह महता, हमारा राजस्थान, पृ० 240
2. रावत सारस्वत (सपा०) डिंगल गात, पृ० 72-75

राजस्थान के जागीरदार ब्रिटिश प्रवेश के इसलिये भी विरुद्ध थे कि शासक राजाओं की स्थिति को मजबूत करने की दृष्टि से उनके (जागीरदारो के) स्वशासन को कुचलने के लिए ब्रिटिश छावनिया तैयार थी। वे ब्रिटिश द्वारा काफी सख्या म लागू किये गये नये परिवर्तनों को भी विशेषतः इसलिये नापसन्द करते थे कि उनसे जागीरदारो का उन विषयो पर नियन्त्रण समाप्त हो जाता था जो उनके अपने अधिकार मे थे। सती प्रथा के उन्मूलन से भी उनम बहुत अधिक रोष फैला। ब्रिटिश फौजी चौकियो की स्थापना का अर्थ उनकी सामन्ती शक्तियो का पूर्णत विनाश था, जिसके परिणामस्वरूप उनकी सुविधाओं म कमी आती थी। इन तकलीफो तथा कुछ स्वेच्छाचारी राजाओ की उच्छ खलताओं के विरुद्ध रोष के कारण जागीरदारो को यह विश्वास कर लेना पडा कि भारत मे अग्रेजी चलने रहने का अर्थ उनका पूर्णत राजनैतिक विनाश होगा। उनमे से कुछ न यह भी अनुभव किया कि अग्रेजो के बढ़ते हुए चरणो से हिन्दू धर्म का अस्तित्व लुप्त हो जायगा और सम्भवत एक नया ही धर्म स्थापित होगा। ब्रिटिश विरोधी प्रवृत्तियो म जागीरदारों को अपनी जनता का भी सहयोग मिला जो कि भारत म ब्रिटिश शासन के दौरान अपनी दुर्गति और आर्थिक शोषण के कारण बहुत नाराज थी। यही कारण था कि जोधपुर मे जमीन के अन्दर बारूद के बहुत बडे गोदाम मे भयानक विस्फोट हो जाने की दुर्घटना को उस वर्ग के प्रति दैवी प्रकोप समझा गया जो विधर्मियो के साथ की गई राजसन्धियो के प्रति सच्चा और वफादार रहा।

विद्रोह की वास्तविक घटना के पूर्व भी मेवाड और मारवाड के जागीरदार अग्रेजो के विरुद्ध षडयन्त्र कर रहे थे। मेवाड के जागीरदार इसलिए क्रुद्ध थे कि उदयपुर के महाराणा ने ब्रिटिश सहायता से अपने आश्रितो की सेवाओं का भी रकम की अदायगी के रूप मे बदलना चाहा था। यह सामन्ती प्रथा म नई बात थी जिससे उनकी प्रतिष्ठा गिरती थी। सलूम्बर का रावत केसरीसिंह इसलिए नाराज था कि उसकी गद्दी नशीनी के समय महाराणा स्वय सलूम्बर नही पहुचे। सर हेनरी लारेन्स ने अपने पोलिटिकल एजन्टो को उस प्रथा के उन्मूलन का निर्देश दिया था जिसके अनुसार जागीरी क्षेत्र का कोई भी व्यक्ति बिना अपने मालिक की अनुमती के अपने जन्म स्थान को नही छोड सकता था और न किसी अन्य स्थान पर जाकर बस सकता था किन्तु इस प्रकार दो व्यापारी जो काफी कर्जदार थे आउवा छोडकर चले गये और कुशालसिंह द्वारा की गई उनकी वापसी की माग बेअसर हो गई। मारवाड व प्रमुख जागीरदारो की नाराजगी का मुख्य कारण यही रहा था। राजपूताने के सभी असन्तुष्ट तत्वो को सगठित करने म इन्ही तथ्यो का योग रहा जिससे राजस्थान के रेतीले इलाको मे न्यूनाधिक रूप से उत्तेजना की आग फैली। फिर कुछ समय बाद फकीरो के वेष म दिल्ली के जासूसो द्वारा विस्तृत रूप से बाजारो और छावनिया मे विद्रोह के बीज बोये गये और सम्पूर्ण राजपूताना मे स्थिति अशात हो उठी।

राजस्थान की आम जनता भी अंग्रेजों के पक्ष में नहीं थी। ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के साथ ही राजस्थान में बेगार आई, भुखमरी आई, अकाल पड़े और आये दिन के नित नये परिवर्तनों ने जनता को यह विश्वास दिला दिया कि अब उनका धर्म और संस्कृति खतरे में है। वे ब्रिटिश विरोधी भावनाओं से ओतप्रोत तो थे, पर उन्हें प्रभावशाली नेतृत्व नहीं मिला। भरतपुर, अलवर, टोंक, कोटा और आउवा की जनता ने संघर्ष का शंखनाद होते ही ब्रिटिश विरोधी नारों से आकाश गुंजा दिया।

18 मई को विप्लव के समाचार आबू पहुंचे थे। 28 मई को नसीराबाद तथा 3 जून को नीमच के भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश विरोधी कार्यवाहियां शुरू कर दी तथा विद्रोह की आग चारों ओर फैलने लगी। नीमच और नसीराबाद के सिपाही दिल्ली और आगरा की ओर रवाना हो गये तथा देवली, महीदपुर आदि स्थानों के सिपाही भी उन्हीं में मिल गये। सैनिकों के शंखनाद का प्रभाव आम जनता पर भी पड़े बिना नहीं रह सका। भरतपुर तथा अलवर से मेव और गूजर, आउवा के ग्रामीण, नींबाहेड़ा के नागरिक, कोटा की प्रजा और टोंक के लोग–विद्रोहियों के स्वर में स्वर मिला कर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने में किसी से पीछे नहीं रहे। आउवा के जागीरदार खुशालसिंह ने आसोप, गूलर, आलणियावास, बीभावास, रड़ावास आदि अनेक स्थानों के जागीरदारों को अपने साथ लेकर डीसा और एरिनपुरा के विद्रोही सैनिकों को अपने यहां शरण दी, ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया। ब्रिगेडियर जनरल लारेंस को बुरी तरह पराजित किया, जोधपुर के एजेन्ट मेसन को मौत के घाट उतारा तथा ये विद्रोही दिल्ली की ओर बहादुरशाह की सहायतार्थ रवाना हुए, किन्तु नारनौल नामक स्थान पर जेरारड की सेनाओं द्वारा हरा दिये गये। कोटा की जनता ने मेहराव खां और लाला जयदयाल के नेतृत्व में विद्रोह किया, मेजर बर्टन को मार डाला, महाराव को किले में एक नजरबन्द व्यक्ति की तरह रहना पड़ा, सारा प्रशासन विद्रोही सेनाओं के हाथ में आ गया। नींबाहेड़ा और टोंक की जनता ने नीमच के विद्रोही सैनिकों का स्वागत किया तथा उनको आवश्यक सहायता भी दी। यही नहीं, राजस्थान के जागीरदारों ने नाना साहब तथा तात्या टोपे को अपने यहां आश्रय दिया उनके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की।

पर ब्रिटिश सेनाओं ने विद्रोहियों को पराजित कर दिया। विद्रोह का स्वर दब गया, क्रांति की चिनगारी शांत तो नहीं हुई पर बहुत कुछ मंद पड़ गई। बड़ी निर्ममता से कुचले गये थे विद्रोही। लेकिन इन विद्रोहों के उन्नायक चाहे जिन कारणों को लेकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध लड़े हों, अंग्रेजों द्वारा उन पर किये गये अत्याचारों ने आने वाली पीढ़ियों को आजादी की प्रेरणा दी।

लगभग दो दशक तक राजस्थान की जनता पराभव की भावना से पीडित रही, किन्तु उसकी अन्तश्चेतना की चिनगारिया बुझी नही।

नीति-निपुण अंग्रेजी शासको ने भी इस विप्लव मे अपनी सफलता के बावजूद देसी रियासतो को समूल उखाड फेंकना उचित न समझा, क्योंकि ऐसा करने से उन्हे जनता की राष्ट्रीय भावना के उभरने की आशका थी। इसलिए उन्होंने राजाओं के परम्परागत राजकीय विशेषाधिकारों और सम्मान को सुरक्षित रखने का आश्वासन देकर शनै शनै समूची सत्ता अपने पोलीटिकल एजेन्ट्स और अन्य अंग्रेज अधिकारियो के जरिये हथिया ली।

राजनीतिक मानचित्र मे परिवर्तन आने के साथ-साथ प्रदेश का आर्थिक ढाचा भी गडबडाने लगा। रेलगाडियो के चलने से जहा आवागमन मे सुविधा हुई, वहा विदेशी माल की आमद बाजारो मे बढ गई, जिससे राजस्थान के स्थानीय धन्धों और शिल्प व्यवसायों का ध्वस हो गया। नमक का सारा व्यापार अंग्रेज ठेकेदारो ने अपने अधिकार मे कर लिया और इन्ही कारणो से प्रदेश का आर्थिक सतुलन बिगड गया।

प्रशासनिक सुधारो के नाम पर सरकार द्वारा जो अधिकारी तैनात किये, वे फारसी, उर्दू या अंग्रेजी मे राजकाज चलाने लगे। शिक्षा का माध्यम भी उर्दू या अंग्रेजी बना दिया गया, जिससे स्थानीय बोलियो का विकास रुक गया और अब तक जो लोग अपनी बोली और भाषा में अपना काम चला रहे थे, अशिक्षित घोषित हो गये। परिणामत जनता धीरे धीरे असस्कृत हो गई और उत्तरोत्तर अन्धकार के गर्त मे गिरती चली गई।[1]

उक्त सामाजिक एव राजनीतिक परिवेश की पृष्ठभूमि में ही राजस्थान मे पत्रकारिता के प्रादुर्भाव एव प्रारम्भिक प्रयत्नो का आकलन यहाँ अभीष्ट है।

प्रारम्भिक प्रयत्न

कतिपय विश्वविद्यालयी अनुसधत्सुओं की यह धारणा कि राजस्थान मे हिन्दी पत्रकारिता का प्रादुर्भाव रियासती राजपत्रो के रूप मे ही हुआ, सर्वथा निर्मूल है। वस्तुत राजस्थान मे पत्रकारिता का श्रीगणेश उन प्रबुद्ध चेता व्यक्तियो द्वारा किया गया, जो यह मानते थे कि लोक-शिक्षण तथा समाज-सुधार के लिए समाचार पत्र एक सशक्त साधन सिद्ध हो सकते हैं।

जैसाकि पहले उल्लेख किया जा चुका है, राजस्थान का सर्व प्रथम पत्र 'मजहरुल सरूर' माना जाता है, जो हिन्दी तथा उर्दू मे प्रकाशित होता था,[2] किन्तु

---

1. पृथ्वीसिंह महता, हमारा राजस्थान, पृ० 260
2. रामरतन भटनागर, राइज एण्ड ग्रोथ आफ हिन्दी जर्नेलिज्म, पृ० 76

इस पत्र की कोई प्रति उपलब्ध नही। इसके बाद जयपुर से 'रोजतुल तालीम अथवा राजपूताना अखबार' नामक द्विभाषी पत्र का प्रकाशन सन् 1856 मे हुआ। यही राजस्थान का प्राचीनतम उपलब्ध पत्र है, जिसकी फाइल जयपुर के महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय मे सुरक्षित है। इसके बाद 1861 मे अजमेर से 'जगलाभ चिंतक' और तदन्तर 'जगहितकारक' का प्रकाशन हुआ। इसके बाद 'सज्जन कीर्ति सुधार' 'देश-हितैषी' आदि आर्य समाजी विचारधारा के पत्रो का सिलसिला शुरू हुआ।

राजस्थान मे हिन्दी पत्रकारिता के प्रादुर्भाव के इस प्रसग मे इन कतिपय पत्रों की यहा विस्तार से चर्चा करना अनिवार्य हो गया है, जो यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि इस तथाकथित पिछड़े प्रदेश मे पत्रकारिता का उन्मेष रियासती राजपत्रो से नहीं, अपितु लोक-शिक्षण और जन-जागृति के लिए कृत सकल्प प्रेरक व्यक्तियो द्वारा प्रारम्भ किये गये पत्रो से हुआ।

रोजतुल तालीम अथवा राजपूताना अखबार

सन् 1856 मे जयपुर से उर्दू तथा हिन्दी मे सयुक्त रूप से प्रकाशित इस द्विभाषी पत्र को राजस्थान की पत्रकारिता के इतिहास मे ही नहीं, अपितु समूची हिन्दी पत्रकारिता म गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त होना चाहिए। देश मे हिन्दी के प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' से महज 30 वर्ष बाद राजस्थान जैसे प्रदेश से इसका प्रकाशित होना निश्चय ही एक उल्लेखनीय घटना थी। "रोजतुल तालीम" का नियमित प्रकाशन 1 अक्टूबर, 1856 से करने से पूर्व इसके विद्वान् सम्पादक कन्हैयालाल ने, जो राजकीय पाठशाला म प्रधान अध्यापक थे, 24 सितम्बर 1856 को पत्र का प्रवेशाक प्रकाशित किया था। इसमे पत्र प्रकाशन की प्रेरणा तथा उद्देश्य को इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है—"और श्रीयुत साहब अजट बहादुर व पंडित शिवदीन जी ज्योकि महाराज के प्रमुख प्रधान है, विद्या सम्बन्धी विचारो की सहायता मे चिन्त दे रहे हैं और विशेष यह है कि पडित जी साहब इतनी बडी पदवी पाय के भी आठवें दिन आयकर पाठशाला की सम्हाल करते हैं और नाना प्रकार की विद्याओं का प्रचार करते हैं। ऐसे अवसर को पाय मेरे चिन्त म भी हुलास उत्पन्न हुआ, ज्यो एक अखबार जिसमें राजपूताने देश के उत्तम नगरो का वृत्तान्त लिखा जावे, पाठशाला के छापेखाने से छपकरि जारी हुआ करे, क्योकि इन देशो की खबरें अन्य अखबारो मे नही छपती हैं। इस हेतु इस अखबार का नाम राजपूताना अखबार स्थापन किया है, तो यह अखबार प्रथम तारीख, अक्टूबर महीने से जारी होगा। इस अखबार म राजपूताने देशन मे प्रधान नगर यथा जैपुर, जोधपुर, उदैपुर, कोटा, बूदी, बीकानेर, जैसलमेर, अलवर, भरतपुर, अजमेरि, सीकरि, खेतडी इत्यादिक राजधानियो के वृत्तान्त तथा नवी नवी वार्ता अन्य अन्य देशन की व बिलायतो की भी लिखी जावेगी।"

प्रवेशाक की इस घोषणा के अनुसार इस अखबार का नियमित प्रकाशन एक अक्टूबर से प्रारम्भ हो गया था। यद्यपि इसका उर्दू नाम 'रोजतुल तालीम' था, तथापि हिन्दी मे इसका नाम 'राजपूताना अखबार' ही था, क्योकि पाठको के नाम सम्पादक के हर सन्देश मे लगभग प्रत्येक अक मे पत्र को इसी संज्ञा से अभिहित किया गया है। ("राजपूताना अखबार के पाठको को विदित होय कि.... .... ")।

सम्पादक की घोषणा के अनुसार पत्र मे जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, उदयपुर, सीकर, खेतडी, बडौदा, इन्दौर आदि स्थानो की खबरें तो पृथक-पृथक शीर्षको के अन्तर्गत छपती ही थी, विदेशो की खबरें भी छापने का बराबर प्रयत्न रहता था। ये खबरें सम्पादक के अपने ही शब्दो मे 'इगलिश मैन', 'फ्रेन्ड ऑफ इण्डिया', 'कलकत्ता गजट', 'हूम न्यूज', 'बुबई टाईम्स' आदि अंग्रेजी के पत्रो मे प्रकाशित समाचारो के आधार पर लिखी होती थी। खबरो के अधिकाश विषय शिक्षाप्रद और मनोरजक होते थे।

प्रवेशाक मे यह स्पष्ट कर दिया गया था कि हर पृष्ठ के एक तरफ "उर्दू जुवान" मे और दूसरी तरफ 'नागरी ब्रजभाषा' में सामग्री छपेगी। सार्वजनिक महत्व की खबरो को नि शुल्क छापने और निजी विज्ञापनो को दो आने प्रति पक्ति छापने की घोषणा भी सम्पादक ने स्पष्ट रूप से कर दी थी। दस पक्ति से कम स्थान के विज्ञापन का न्यूनतम शुल्क एक रुपये निर्धारित किया गया था।

पत्र के प्रथम वर्ष मे वार्षिक चन्दा 9 रुपये, अर्द्ध-वार्षिक 5 रुपये, तथा माहवारी चौदह आने रखा गया था। किन्तु "बाद साल तमाम" के वार्षिक चन्दा 12 रुपये, अर्द्ध-वार्षिक साढे पाच रुपये और महीने के साढ़े चौदह आने करने की घोषणा प्रथम अक मे ही कर दी गई थी।

प्रथम अक मे पाठको से क्षमा याचना करते हुए कहा गया था कि "प्रथम ही यह अखबार का कार्य प्रारम्भ हुआ है। इस हेतु लेखक तथा छापने वाले की गलती से कुछ कसर रह गई। ईश्वर करे तो दूसरे परचे मे सारी निकल जावेगी।"

रोजतुल-तालीम के प्रत्येक अक के "मास्टहैड पर सबसे ऊपर सूर्य की आकृति अकित है, जो प्रकाश और ज्ञान का प्रतीक है। पत्र के विविध विषय मास्ट हैड के साथ चारो ओर छोटे-छोटे वृत्तो मे अकित किये गये हैं। यह विषय सूची पर्याप्त व्यापक है। इसमें इतिहास, साहित्य, और ज्ञान-विज्ञान की विविध विधाओं का समावेश है।

जयपुर के सार्वजनिक पुस्तकालय मे इस पत्र की जो फाइल उपलब्ध है उसमें इस साप्ताहिक पत्र के अक क्रमाक 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 तथा 31

सकलित है। अक 31 की तिथि 20 अप्रैल, 1857 सोमवार अकित है, जिससे यह स्पष्ट है कि यह पत्र कम से कम डेढ दो वर्ष तक तो अवश्य ही बराबर प्रकाशित हुआ होगा। प्रथम अक के बाद के जितने भी अक उपलब्ध हैं, वे सब प्रति सोमवार को नियमित रूप से निकले हैं।

पत्र के 6 अक्टूबर, 1856 के तीसरे अक मे एक समाचार छपा है, जिसका शीर्षक है 'खबर बन्द हो जाने अखबारो की' इस समाचार मे कहा गया है कि 'इलेक्टिक टेलीग्राफ एन्ड कोरियर' तथा 'हिन्दू हारबिन्जर' नामक दो पत्रो का प्रकाशन बहुकुम सरकार गवरमिन्ट के बन्द कर दिया गया है, क्योकि वे "उत्तम पुरुषों की निन्दा और कुटिलता, ईर्ष्या, छापते । दूसरे अखबार के 'महोतमित' पर पहले 100 रुपये जुर्माना भी हुआ था, फिर भी वे न माने।" समाचार पर टिप्पणी करते हुए सम्पादक ने कहा है —

'विचार करना चाहिए कि जब अग्रेजी महोतमिमा का ही यह हाल है तो हिन्दुस्थानी अखबार वालो को अत्यन्त खबरदारी करना उचित है और और अब भी कितनेक अखबार वाल निश्चय किये बिना ही हर एक मनुष्य की निन्दा छापते है सो कदाचित यह वार्ता उनके कानो मे नही पहुची अथवा वे निर्भय हैं। अब उनको यह उचित है कि सत्य वृत्तान्त लिखे और निन्दा करना अत्यन्त अनुचित समझें।"

उक्त टिप्पणी इस तथ्य की परिचायक है कि 'रोजतुल तालीम' का सम्पादक सरकार विरोधी समाचारो के छापने के प्रति बहुत सतर्क था और जो हालात उस समय थे, उनके प्रति पूर्ण सजग था।

पत्र के उपलब्ध अको से यहा उस वैविधापूर्ण सामग्री की एक झलक प्रस्तुत की जाती है, जो इस पत्र के कलेवर को सवारती थी।

'रोजतुल तालीम' के प्रत्येक अक के मुख पृष्ठ पर मास्टहैड के नीचे तिथि तथा बार अकित करने के बाद सबसे पहले 'इश्तहार' के रूप मे अखबार का अपना ही परिचय इस दाहे के साथ आरम्भ होता है।

'राजपूत वरदेश की खबरें पाराकार।
पान करऊ बुध विबुध मति भयो अमिय अखबार।

"इस अखबार को लेने वाले उत्तम पुरुषो को विदित होना चाहिये कि पेशगी साल के 9/– बाद साल के 12/– इस माफिक कीमत भेजें और महसूस डाक का जिम्मे खरीददार के होगा और इस हमारे राजपूताने अखबार मे वास्ते उपकार सर्व जो कोई कुछ खबर या जीवन वार्ता लिखवावेगा उनसे कुछ नही लिया जावेगा और जो कोई अपने उपगार वास्ते लिखवावेगा उनसे एक पक्ति के दोय आने इस माफिक लिया जावेगा—"

पत्र के उपलब्ध अंकों की सामग्री का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि इसका उद्देश्य मुख्यतः देश-विदेशों के समाचारों से पाठकों को अवगत कराना, उनका मनोरंजन करना तथा उनके सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना था। पत्र के प्रारम्भिक अंकों में हास्य-विनोद तथा नीति विषयक सामग्री के लिए एक निश्चित स्थान सुरक्षित था, जिसका निर्वाह आगे चलकर नहीं हो सका। एक अक्टूबर, 1856 के अंक में हास्य-विनोद शीर्षक के अन्तर्गत यह लतीफा प्रकाशित किया गया है :

"ईरान देश में एक गोरी बाजार में आया। एक हलवाई की दुकान में थाल हलवा तरा देखा और बलात्कार से हलवा थोड़ा सा उसमें से उठा लिया। हलवाई ने खास लेने वास्ते हलवा, उसका हाथ जबरदस्ती से पकड़ा, परन्तु गोरी ने चालाकी अपनी से हलवे को तो मोंह में रख लिया और कहने लगा कि ले अब हल्वा तेरा रहा, मेरा हाथ खाली दे खाकर।"

इसी प्रकार 6 अक्टूबर, 1856 के अंक में "हित उपदेश" शीर्षक से सत्य-भाषण के महत्व पर निम्नलिखित नीति वचनों को स्थान दिया गया है -

"........... सत्य बोलने से वर्तमान लोक में पुरुष का अधिकार और कीर्ति वर्द्धमान होते हैं और परलोक में भी पुरुष को सत्य वचन ही उपकारी होता है। सत्य-वचन से यहां बहोत-बहोत फायदे होते हैं, यथा जो मनुष्य सत्य वक्ता है, उसके वचन में सर्व को विश्वास होता है और वह पुरुष सर्व को प्रिय लगता है और उसके वचन के सुनने में सर्व का मन और कान उत्साह करते हैं, परन्तु यह बड़े फिकर की बात है कि बुरे मनुष्य रात्रि-दिवस असत्य बोलने का ही अभ्यास करते हैं।"

पत्र में पाठकों के मनोरंजनार्थ विचित्र एवं अद्भुत घटनाओं के समाचार छापने का प्रयत्न किया जाता था। 20 अप्रैल, 1857 के अंक में एक ऐसे ही समाचार में कहा गया है कि मद्रास में "तिलचिड़ी से तीन कोस पर मुरकड्डा गांव में' एक हिन्दू के घर में ऐसा लड़का उत्पन्न हुआ है, जिसके सिर में नेत्र और उसके साथ सुर्रा लगा हुआ था और मुख दांतों से पूर्ण था तथा सारे शरीर पर रीछ के से बाल थे। वह दो दिन तक जीवित रह कर मर गया।"

पत्र में महत्वपूर्ण व्यक्तियों और उनके परिवारों से सम्बन्धित जन्म-मरण और परिणय के समाचारों को आज की ही तरह ही प्रमुखता दी जाती थी। 5 अक्टूबर, 1856 के अंक में 'खबर अंपुर' के शीर्षक से कहा गया है कि 'नवाब विनायत अली खां साहब फौजदार राज जयपुर के रुखसत लेकर शाहजिहानाबाद शाहजहांबाद को जायेंगे और वहां वजीर की पोती से ठेह शरतों के साथ विवाह करेंगे और वर्णन इन शर्तों का आगे के पत्र में लिखेंगे।"

इस प्रकार के रोचक समाचारों के साथ-साथ पत्र में देश-विदेशों और विशेष रूप से राजपूताना की विविध रियासतों के जन-जीवन की हलचल से सम्बन्धित

समाचार निरन्तर प्रकाशित होते थे। विवादग्रस्त अथवा राजनीतिक समाचारो को स्थान न देकर सृजनात्मक एव ज्ञानवर्द्धक समाचारो की बहुलता पत्र के हर अक मे दृष्टिगोचर होती है। कुछ बानगी नीचे प्रस्तुत है :—

खबर हिरात देश की

लाहौर के समाचार पत्र से ज्ञात हुआ कि हिरात मे ईरान के बातशाह का हो गया और ईशा खा जो मुख्य प्रधान हिरात का था, सो मारा गया। परन्तु देहली गजट से ऐसा मालुम हुआ कि हिरात मे अब तक ईरान के पातसाह का राज नही हुआ है और ईशा खां भी हाल जीता है। हमारी बुद्धि मे समाचार दिल्ली के सच है और लाहौर के मिथ्या हैं।

[20 अक्टूबर, 1856]

खबर जैपुर

इन दिनो मे यहा वर्षा बहुत जोर से हो रही है और परमेश्वर की कृपा है। प्रथम तो महामारी का उपद्रव यहा अत्यन्त ही रहा और आवाज रोने पीटने की हर तरफ और प्रति घर मे मचि रही थी। परन्तु अब ईश्वर की कृपा से अब तो इस महारोग बला से प्रजा ने छुटकारा पाया है, फेरि भी प्रजा मे ताव-तिजारी जारी है। बैद्य-हकीमो का मान जारी है। कपतान ईडन साहब बहादुर जो कि अजट जैपुर की रियासत के मुकर्रर हुए हैं, यहा आने वाले हैं। इस महीने भीतर-भीतर आ जावेंगे, फेरि इस विषय की उतम वार्तागो से हम विद्वानो को वाकिफ करेंगे।

[1 अक्टूबर, 1856]

ऐसा प्रतीत होता है कि राजपूताना के प्रमुख नगरों मे पत्र ने अपने कुछ सवाददाता भी नियुक्त कर रखे थे, जैसा कि 'खबर भरतपुर' शीर्षक समाचार से ज्ञात होता है :

'एक कारिस्पाडेंट स्थान भरतपुर से लिखते है कि इस इलाके मे ऐसी अत्यन्त वर्षा हुई कि कई मनुष्यों ने भी कभी न देखी न सुनी कि चारो तरफ शहर के जल आदमी के प्रमाण मे अधिक भरा हुआ है और शहर मे आने तथा बाहर जाने का मार्ग सडक पर होके व-हरा है (बह रहा है) जो वह सडक नैं होय तो सम्पूर्ण शहर मे जल भर जाता और सब मनुष्य शहर मे दुख पात और डीग मे इस प्रकार का जल भरा है कि साहब अजट बहादुर ने दो सहस्त्र बेलदार वास्ते हर तरफ जल के वहाँ देने कू नियत कीये हैं और प्रत्येक बेलदार का च्यार-च्यार रुपये मासिक ठहरा है और राजा साहब जसवंत सिहजी की अवस्था छह बरस की ही है परन्तु पिछली रात के चार बजे के समय जागते हैं और शौच व दत छावनादिक कर्म से निवृत हो के घोडे या बग्घी पर सवार हो के सैर करने कूं जाते हैं और जब तलक इच्छा होवे तब तलक हवाखोरी करते हैं उस पीछे महले मे दाखिल होकर बालक्रीडा मे

ग्रासक्त रहते हैं, परन्तु सर्व काम मे प्रवीण है और अभी मुकदमात तो सुनते नही परन्तु बहोत बुद्धिवान है"..........दिन के आठ बजे से अर्द्ध रात्रि पर्यन्त महोकम अजटी मे प्रजा का कार्य करते हैं और शनेश्चरवार के दिन सबकी अरजिया सुनते है".........

राज्याश्रित पत्र होने के बावजूद रोजतुल तालीम आवश्यकता पड़ने पर आसपास के राजाओ के अनीति-कर्म पर प्रहार करने से भी नही चूकता था। पत्र के पाचवें अक मे एक समाचार 'खबर किशनगढ़ के निकट अजमेरि' शीर्षक से छपा है, जिसमे किशनगढ के राजा द्वारा सिलेमाबाद स्थित श्रीजी के मन्दिर पर कब्जा करने की अवाछित कार्यवाही पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की गई है।

इसी अक मे खबर पेशावर, खबर, चीन, खबर रगून और खबर एशिया के शीर्षको के अन्तर्गत पाठको को अन्तर्राष्ट्रीय घटना चक्र से भी अवगत कराया गया है, जो अखबार के वर्गीकृत विषयो मे 'जिक्रे-अबालीम' या महाद्वीपों के समाचारो के अन्तर्गत आता है। यह समाचार सम्बन्धित महाद्वीपो या देशो के अखबारो के हवाले से दी गई है जिनमे 'वापना' 'इसलिकमैल' 'ओवरलैण्ड' आदि अखबारो के नाम आये है, जो इन समाचारो की प्रमाणिकता को पुष्ट करते हैं।

'रोजतुल तालीम' की सामग्री की उक्त वैविध्यपूर्ण बानगी यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि जो लोग राजस्थान मे पत्रकारिता का प्रादुर्भाव सरकारी राजपत्रो और गजटो से मानते हैं, वे निश्चय ही भ्रान्ति के शिकार हैं।

आत्माभिव्यक्ति की दुर्दशीय कामना से प्रेरित होकर लोकधर्मी पत्रकारिता की नींव राजस्थान मे 'रोजतुल तालीम' जैसे पत्रो ने आज से सवा सौ वर्ष पूर्व ही रख दी थी।

जगहित कारक

'रोजतुल तालीम' की तरह अजमेर से हर शनिवार को प्रकाशित होने वाला 'जगहितकारक' भी पण्डित शिवनारायण के एहतनाम से 'लीथो' पर ही छपा करता था। इस साप्ताहिक की एक प्रति 'नवर 69 अजमेर 3 जनवरी सन् 1863 ई० पौष सुदी 14 शनिवार जिल्द 3' जयपुर के रामचरण प्राच्य विद्या सग्रहालय मे सुरक्षित है। इस एक पूरी प्रति के अलावा दो प्रतियां और है। किन्तु दोनों ही में पहले चार-चार पृष्ठ गायब है। उनमे प्रकाशित सामग्री से यह स्पष्ट है कि ये दोनों अक भी इस अखबार की तीसरी जिल्द अर्थात् तीसरे वर्ष मे ही प्रकाशित हुये होगे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इस पत्र के प्रकाशन का समारभ सन् 1961 मे हुआ होगा। पत्र का परिचय इस प्रकार अंकित है :

यह समाचार पत्र प्रति अठवाडे एक बार शनीचर के लिए छपता है।

"समाचार पत्र का मोल—माहवारी एक आने, पेशगी छ महीने का सवा रुपया पेशगी एक वर्ष के 2 रुपये। छापने का मोल प्रति पक्ति एक आना (यह विज्ञापन की दर है)।

इसके बाद ग्राहको को यह सूचना है :

"जो कि समाचार पत्र जारी हुए को एक वर्ष से अधिक हो गया है, इसके लिये अवलोकन करने वालो से प्रार्थना है कि जिन साहिबो ने पहले रुपया नही भेजा है अब कृपा करके महसूल समेत भेज देवें।"

इस इबारत से स्पष्ट है कि "जगहितकारक" की भाषा लगभग "रोजतुल तालीम" की जैसी ही थी। "देहली गजट" से उद्धत इसका एक समाचार जयपुर के महाराजा रामसिंह की आगरा-यात्रा का ब्यौरा इस प्रकार देता है

जैंपुर के महाराज

"29 अप्रेल (1863 ई०) को श्रीयुत महाराजा साहिब बहादुर अपने प्रधान पण्डित शिवदीन के साथ आगरे की वैंधक की पाठशाला मे पधारे और उसको देखकर के बहुत प्रसन्न हुए। वे चाहते हैं कि ऐसी ही एक वैंधक की पाठशाला जैंपुर मे भी तैयार हो। बिदा होने के समय महाराजा साहिब ने एक हजार रुपये इस पाठशाला के लिये दिये और कहा कि पाठशाला के प्रिंसिपल डाक्टर पूलेफैर साहिब बहादुर जिस भाति उचित समझें पाठशाला की वृद्धि के लिये रुपये खरच करे।"[1]

जगहितकारक के समाचारो मे सम्पादक की अपनी सम्मति या टिप्पणी प्राय दृष्टिगोचर होती है। अजमेर मे दास मोल लेने के अपराध मे किसी ठाकुर को दण्डित किये जाने का एक समाचार अपनी टिप्पणी के साथ सम्पादक ने निम्न शब्दो मे प्रकाशित किया है ·

"यहा एक ठाकुर पर गुलाब मोल लेने के दोष मे पांच सो रुपये का जुर्माना हुआ। ठाकुर साहिब के कामदार के लिए भी कि जो इस सौदे मे शामिल था उचित दण्ड विचारा गया। कदाचित् हिन्दुस्थानी सरदार इसको कठिन दण्ड समझें परन्तु अंग्रेजी कानून के अनुसार दड यह कुछ भी कठिन नही है अर्थात् अंग्रेज गुलामी की रीति बन्द करने के लिए अपने प्राण भी देते हैं। इसका कारण यह है कि अंग्रेज साहिब जानते हैं कि मनुष्य मनुष्य का दास नहीं है वरन् केवल ईश्वर का ही दास है परन्तु ईश्वर ने भी मनुष्य को स्वतन्त्र पैदा कियाहै तो इस दशा मे मनुष्य, मनुष्य को अपना दास कैसे बना सकता है।"

अंग्रेजी राज म उन दिनो कतिपय प्रान्तो मे पक्की सडकें भी बन रही थी और रेल भी निकाली जा रही थी। देश के जिन भागो मे रेल निकल गई थी, वहा

---

1 श्री नन्दकिशोर पारीक के सौजन्य से प्राप्त सामग्री के आधार पर।

के समाचार पढ सुनकर राजस्थान मे भी इस सुविधाजनक और तेज सवारी के लिए जबर्दस्त उत्कण्ठा जाग गई थी और अंग्रेजी राज का यह वरदान प्राप्त करने के लिए जागरूक लोग बडे लालायित थे। "जगहित कारक" इस लालसा को इस प्रकार व्यक्त करता है :

"देखते हैं कि और देशो मे लोहे की सडकें तैयार हो गई हैं। लोग हजारो तरह के अनगिनत लाभ उठाते हैं। एक इन्द्रजाल की सी रचना है। जहा जी मे आया कोई घटे मे चाहे जिस नगर की सैर करते हैं.........क्या यह सब देश इस रेती के बीच ऐसा छुटा पडा रहेगा कि जैसा समुद्र मे कोई उजाड टापू पडा रहता है। यह आस है कि इस विषय मे हमारे हाकिम जहा तक हो सकेगा परिश्रम मे कमी न करेंगे। कदाचित राजपूताने के राजा और सरदार या तेल की कोई कम्पनी सरकार के विचार से राजपूताने मे लोहे की सडक के बनाने की राह निकाल सकें इन नगरो मे होकर लोहे की सडक निकले तो बहुत कुछ लाभ हो। व्यापार इतना बढे कि जो अभी ध्यान मे भी नही आ सकता। सिवाय इसके बम्बई और अहमदाबाद के व्यापारियो को भी अत्यन्त लाभ होगा।"[1]

1857 मे स्वाधीनता सग्राम मे पराभूत होने से देश मे जिस प्रकार का वातावरण बन गया था, उससे राजस्थान भी पूरी तरह प्रभावित था। अंग्रेजो के बुद्धि-चातुर्य और वैज्ञानिक उपलब्धियो से सारा जनमानस ऐसा अभिभूत था कि सिलाई मशीन जैसी मामूली चीज भी उन्हे अचम्भे मे डालने के लिए काफी थी। 3 जनवरी के अक मे मद्रास के हवाले से छापी गई यह खबर इस दृष्टि से अवलोकनीय है :

सिलाई मशीन का अजूबा

"यहा विलात से सीने की बहुत कलें (मशीनें) आई है। इन कलों मे कपडा लगा देते हैं और वह आप से आप सिल जाता है। एक मिनट मे एक हजार टांके यह कल लगाती है। वाजिबी काम के लिए एक इंच पर चौदह टाके काफी होते हैं। तो एक मिनट मे यह कल अनुमान दो गज के सिलाई करती है। इन कलो का मोल सौ रुपये है। हिन्दुस्थान मे स्त्रिया इन कलो के द्वारा कपडो का तैयार करना बहुत शीघ्र सीखा करती है। इसमें कुछ परिश्रम नही चाहिये। बहुत सहज से कपडा सिल जावेगा। इंगलिस्थान मे इन कलो का बहुत प्रचार है और एक आवश्यक्ता से गिनी जाती है। यह कल देखकर मदरास के दर्जी आश्चर्य के समुद्र मे डूब रहे हैं। कोई कोई साहिब कि जो कल विद्या नही जानते ऐसी बातें सुनकर कभी कुछ सदेह करते हैं। परन्तु इन साहिबो से प्रार्थना है कि कल का सिला हुआ कपडा यहाँ

1. जगहितकारक, 3 जनवरी, 1963

(अजमेर) पाठशाला मे विद्यमान है और यह कपड़ा अजमेर पाठशाला के सुप्रीडेंट श्रीयुत गोलडिंग साहिब बहादुर विलायत से लाये थे और बहुधा पाठशाला के विद्यार्थियो को दिखाया था।

अंग्रेजी राज ने सामाजिक आचार-व्यवहार मे भी परिवर्तन की लहर उठाना आरंभ किया, जो इस समाचार मे प्रतिबिम्बित है, जिसका शीर्षक है रीति का बध करना।

'कलकत्ते के न्यूजीलियर समाचार पत्र के सम्पादक लिखते हैं कि सितारे (सतारा महाराष्ट्र) के ब्राह्मणों म से कितने ही पंडितो ने सलाह करके यह विचार किया है कि जो लड़का सोलह बरस की अवस्था से कम और लड़की आठ बरस की अवस्था से कम हो तो उसका ब्याह नही करना चाहिये और जो कोई इस सलाह से विपरीत ब्याह करे उसे जाति बाहर करना चाहिये। यथार्थ म वहा के पंडितो का यह विचार बहुत ठीक और उचित है। बहुधा एसा होता है कि हिन्दू जाति मे जो छोटे बच्चो का ब्याह कर दिया जाता है तो उनम से पहले बच्चे शीतला आदि रोगो म मर जाते है और उनके मा बापो को उनके मरने और नया विवाह करने और धन की हानि से बहुत दुख होता है सिवाय इसके छोटी उमर मे ब्याह करने से और बहुत सा बिगाड़ है।"

इसमे शक नही कि नये विदेशी शासको के बुद्धिकौशल और वैज्ञानिक विकास की चकाचौंध मे 1863 ई० के भारतवासी और राजस्थान के लोग हतप्रभ थे फिर भी अपनी स्वाधीनता जाती रहने की कसक शिक्षित और जागरूक लोगो मे रह रहकर उठती थी। 3 जनवरी 1863 के जगहित कारक' मे 'यूनान देश शीर्षक एक टिप्पणी इसी प्रकार की है। इसका एक अश है

'कुछ दिनो से एक जर्मनी का शाहजादा (अर्थात् विदेशी) ओथो नामी यूनान मे राज्य करता था। इस राज्य की यह दशा हुई कि जैसे बच्चो का खेल का सामान होता है। एक पल मे सब वैभव और बादशाही ऐश्वर्य जाने कहा गया। इतिहास से अच्छी भाति विदित है कि यूनानी पहले बडे हौसले के मनुष्य थे पर तु एक अवधि से उनका हौसला कुछ तुच्छता की ओर फिसल पडा था (भारत मे भी तब क्या ऐसा ही मालौल नही था?) परन्तु असली हिम्मत कहा जाती है। फिर भी अपना आप सम्भाला वीरता का फिरजोशी हुआ और हौसले की दृष्टि फिर ऊ चाई पर आई। अनीति को सेवने और अन्याय को सिर पर उठाने मे बहुत ही ग्लानि पैदा हुई और नीति और अन्याय को प्राप्त करने की इच्छा मे मन लगने लगा। याद रहे कि जब ऐसा सामान होता है तो अन्याय का निशाना आप नही रह सकता प्रजा ने एक मन होकर विचार किया कि बादशाह को राजगद्दी से उतार देना चाहिये। बुद्धि और मूर्खता म सदा बहुत अन्तर होता है।

सम्भव नही कि अन्धेरा और चान्दना एक सा हो। मूर्खता जब मुह खोलके बोलती है तो गधे की तरह बहुत सा गुल मचाती है और बहुत धूल उडाती है परन्तु जब बुद्धि कोई बात प्रकट करती है तो ऐसा मोती सा पिरोया जाता है कि मूर्खता को ठीक भी नही पडती.........देखिये ! यूनानियो ने बादशाह ओथो को ऐसी सुगमता के साथ गद्दी से उठा दिया कि जिसके दृष्टान्त सब इतिहासो मे भी थोडे ही मिलें ....

राजस्थान जैसे प्रदेश से निकलने वाले एक साप्ताहिक मे 1863 ई० मे भी इतना सब कुछ साहसपूर्वक प्रकाशित किया जा सकता था, यह भारतीय पत्रकारिता के लिये सचमुच गौरव की बात है।

सज्जन कीर्ति सुधाकर

महर्षि दयानन्द के प्रभाव और प्रेरणा से मेवाड के महाराणा सज्जनसिंह ने विशुद्ध हिन्दी का यह साप्ताहिक सन् 1879 मे प्रारम्भ करवाया। रामरतन भटनागर ने अपने शोध ग्रन्थ मे इसके प्रथम प्रकाशन का वर्ष सन् 1876 दिया है, जो भ्रामक है। इस शोध प्रबन्ध के लेखक ने उदयपुर के सरस्वती भण्डार मे इस पत्र की जो पुरानी जिल्दें देखी हैं, उनसे यह भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि इसका प्रथम प्रकाशन 1879 मे ही हुआ था।[1]

10 जुलाई, 1922 के अक से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' ने अपने जीवन के 43 वें वर्ष को सानन्द समाप्त कर इसी अक से 44 वे म प्रवेश किया था।

उक्त घोषणा से यह पूरी तरह पुष्ट हो जाता है कि पत्र का प्रारम्भ 1879 मे हुआ था और सन् 1922 की 10 जुलाई को उसे प्रकाशित होते हुए 43 वर्ष पूरे हो चुके थे।

'सज्जन कीर्ति सुधाकर' के उक्त अक के मुख पृष्ठ के निम्न अश से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पत्र के प्रकाशन का उद्देश्य क्या था :—

"श्री मन्महाराजाधिराज महिमहेन्द्र यावदार्यकुल कमल दिवाकर श्री मदेकलिंगवतार विविधविरदावलीवदित श्री 108 श्री महाराणा सज्जनसिंह जी की आज्ञानुसार सवत 1936 मे यह समाचार-पत्र सत्कर्मरूपी पीयूष की प्रवृत्ति और असत्यकर्मरूपी विष की निवृत्ति के निमित्त उदयपुर मे उदय को प्राप्त हुआ।

'सज्जन कीर्ति सुधाकर' के मुख पृष्ठ पर मेवाड का राज्य चिन्ह बराबर मुद्रित होता था, जिसमे सूर्य की आकृति के साथ दायी और एक क्षत्रिय की आकृति और बाईं ओर एक भील की आकृति अकित रहती थी। इसका वार्षिक मूल्य तीन रुपये था।

---

1. सज्जन कीर्ति सुधाकर, 10 जुलाई, 1922, पृ० 1

सामग्री चयन

'सज्जन कीर्ति सुधाकर' मे सामग्री का सकलन बहुत सुरुचिपूर्ण होता था। साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों पर लेखो के अतिरिक्त इसमे देश-विदेश के दिलचस्प समाचार, खेल-कूद प्रतियोगिताओं की सूचनाए, जन्म मरण की खबरें तथा बाजार-भाव आदि प्रकाशित होते थे। यद्यपि सामग्री का काफी अश बाहर के पत्रो से भी उद्धृत होता था, किन्तु उस सकलन मे सुरुचि के दर्शन बराबर होते थे।

लगभग 50 वर्ष तक इस रूप मे चलते रहने के बाद इसका स्वरूप नितान्त सरकारी गजट का हो गया था और इसमे अग्रेजी तथा हिन्दी मे सरकारी सूचनाओ और विज्ञप्तियो की भरमार रहने लगी थी। राजस्थान के निर्माण के समय तक इस पत्र का प्रकाशन बराबर होता रहा।

उस युग मे जब सामन्ती वातावरण पूरी तरह व्याप्त था और रियासती शासन मे लोक-शिक्षण का कोई उदात्त उद्देश्य सामने नही था, 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' की सामग्री अन्य रियासती राज पत्रों की तुलना मे निश्चय ही अच्छे स्तर की होती थी। प्रारम्भ मे इस पत्र के सम्पादक पडित वशीधर वाजपेयी थे। बाद मे इसके सम्पादको मे हेर फेर होता रहा।

देश हितैषी

'सज्जन कीर्ति सुधाकर' के प्रकाशन के पीछे महर्षि दयानन्द की सशक्त प्रेरणा थी। उन्हीं की प्रेरणा से अजमेर मे परोपकारिणी सभा का गठन हुआ और वैदिक मन्त्रालय की स्थापना की गई। महर्षि दयानन्द से स्वधर्म, स्वराज्य, स्वभाषा और स्वदेशी का जो मन्त्र फूका, उसे प्रचारित करने के लिए आर्य समाजी, पत्रकारिता ने जन्म लिया। 'देश-हितैषी' राजस्थान मे इस पत्रकारिता का अग्रणी बना। देश हितैषी का परिचय उसके मुख पृष्ठ पर निम्न शब्दो मे प्रकाशित किया जाता था

"एक मासिक पत्र जो प्रतिमास की पहली तारीख को मुन्नालाल शर्मा मत्री के प्रयत्न से आर्य समाज अजमेर की आज्ञानुसार प्रकाश होता है, जिसम वेदादि सत्य शास्त्रानुकूल सनातन धर्मोपदेश, देशोन्नति कारक व्याख्यान और समाचार तथा प्रेरित पत्रादि निर्पक्षता युक्त सरल भाषा मे मुद्रित होते हैं।"[1]

'देश-हितैषी' स्वदेश के कल्याण के लिए समर्पित पत्र था और महर्षि दयानन्द की राष्ट्रोद्धारक विचार-धारा को अपनाने के लिए अपने पाठको से उसका अनुरोध प्रत्येक अक मे इस प्रकार प्रकट होता था :

---

1. देश-हितैषी, आषाढ सवत् 1939, अक-3, पृष्ठ-1

अप्रीति रीति कुरीति छोडो आर्य्यपन मे चित्त धरो।
बहु दिवस सोये मत्त हो, अब सभ्यता मे रुचि करो।
यह देश-हितैषी है चली, तुम देश-हितैषी जन रहो।
परि प्रीति उन्नति देश चाहो, देश-हितैषी कर गहो।

अंग्रेजी सरकार ने 1878 मे भारतीय पत्रकारिता के दमन के लिए जो काला कानून लागू किया था और जिसके कडे क्रियान्वयन के लिए प्रेस कमिश्नर का पृथक कार्यालय स्थापित किया गया था, वह लार्ड रिपन के भारत-आगमन के साथ ही समाप्त हो गया। ब्रिटेन मे लार्ड ग्लैडस्टन की सरकार से रिपन को यह निर्देश दिये गये थे कि वह सुधार और ताल-मेल की उदार नीति अपनाये तथा भारतीय भाषाओं के समाचारों को स्वतन्त्रता प्रदान करे। परिणामतः 1881 मे प्रेस-कमिश्नर का पद समाप्त कर दिया गया और 1882 मे वह 'गैगिंग एक्ट' भी समाप्त कर दिया गया। प्रेस की इस स्वाधीनता पर 'देश-हितैषी' ने लार्ड रिपन को साधुवाद देते हुए अपनी प्रतिक्रिया निम्न शब्दो मे व्यक्त की :[1]

लार्ड रिपन की जै। लार्ड रिपन की जै

हे महामान्यवर आपकी सदा जै होय। आपने इस भारत भूमि मे पदार्पण कर सदा के लिए कीर्ति स्तम्भ खडा कर दिया। महाशय हमारी जिन्हा इस दुष्ट प्रेस एक्ट की प्राबल्यता से ऐसी सूखकर लकडा गई थी कि 'ए' के स्थान पर 'डा' ही उच्चारण होता था और देही भी क्षीण होने लगी थी कि इसी अवसर मे आपने हम लोगो को ऐसा अमृत-पान कराया कि अब पुनः हरे-भरे हो जावे। परन्तु महाशय विचारणीय है कि जो बहुत काल की चाह लगी हुई होती है, उसका तत्काल ही अच्छा होना दुर्लभ है यावत् उसको कोई गुणकारी परीक्षित औषधि प्राप्त होय।

देश-हितैषी की भाषा शुद्ध हिन्दी होती थी और जन-जीवन की समस्याओं पर उसकी दृष्टि पूरे उत्तरदायित्व के साथ केन्द्रित थी। अजमेर-मेरवाडा क्षेत्र मे सन् 1882 की वर्षा ऋतु मे मेघों के रूठ जाने के संदर्भ मे प्रकाशित यह समाचार इस दृष्टि से अवलोकनीय है :[2]

अजमेर में पवन परीक्षा

"इस नगर मे आषाढ़ मास तक वर्षा न होने से यहा भी प्रजा मे बहुत कुछ खलबली मच गई थी, सब कोई वर्षा की आस से निराश हो दुर्भिक्ष पडने की भय से

1. देश-हितैषी, अंक 3, खण्ड 1, पृष्ठ 4–5
2. ,, अंक 5, खण्ड 1, पृष्ठ 7

कोई कहता था कि भ्रातृगणो ! अकस्मात् कहीं इस कहावत मे कि अजमेर खरीफ जहां रवी न खरीफ' ईश्वर इसी साल मे आखो से न दिखावे। यह समय देख यहां के बड़े-बड़े ज्योतिषी और नगर निवासी वा साधु लोग इत्यादि आषाढ शुक्ला 15 म बजरंगगढ़ अर्थात् एक छोटे से पहाड़ पर (जिस पर एक हनुमान जी का मन्दिर है) पवन परीक्षा के कारण इकट्ठे हुए। इसका विज्ञापन भी एक दिन प्रथम ही दे दिया गया था। अन्त मे उक्त ज्योतिषियो ने पवन परीक्षा अनुकूल यह विचार निश्चय किया कि अब का सवत् अच्छा नही। अग्निकोण की वायु चलती है, जिससे वर्षा का न होना और दुर्भिक्ष पडने का अनुमान प्रकट होता है।"

आगे चलकर नगर-निवासियो द्वारा अन्न सग्रह के प्रयत्न, आर्य समाज के पत्रो पर आक्षेप, तथा बाद मे श्रावण सुदी–2 से निरन्तर वर्षा होने के समाचार हैं।

'देश हितैषी' मे राजस्थान तथा बाहर से प्राप्त लोक-रुचि के समाचार भी निरन्तर प्रकाशित होते थे। अजमेर मे पुलिस की असावधानी से एक अपराधी की मृत्यु हो जाने पर पत्र ने अपनी टिप्पणी इस प्रकार प्रकाशित की थी।[1]

"एक माली ने एक स्त्री को मार कूप मे फेंक दिया। जब मृतक शरीर जल पर आया, तो घातक की खोज करने लगे। अन्त मे घातक पकडा गया। जब उससे पूछा गया तो, उसने कहा, हा मैंने मारी है। पुलिस ने कहा कि इसका गहना अर्थात् आभूषण कहा है, उत्तर दिया कि ख्वाजे साहब के बुलन्द दरवाजे पर रखे हैं। इतना सुन घातक को ले बुलन्द दरवाजे पर पहुचे। थानेदार और दो चार कान्स्टेबिल के साथ उक्त दरवाजे पर चढ गये जो 50 फुट से जिहादह ऊचा होगा, वहा क्या था ? घातक दरवाजे की मुडेर पर चढ नीचे गिर पडा और प्राण त्याग दिये। यह सब दोष पुलिस का है कि ऐसे घातक को बिना हथकडी बेडी उक्त स्थान पर ले गये। वाह री पुलिस और काम मे त्रिकालदर्शी यहा पर ऐसी भोली भाली। न जाने क्या कारण था ?"

सामग्री की उक्त बानगी यह प्रमाणित करती है कि राजस्थान मे पत्रकारिता लोकधर्मिता की ओर शनै शनै किस दृढता से अग्रसर हो रही थी।

राजपत्रों का प्रकाशन

एक ओर जहा लोक चेतना के लिए प्रतिबद्ध पत्रो का श्री गणेश हो चुका था वहा दूसरी ओर प्रशासनिक आवश्यकताओ से विवश होकर अग्रेजी शासन के अनुकरण पर यहा के राजाओ ने अपनी अपनी रियासतो से सरकारी गजट अथवा राजपत्रो के प्रकाशन भी आरम्भ करवाये।

---

1 देश-हितैषी, अक 5, खड 1, पृष्ठ 20

अब तक उपलब्ध सामग्री के अनुसार इस शृंखला मे सम्भवत सबसे पहले सन् 1866 मे जोधपुर से मारवाड गजट का प्रकाशन हुआ। यह पत्र 1912 मे बन्द हो गया। यह द्विभाषी पत्र पहले बाबू हीरालाल के सम्पादकत्व मे और बाद मे बाबू डोरीलाल उर्फ कृष्णानन्द (हैड मास्टर, दरबार स्कूल) के सम्पादकत्व मे प्रकाशित हुआ।[1] आधी सामग्री उर्दू म और आधी सामग्री हिन्दी मे देने वाले इस पत्र मे मुख्यत सरकारी आज्ञाए, विज्ञप्तिया और इश्तहार प्रकाशित होते थे। इसी वर्ष जोधपुर से 'मुहब ए-मारवाड' का राजकीय सरक्षण मे प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस पत्र का हिन्दी अ श 'मरूधर मित्र' के नाम से प्रकाशित होता था और इसमे दो कालमो म लेख तथा समाचार सूचनाए प्रकाशित की जाती थी।[2]

1878 मे जयपुर से 'जयपुर गजट' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। बाबू महेन्द्रनाथ सेन के सपादकत्व मे प्रकाशित यह पत्र महाराजा रामसिंह के सरक्षण मे उन्ही की प्रेरणा से निकला।

1869 मे उदयपुर से 'उदयपुर गजट' का प्रकाशन आरम्भ हुआ।

राजस्थान मे पत्रकारिता के अभ्युदय और विकास का अनुसन्धान करने वाले विद्वानो के सम्मुख सबसे बडी कठिनाई यह रही है कि पुराने पत्र पत्रिकाओ की कोई व्यवस्थित फाइलें सार्वजनिक पुस्तकालय अथवा निजी पुस्तकालयो म उपलब्ध नही हैं। फिर भी इस सम्बन्ध मे प्रयत्न करने पर प्रदेश के विभिन्न भागो मे कुछ सस्थाओ और व्यक्तियो के निजी सग्रहो से बहुत प्रयत्न करने पर प्रस्तुत लेखक को कुछ दुर्लभ सामग्री प्राप्त करने मे सफलता मिली है। इस सामग्री के अवलोकन के आधार पर यहा उन कतिपय पत्रो के बारे मे विस्तार से चर्चा करना उपयुक्त होगा, जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

मारवाड गजट और मुहिबे मारवाड

बाबू बालमुकुन्द गुप्त के अनुसार महाराजा तख्तसिंह के शासन-काल मे, जब रावराजा मोतीसिंह मारवाड राज्य के मुसाहिब थे, उनकी मजूरी से वैशाख सु० 3 सवत् 1923 अर्थात् सन् 1866 मे जोधपुर से दो पत्र प्रकाशित किये गये। इनमे से पहले अखबार का नाम उर्दू मे 'मुहिबे मारवाड' और हिन्दी मे 'मरुधर मित्र' था। दूसरे अखबार का नाम 'मारवाड गजट' था।[3]

---

1. रामरतन भटनागर, राइज एण्ड ग्रोथ आफ हिन्दी जर्नलिज्म, पृ० 132
2. वही पृ० 132
3. जयनारायण व्यास, कांग्रेस सन्देश, प्रदेशाक, पृ० 7

'मारवाड गजट' म केवल सरकारी सूचनाए प्रकाशित करता था अपितु काग्रेस की गतिविधियों पर भी टीका टिप्पणी करता था और उसमे राजनीतिक विषयो पर भी अग्रलेख प्रकाशित होते थे।[1]

बाबू बालमुकुन्द गुप्त के शब्दो म 'इन अखबारों के प्रथम प्रबन्धकर्त्ता बाबू हीरालाल थे। पीछे बाबू डोरीलाल उर्फ कृष्णानन्दजी हुए जो दरबार स्कूल के हैड मास्टर थे। जब तक बाबू डोरीलाल रियासत म रहे, तब तक यह पहला पत्र जारी रहा। उनके काम छोड कर चले जाने पर वह बन्द हो गया। बाबू डोरीलाल एक योग्य और स्वाधीन स्वभाव के पुरुष थे। बरेली के रहने वाले कायस्थ थे।

'बाबू डोरीलाल के बाद बाबू रामस्व प अमीम दरबार स्कूल के हैड मास्टर हुए। उनके हाथ मे मारवाड गजट का चार्ज आया। उस समय तक रियासत का ध्यान अखबार की ओर विशेष न था। रियासत के मामूली कामो की भांति यह भी एक काम समझा जाता था। मारवाड गजट म रियासत के हाकिमों की बदली तैनाती आदि की खबरें छपती थी। बाकी अ श मे कभी कोई एक आध लेख छप जाता था और रहे सहे हिन्दी उर्दू पत्रो स छाट कर खबरें भर दी जाती थी।"

'बाबू रामस्वरूप जी भी कायस्थ थे। अजमर के सदर राय अमीन दौलतराम के पोते थे। अच्छे लिखने वाने और स्वाधीन प्रकृति के आदमी थे। मारवाड राज्य के एक इलाके के ठाकुर ने एक स्त्री को डाइन होने के सन्देह मे पुरानी रीति के अनुसार काटो म जलवा कर मार डाला। उक्त इलाके का नाम रास है। वह अजमेर प्रान्त के नया नगर स्थान से बहुत निकट है। वहा के एक सवाददाता ने यह खबर मारवाड गजट को लिखी और बाबू रामस्वरूप ने उक्त गजट मे छाप डाली। अखबार एजे टो मे भी जाया करता था, वहा पढा गया। वहा से राज्य को लिखा गया कि इस घटना की जाच होनी चाहिये और यदि यह सच हो तो ठाकुर को दण्ड मिलना चाहिये। जोधपुर दरबार की ओर से उक्त ठाकुर के वकीलो से पूछा गया तो यह इन्कार कर गये। तब बाबू रामस्वरूप पर इलजाम आया कि उन्होने ऐसी गलत खबर क्या छापी। उससे रियासत की बडी बदनामी हुई है। वह बेचारे बहुत घबराये क्योकि रियासतो को स्वाधीनता नही है। तथापि उन्होने नया नगर के सवाददाता को लिख कर घटना प्रमाणित कर दी और उस स्त्री के घर के लोगो का पता बता दिया। तब उनसे कहा गया कि ठीक है यह बात तो सच है पर आगे को कोई ऐसी खबर न छपे जिससे कुछ झगडा उत्पन्न हो। बस, उस दिन से मारवाड गजट की रही सही स्वाधीनता भी जाती रही। कुछ दिन पीछे इसी नाराजी के

1 गुप्त निब धावली, पृ० 361–36९

कारण बाबू रामस्वरूप नौकरी छोडकर चले गये। इसके बाद जो दरबार स्कूल का हैड मास्टर तथा शिक्षा विभाग का सुपरिन्टेंडेंट होता, वही मारवाड गजट का भी प्रबन्धक होता रहा। दरबारी श्राज्ञाश्रो के सिवा महकमे खास जो बातें लिखने के लिये श्राज्ञा होती, वह पिछले पन्ने पर लिख दी जाती थी।"

"1884 जब राय बहादुर मुशी हरदयाल सिंह साहब मारवाड राज्य के सेक्रेटरी श्रौर मुसाहिब श्राला हुए, तो उन्होंने मारवाड गजट को महकमे खास के श्रधीन करके बहुत कुछ उन्नति की श्रौर उसे गवर्नमेंट गजट का नमूना बना दिया। हिन्दी काल मे श्रग्रेजी दाखिल हुई। तब तक पत्थर के छापे से काम चलता था। उस समय हिन्दी श्रौर श्रग्रेजी टाइप मगवाया गया। कई साल तक मारवाड गजट इतनी उत्तमता से निकला कि उसके कुछ लेख श्रग्रेजी श्रखबारो मे भी नकल होने लगे श्रौर कभी-कभी श्रवध श्रखबार मे भी तर्जुमा होकर छपने लगे। सैक्रेटरी के श्राफिस के हैड क्लर्क बा० हरिश्चन्द्र प्रबन्धकर्त्ता थे।

"सन् 1894 मे मुशी हरदयाल सिंह के स्वर्गवास होने पर 'मारवाड गजट' राव बहादुर प० सुखदेव प्रसाद सीनियर मेम्बर महकमे खास के नियन्त्रण मे चला गया श्रौर उनके बहनोई पण्डित निरजननाथ गजट के प्रबन्धकर्त्ता बने। उन्हे कोई सम्पादकीय स्वाधीनता नही थी। जो भी सामग्री सम्पादकीय कालम के लिए महाराजा की श्रोर से मिलती, उसे छाप दिया जाता था। श्रब 'मारवाड गजट' का पहला पृष्ठ श्रग्रेजी मे श्रौर शेष तीन पृष्ठ हिन्दी मे होते थे। एक कालम उर्दू मे श्रौर एक हिन्दी मे छापने की सामग्री की व्यवस्था श्रब बन्द कर दी गई थी। गजट सरकारी श्रधिकारियो श्रौर विभागो को नि:शुल्क श्रौर बाहर के लोगो को समूल्य दिया जाता था।"

उदयपुर गजट

सन् 1868 मे उदयपुर गजट के प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है। 27 नवम्बर, 1868 को 'श्रवध श्रखबार' मे इस गजट की समीक्षा मे कहा गया है कि देवनागरी लिपि मे छपने के कारण यह लोकप्रिय नही हो सका। समीक्षक ने कहा है कि यदि उर्दू लिपि मे यह प्रकाशित होता, तो इसे लोकप्रियता प्राप्त हो सकती थी। यह पत्र कब बन्द हुश्रा, उसके बारे मे कोई निश्चित तिथि निर्धारित करना तो सम्भव नही, तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि यह श्रल्पजीवी ही रहा होगा, क्योंकि 1879 मे उदयपुर महाराणा ने जब 'सज्जन कीर्त्ति सुधाकर' का प्रकाशन कराया, उस समय यह पत्र जीवित नही था।

जयपुर गजट

'जयपुर गजट' रियासत का श्रपना सरकारी मुख पत्र था, जिसका प्रकाशन सन 1878 मे हुश्रा। रामरतन भटनागर की यह मान्यता कि इसका प्रकाशन

1879 मे हुआ था, सही नही है। कदाचित् विद्वान लेखक को इसकी मूल प्रतिया देखने को न मिलने के कारण उनके द्वारा दी गई तिथि किसी प्रामाणिक स्रोत पर आधारित प्रतीत नहीं होती। जयपुर कौन्सिल के सदस्य बाबू महेन्द्रनाथ सेन के सम्पादकत्व मे सचालित यह पत्र अग्रेजी और हिन्दी दोनों मे छपता था। इसके प्रमुख लेखकों मे ठाकुर नन्दकिशोर सिंह और बाबू ससारचन्द्र थे, जो जयपुर कौन्सिल से ही सेक्रेटरी और सदस्य के रूप मे सबद्ध थ।

महेन्द्रनाथ सेन के बाद मथुरा निवासी पण्डित श्यामलाल इसके प्रवन्धक हुए और कुछ समय बाद महाराजा की आज्ञा से इसमे उर्दू, हिन्दी और अग्रेजी तीनो भाषाओ मे सामग्री छपने लगी। चू कि महाराजा रामसिंह ने इस पत्र की सदस्यता समस्त जागीरदारो के लिए अनिवार्य कर दी थी इसकी प्रसार सख्या अच्छी थी। जब तक रियासत का मुद्रणालय उसके अपने अधिकारियो के नियन्त्रण मे रहा, इसकी छपाई भी सुन्दर होती थी, किन्तु बाद मे दीवान ठाकुर प्रतापसिंह द्वारा प्रेस को ठेके पर दे दिये जाने के कारण उसका स्तर वह न रहा। मुशी महावीर प्रसाद प्रेस के प्रवन्धकर्त्ता थे। उनके कार्यकाल म पत्र का स्तर गिर गया, उसमे उर्दू अखबारो स सामग्री उद्धृत की जाने लगी और मौलिक सामग्री का नितान्त अभाव हो गया।

कुछ समय बाद मुशी महावीर प्रसाद ने पत्र का प्रवन्ध अपने भाई कृष्ण बल्लभ को सौप दिया। उनके कार्य काल मे पत्र की दशा और भी खराब हो गई। जागीरदार लोग जो अब तक नियमित ग्राहक थे, अब सूची म से अपना नाम कटाने लगे। पत्र मे 'अवध अखबार' और 'पायनियर' से खबरें नकल करके छापी जाने लगी। उसके अपने कोई विशिष्ट लेखक भी नही रहे और जो सामग्री छापी जाती, उसका भी सम्यक् सम्पादन नही होता। पडित बाल मुकुन्द गुप्त ने सन् 1905 मे इसके एक अंक पर अपनी प्रतिक्रिया निम्न शब्दो मे व्यक्त की थी[1] —

"जयपुर, गजट की 24 मई 1905 ईसवी की एक सख्या हमारे सामने है। यह रायल साइज की डेढ शीट के 6 पृष्ठ पर छपी हुई है। यही आकार उक्त गजट का कई वर्षों से चला आता है। इसका पहला और छठा दो पृष्ठ बहुत घिसे और मैले टाइप म छपे हुए हैं। बाकी चार पृष्ठ लियो पर छपे हैं।"

'पहले पृष्ठ पर गजट का नाम अग्रेजी और हिन्दी अक्षरो म छपा हुआ है। तारीख तीनो अक्षरो मे है। अग्रेजी मे जयपुर राजप्रेस का एक विज्ञापन है। उसके नीचे उक्त प्रेस का विज्ञापन नागरी अक्षरो मे भी है। पर टाइटल के घिस

1 अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, समाचार पत्रो का इतिहास, पृ० 161

जाने के कारण वह पढा नही जाता। बहुत जोर लगा कर हमने इतना पढा कि उक्त प्रेस मे बडी सफाई के साथ सब चीजें छप सकती है और रग-बिरगे का काम भी छप सकता है। क्यो न हो, छपाई सफाई का विज्ञापन स्वय इसका नमूना है। कोई अभागा उन अक्षरो को पढ लेगा तभी तो कुछ छपवाने का साहस करेगा। खैर उसी पृष्ठ के दूसरे कालम मे उर्दू अक्षरो मे हालवे साहब की गोलियो और मरहम का विज्ञापन है। तीसरे कालम मे वही विज्ञापन हिन्दी मे है। चौथे कालम मे अग्रेजी की पाच पक्तिया हैं। जिनमे उन बच्चो की सख्या लिखी गई है जो जयपुर नगर मे 20 मई से 23 मई तक पैदा हुए। उसके नीचे जयपुर नगर का 15 मई का अन्न का भाव हिन्दी मे दिया है। 24 मई के कागज मे शहर का 15 मई का अन्न का भाव छपा है। खबरो को ताजगी का यह एक अच्छा नमूना है। दूसरे से लेकर पाचवें पृष्ठ तक साधारण खबरें और छोटी-छोटी तार की खबर है जो 1। मई से 13 मई तक की हैं। छठा पृष्ठ एकदम अग्रेजी मे है। इसमे 17 और 18 जून की तार की दो तीन खबरें हैं। नीचे तीन खबरें सादी हैं। बाकी तीन कालमो मे जयपुर की पब्लिक लाइब्रेरी की नई किताबो की सूची है और समाचार जयपुर नगर या जयपुर राज्य का उसमे नही है। गजट का मूल्य बाहर वालो से अगाऊ 15) और पीछे देने से 20) है। शहर वालो से कुछ कम है। पर पढा नही गया कि कितना कम है।"

उन्होने गजट के स्तर की कटु आलोचना करते हुए कहा है कि 'जयपुर गजट' इतना रद्दी निकलता है कि जिसे कोई पढा-लिखा आदमी छूता तक नही। वह खाली पसारियो की पुडियो के काम आता है।

'जयपुर गजट' के दिसम्बर 1934 से मार्च, 1939 तक के जो अंक जयपुर स्थित सार्वजनिक पुस्तकालय मे उपलब्ध हैं, उनको देखने से ज्ञात होता है कि ये अंक नियमित न होकर यथा आवश्यकता सरकारी आदेश, विज्ञप्तिया तथा विज्ञापन छापने के लिए समय समय पर निकाले जाते थे और इनकी सामग्री अग्रेजी बहुल होती थी।

यदा कदा इस पत्र मे महाराजा और प्रधान मन्त्री के भाषण भी छापे जाते थे।[1]

अन्य सरकारी गजट

उक्त सरकारी गजटो के अतिरिक्त 1887 मे बीकानेर से 'बीकानेर राजपत्र' का प्रकाशन हुआ। इस पत्र मे उर्दू तथा हिन्दी मे राज्य के सवाद, सूचनाए, विज्ञप्तिया तथा इश्तहार प्रकाशित होते थे।

---

1. जयपुर गजट, 12 दिसम्बर, 1936, पृ० 1

इसके बाद सरकारी गजटो के प्रकाशन का यह सिलसिला राजकीय आवश्यकतानुसार अथवा एक दूसरे के अनुकरण पर बराबर चलता रहा और कालान्तर मे भरतपुर गजट, धौलपुर गजट, मेरवाडा गजट, बूदी गजट, कोटा गजट आदि नामो से विभिन्न राज्यो के गजट निकलने लगे।

ऊपर के अनुच्छेदो मे जिन प्रारम्भिक पत्रो और राजपत्रो के बारे मे जानकारी प्रस्तुत की गई है, उनका राजस्थान की पत्रकारिता के इतिहास मे कालजयी महत्व है। ये ही वे पत्र थे, जिन्होने इस प्रदेश मे पत्रकारिता की सुदृढ आधारशिला रखी और आगे आने वाली लोकधर्मी एव मिशनरी पत्रकारिता के पल्लवित होने का मार्ग प्रशस्त किया।

—

अध्याय 4

लोकधर्मी पत्रकारिता का प्रादुर्भाव

राजस्थान मे पत्रकारिता के जो प्रारम्भिक प्रयत्न हुए, वे अन्य प्रदेशों की तुलना मे भले ही नगण्य हो, किन्तु इस प्रदेश की सामाजिक एव राजनीतिक दुरावस्था के सदर्भ मे उनके ऐतिहासिक महत्व को नकारना अविवेकपूर्ण होगा। इन्हीं प्रयत्नो ने किस प्रकार राजस्थान मे लोकधर्मी पत्रकारिता के प्रादुर्भाव की आधार-शिला रखी और किस प्रकार उस युग के तेजस्वी पत्रकारो ने प्रदेश मे लोक चेतना को जागृत करने मे अपनी सशक्त भूमिका अदा की, यह आगे चलकर स्वत स्पष्ट हो जाता है।

यहा उन पत्र और पत्रकारो की कीर्ति-कथा का बखान करने से पूर्व उस सामाजिक एव राजनीतिक वातावरण को भी सक्षेप मे रूपायित करना प्रासगिक होगा, जिसने इस युग की पत्रकारिता को अपनी चारित्रिक विशिष्टताए प्राप्त करने की प्रक्रिया मे प्रभावित किया।

जैसाकि पहले कहा जा चुका है, दासता की बेडियों मे पूरी तरह जकडे जाने के बावजूद जन-मानस में अपने पुराने इतिहास और स्वाधीनता सघर्षों मे अपने पूर्वजों द्वारा किये गये गौरवपूर्ण कृत्यों की स्मृतियां अभी भी जीवित थी। आगे चलकर कर्नल टाड की पुस्तक "एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज आफ राजस्थान" ने भी जब उन वीरतापूर्ण कृत्यो का अतिशयोक्तिपूर्ण यशोगान किया, तो उसके अनुवादों के माध्यम मे यहां शिक्षित वर्ग को निराशा के प्रवाह मे अपने पैर टिकाने के लिये एक समयानुकूल सम्बल मिला। इधर राजस्थान के वीरचरित्रो को नायक बनाकर हिन्दी, गुजराती तथा बगला भाषाम्रा मे जो देशभक्तिपूर्ण साहित्य, काव्य, नाटक और कहानियो के रूप मे सृजित किया गया, उसने जहा राजस्थान मे अपने सास्कृतिक एव ऐतिहासिक वैभव के प्रति अनुराग-भाव जाग्रत हुआ, वहां भारत के राष्ट्रीय नवजागरण मे भी उसने अपनी सार्थक भूमिका अदा की।

इसी वातावरण मे राजस्थान की भूमि पर महर्षि दयानन्द का अवतरण और आर्य समाज की स्थापना हुई। 1880 से 1890 के बीच आर्य समाज की अनेक शाखायें राजस्थान मे खोली गई। उन्होने जहा वेदोत्तर पौराणिक धर्म की विसगतियो और विद्रूपों पर प्रहार किया, वहा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध भी जिहाद बोला। वे राजनीतिक चेतना के लिये धर्म और समाज-सुधार को एक अस्त्र के रूप मे प्रयोग कर रहे थे। क्योकि उनकी मान्यता थी कि अज्ञान और अन्धविश्वास के उन्मूलन के बिना राष्ट्र को उन्नत, स्वतन्त्र और स्वावलम्बी बनाना दुष्कर है। उन्होने राजस्थान के राजन्य वर्ग और जनता को स्वधर्म, स्वराज्य, स्वदेशी और स्वभाषा का चार सूत्रीय सन्देश दिया और यह उपदेश दिया कि उक्त चारो तत्वो को अपनाये बिना राष्ट्र का उद्धार सम्भव नही। उन्होने वेद सम्मत धर्माचार, स्वदेशी वस्तुओ का उपयोग और हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रयोग स्वराज्य की प्राप्ति के लिये अनिवार्य माना और यह कहा कि इसके बिना सच्ची स्वाधीनता असम्भव है।

कहना न होगा कि दयानन्द के आदोलन ने राजस्थान मे वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया। वह न केवल एक धार्मिक एव सामाजिक आदोलन था, अपितु उसके माध्यम से देश प्रेम और राष्ट्रीयता का भाव जागृत करने मे बहुत बडा योग-दान मिला। अपने बहुचर्चित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे सस्करण का सशोधन एव परिवर्द्धन उन्होने उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह के आतिथ्य मे रहकर ही किया। इसी सस्करण मे उन्होने यह सदेश दिया—'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है, अन्यथा माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायी नही है।'

दयानन्द का यह सदेश जहां समूचे भारतीय राष्ट्रीय आदोलन की आधारशिला बना, वहा उसने राजस्थान के जन मानस में भी देश-प्रेम को जागृत किया और उस चेतना को जो 1857 के विद्रोह के बाद लुप्त प्राय हो चुकी थी, फिर से जागृत किया। इसी बीच साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र मे भी कुछ ऐसे प्रयत्न हुए, जिन्होने राष्ट्रीय भावना को जागृत करने मे अग्नि मे घृत की तरह कार्य किया। बकिमचन्द का आनन्द मठ प्रकाशित हो चुका था, जिसमे वारेन हेस्टिंग्ज के समय अंग्रेजो से छापामार युद्ध करने वाले सन्यासियो को राष्ट्रीय योद्धाओ के रूप मे चित्रित किया गया था। उनके मुख से मातृभूमि की वन्दना के निमित्त भारत के राष्ट्रीयगान "वन्दे मातरम्' की रचना की गई। मातृभूमि की यह वन्दना देश के कोने-कोने मे प्रसारित हो उठी और राजस्थान भी इससे अछूता न रहा। आर्य समाज के केन्द्र अजमेर के माध्यम से आर्य समाज के धर्म प्रचारको द्वारा सरल-तरल शब्दावली में रचे गये भजनो और गीतों ने भी देशानुराग जागृत करने मे अपनी सक्रिय भूमिका अदा की।

इन्ही परिवर्तित परिस्थितियो की पृष्ठभूमि मे राजस्थान मे लोक चेतना को जागृत करने वाली वह विशुद्ध पत्रकारिता विकासोन्मुख हुई, जिसके सूत्रधार बनने का सौभाग्य उन कतिपय पत्रो को मिला, जिनका उल्लेख यहा किया जा रहा है।

अब तक उपलब्ध सामग्री के आधार पर यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि राजस्थान मे लोक-चेतना और उससे सबद्ध समाचार पत्रो की स्वाधीनता की अन्योन्याश्रित माग का वातावरण उन्नीसवी सदी के अन्तिम चरण से ही बनने लगा था। ब्रिटिश शासित प्रदेशो म समाचार पत्रो की शक्ति और प्रभाव ने राजस्थान मे भी समाचार पत्रो की स्वाधीनता के लिए एक ललक पैदा कर दी थी। इस पृष्ठ-भूमि का रूपाकन कुछ उदाहरणो द्वारा किया जा सकता है।

सन् 1881 मे उदयपुर से प्रकाशित विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका-मोहन चन्द्रिका ने 'स्वतन्त्रता तत्र ततु' शीर्षक से एक बडा प्रखर सम्पादकीय लेख लिखा, जिसमे स्वाधीनता और और समाचार पत्रो की आजादी को राष्ट्र की उन्नति और विकास के लिए अनिवार्य बताया गया। इस सम्पादकीय मे कहा गया कि राज्यो से प्रकाशित पत्रो को इतनी सी स्वाधीनता तो अर्जित करनी ही चाहिए कि वे र ज्य-प्रबन्धों का दोष-दर्शन करा सकें। सपादकीय मे कहा गया

"हमको बहुत दिनो से इस विषय मे सदेह है कि जितनी स्वतन्त्रता हमारे अग्रेजी भारत खड के वर्तमान समाचार पत्रो को सर्व प्रकार के लेख लिखने की है, उतनी देशी राजस्थानो के समाचार पत्रो को उनके अधीशो की ओर से है वा नही ? जो कदाचित् कहे कि, है तो उस स्वतन्त्रता की छटा कुछ भी दृष्टि नही आती, क्योंकि इन सब समाचार पत्रो में अपने राज्यो की प्राय प्रशसा ही लिखी पढने मे आती है। और जो कहे कि नही है, तो राजस्थानो के विद्वानों के वाक्य खड जवाब का सवाल के अनुमार प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि क्यो नही है—फिर भी "क्यो नही है' इसम भी प्रश्न सताते हैं कि क्या 'स्वतन्त्रता' बुरी है ? वा स्वतन्त्रता प्रदान करने से राज कोष मे से कुछ न्यून हो जायगा ? जो स्वतन्त्रता बुरी है और देने से राज्य की कुछ हानि होती है तो फिर ऐसे राज्यो को क्या विद्वान लोग स्वतन्त्र राज्य कह सकते हैं ? क्योकि जो शब्द वा पदार्थ जिसका गुण बुरा है तो फिर वह गुण वाचक शब्द क्योकर किसी के विशेषण मे प्रयोग किया जा सकता है। आजकल के विद्वानो ने तो यह निश्चय कर सिद्ध किया है कि जिस देश जिस राज और प्रान्त मे स्वतन्त्रता भवानी नही है, उसमे अधेरा ही रहता है और सर्व गुण सम्पन्नता वहा से दूर ही निवास करती है। जो सरकारी भारतखड मे हमारे तत्रस्थ बन्धुओ की सरकार

---

1 विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका मोहन चन्द्रिका, कला 8, किरण 1 सवत्-1938, पृष्ठ 1–6

स्वतन्त्रता न देती, तो जितनी कुछ उन्नति उस देश की आज दृष्टि आती है वह क्यों होती ? इस पर भी अपनी स्वदेशोन्नति करने को अपने अधीशों से लड लड कर और झगड झगड कर वहा के समाचार पत्र विशेष स्वतन्त्रता मागते हैं और आशा है कि कुछ न कुछ मिली होगी।"[1]

आगे चलकर देशी राज्यो से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओ से अभिव्यक्ति की स्वाधीनता प्राप्त करने का विशेष आग्रह अग्रांकित शब्दो मे किया गया है —

"देशी राजस्थानो म राजा और प्रजा अर्थात् पिता पुत्र की सी स्नेही लडाई और झगडा, वह भी स्वदेशोन्नति करने के लिये स्वप्न मे भी दृष्टि नही आता। अतएव ही अन्य देश वाले इन राज्यो का नाम धरते हैं। अब हमारी प्रार्थना हमारे देशी राजस्थानो के वर्तमान समाचार पत्र सज्जनकीर्ति सुधाकर, मारवाड गजट और जयपुर गजेटादि से यही है कि अग्रेजी राज्य के समाचार पत्र तो लड लड और झगड झगड और राजा को बुरा भला भी कह कर स्वतन्त्रता लेते है, किन्तु आप महाशय अपने अपने अधीशो को हाथ जोड कर उतनी नही तो, थोडी सी नियमित स्वतन्त्रता ही उपार्जन नही करते, कि जिसके बल से सब लोग मिल कर देशोन्नति करें और राज्य प्रबन्धो के दोष प्रदर्शन कर करके अपने अपने अधीशो के हाथो से शोधन करावे' और जो दोष कि देशी राजस्थानो के अन्धेर नगरी और गर्वसेन राजा नामक पुस्तको म वर्णन किये गये है, उनसे वे विमुक्त हो इसी के साथ यह भी सिद्धान्त स्मरण रहना चाहिए कि जो परम प्रसिद्ध सार सुधानिधि कवि वचन सुधा भारत बधु और मित्रविलासादि समाचार पत्रो ने मनन कर विदित किया है कि स्वदेशोन्नति और सर्व गुण सम्पन्नता ही के लिये साधन रूप शस्त्र केवल एक समाचार पत्रो की स्वतन्त्रता ही है, सो हमारा भी सिद्धान्त उक्त बन्धुओ से सम्मत ही है।'[2]

लगभग इसी प्रकार के विचार बाबू बाल मुकुन्द गुप्त ने व्यक्त किये। उन्होने देशी रियासतो के स्वामियो को परामर्श दिया कि पत्रो की स्वाधीनता से भयभीत होने की आवश्यकता नही और वे यदि पत्रो के विकास मे सहायक होगे तो राज्य के लिए उनकी उपादेयता अवश्यम्भावी होगी। गुप्तजी ने 'मारवाड गजट' का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए निम्नलिखित उद्गार प्रकट किये —[3]

---

1 विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका-मोहन चन्द्रिका, कला 8, किरण-1 सवत् 1938, पृष्ठ 1–6

2 वही

3 दृष्टव्य गुप्त निबन्धावली एव अम्बिका प्रसाद बाजपेयी कृत समाचार पत्रो का इतिहास

"समाचार पत्रों की स्वाधीनता न देने में पुराने विचार के उच्च कर्मचारी अवश्य ही कुछ भलाई समझते होंगे। अब वह समय नहीं है कि रियासतों के लोग पुराने विचारों पर अड़े बैठे रहें। अब ऐसा समय आ गया है कि देशी रईस भी अपने अखबारों को स्वाधीनता दें और उनसे लाभ उठावें। अब अंग्रेजी गवर्नमेन्ट की देखा देखी रियासतों ने अपनी रियासतों में अखबार जारी किये हैं तो अंग्रेजी गवर्नमेन्ट की रीति पर उन अखबारों को स्वाधीनता देनी चाहिये। देशी रियासतों के विषय में जो यह शिकायत सुनी जाती है कि जबर्दस्त मारे रोने न दे—इसको दूर कर देना चाहिये। अखबार कोई गनीम नहीं है जो स्वाधीन होकर रियासतों को हानि पहुंचावें, वरन यदि उसकी ठीक ठीक सहायता की जाय और उसे उन्नत होने के लिये अवसर दिया जाय तो वह राज्य के एक बहुत ही काम की वस्तु बन सकता है। जब एक विदेशी गवर्नमेन्ट इस देश की प्रजा को प्रेस सम्बन्धी स्वाधीनता देती है, तब देशी राजा महाराजा अपनी देशी प्रजा को स्वाधीनता न दे यह कैसे दुःख की बात है। जोधपुर राज्य के कई एक प्रतिष्ठित सज्जनों से हमने सुना कि वर्तमान ईडर नरेश महाराज सर प्रतापसिंह जब जोधपुर मदारुल माहाम थे, तो बहुधा कहते थे कि अखबार में जो जी चाहे लिखा जाय हम आज्ञा देते हैं, चाहे हमारी ही निन्दा क्यों न लिखी जाय। पर श्री हुजूर साहब के विषय में (स्वर्गीय जोधपुर महाराज जसवन्त सिंह से मतलब है, जो महाराज प्रताप सिंह के बड़े भाई थे) कोई अप्रतिष्ठा का शब्द न लिखा जाय, उसे मैं न सह सकूंगा। पर दुःख यही है कि श्रीमान ने अपने इस वाक्य को कभी कार्य में परिणत करके नहीं दिखाया। इन शब्दों को मुंह से ही कहते रहे, राज्य में उनके विषय में घोषणा कभी नहीं की।"

"दूसरी कठिनाई देशी रियासतों में यह है कि यदि साधारण प्रजा में से भी कोई प्रेस या अखबार जारी करना चाहे, तो उसे आज्ञा नहीं मिलती, बहुत तरह के सन्देह किये जाते हैं। जो लोग अखबार या प्रेस जारी करना चाहते हैं उन बेचारों की कभी यह इच्छा नहीं होती कि वह ऐसे काम करें जिनसे उन पर सन्देह किया जाय। तथापि कोई उनकी इस इच्छा की ओर ध्यान नहीं देता। भगवान् जाने कब तक देशी रजवाड़ों की यह दशा रहेगी।"[1]

लोक-चेतना का पहला समाचार-पत्र

राजस्थान के यशस्वी पत्रकार और भूतपूर्व मुख्यमन्त्री स्वर्गीय जयनारायण व्यास के अनुसार इस धारा का सबसे पहला समाचार पत्र 'राजपूताना हैराल्ड' था।

---

1. द्रष्टव्य गुप्त निबन्धावली एवं अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी कृत समाचार पत्रों का इतिहास

यद्यपि यह अग्रेजी का पत्र था, तथापि अपने ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से इसका यहा उल्लेख करना असगत न होगा। रियासती दमन चक्र से बचने के लिए इस पत्र का प्रकाशन अजमेर से सन् 1885 मे प्रारम्भ हुआ था। इसके सम्पादक हनुमानसिंह थे, जिन्होंने ए० जी० जी० कर्नल पोलेट और जोधपुर के महाराजा सर प्रताप के विरुद्ध काफी आन्दोलन किया। प्रकटत जागीरदारो द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त इस पत्र के 30 मार्च, 1885 के अक के "A cry of anguish from Rajasthan" शीर्षक दूसरे अग्रलेख मे जिक्र किया गया है कि कर्नल पोलेट ने नीमाज के ठाकुर को बुलाकर यह निर्देश दिया कि वह अपने बूढे कामदार से कोई सम्बन्ध न रखें। इसी अग्रलख मे आगे कहा गया है[1]

"If the aggrieved noblemen of Marwar go to the Political Agent with their complaints against the ministry they are instantly told that he the British agent is powerless to interfere with the Raj affairs"[2]

अर्थात् यदि मारवाड के परेशान सरदार लोग राजनैतिक एजेन्ट के पास मन्त्री मण्डल के खिलाफ अपनी शिकायतें लेकर जाते हैं तो उन्हे निरन्तर यही उत्तर दिया जाता है कि ब्रिटिश एजेन्ट राज-काज म दखल देने के मामलो म अधिकारहीन है।

इसी पत्र के 1885 के सितम्बर 9 के अक मे बन्दोबस्त के खिलाफ शिकायतें है जिनम रिश्वत खोरी की घटनाए वर्णित की गई हैं। एक नमूना यहा प्रस्तुत है —

"It is reported that having taken the sum of Rs 400/- from the kamdar of Byejee Kesar-Kumariji (daughter of late Maharaja of Jodhpur & queen of the late Maharaja Ram Singhji Jaipur) Heera Singh has transferred some plots of cultivated and uncultivated land and some Beras (wells) belonging to Thakur Sahib of Shiryeari to the village Thakur wash, a village of the said Byejee Kesar Kumariji.'[3]

अर्थात् बताया गया है कि जोधपुर के स्व० महाराजा की पुत्री जयपुर के स्व० महाराजा रामसिंह जी की रानी बाईजी केशर कुमारी जी के कामदार से

1 राजपूताना हैराल्ड, 30 मार्च, 1885
2 जयनारायण व्यास, कांग्रेस सन्देश, प्रवेशाक, जयपुर
3 वही

400/– लेकर हरिसिंह ने सिरियारी ठाकुर साहब की काश्त की हुई भूमि और कुछ बगैर काश्त की हुई भूमि के टुकडे तथा कुए उक्त बाईजी कशरकुमारी के गाव ठाकुर बास को स्थानान्तरित कर दिये।

इसी प्रकार के और भी कुछ समाचार बन्दोबस्त की शिकायत के सम्बन्ध म पत्र म छपे हैं।

राजपूताना गजट

'राजपूताना गजट' के नाम से सज्ञायित यह पत्र सरकारी गजटो से बिल्कुल पृथक एक स्वतन्त्र पत्र था। अजमेर से सन् 1885 म प्रारम्भ किये गए इस पत्र के सचालक-सपादक मौलवी मुराद अली 'बीमार' थे।[1] डा० रामरतन भटनागर और अम्बिका प्रसाद वाजपेयी के अनुसार यह उर्दू का ही साप्ताहिक था। किन्तु बालमुकुन्द गुप्त के मतानुसार हिन्दी भी थोडी बहुत इसके जन्म के साथ ही लगी हुई थी।[2] इसके 12 पृष्ठो मे से 8 उर्दू म तथा 4 हिन्दी म मुद्रित होते थे। इस पत्र का उद्देश्य रियासती अत्याचारो को मुक्त भाव स प्रकाशित करने का था। अपनी लेखनी की स्वाधीनता के कारण मौलवी मुराद अली को जल भी जाना पडा, किन्तु उन्होने पराजय स्वीकार नहीं की और वे बराबर अत्याचारों और जुल्मो के विरुद्ध बेधडक होकर लिखत रहे। एक सधपशील पत्रकार की तरह वे अनेक रहस्यो का भण्डाफोड करने म पीछे नही रहे। एक उल्लेखनीय बात यह थी कि मौलवी गौ रक्षा के कट्टर समथक थे। पडित अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने उनकी निर्भीकता और अखण्डता का जिक्र करते हुए कहा है कि उन जैसे लोग पत्रकारिता के क्षेत्र म कम ही देखने मे आते है।

राजपूताना मालवा टाइम्स

1885 में ही प्रकाशित राजपूताना मालवा टाइम्स तथा इसके हिन्दी सस्करण राजस्थान पत्रिका ने भी प्रशासन की विसगतियो और देशी रियासतो के अत्याचारो पर प्रचुर सामग्री प्रकाशित की। राजपूताना मालवा टाइम्स ने 8 अगस्त, *1885* के अपने सम्पादकीय मे यह स्पष्ट घोषणा की थी कि उसका उद्देश्य समाज और प्रशासन मे व्याप्त बुराइयो की और ध्यान आकृष्ट करना और उन पर प्रहार करना है। पत्र के सम्पादक बख्शी लक्ष्मण दास को अपनी इसी स्वतन्त्र नीति के कारण राज कोप का शिकार होना पड़ा और जयपुर रीजसी काउन्सिल के मेम्बर बाबू काति चन्द्र मुकर्जी द्वारा चलाय गये मान हानि के मुकदम के फलस्वरूप उन्हे

---

1 रामरतन भटनागर, राइज एन्ड ग्रोथ आफ हिन्दी जर्नेलिज्म, पृ० 130
2 गुप्त ग्रन्थावली, पृ० 375

सजा तो भुगतनी ही हुई, टाइम्स और इसके हिन्दी सस्करण राजस्थान पत्रिका का प्रकाशन भी सदा के लिए बन्द करना पडा।[1]

राजस्थान समाचार

लोक चेतना से सपृक्त हिन्दी का पहला प्रमुख पत्र राजस्थान समाचार था, जिसका प्रारम्भ 1889 के आसपास हुआ। स्वामी दयानन्द ने अजमेर मे जो 'वैदिक यत्रालय' खुलवाया था, उसके प्रबन्धक स्वामीजी के शिष्य मु शी समर्थदान ने निजी प्रेस *'राजस्थान-यन्त्रालय' के नाम से स्थापित किया* और इसी प्रेस से इस पत्र का साप्ताहिक प्रकाशन किया।

मु शी समर्थदान अपने नाम के आगे उर्दू शब्द 'मु शी' के स्थान पर सस्कृत शब्द 'मनीषि' का प्रयोग करते थे। पडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने सन् 1915 मे मनीषिजी की मृत्यु पर उनके व्यक्तित्व और 'राजस्थान समाचार' के बारे मे निम्नलिखित उद्गार व्यक्त किये थे [2]

मनीषिजी ने पत्र को अपने से पृथक् नही समझा, सैकडो उसमे कमाए और हजारो उसी मे होम दिये। पत्र पहले साप्ताहिक था, फिर अर्द्ध साप्ताहिक हुआ। उन दिनो उसमे एक 'अनत कहानी' चलाई गई थी, जो जल्दी ही शात हो गई। रूस-जापान के युद्ध की उमग मे इन्होने अपने पत्र को दैनिक कर दिया। सच पूछिए तो यही हिन्दी का पहला व्यवसायी दैनिक था। भारत-मित्र का पहला दैनिक रूप केवल परीक्षा के लिये था और कालाकाकर का हिंदोस्तान, बडौदे की सोने-चादी की तोपो की तरह, एक राजा के शौक की चीज थी। मनीषिजी ने बबई से तार समाचार सीधे मगवाने आरभ किये। हिन्दी-भाषा की अखबार नवीसी मे और राजपूताने के पत्र-पाठको मे उस दिन हर्ष और विस्मय का विचित्र सकर हुआ जब ट्सुशीमा (Tsushima) के युद्ध का समाचार आबू पहाड पर पायनियर से आठ दस घण्टे पहले राजस्थान समाचार ने पहुचा दिया। आजकल जब इधर-उधर कई हिन्दी दैनिको के निकलने और बिखरने की गू ज हो रही है. इस गुपचुप काम करने वाले युद्ध साहित्यसेवी के अध्यवसाय का उल्लेख करना उचित है, चाहे उस समय ईर्ष्या से, या अपना ढोल आप न पीटने वालो के साधारण भाग्य से, इस बात की चर्चा भी न हुई हो। यही दैनिक पत्र मनीषिजी के लिये श्वेत हस्ती बन गया, अथाह घाटे के कारण बद करना पडा, कुछ दिन साप्ताहिक होकर सिसका, अन्त को बुझ गया।

---

1. के० एस० सक्सेना, पोलीटिकल मूवमेंट एण्ड अवकेनिंग इन राजस्थान, पृ० 118
2 गुलेरी ग्रन्थ, पहला खड, पहला भाग, पृ० 275–76

आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित इस पत्र मे राजनीतिक लेख, राजपूताना की विभिन्न रियासतो के समाचार और टिप्पणिया होती थी ।[1]

गजट और समाचार की भूमिका

ऊपर जिन दो प्रमुख पत्रो 'राजपूताना गजट' और 'राजस्थान समाचार' का उल्लेख किया गया है, वे राजस्थान मे ब्रिटिश शासन की अवाछनीय कारगुजारियो के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करने मे जिस प्रकार अग्रणी बने और सारे खतरे मोल लेकर जिस प्रकार उन्होने तत्कालीन पोलिटिकल एजेन्ट्स की अवांछित गतिविधियो का विरोध किया, उससे उनकी भूमिका प्रेस की स्वाधीनता की दिशा मे स्वत ही बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। रामरतन भटनागर का यह कथन कि इन पत्रो मे कोई विशेष राजनीतिक चेतना के दर्शन नही होते, निरा अनुमान मात्र है। राष्ट्रीय अभिलेखागार मे इन पत्रो से सम्बन्धित जो सामग्री सुरक्षित है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इन पत्रो ने चाहे एक सीमित क्षेत्र मे ही सही, अपनी निर्भीक नीति द्वारा जहा जन-कल्याण के प्रयत्न किये, वहाँ देश के अन्य पत्रों का ध्यान भी राजस्थान की समस्याओ की ओर आकृष्ट किया।

अपने इस कथन की पुष्टि के लिए यहा झालावाड के तत्कालीन नरेश जालिमसिंह के गद्दी से उतारने के काड का उल्लेख करना अप्रासगिक न होगा। जालिमसिंह जो अपनी कुशाग्र बुद्धि, कुशल प्रशासनिक क्षमता और स्वाभिमान के लिए चारो ओर विख्यात था, अग्रेज पोलीटिकल एजेन्ट का कोपभाजन केवल इसलिए बना कि उसने अपनी सेना मे पठानो की भर्ती की थी और अलबर्ट मेमोरियल कोष मे धन देने के प्रति उदासीनता दिखाई थी। जब जालिमसिंह ने अपना पक्ष वायसराय के सम्मुख प्रस्तुत करने की इच्छा प्रकट की तो पोलिटिकल एजेन्ट ने मिलने की अनुमति नही दी। इसी घटना पर व्यग्य करते हुए 'राजपूताना गजट' ने लिखा :—

"पोलीटिकल एजेन्ट के साथ अपनी पटरी बैठाने के लिए एक राजा को चाहिये कि वह प्रतिदिन उसके घर पर जाकर सलाम करे। सप्ताह मे दो दिन के लिए उसकी शिकार का बन्दोबस्त करे और एक अच्छा खासा घोडा उसकी हाजिरी मे तैनात करे। जब राजा बीमार हो तो वह एजेन्सी के सर्जन को ही बुलाये। जरूरी नही कि वह उस डाक्टर की दवा पिये, किन्तु पोलीटिकल एजेन्ट को खुश करने के लिए यह जरूरी है। अगर वह यह सब करता है, तो पोलीटिकल एजेन्ट उसके

---

1 रामरतन भटनागर, रा० प्रो० हि० ज० पृ० 131

बारे में सब अच्छी रिपोर्ट देगा, भले ही उसका शासन कितना ही बुरा क्यों न हो।"[1]

झालावाड़ की इस घटना का संकेत 'राजस्थान समाचार' के संवाददाता ने एक सप्ताह पूर्व ही दे दिया था और यह स्पष्ट कर दिया था कि "झालरापाटन पर संकट के बादल घिरे हैं, वे कब बरस पड़ें, कुछ कहा नहीं जा सकता।"[2]

राजपूताना गजट ने स्पष्ट रूप से ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी कि यदि जालिमसिंह का कोई अपराध है, *तो सारे मामले की विस्तार से जांच होनी चाहिए।* राजा न तो पोलिटिकल एजेन्ट से डरता है, न उसकी खुशामद करता है और न राज्य के मामलों में उसकी सलाह ही लेता है। राजपूताना गजट ने यह भी लिखा *कि पोलीटिकल एजेन्ट इसलिए क्रुद्ध है कि राजा उसकी दखलन्दाजी का विरोध* करता है।[3]

जब यह विवाद चल रहा था, तो विदेश विभाग की ओर से 'राजपूताना गजट' के संपादक को एक पत्र मिला, जिसमें कहा गया था कि आवश्यकता अनुभव होने पर मामले की जांच के लिए एक आयोग नियुक्त किया जा सकता है। इस पर पत्र ने लिखा कि यदि ऐसा कर दिया जाय, तो वह लार्ड एलगिन की सरकार के लिए अधिक न्यायोचित होगा। पत्र ने सुझाव दिया कि जो जांच-आयोग नियुक्त हो, उसमें राजपूताना का कोई अफसर न हो और राजा को अपना बचाव-पक्ष प्रस्तुत करने के लिए विधि-परामर्शदाता नियोजित करने की अनुमति दी जाय। पोलीटिकल एजेन्ट गोर्डन झालावाड़ में न रहे और राजनीतिक मामलों में निष्णात् वृद्ध योरोपियन इसके सदस्य हों। हिन्दुस्तानी सदस्यों की नियुक्ति राजाओं में से की जाय, सरकारी अफसरान में से नहीं। पत्र ने इस बात की भी शिकायत की कि अंग्रेजी फौज की झालावाड़ में उपस्थिति होने के कारण बाजार भावों में काफी तेजी आ गई है।[4]

अन्ततोगत्वा वायसराय के पक्षपातपूर्ण रवैये के कारण 1896 में जालिमसिंह को गद्दी से उतार दिया गया और उसके निष्कासन की तैयारी हो गई। इस घटना के समाचारों को 'राजस्थान समाचार' ने बड़ी प्रमुखता से प्रकाशित किया और सारी कार्यवाही को अवांछित *बताते हुए कहा कि यह देश का* दुर्भाग्य है, किन्तु किया क्या जा सकता है।[5]

1. *राजपूताना गजट, 8 फरवरी, 1896*
2. राजस्थान समाचार, 1 फरवरी, 1896
3. राजपूताना गजट, 8 फरवरी, 1896
4. *राजपूताना गजट, 16 जनवरी, 1896*
5. राजस्थान समाचार, 4 मार्च, 1896

'राजपूताना गजट' ने इस घटना पर विस्तार से प्रकाश डालने के लिए एक विशेषांक प्रकाशित किया और कहा कि यह निर्णय पोलीटिकल डिपार्टमेंट के यूरोपियन अधिकारियों के पक्ष मे इसलिए गया कि यदि ऐसा नही होता, तो भारत के राजा लोग पोलीटिकल एजेन्ट्स को गाठना बन्द कर देते। पत्र ने स्पष्ट कर दिया कि जालिमसिंह के साथ अन्याय हुआ है और अनेक राजाओं के साथ यही दुर्व्यवहार हुआ है। भरतपुर के राजा को भी इसी प्रकार गद्दी से उतार दिया गया और पटना के राजा को अपनी पत्नी को मार कर आत्महत्या करनी पडी, क्योकि पोलीटिकल एजेन्ट ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था।[1] पत्र ने यह भी माग की कि झालावाड काड को पूरी तरह जनता के समक्ष रखा जाना चाहिए और तथ्यो की जानकारी दी जानी चाहिए और अगर ऐसा नही किया गया तो राजा लोग यह अनुभव करने लगेंगे कि सरकार और उनके बीच जो सन्धि है, उसका पालन नही हो रहा है, और वे अपने पोलीटिकल एजेन्ट्स के प्रति शकालु भी होंगे।

इसी अवसर पर राजपूताना मालवा टाइम्स ने राजाओ को आगाह किया कि उनकी स्थिति बहुत दयनीय होती जा रही है। यदि उन्हे अपने अधिकार की रक्षा करनी है, तो उन्हे सगठित होना होगा और इसके लिए एक ऐसा सशक्त सगठन बनाने की आवश्यकता है, जो विदेश विभाग के राजनीतिक नौकरशाही के षड्यत्रों से उत्पन्न आपत्तियो मे उनकी रक्षा कर सके।[2]

इस प्रकार प्रारम्भिक युग में भी राजस्थान के इन कतिपय पत्रो ने इस सीमा तक राजनीतिक चेतना का सचार करने मे बहुत योगदान किया कि वे ब्रिटिश शासन की करतूतो के विरुद्ध रियासती शासकों को और जनता को सजग करने लगे। उन्हे यह भान कराया जाने लगा कि जिस ब्रिटिश सत्ता के भरोसे वे निष्क्रिय होकर आत्म प्रवचना की स्थिति मे जी रहे है, वह सर्वथा त्याज्य और अवाछनीय है और इस स्थिति से जितनी जल्दी मुक्ति प्राप्त की जाय, उनका ही उतना लिए श्रेयस्कर है।

इन पत्रो ने चेतना के जो बीज बोये, उन्होने आगे अकुरित होकर प्रादेशिक राजाओ से भी अभिव्यक्ति की स्वाधीनता अर्जित करने मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्र

देश और प्रदेश के विभिन्न भागो मे आई चेतना की लहर के परिणामस्वरूप जहा जन जीवन की विभिन्न हलचलो को प्रकाश मे लाने वाले समाचार पत्रो का

---

1. राजपूताना गजट, 8 मार्च, 1896
2. राजपूताना मालवा टाइम्स, 16 मार्च, 1896

उदय हुआ, वहा साहित्यिक एव सास्कृतिक पत्रो का समारम भी हुआ। इन पत्रो को प्रारम्भ करने वाले वे प्रबुद्ध चेता व्यक्ति थे, जिनकी अनुरक्ति राजनीति की अपेक्षा साहित्य मे अधिक थी और जा साहित्य की विभिन्न रचनात्मक विधाओ के माध्यम से विचार-क्रांति की भूमिका निभाने और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने के उदात्त दायित्व को उठाने के लिए तत्पर थे।

इस प्रकार के प्रारम्भिक पत्रो मे विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चद्रिका-मोहन चन्द्रिका, 'सद्धर्म स्मारक' और 'भारत-मार्तण्ड' आदि तथा बाद मे साहित्यिक पत्रो म 'समालोचक, 'सौरभ,' 'त्यागभूमि' आदि प्रमुख थ, तथापि यहा इन साहित्यिक पत्रो के अवदान की चर्चा अभीष्ट नही है। इनके बारे म पृथक् से आगे विचार किया गया है।

दो महत्वपूर्ण राज्याश्रित पत्र

लोकधर्मी पत्रकारिता के अग्रणी कुछ प्रबुद्ध पत्रो का विवरण देने के अनन्तर यहा इस युग के उन दो महत्वपूर्ण राज्याश्रित पत्रो का उल्लेख विशेष रूप से करने योग्य है, जो सरकारी सरक्षण मे रहते हुए भी अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह कर रहे थे।

सर्वहित

'सर्वहित' का प्रकाशन बूदी से 20 फरवरी 1890 को किया गया।[1] इसके प्रथम सम्पादक प० रामप्रताप शर्मा थे और यह पत्र बूदी रियासत की ओर से ही प्रकाशित किया जाने लगा था।

प्रथम नौ वर्षों के पश्चात् प० लज्जाराम शर्मा 'सर्वहित' के सम्पादक बने और प्रबन्धक श्री रगनाथ। तीन वर्षों तक ये दोनो मिल कर 'सर्वहित' को चलाते रहे।

यह पाक्षिक पत्र था और लीथो पर प्रकाशित होता था।

इस पत्र के प्रथम पृष्ठ पर ध्येय वाक्य के रूप म प्रकाशित होता था—

'ईश सुखयतु लोकानविहाय
कपटानि ते भजन्त्वोशम्
श्रेयतु खलोपि सुजनतो, सर्वापि
स्वीकारो तु सर्वहितम्"

सर्वहित का सर्व प्रथम अक राव राजा रामसिंह के राज्यकाल मे प्रकाशित हुआ था। यह पत्र 'राजकीय रगनाथ यत्रालय' से प्रकाशित होता था और लगभग 15 वर्ष तक प्रकाशित होता रहा।[2]

---

1 राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार सघ द्वारा प्रकाशित परिचय पुस्तिका, 1956, पृ० 60

2. सूर्यमल मिश्रण स्मारिका, पृ० 49

रियासती सरक्षण मे सचालित यह पत्र यद्यपि राजकीय मुद्रणालय मे प्रकाशित होता था, किन्तु वह केवल 'गजट' मात्र नही था। उसमे सपादकीय, टिप्पणिया, देशी-विदेशी एव स्थानीय समाचार, धारावाहिक उपन्यास, विज्ञापन, पुस्तक समालोचना और पाठको को सबोधन आदि विषय प्रकाशित होते थे। उसके प्रकाशन को नि सदेह बूदी के शासक का पूरा आशीर्वाद प्राप्त था।

समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ पर 'सर्वहित' के मूल्य और नियम प्रकाशित किये जाते थे।

प्रथम पृष्ठ पर ही प्रकाशित सूचना के अनुसार 'सर्वहित' के दस ग्राहक बनाने वालो को 6 प्रतिया एक साथ खरीदने वालो को, एक प्रति नि शुल्क देने का भी नियम था। लेखको व सहायको को एक प्रति नि शुल्क दी जाती थी। जो लोग पत्र का मूल्य डाक टिकटो के रूप मे प्रेषित करते थे, उनको एक रुपये के टिकट के साथ एक आने के टिकट अधिक भेजना होता था। इतना ही नही, जिन लोगो से वार्षिक मूल्य प्राप्त होता था, उनके नाम सर्वहित के अको मे प्रकाशित किये जाते थे।

यह पाक्षिक पत्र प्रत्येक अ ग्रेजी महीने की 15 व 31 तारीख को प्रकाशित होता था। पत्र म प्रकाशित होने के लिये लेख एव विज्ञापन एक सप्ताह पूर्व तक स्वीकार किये जाते थे।

रीति नीति

'सर्वहित' मे प्रकाशित सम्पादकीय उस समय की हिन्दी के गठन, शैली और स्वरूप के प्रतीक हैं। उसकी भाषा सहज, सरल किन्तु सस्कृत से प्रभावित होती थी सपादकीय लेखो म सस्कृत के श्लोक एव सूक्तिया उद्धृत की जाती थी।

सपादकीय मे अनेक गूढ विषयो के साथ ही साथ भारतवर्ष के समक्ष उपस्थित सामयिक एव सामान्य विषयो का विश्लेषण करने के अतिरिक्त पाठको के लिये विचारोत्तेजक सामग्री भी होती थी।

राज्याश्रित पत्र होते हुए भी देशानुराग की भावनाए जागृत करने मे वह बराबर सचेष्ट था।

पत्र की भाषा, शैली और प्रस्तुतीकरण से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि प गौरवपूर्ण भारतीय सस्कृति और सभ्यता का समर्थक था और भारत की वर्तमा दशा पर अत्यन्त खिन्न था। निम्नलिखित सम्पादकीय अ श से इसका स्पष्ट सकेत मिलता है—

"यहा के लोगो का यश रूपी झडा आकाश मे फहराता था। यहा के विद्वा न्याय, मीमासा, गणित शास्त्र, भूगोल, खगोल, ज्योतिष आदि विद्याओ मे पूर्ण थे और अन्य देशवासी यहा तालीम पाने को आते थे। यह वही देश है, जहा किस

समय मे अनेक आश्चर्योत्पादक काम होते थे। ये सब उद्योग के ही फल थे।...... .....जब यहा के वासी आलस्य के वश मे हो गये तो वे कान हिलाने तक को असमर्थ हो गये।''..........''ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है कि वो भारतवासियो पर कृपा करके भूले हुओ को मार्ग पर लगाये।''

एक अन्य सम्पादकीय मे पत्र के सम्पादको ने देश की दरिद्रावस्था पर खिन्नता प्रकट करते हुए उसका निदान ढूंढने का प्रयत्न किया है।

उनकी दृष्टि मे विद्याध्ययन की कमी और परस्पर मेल न होना उसकी तत्कालीन दयनीय स्थिति के मूल कारण थे।[1]

समाचार

'सर्वहित' मे न केवल बूदी के अपितु भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशो के सबंध मे भी समाचार प्रकाशित होते थे।[2]

समाचारो मे राजस्थान की रियासतो मे नियुक्त पोलीटिकल एजेन्टो, रेजिडेन्टो, भारत के वायसराय, इंगलैण्ड की महारानी आदि के सम्बन्ध मे भी समाचार प्रकाशित होते थे। उनके दौरे आदि का भी उल्लेख किया जाता था।

साहित्य सम्बन्धी समाचार, विभिन्न तीर्थ स्थलो सम्बन्धी समाचार तथा भारत सरकार के विदेशो से सम्बन्ध, व्यापारिक समाचार एव अन्य देशो के समाचार भी सक्षेप मे प्रकाशित होते थे।

सर्वहित मे बूंदी के समाचारो को विशेष स्तम्भ के नीचे प्रकाशित किया जाता था। उसमे बूदी राजपरिवार से सम्बन्धित समाचार तथा तत्कालीन शासक के क्रियाकलापो का विशेष रूप से उल्लेख किया जाता था।[3]

समाचारों मे अग्रेज अधिकारियो के पद की गरिमा के अनुरूप, सबोधनकारक विशेषण प्रकाशित किये जाते थे। श्रीमान् लेफ्टिनेन्ट, भारतेश्वरी महारानी, श्रीमान् लार्ड एलगिन, नवीन बडे लाट साहब, विलायती पडित आदि का उल्लेख उसके समाचारो मे होता था।

बूंदी के महाराव का 'श्रीमान् महाराव राजा साहिब बहादुर' के रूप मे सम्मानपूर्वक उल्लेख होता था और बूदी के समाचारो को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था।

---

1. सर्वहित, पृ. 5 (1 मई, 1894 का अक)
2 ,, पृ. 3 (1 अप्रेल, 1894 का अक)
3. ,, वही ,, ,,

बूंदी नगर के जलवायु का भी निरन्तर समाचारो मे उल्लेख किया जाता था। इतना ही नही त्यौहारो का, राजा के दरबार, उत्सव आदि का भी विस्तार से विवरण प्रकाशित होता था।

'सर्वहित' के समालोचना स्तम्भ मे विस्तृत समीक्षको के साथ-साथ समालोचनार्थ प्राप्त पुस्तको का विवरण भी दिया जाता था। परिचय के अन्तर्गत पुस्तक का नाम, लेखक सम्पादक का नाम, प्रकाशक का पता, पुस्तक का आकार, पृष्ठ सख्या, कागज टाइप आदि का विवरण होने के साथ ही साथ उसका मूल्य तथा प्राप्त होने के माध्यम का भी उल्लेख रहता था। समालोचनार्थ प्राप्त पुस्तक की भाषा, वाक्य-विन्यास आदि की अशुद्धियो का भी उल्लेख किया जाता था। पुस्तक के दोषो का उल्लेख करते हुए उसमे जो कमिया रहती थीं उनकी ओर भी सकेत किया जाता था।

'सर्वहित' का अन्तिम पृष्ठ प्रायः विज्ञापनो से भरा रहता था। नवप्रकाशित समाचार पत्रो, औषधियो, पुस्तको, पुस्तकालयो के विज्ञापन उसमे प्रकाशित होते थे।

प्रकाशन का दायित्व

'सर्वहित' की प्रकाशन व्यवस्था का दायित्व श्री हरिवल्लभ दाधीच वहन करते थे।[1] श्री रामरतन भटनागर ने 'सर्वहित' के सम्पादक श्री लज्जाराम मेहता को तत्कालीन तीन प्रमुख पत्रकारों मे से एक बताया है। उनके अनुसार श्री लज्जाराम मेहता, बाल मुकुन्द गुप्त तथा गगाप्रसाद गुप्त उस समय के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्रकार थे।[2] श्री लज्जाराम मेहता ने सर्वहित के सम्पादक के रूप मे, श्री बालमुकुन्द गुप्त ने भारतमित्र मे अपने शृ खलाबद्ध लेखो 'शिवशम्भू का चिट्ठा' मे भारतीय जनता को जागृत करने का उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक निभाया था। इन सम्पादकों की निष्ठा, साहस, अध्ययन, अध्यवसाय से ही उनके पत्रो को लोकप्रियता मिली। उस काल के पत्रकार महत्वपूर्ण लेखक, कवि, समाजसुधारक, राजनीतिक लेखक और कार्यकर्त्ता, धार्मिक जगत के नेता और सत महात्मा थे। उन लोगों मे अद्वितीय साहस और अपने उद्देश्यो के प्रति अनथक परिश्रम करने की प्रबल शक्ति थी।

हिन्दी के समाचार पत्रो की अन्य प्रदेशो मे भी आर्थिक स्थिति कोई अच्छी नही थी। 'ब्राह्मण' से दूने आकार और चौगुनी आयु के 'प्रदीप' की दशा 'गई बीती' थी। सरकार अपनी इच्छानुसार समाचार पत्रो पर भी कर लगा देती थी।

---

1. सूर्यमल मिश्रण स्मारिका, पृ० 54
2. द राइज एण्ड ग्रोथ आफ हिन्दी जर्नेलिज्म-भटनागर पृ० 220

असामाजिक तत्व समाचार पत्रों के सम्पादकों-पत्रकारों पर आक्रमण तक कर देते थे। ऐसी स्थिति में भी 'सर्वहित' की प्रसार संख्या 240 तक पहुंच गई थी। सर्वहित के प्रत्येक अंक पर उसकी मुद्रण की संख्या प्रकाशित की जाती थी।[1] रीवा का 'भारत भ्राता' उसका समकालिक पत्र था।

'सर्वहित' लीथो में छोटे आकार के 16 पृष्ठों में निकलता था। पत्र की लिखाई छपाई यद्यपि अच्छी नहीं थी, किन्तु इतनी बुरी भी नहीं कि उसको पढ़ा ही नहीं जा सके।

प० लज्जाराम शर्मा चौथे वर्ष के प्रथम अर्द्ध भाग तक उसके सम्पादक रहे और 12-13 संख्या का सम्पादन कर उससे अलग हो गये।

वे 'सर्वहित' छोड़कर 'वेंकटेश्वर समाचार' में चले गये थे। उन्होंने स्वतंत्र रूप से मौलिक ग्रन्थों की रचना की तथा कई अनुवाद भी किये जिनकी कुल संख्या 25 से अधिक है।

राज्याश्रित होने के कारण इस पत्र की जीवन लीला रियासती कर्मचारियों के ही हाथों में थी। उनकी मनमानी से जब चाहा पत्र बन्द कर दिया जाता था और जब चाहा पुन. प्रारम्भ।

प० लज्जाराम जी के पत्र से अलग हो जाने पर उसका व्यक्तित्व बिगड़ गया। न समाचारों में कोई नवीनता और न कोई उद्देश्यपूर्ण लेख ही उसमें प्रकाशित होते थे।

राजनीति को छोड़ कर अन्य विषयों पर पर्याप्त सामग्री प्रकाशित की जाती थी। हस्तशिल्प, समाज, धर्म, भाषा, साहित्य, खेती, कारीगरी पर लेखों के अतिरिक्त उसमें चुटकुले, पहेली, हंसी, साहित्य चर्चा आदि स्तम्भ भी प्रकाशित होते थे।

सर्वहित लगभग 14 वर्ष चल कर बन्द हो गया।

गुप्त जी ने इस समाचार पत्र को 'राजस्थान समाचार' की ही भांति अन्य समाचार पत्रों से नकल मारने का दोषी ठहराया है, क्योंकि वह पत्रों का पूरा नाम न देकर केवल संकेत में ही उनका नाम प्रकाशित करता था।

राधाकृष्णदास के मत में प० मन्नालाल और कन्हैयालाल भी सर्वहित के सम्पादक के रूप में आये थे, किन्तु गुप्त जी का कथन है कि प० लज्जाराम के पश्चात् सर्वहित का कोई सम्पादक ऐसा नहीं हुआ, जिसको वस्तुतः उसका सम्पादक कहा जा सकता हो।

---

1. द राइज एण्ड ग्रोथ आफ हिन्दी जर्नलिज्म-भटनागर पृ० 221

यद्यपि सर्वहित सरकारी पत्र था, किन्तु अपनी सीमाओं के बावजूद उसमे अच्छी मात्रा मे साहित्यिक सामग्री प्रकाशित होती थी।

सर्वहित के विशेष अक भी प्रकाशित हुआ करते थे। ऐसा ही एक बूदी राजपूताना अक वि० स० 1948 मे प्रकाशित हुआ था।

प्रथम माच सन् 1894 के अक मे उसके सम्पादक श्री कन्हैयालाल के होने का उल्लेख डा० ओकारनाथ चतुर्वेदी ने अपने एक लेख म किया है।[1]

सर्वहित के सामान्य समाचारो की भाषा सहज प्रवाहिनी हिन्दी थी, किन्तु उसमे प्रकाशित साहित्यिक निबन्धो और उपन्यास, कविता की भाषा सुघड हिन्दी थी, जिसम न केवल प्रचलित मुहावरो का ही प्रयोग होता था, अपितु वातावरण के अनुसार यथा स्थान से ललित भाषा का भी प्रयोग किया जाता था।

'सर्वहित' के बारे मे समकालीन जोधपुर से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'प्रसिद्ध चित्रावली' मे, जिसके बारे म आगे विस्तार से चर्चा की जा रही है एक विज्ञापन इस प्रकार छपा है —

"सर्वहित"

'हिन्दी का हफ्तेवार अखबार बूदी से निकलता है। इसम अच्छे अच्छे मजमून हाते हैं। कीमत भी बहुत ही कम है कि जिसमे हरेक आदमी लेकर फायदा उठा सके। जैसे किसी चतुर राजा ने अकबर बादशाह को बीरबल की तारीफ म लिखा था कि बीरबल बीरबल ही है, वैसे ही हम भी इसकी सिफारिश मे अपने परचे के खरीददारो और कदरदानो की खिदमत म अरज करते हैं कि सर्वहित सर्वहित ही है। यथा नामा तथा गुणा।"[2]

उक्त विज्ञापन की भाषा से ऐसा प्रतीत होता है कि इसका विज्ञापन पार स्परिक अनुग्रह के आधार पर छापा गया होगा। वैसे भी दोनो पत्र राजाश्रित होने के कारण पारस्परिक सौहार्दवश भी इस प्रकार के विज्ञापन का छापा जाना सहज स्वाभाविक था।

प्रसिद्ध चित्रावली

इस पत्र को, जिसका नामोल्लेख तक किसी लेखक ने नही किया, पहली बार उदयपुर के राजप्रासादो के सग्रह मे से निकाल कर लाने का श्रेय इन पक्तियो के लेखक को है। यह पत्र एक प्रकार से राजस्थान का सर्वप्रथम सचित्र पत्र था।

---

1. सर्वहित के सम्बन्ध मे व्यक्तिश बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध कराने के लिए लेखक डा० ओकारनाथ चतुर्वेदी का कृतज्ञ है
2 प्रसिद्ध चित्रावली, मासिक, जोधपुर, मार्च 1891, आवरण का तृतीय पृष्ठ

इसका प्रकाशन सभवत जनवरी, 1890 मे हुग्रा होगा, क्योकि लेखक को जो सबसे प्राचीन अक मिला है, उस पर सख्या 6 जून 1890 मुद्रित है। प्रकटत जून मे प्रकाशित छठे अ क से इसके जनवरी मे आरम्भ होने का सकेत मिलता है। यह जीवनी साहित्य का अपने ढग का अनूठा पत्र था। इसके मुख पृष्ठ पर इसका उद्देश्य इस प्रकार लिखा है—

"प्रसिद्ध चित्रावली, जिसमे जगद्विख्यात् महत्पुरुषो के चित्र और जीवन चरित्र प्रकाशित किये जावेंगे और जो महीने के महीने राजस्थान जोधपुर से प्रकट होगा।"[1]

यह पत्र दो कालम मे छपता था। एक तरफ हिन्दी म और दूसरी तरफ उर्दू मे सामग्री होती थी। इसका वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित अ ग्रेजी सरकार और राजा महाराजाओ से चार रुपये छै आने, हाकिमो, रईसो और अमीरो से तीन रुपये छै आने, सर्व साधारण रसिक जनों से दो रुपये छै आने और विद्यार्थियो से दो रुपये लिया जाता था। इसमे विज्ञापनो की छपाई का शुल्क एक आना प्रति पक्ति था। चन्दे आदि की सूचना के नीचे मुख पृष्ठ पर देवीप्रसाद नाम छपा होता था। यद्यपि सपादक के पद-नाम का कोई उल्लेख नही है तथापि यह अनुमान लगाना अनुचित नही होगा कि कदाचित् इसके सपादक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मु शी देवीप्रसाद जी थे, जो उस समय जोधपुर राज्य की सेवा मे थे।

'प्रसिद्ध चित्रावली' के जून 1890 के अ क म राव बीकाजी के जीवन चरित्र की कुछ घटनाए और बादशाह शेरशाह का सचित्र जीवन वृत्त जिसके साथ एक पूरे पृष्ठ का रेखा चित्र है, प्रकाशित हुए हैं।

इसी प्रकार सितम्बर, 1891 के अ क मे अब्दुल रहीम खानखाना का जीवन चरित्र मय रेखाचित्र के छपा है। इसमे कुछ ऐसी घटनाए भी वर्णित हैं, जिनका सम्बन्ध राजस्थान से है। खानखाना की उदारता का वर्णन करते हुए मारवाड के जाडा मेहू चारण और उसकी काव्य-प्रतिभा का उल्लेख किया है जिस पर रीझ कर खानखाना ने तीन लाख रुपये दिये थे। इस लेख का सम्बन्धित अ श[2] नीचे उद्धृत किया जाता है —

'मारवाड मे भी उनका (खानखाना का) बडा चरचा है। यहाँ जाडा मेहू नाम का एक चारण बडा कवि हुग्रा है। उसने खानखाना के गुणो का ज्यादातर बखान किया है और खानखाना ने भी उसको खूब खूब दिया है। एक दफे उसने

1. प्रसिद्ध चित्रावली, जून, 1890, मुख पृष्ठ
2 प्रसिद्ध चित्रावली, सितम्बर 1891, अ क 2, पृ० 11–12

खानखाना की तारीफ मे 4 दोहे बनाकर सुनाये। उस वक्त खानखाना के पास 3 लाख रुपये मौजूद थे। वे तो उन्होंने तीन दोहो के इनाम मे दे दिये और चौथे के बदले यह दोहा कह कर एक लाख उससे माफ कराये—

धर जड्डी अंबर जड़ा
जड्डा चारण जोय।
जड्डा नाम अल्लाहदा
और न जड्डा कोय।

जड्डा चारण के चारो दोहे ये हैं :—

खाना खानन बावरो, मोह अचम्भो एह।
पायो किम गिर मेर मन, साढ तिहत्थी देह ॥1॥
खाना खानन बावरो, खाडे आग भड़न्त।
जलवाला नर पराजले, तृण वाला जीवन्त ॥2॥
खान खानन बावरी आदमगीरी धन्न।
मह ठकराई मेर गिर, मनी न राई मन्न ॥3॥
खाना खान न बावरा, अडिया भुज ब्रह्मंड।
पूठ ऊपरे चडीपुर, धार तले नव खण्ड ॥4॥

'प्रसिद्ध चित्रावली' में प्रयुक्त भाषा उर्दू प्रधान होती थी। वस्तुत उस युग मे इस भू भाग के शिक्षित समुदाय पर उर्दू और फारसी का जो प्रभाव था, वह इसकी भाषा मे भी परिलक्षित होता है।

इस पत्र में जहा ऐतिहासिक विभूतियो के सचित्र जीवन चरित्र छपते थे वहा राजनीति से दूर जन सामान्य की रुचि के अनुकूल रोचक समाचार भी छपते थे। यह असदिग्ध है कि इस पत्र को राजकीय सरक्षण पूरी तरह प्राप्त था। पत्र के फरवरी, सन् 1891 के अक मे प्रकाशित महाराव बूदी के शादी के लिए जोधपुर आगमन का समाचार[1] जिस विस्तृत और चित्रोपम ढग से प्रस्तुत किया गया है, वह इस बात का पुष्ट प्रमाण है। इसी प्रकार रूस के राजकुमार की जोधपुर यात्रा का चित्रात्मकतापूर्ण समाचार भी इसी तथ्य की पुष्टि करता है। ये दोनो समाचार निम्न ढग से प्रस्तुत किये गये हैं —

1. 'प्रसिद्ध चित्रावली' जिल्द 2, नम्बर 2 बाबत माह फरवरी सन् 1891 ई आवरण का तीसरा पृष्ठ
2. वही

उक्त उदाहरणो के आधार पर यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि साधारण छपाई के बावजूद 'प्रसिद्ध चित्रावली' की सामग्री की गुणात्मकता उस युग और परिस्थितियो के सन्दर्भ म निराशाजनक न थी।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि राजस्थान मे लोकधर्मी पत्रकारिता का श्री गणेश आज से लगभग एक शताब्दि पूर्व हो चुका था। स्वतन्त्र स्वामित्व वाले पत्र। के साथ-साथ राजकीय सरक्षण म भी अनेक ऐसे पत्र निकले जिन्होने पत्रकारिता के परिमाणात्मक विकास मे अपनी भूमिका अदा की और इसी कारण उनके ऐतिहासिक महत्व को नकारा नही जा सकता।

ऊपर के अनुच्छेदों म जिन पत्र पत्रिकाओ की सक्षेप मे चर्चा की गई है वे उस युग की पत्रिकारिता की लोकधर्मी परम्परा के प्रतीक कहे जा सकते हैं। इनके साथ ही राजस्थान मे उस राजनीतिक चेतना मूलक मिशनरी पत्रकारिता की नीव पडी, जो आगे चलकर स्वाधीनता सग्राम के दौर मे पल्लवित हुई।

अध्याय 5

मिशनरी पत्रकारिता के पचास वर्ष

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना और उसके अनन्तर स्वाधीनता संग्राम समूचे देश के उतर आने पर राजनीतिक चेतना की जो देश व्यापी लहर उठी, से राजस्थान भी अछूता न रहा।

यदि निष्पक्ष रूप से देखा जाय, तो राजस्थान के स्वाधीनता-सेनानियों को दुरी लड़ाई लड़नी पड़ी। एक ओर उन्हें राजाओं के अत्याचार, अनाचार, आर्थिक पण और कुशासन के विरुद्ध जिहाद छेड़ना पड़ा, तो दूसरी ओर उन्हें अंग्रेजी ता के विरुद्ध भी विद्रोह का उद्घोष करना पड़ा। समाचार पत्रों, सम्पादकों, त्रकों और जन नायकों को राजस्थान में इन दोनों मोर्चों पर मुकाबला करना पड़ा। र दृष्टि से, विशेष रूप से सामन्ती व्यवस्था और अंग्रेजी-सत्ता के दुहरे दमन-चक्र शिकार होने पर भी, इन्होंने जो मिशनरी भूमिका, निभाई वह अपने आप में बहुत जस्वी और प्रभावकारी सिद्ध हुई।

बहुधा राजस्थान के राजनीतिक इतिहास से अपरिचित व्यक्ति इस भ्रान्त धारणा से ग्रस्त हैं कि इस सामन्ती भू-भाग का स्वाधीनता संग्राम से कोई सक्रिय सम्बन्ध नहीं था। ऐसे व्यक्तियों का सबसे बड़ा तर्क यह है कि यहां के लोग ब्रिटिश सत्ता से शासित न होकर अपने ही राजाओं और सामन्तों से शासित थे और इसी कारण उनका जो भी संघर्ष था वह इसी वर्ग के विरुद्ध था। किन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है, राजस्थान की रियासतों में जब निरंकुश शासन तन्त्र और उससे प्रसूत दमन, उत्पीड़न, अत्याचार और आर्थिक शोषण के विरुद्ध जन चेतना जागृत होकर लोकतन्त्री मांगों की संवाहिका बनी, तो यह संघर्ष स्वतः ही ब्रिटिश सत्ता के साथ हो गया, क्योंकि जनता यह निरन्तर अनुभव कर रही थी कि जिस दुष्चक्र की भी वह शिकार है, उसके प्रणेता और सम्पोषक अंग्रेज ही हैं। दूसरी ओर रियासतों के आन्तरिक मामलों में ब्रिटेन के हस्तक्षेप ने भी यहां के राजन्य वर्ग में असन्तोष उत्पन्न कर दिया। देशी रियासतों के सामन्तों में इस नई भावना ने जन्म लिया कि

ब्रिटेन उनकी स्वायत्तता में व्याघात उत्पन्न कर रहा है। इस प्रकार ब्रिटिश विरोध की चेतना का यह उदीयमान स्तर राजस्थान में बहुत पहले ही उजागर हो गया था। बहुत आवश्यक है कि इस चेतना के विभिन्न स्तरों और विकास-शृंखला को प्रदेश की राजनीतिक चेतना मूलक मिशनरी पत्रकारिता के परिपार्श्व में समझने का प्रयत्न किया जाय।

चेतावणी रा चूंगट्या

1857 की पराजय के बाद राजस्थान के राजन्य वर्ग में अंग्रेज-विरोधी भावना पहली बार उस समय प्रखर हुई, जब सन् 1903 में लार्ड कर्जन ने एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण समारोह के सिलसिले में दिल्ली में भारत भर के राजाओं-महाराजाओं को एकत्र कर ब्रिटिश ताज के प्रति भारतवासियों की राजभक्ति का विराट प्रदर्शन करना चाहा, और महाराजा उदयपुर को विशेषरूप से आमन्त्रित किया गया। कर्जन के अत्यधिक आग्रह पर राजा फतेहसिंह दिल्ली दरबार में सम्मिलित होने के लिये प्रस्थान तो कर गया किन्तु दरबार में सम्मिलित होने से पूर्व ही उसे दयानन्द के शिष्य शाहपुरा के क्रान्तिकारी केसरीसिंह बारहट ने "चेतावणी रा चूंगट्या" द्वारा अपने गौरव और स्वाभिमान का भान करा दिया गया और वह वापस लौट आया। इस कविता में मेवाड की उस उज्ज्वल परम्परा का स्मरण कराया गया था जिसमें कभी विदेशियों के सामने सिर नहीं झुकाया गया था। इस घटना ने राजस्थान के राजन्य वर्ग और जन सामान्य के मानस को राष्ट्रीय चेतना से झकझोर दिया। कहना न होगा कि राजस्थान का राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक ढाचा अभी भी मध्ययुगीन कृषक सामन्ती स्तर का बना था। ब्रिटिश सत्ता की अधीनता स्वीकार करने से स्वतन्त्र जीविकोपार्जन के पुराने सभी रास्ते रुक जाने और स्वतन्त्र प्रतिभा और पूंजी के विनियोग के प्रायः सब अवसर रुद्ध हो जाने के कारण पुराना मध्य वर्ग लगभग समाप्त हो चुका था। अब यहां मुख्यतः दो ही वर्ग बच रहे थे—एक उच्च अभिजात विशेषाधिकार या भूसत्ता प्राप्त शासकों-जागीरदारों आदि का और दूसरा साधारण गरीब अशिक्षित किसान जनता का और इन दोनों के ऊपर विदेशी गुलामी का जुआ रखा था। अतः इन दोनों वर्गों की सबसे बडी वेदना अंग्रेजो की गुलामी थी, जिसका प्रतिकार पूर्ण स्वाधीनता में ही हो सकता था। इस प्रकार राजस्थान में विदेशी सत्ता को उखाड फेंकने की उद्दाम आकांक्षा सहज स्वाभाविक थी। सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ।। अपने आप में एक युगान्तकारी घटना थी। आरम्भ में कांग्रेस की मुख्य प्रशासनिक सुधारों तक सीमित थी, किन्तु शनैः शनैः — जागृति के फ उद्देश्यों में परिवर्तन हुआ और अनन्त इसके गई। राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रभाव तीव्रगति से ई 1887 में

कालेज, अजमेर के छात्रों ने मिलकर कांग्रेस कमेटी की स्थापना की और सन् 1888 में जब प्रयाग में राष्ट्रीय कांग्रेस का चतुर्थ अधिवेशन हुआ, तो अजमेर का प्रतिनिधित्व भी उसमें किया गया।[1]

स्वदेशी आंदोलन

महर्षि दयानन्द ने स्वधर्म, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज का जो मन्त्र दिया था, उसके अनुरूप राजस्थान के नागरिकों में जागृति उत्पन्न करने के लिये स्वदेशी आंदोलन आरम्भ किया गया। बांसवाड़ा, सिरोही, मेवाड़ और डूंगरपुर में स्वामी गोविन्द गिरी के प्रभावशाली नेतृत्व में यह आंदोलन संचालित किया गया। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर केवल स्वदेशी वस्त्रों को पहनने का निश्चय किया गया। लोगों से मद्यपान छोड़ने और अपने राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये संघर्ष करने का आह्वान किया गया। इन गतिविधियों से ब्रिटिश सरकार चिन्तित हो उठी और उसने एक आदेश जारी करके देशी राजाओं से अनुरोध किया कि स्वदेशी आंदोलन को पूरी तरह कुचल दिया जाये।

इधर बंगाल विभाजन के आदेश से जो आक्रोश उत्पन्न हुआ, उसकी हवा राजस्थान में भी पहुंचने लगी। अंग्रेजी सरकार ने राजस्थान के सभी राजाओं को आगाह किया कि वे अपने अपने राज्यों की सीमा में क्रान्तिकारी साहित्य और आतंकवादी साधनों का प्रवेश न होने दें। परिणामत. दमनचक्र शुरू हुआ। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, उदयपुर, बूंदी, किशनगढ़ और कई अन्य राजाओं ने अपने अपने राज्य में आदेश जारी किये कि किसी भी प्रकार के क्रान्तिकारी संगठन में सम्मिलित होना अथवा क्रान्तिकारी साहित्य रखना या पढ़ना-पढ़ाना और किसी भी सार्वजनिक सभा में बिना अनुमति भाग लेना दण्डनीय अपराध माना जायेगा। इतना ही नहीं, आर्य समाज के साहित्य को भी जब्त करने के आदेश दिये गये और ब्रिटिश विरोधी प्रचार पर पाबन्दी लगा दी गई।

इन सारे नियन्त्रणों के बावजूद राजस्थान में क्रान्तिकारी आंदोलन अपनी जड़ें जमाने लगा। राजस्थान में क्रान्तिकारियों का नेतृत्व जयपुर में अर्जुनलाल सेठी, कोटा में केसरीसिंह बारहट और अजमेर में खरवा के राव राव गोपालसिंह और कृष्णा मिल्स ब्यावर के सेठ दामोदरदास राठी कर रहे थे।[2] भारत के मूर्धन्य क्रान्तिकारी रास बिहारी बोस, शचीन्द्र सान्याल, अमीरचन्द, अवधबिहारी आदि इनके निकट सम्पर्क में थे। अपने आंदोलन को चलाने के लिये धन संग्रह के उद्देश्य से क्रान्तिकारियों के इस समूह द्वारा बिहार के निमेज गांव के जैन उपासरे पर छापा मारने, जोधपुर के एक धनी महन्त को कोटा लाकर उसकी हत्या करने, दिल्ली में

1. कृपया देखें पृथ्वीसिंह महता कृत 'हमारा राजस्थान'
2. वही,

लार्ड हार्डिंग्स पर बम फेंकने आदि की जो कार्यवाहिया की गई, उसके फलस्वरूप उन्हें लम्बी सजायें भुगतनी पडी। इन गतिविधियो ने भी उग्र राष्ट्रवाद की भावना मे पोषित करने मे अपना योगदान दिया।

कृषक-आन्दोलन

राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रो मे राजनीतिक चेतना जागृत करने की दिशा मे कृषक आदोलनो ने असाधारण भूमिका निभाई।[1] इन आंदोलनो के माध्यम से एक ऐसी जागृति आई, जिसने लोगों को अपने राजनीतिक अधिकारो के प्रति सजग किया। आर्थिक शोषण, उत्पीडन, अत्याचार, नाना प्रकार के टैक्सो की भरमार, लाग-बाग और बेगार का एक अन्तहीन सिलसिला जागीरदारी क्षेत्रो मे चल रहा था। इस कुचक्र के विरुद्ध सबसे प्रथम विद्रोह करने का बीडा मेवाड के बिजोलिया ठिकाने के कृषको ने उठाया और राजस्थान के दूसरे क्षेत्र के कृषको के सम्मुख भी विद्रोह का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

बिजोलिया के बाद बेगू में आदोलन हुआ और उसके बाद लाग-बाग और बेगार के विरुद्ध किसान आदोलन बू दी और शेखावाटी में भी चलाये गये, जिनका नेतृत्व क्रमश. पण्डित नेनूराम शर्मा, मास्टर कालीचरण शर्मा ने किया। नेनूराम शर्मा को बू दी से निष्कासित कर दिया गया और किसानो पर गोली चलाई गई। 1921–22 मे मेवाड के अनेक स्थानो जैसे—ईडर, डू गरपुर, सिरोही तथा दाता आदि स्थानो में भील आदोलन फूट पडे।[2]

1930 मे जब महात्मा गाधी ने सविनय अवज्ञा आदोलन प्रारम्भ किया तो उससे राजस्थान भी अछूता नही रहा। अजमेर, जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, उदयपुर और भरतपुर राज्य के नागरिको ने उत्तरदायी शासन की पुरजोर माग की। दोहरी गुलामी के विरुद्ध जनता सगठित होने लगी और प्रजा मण्डलों की स्थापना हुई।

इसके बदले रजवाडो की सामन्ती सरकारो ने दमन चक्र का सहारा लिया। लेकिन जनता जागृत हो चुकी थी।

नये पत्रों का जन्म

इस पृष्ठभूमि में राजस्थान मे राजनीतिक चेतना मूलक उस मिशनरी पत्रकारिता का सूत्रपात हुआ, जो पूरे पाच दशक तक फलती-फूलती रही। देश की स्वाधीनता और राष्ट्रीय सवेदनाओ को जागृत कर उन्हे परिपुष्ट बनाना ही उसका एकमात्र मिशन था। आजकल के क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों अथवा व्यावसायिक अर्थलाभ से वह कोसो दूर थी। त्याग और बलिदान ही उनका एकमात्र पथ था, जिसका अनुसरण पूरे पचास वर्ष तक होता रहा।

---

1 दृष्टव्य रिचर्ड सिसन कृत, 'कांग्रेस पार्टी इन राजस्थान'

2. दृष्टव्य के० एस० सक्सेना कृत, राजस्थान में राजनैतिक जन-जागरण'

मिशनरी पत्रकारिता का श्रीगणेश राजस्थान मे कुछ ऐसे समाचार-साप्ताहिको से हुआ, जिनके जनक सही अर्थों मे प्रदेश के विभिन्न भागो मे आरम्भ किये गये जन-आन्दोलन ही थे। इस सदर्भ मे सबसे महत्वपूर्ण घटना 19 दिसम्बर, 1919 को घटित हुई। जब दिल्ली मे 'राजपूताना-मध्यभारत सभा' की स्थापना रियासतो मे उत्तरदायी शासन की माग को पूरा कराने तथा काग्रेस की गतिविधियो से अपने को सबद्ध करने के उद्देश्य से की गई। नागपुर काग्रेस सत्र के दौरान सभा काग्रेस से सबद्ध हो गई और वर्धा से सन् 1920 मे विजयसिह पथिक के सपादन मे 'राजस्थान केसरी' नामक पत्र निकाला जाने लगा।[1]

बाल गगाधर तिलक के 'मराठा केसरी' का सहधर्मी यह पत्र राजस्थान और मध्यभारत की जनता के अभाव-अभियोगो, उनकी पीडाओ और दमन की कथाओ को मुखर करने लगा। श्री अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ और विज्यसिह पथिक की त्रिमूर्ति इस पत्र को सघर्षों के बीच निरन्तर प्राण-वायु प्रदान करती रही। श्री रामनारायण चौधरी इस पत्र के प्रकाशक और सहायक सम्पादक थे। ठाकुर केसरीसिह बारहट के जामाता श्री ईश्वरीदान आसिया और सागरमल गोपा भी इस पत्र के सम्पादन से सबद्ध थे। पहले यह पत्र वर्धा से और बाद मे अजमेर से निकलने लगा।[2] पत्र की निर्भीक वाणी से घबडा कर ब्रिटिश सरकार और रियासती राजाओ ने अपना दमनचक्र आरम्भ कर दिया। श्री रामनारायण चौधरी को मानहानि के एक मुकदमे मे तीन माह की सजा भुगतनी पडी।[3] परिणामतः यह तेजस्वी पत्र स्वल्प किन्तु सार्थक जीवन बिता कर समाप्त हो गया।

इस पत्र के बन्द हो जाने के बाद पथिक जी ने 'राजस्थान सन्देश' निकाला, किन्तु इसे भी दमन-चक्र का शिकार होना पडा।

सन् 1921 मे काग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन के बाद राजस्थान सेवा सघ की स्थापना हुई। चू कि देसी रियासतो के मुकाबले मे ब्रिटिश शासित क्षेत्रो मे अपेक्षाकृत थोडी स्वतन्त्रता प्राप्त थी, अजमेर को मुक्ति सैनिको ने रियासती जनता पर किये जा रहे अत्याचारों के विरुद्ध जिहाद बोलने के लिए अपना गढ बनाया। देश भक्ति और स्वतन्त्रता का सदेश पहुचाने के लिए अजमेर से ही पत्रो के प्रकाशन का भी निश्चय किया गया और फलत 1922 मे 'नवीन राजस्थान' साप्ताहिक का जन्म हुआ।

'नवीन राजस्थान' ऐसी सस्था का मुख्य पत्र था, जो रियासतो मे अनेक सामूहिक आदोलन चलाती थी। अत राजस्थान मे उसका तेजी से प्रसार होने

1. एल० एस० राठोड, पोलीटिकल एण्ड कान्सटीट्यूशनल डवलपमेंट इन दी प्रिन्सली स्टेट्स आफ राजस्थान, पृ० 40
2 श्रमजीवी पत्रकार सघ परिचय पुस्तिका, पृ० 61
3 नवज्योति दैनिक, 14 अगस्त, 1972, पृ० 4

लगा। वह राजस्थान की मूक जनता की वाणी बन गया। उसका आदर्श वाक्य ही यह था —

यश वैभव सुख की चाह नहीं,
परवाह नहीं जीवन न रहे।
यदि इच्छा है यह है,
जग म स्वेच्छाचार दमन न रहे।[1]

इस पत्र ने विजयसिंह पथिक द्वारा सचालित 'बिजोलिया सत्याग्रह' को पूरा समर्थन प्रदान किया। सन् 1921 म ब्रिटिश सरकार न महाराणा उदयपुर पर कुछ प्रशासनिक सुधार लागू करने के लिए जोर डाला किन्तु महाराणा ने एक न सुनी। परिणामत जन-आन्दोलन हुए। बिजोलिया के किसान अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने वालो मे अग्रणी थे। वे लाग नाना प्रकार के करो और 'बेगार' के शिकजे म जकडे थे। 1918 मे उन्होने आन्दोलन शुरू किया था, जो चार साल के लम्बे सघर्ष के बाद सफल हुआ। अधिकाश अवाछित कर हटा लिय गये और न्याय के लिए पचायतो के माध्यम को स्वीकार कर लिया गया।[2] बिजोलिया के फैसले की खबर 'नवीन राजस्थान' मे निम्न शब्दो म प्रकाशित की गई है —

चार वर्ष का सग्राम ! किसानों की शानदार विजय !!

पत्र छपते समय हमे बिजोलियां से निम्न सम्वाद मिला है

"बिजोलियां के फैसले पर हस्ताक्षर हो गये हैं। लोग असतुष्ट थे, किन्तु आपके अनुरोध से उन्होने स्वीकार कर लिया है। फैसले मे अ ग्रेजी शर्तों से अनुवाद करने मे कुछ त्रुटियां रह गई थी, उन्हें ठीक—अ ग्रेजी का ठीक अनुवाद कर देने की प्रार्थना बिहारीलाल जी से की गई, किन्तु उन्होने ऐसा करने का अधिकार न होना बता और वैसा करा देने की प्रतिज्ञा करके टालाटूली कर दी। पता नही इसम अधिकार की कौन बात थी। पहले ही लोग असतुष्ट थे फिर इस जरासी बात से उन्हे व्यर्थ अधिक क्षुब्ध कर दिया गया है।

पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी आखिर चार वर्ष के कठिन सत्याग्रह के पश्चात् बिजोलिया का फैसला हो गया। इसमे सदेह नही कि यह फैसला उठते हुए राजस्थान के लिए एक खास सन्देश रखता है, परन्तु इस सम्बन्ध मे हम आगे लिखेंगे। यहा हम केवल इस शुभ अवसर पर शासक एव शासितो को बधाई दे देना चाहते हैं। साथ ही मि० हालेण्ड एजेण्ट गवर्नर जनरल राजपूताना, मि० आगिलवी रेजिडेंट मेवाड श्री चटर्जी दीवान उदयपुर और प बिहारीलालजी डाण हाकिम मेवाड

1 आई० एफ० डब्ल्यू० जे० सोविनियर, 1958, पृ० 24–25
2 रमेशचद्र व्यास, मेवाड एन इन्ट्रोसपेक्शन, पृ० 26
3 नवीन राजस्थान, 18 जून, 1922, मुख पृष्ठ

को उस परिश्रम के लिए जो वे इस मामले को शांतिपूर्वक निपटाने के लिए चार मास से कर रहे थे और उस सहायता के लिए जो उन्होंने इस मामले को सफल बनाने मे हमे दी है हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। वास्तव मे मि० हालेण्ड ने इस मामले को शांतिपूर्वक निपटाने की बहुत ही तत्परता दिखलाई।

बी० एस० पथिक"

राजनीतिक चेतना जागृत करने मे 'नवीन राजस्थान' के प्रभाव का परिमाण कितना बढ गया था, उसका अनुमान इसके दूसरे वर्ष के प्रथम अंक म लिखे गये उस सम्पादकीय से लगाया जा सकता है, जिसमे पत्र ने अपनी एक वर्ष की संघषपूर्ण जीवन यात्रा का जिक्र करते हुए आगे कहा है —

'सत्ताधारी इतने चौंके क्यो हैं ? इसीलिए न कि राजस्थान रूपी परतन्त्रता के महा श्मशान मे स्वतन्त्रता की अग्नि प्रज्वलित हो गई है—बिजोलिया से निकली हुई आह की चिनगारी ने सारे राजस्थान की सुप्त शक्तियो को जागृत कर दिया है। निमल चन्द्रिका मे, प्रफुल्ल मल्लिका मे, तरंगित नदी म, कूजित कुटी मे मृदुल समीरण मे कुसुमों की सौरभ मे, बच्चो के हास्य म और वृद्धो के नि श्वास में सब और उसी अग्नि की चिनगारिया उडती नजर आ रही है। वे एक जगह बुझाना चाहते हैं वह दस जगह प्रज्वलित हो उठती है। क्यो नही बुझती ? इसलिए कि वे अग्नि से अग्नि को बुझाते हैं। उनके हृदय मे स्वार्थ की अग्नि प्रज्वलित है। उसी को लेकर उस पर डालते हैं, किन्तु वह घृताहुति का काम करती है। नाटक के मूल मे विपरीत बुद्धि प्रत्यक्ष है, किन्तु आशा नहीं कि वे उसे छोडें। इसके कारण हैं। उनकी दृष्टि म उनके हृदय, दूषण नही, भ्रमण हैं। अपनी पीठ कैसे दिखाई देती है। तभी तो सरकार को भी नरेशों की स्वार्थ कानून बनाने की सूझी है।[1]'

1921–22 मे ही बेगार के विरुद्ध बेगू के किसानों ने आवाज उठाई।[2] इसके बाद मोतीलाल तेजावत की अध्यक्षता मे भील और मीणो ने विद्रोह किया और राजाज्ञा की अवज्ञा का आदोलन छेड दिया। 1922 मे ही सिरोही म भीला ने आंदोलन छेडा किन्तु उसका दमन कर दिया गया। नेताओ की गिरफ्तारिया हुई और उन्ह जेल की सजा सुनाई गई।[3] इन सभी आदोलनो को 'नवीन राजस्थान' से बल प्राप्त हुआ। किन्तु मेवाड म प्रताप', 'राजस्थान केसरी' और 'नवीन राजस्थान' पत्रो के आगमन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और राजकीय गजट मे इस

1 नवीन राजस्थान, माघ शुक्ला 11, रविवार, सवत् 1979 वि० पृ० 4
2 नवीन राजस्थान, अजमेर, 9 जुलाई, 1922
3 नवीन राजस्थान, अजमेर, 23 जुलाई, 1922

आशय की घोषणा की गई कि इन पत्रों को पढ़ना, रखना अथवा उसकी पूर्ण अथवा आंशिक सामग्री को प्रचारित-प्रसारित करना अपराध काबिल दस्तन्दाजी (कोगनीजेबिल आफेन्स) माना जायेगा। इस सम्बन्ध में जो विज्ञप्ति जारी की गई, वह इस प्रकार थी—[1]

"इश्तिहार मजरिया राज श्री महकमहखास श्री दर्बार उदयपुर मुल्क मेवाड़ मरकूमा मिती जेठ सुदी 7 ता० 21 जून सन् 1923 ई० स० 1979 नम्बर–10433

"गुजिश्ता चद सालो से प्रताप, राजस्थान केसरी, व नवीन राजस्थान नामी हिन्दी हफ्तेवार व रोजाना अखबारो म खिलाफ वाकेयात वा मुगालता आमेज मजामीन शाया किये जाते हैं। जिससे कमफहम लोगो को मुगालता होता है और कितने ही मजामीन इस किस्म के पुरजोश अलफाजो मे लिखे जाते हैं जिससे सरासर शाया करने वालों का इरादा यह पाया जाता है के अहालियाने रियासत के निस्बत आम लोगो की तबीयत मे नफरत व हिकारत के ख्यालात पैदा हो और बद अम्नी फैले वा हुक्म वायज की तामील मे बेपरवाही और गुजारी मे रोक अमल म आवे इसलिये यह मुनासिब ख्याल किया जाता है कि इन अखबारो की आमद कतई तौर पर इलाके मेवाड़ मे बन्द किया जावे। लिहाजा जरिये इश्तिहार हाजा हर खास व आम को आगाह किया जाता है कि आयन्दा अगर किसी शख्स का 'प्रताप', 'राजस्थान केसरी' और नवीन राजस्थान' अखबारो का मगाना या किसी के पास इन अखबारो का मौजूद होना *या इन अखबारो का कटिंग (कटा हुआ मजमून) या हैंडबिल पाया* जावेगा तो वह सजा का मुस्तोजिब होगा जिसकी मयाद एक साल कैद सख्त वा 1,000/– एक हजार रुपया जुर्माना तक होगा (फकत) प्रभाशचद्र चटर्जी।"

तरुण राजस्थान

'नवीन राजस्थान' पर प्रतिबन्ध लग जाने के बाद पत्र के सचालको मे इसी पत्र को नया नाम 'तरुण राजस्थान' देकर उसे प्रकाशित करने का उपक्रम किया। किन्तु सरकारी दमन चक्र चलता रहा। इसके सम्पादक शोभालाल गुप्त को सजा होने पर रामनारायण चौधरी ने इसका पूरा दायित्व सभाल लिया। बाद मे इस पत्र से बूदी के तेजस्वी स्वाधीनता-सेनानी और पत्रकार श्री ऋषिदत्त मेहता भी सबद्ध हो गये।

सन् 1922 मे जब बूदी के किसानो ने बेगार, लाग बाग, युद्ध के चन्दे और रिश्वतखोरी के विरुद्ध आदोलन किया तो 'नवीन राजस्थान' ने इस आदोलन को पूर्ण समर्थन दिया। इसी सघर्ष के सदर्भ मे जब वहा के राजनीतिक कार्यकर्त्ता

---

1 सज्जन कीर्त्ति सुधाकर, 2 जुलाई, 1923, पृ० 6

पडित नयनूराम की गिरफ्तारी हुई, तो नवीन राजस्थान ने पडितजी के पिताश्री का बधाई का वह पत्र प्रकाशित किया, जिसे उन्होने अपने पुत्र को भेजा था। यह पत्र बूदी प्रशासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार, क्रूरता और दमन की कहानी को उद्घाटित करने वाला था। नवीन राजस्थान ने इसे अपने 3 दिसम्बर, 1922 के अक मे निम्न प्रकार इसे प्रकाशित किया।

"पडित नयनूराम को बधाई!
(पिता की ओर से पुत्र को)

"प्रिय पुत्र नयनूराम, आशीर्वाद!

"मुझे आज यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि तुम राजस्थान की निस्वार्थ भाव से सच्ची सेवा करते हुए बूदी राज्य के बडे ही अन्यायी नरपिशाच के द्वारा पकडे गये हो और उस कूकर शाही के पाशविक अत्याचारो को सहन करने के लिए अहिंसात्मक सत्य का दृढ कवच पहनकर हसते हुए सब कष्टो को झेल रहे हो। एतदर्थ तुमको तो बधाई है ही, किन्तु देश की भलाई मे बलिदान होने वाले तुम्हारे जैसे सुपुत्र के उत्पन्न होने से मैं भी अपना और निज पूर्वजो का सौभाग्य समझता हू। जाओ बेटा, कृष्ण मन्दिर मे जाओ और आत्मिक बल बढाओ। भारतमाता को स्वतन्त्र बनाओ और दिखाओ हाडा के स्वार्थी गुलामो को सच्चे ब्राह्मणों की करामात—श्रीरग की सच्ची भक्ति अन्त मे पापो का नाश करेगी और सत्य विजयी होगा। तुम्हारा मगलकाक्षी पितृ

नरसिंह शर्मा"

जब नवीन राजस्थान का नाम 'तरुण राजस्थान' हो गया, तो इस पत्र ने भी बूदी के आदोलन को उसी प्रकार समर्थन दिया। पडित नयनूराम की रिहाई के लिए 'तरुण राजस्थान' बराबर हुकारता रहा। 24 अगस्त, 1924 के अक मे नयनूराम जी के साथ दुर्व्यवहार की भर्त्सना निम्न शब्दो मे की गई—

"बूंदी रियासत का घोर पतन
प० नयनूराम जी के साथ दुर्व्यवहार
हमारे विशेष सवाददाता द्वारा

"बूदी 15 अगस्त।

"प० नयनूराम जी को आज बूदी रियासत की धीगाधीगी का शिकार हुए दो वर्ष होने को आये। तब से ये बूदी जेल मे कठोरयातना भुगत रहे हैं। गत जून मे उनके पिताजी उनसे मिलने आये थे। उन्होने बूदी नरेश से पडित जी को छोडने की अनुनय विनय की परन्तु कुछ परिणाम नहीं निकला। इसके बाद बूदी रियासत ने यह विश्वास दिलाया कि पडित जी यदि बूदी राज्य मे आकर आदोलन न करन

प्राणय की घोषणा की गई कि इन पत्रो को पढना, रखना अथवा उसकी पूर्ण अथव आशिक सामग्री को प्रचारित-प्रसारित करना अपराध काबिल दस्तन्दाजी (कोग्नीजे बिल आफेन्स) माना जायेगा। इस सम्बन्ध मे जो विज्ञप्ति जारी की गई, वह इस प्रकार थी—[1]

"इश्तिहार मजरिया राज श्री महकमहखास श्री दर्बार उदयपुर मुल्क मेवाड मरकूमा मिती जेठ सुदी 7 ता० 21 जून सन् 1923 ई० स० 1979 नम्बर–10433.

"गुजिश्ता चद सालो से प्रताप, राजस्थान केसरी, व नवीन राजस्थान नामी हिन्दी हफ्तेवार व रोजाना अखबारो मे खिलाफ वाकेआत वा मुगालता आमेज मजामीन शाया किये जाते हैं। जिससे कमफ्हम लोगो को मुगालता होता है और कितने ही मजामीन इस किस्म के पुरजोश अलफाजो मे लिखे जाते हैं जिससे सरासर शाया करने वालो का इरादा यह पाया जाता है के अहालियाने रियासत के निस्बत आम लोगो की तबीयत मे नफरत व हिकारत के खयालात पैदा हों और बद अम्नी फैले वा हुक्म आयज की तामील मे बेपरवाही और गुजारी मे रोक अमल मे आवे इसलिये यह मुनासिब खयाल किया जाता है कि इन अखबारो की आमद कतई तौर पर इलाके मेवाड मे बन्द किया जावे। लिहाजा जरिये इश्तिहार हाजा हर खास व आम को आगाह किया जाता है कि आयन्दा अगर किसी शख्स का 'प्रताप', 'राजस्थान केसरी' और नवीन राजस्थान' अखबारो का मगाना या किसी के पास इन अखबारो का मौजूद होना या इन अखबारो का कटिंग (कटा हुआ मजमून) या हैंडबिल पाया जावेगा तो वह सजा का मुस्तोजिब होगा जिसकी मयाद एक साल कैद सख्त वा 1,000/– एक हजार रुपया जुर्माना तक होगा (फकत) प्रभाश्चद्र चटर्जी।"

तरुण राजस्थान

'नवीन राजस्थान' पर प्रतिबन्ध लग जाने के बाद पत्र के सचालको मे इसी पत्र को नया नाम 'तरुण राजस्थान' देकर उसे प्रकाशित करने का उपक्रम किया। किन्तु सरकारी दमन चक्र चलता रहा। इसके सम्पादक शोभालाल गुप्त को सजा होने पर रामनारायण चौधरी ने इसका पूरा दायित्व सभाल लिया। बाद मे इस पत्र से बूदी के तेजस्वी स्वाधीनता-सेनानी और पत्रकार श्री ऋषिदत्त मेहता भी सबद्ध हो गये।

सन् 1922 मे जब बूदी के किसानो ने बेगार, लाग-बाग, युद्ध के चन्दे और रिश्वतखोरी के विरुद्ध आदोलन किया तो 'नवीन राजस्थान' ने इस आदोलन को पूर्ण समर्थन दिया। इसी सघर्ष के सदर्भ मे जब वहा के राजनीतिक कार्यकर्ता

---

1 सज्जन कीर्त्ति सुधाकर, 2 जुलाई, 1923, पृ० 6

डित नयनूराम की गिरफ्तारी हुई, तो नवीन राजस्थान ने पंडितजी के पिताश्री का धाई का वह पत्र प्रकाशित किया, जिसे उन्होंने अपने पुत्र को भेजा था। यह पत्र बूंदी प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार, क्रूरता और दमन की कहानी को उद्घाटित करने वाला था। नवीन राजस्थान ने इसे अपने 3 दिसम्बर, 1922 के अंक में निम्न प्रकार इसे प्रकाशित किया।

"पंडित नयनूराम को बधाई !
(पिता की ओर से पुत्र को)

"प्रिय पुत्र नयनूराम, आशीर्वाद !

'मुझे आज यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि तुम राजस्थान की निस्वार्थ भाव से सच्ची सेवा करते हुए बूंदी राज्य के बड़े ही अन्यायी नरपिशाच के द्वारा पकड़े गये हो और उस बूकर शाही के पाशविक अत्याचारों को सहन करने के लिए अहिंसात्मक सत्य का दृढ़ कवच पहनकर हंसते हुए सब कष्टों को झेल रहे हो। एतदर्थ तुमको तो बधाई है ही, किन्तु देश की भलाई में बलिदान होने वाले तुम्हारे जैसे सुपुत्र के उत्पन्न होने से मैं भी अपना और निज पूर्वजों का सौभाग्य समझता हूं। जाओ बेटा, कृष्ण मन्दिर में जाओ और आत्मिक बल बढ़ाओ। भारतमाता को स्वतन्त्र बनाओ और दिखाओ हाड़ा के स्वार्थी गुलामों को सच्चे ब्राह्मणों की करामात —श्रीरंग की सच्ची भक्ति अन्त में पापों का नाश करेगी और सत्य विजयी होगा। तुम्हारा मंगलकांक्षी पितृ

नरसिंह शर्मा"

जब नवीन राजस्थान का नाम 'तरुण राजस्थान' हो गया, तो इस पत्र ने भी बूंदी के आंदोलन को उसी प्रकार समर्थन दिया। पंडित नयनूराम की रिहाई के लिए 'तरुण राजस्थान' बराबर हुंकारता रहा। 24 अगस्त, 1924 के अंक में नयनूराम जी के साथ दुर्व्यवहार की भर्त्सना निम्न शब्दों में की गई—

"बूंदी रियासत का घोर पतन
प० नयनूराम जी के साथ दुर्व्यवहार
हमारे विशेष संवाददाता द्वारा

"बूंदी 15 अगस्त।

"पं० नयनूराम जी को आज बूंदी रियासत की धींगाधींगी का शिकार हुए दो वर्ष होने को आए। तब से ये बूंदी जेल में कठोरयातना भुगत रहे हैं। गत जून में उनके पिताजी उनसे मिलने आये थे। उन्होंने बूंदी नरेश से पंडित जी को छोड़ने की अनुनय विनय की परन्तु कुछ परिणाम नहीं निकला। इसके बाद बूंदी रियासत ने यह विश्वास दिलाया कि पंडित जी यदि बूंदी राज्य में आकर आंदोलन न करने

की शर्तें लिख दे तो छोड दिया जायेगा। पडित जी ने यह स्वीकार कर लिया, कारण कि पहले भी बूदी राज्य के विरुद्ध उन्होने कोई आदोलन नही किया था। उन्होने केवल प्रजा के कष्ट महाराज साहिब तक पहुचाये थे। किन्तु रियासत ने वचन भग किया और पडित जी को नही छोडा। इस प्रकार वचन देकर भी उसका पालन न करना घोर पतन है। किन्तु अब इससे भी बढकर घृणित काम किया जा रहा है। पडित जी से कहा जाता है कि तुम अपना अपराध स्वीकार कर लो। पडितजी का कहना है कि जब मेरा कोई अपराध साबित नही हुआ तो फिर मैं अपनी आत्मा के विरुद्ध कैसे अपराध स्वीकार कर सकता हू। इस बात पर उनके साथ तरह-तरह की सख्तिया की जा रही है। और मारपीट की भी धमकिया दी जाती हैं। उन्हें कहा गया है कि तुम अजमेर जेल मे भेज दिये जावोगे। क्या अजमेर जेल मे यहा से भी अधिक अत्याचार होते हैं और क्या ब्रिटिश नौकरशाही अपने यन्त्रो का रियासतो के कोप भाजनो को सताने के लिए ऐसा उपाय भी करती है। अस्तु, ऐसी अवस्था मे प्रत्येक राजस्थानी और राजस्थानी सस्थाओ का कर्त्तव्य है कि वे बूदी नरेश की सेवा मे एक निर्दोष देश भक्त की रिहाई के लिए प्रार्थना सूचक प्रस्ताव भेजें।"[1]

इसी प्रकार सन् 1925 मे जब *अलवर का कुख्यात नीमचाणा हत्याकाड* हुआ तो 'तरुण राजस्थान' ने इसकी जाच के लिए कमीशन बैठाने और दोषियो को दण्ड दिलवाने के लिए जेहाद छेड दिया। राजस्थान के इस जलियावाला बाग प्रकरण के बारे मे *टिप्पणी करते हुए गाँधीजी ने कहा था कि यह दुधारी डायरशाही* (डायरिज्म डबल डिस्टिल्ड) है। जी० आर० अभ्यकर के अनुसार इस काड मे लगभग 500 से 600 की सख्या मे नर-सहार हुआ, सैकडो जानवर मौत के घाट उतार दिये *गये, गाव को आग लगा देने के कारण अपार जन-धन की* क्षति हुई।

'तरुण राजस्थान' ने इस सम्बन्ध म प्रामाणिक समाचार मुद्रित किये और भुक्तभोगियो से साक्षात्कार कर उनके अनुभवो को प्रकाशित किया, जैसा कि 31 मई, 1925 मे एक भुक्तभोगी की जबानी ज्यादती को इस कहानी को उजागर किया गया है :—

"अलवर राज्य के अन्तर्गत एक गाव नीमूचाचारण है। वहा के निवासियों के साथ जो घोर अत्याचार व नर पिशाच कर्म हुआ है उनको सुनकर किसके रोमांच खडे नही होंगे। किसका ऐसा पाषाण हृदय है, जो उस कथा को सुनकर विदीर्ण न होगा। मैं 14 ता० के पहले तीन चार लाख का आसामी था। मेरे

1, तरुण राजस्थान, 24 अगस्त, 1924, पृ० 7

कुटुम्ब मे अठारह औरत मय व बाल बच्चे थे। परन्तु आज हमारे अलवर के शासको की कृपा से हम सिर्फ दो भाई शेष हैं। एक अलवर की जेल मे है। दूसरा सिर्फ मैं हू जो दुर्भाग्य से बच गया हू। बाकी सब मशीनगन तोपो व फौजी सिपाहियो की बदूको के निशाने बन गये है। कुछ आग मे जल गये हैं। अलवर राज्य ने तो अन्यायपूर्ण कानून बनाये हैं वे दुनिया के किसी राज्य मे आज तक प्रचलित नही हुए हैं। जहा कर भी पूरी तौर पर बढा दी गई है। शासको को शिकार की हवस भी अत्यन्त बढी हुई है। इससे जो कुछ फंदा होता है वह सब स्वाहा हो जाता है। इस पर राजपूतो ने हमारे यहा महाराज तक अपनी फर्याद पहुचाने के लिए सजा की थी, और यह भी तय किया था कि यदि महाराज न सुने तो ब्रिटिश गवर्नमेंट के पास पुकार पहुचाई जावे। इसकी खबर महाराजा को लगी। बस इसी पर-राज्य की तरफ से इम्पीरियल जय पलटन के 500 सिपाही, रेजिमेंट फर्स्ट लानसर्स के 300 जवान, अस्सी तोपखाने के 100 जवान, और दो तोप के जोडे भेज दिये गये। 4 मशीनगने भी आ पहुची यह हमारे यहा नीमूचारण गाव मे जो तहसील बानसूर मे है। ता० 13 को दोपहर को ही पहुच गई सेना ने आते ही गाव को चारो तरफ से घेर लिया और पानी भरने के सब कुओ पर फौज ने अपना कब्जा कर लिया। दूसरे दिन ही ग्रामवासियो मे जल के लिये त्राहि-त्राहि होने लगी। तब मेरे बडे भाई व 10–12 प्रतिष्ठित पुरुष हिम्मत करके फौज बख्शी छाजूसिह और अन्य अफसरो के पास महाराज जयसिंह की दुहाई देते हुए गये। जब उनके पास गये तो उन्होने हुकम किया कि इन पर फायर कर दो। सिपाहियो को फायर करने मे क्या देर लगती। उन्होने तत्क्षण फायर कर दिया। ये सबके सब आदमी वही पर भून दिये गये। पानी के लिए गाव भर चिल्लाता रहा।"[1]

राजस्थान सेवा सघ मे मतभेद पैदा हो जाने पर श्री रामनारायण चौधरी के बाद इस पत्र के सपादक श्री जयनारायण व्यास बने और इसे ब्यावर से निकाला जाने लगा। उन्होंने अपने सहयोगी के रूप मे जोधपुर के श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा को नियुक्त किया। सन् 1929 मे 'तरुण राजस्थान' मे 'सिरोही मे रावण राज्य' शीर्षक से एक ऐसा लेख छपा, जिससे तूफान खडा हो गया। यह लेख इतना करारा था कि सिरोही के नरेश इससे तिलमिला उठे और उन्होने अपने निजी सचिव को बीमा एजेन्ट बना कर ब्यावर भेजा। निजी सचिव ने लेखक का नाम जानने भर के लिए कई हजार रुपये देने का प्रलोभन दिया, किन्तु व्यास जी के तेजस्वी व्यक्तित्व के सम्मुख उसे निराश ही होना पडा।[2]

---

1. तरुण राजस्थान, 31 मई, 1925
2. देखें डा० भवर सुराणा का अप्रकाशित शोध-प्रबंध (रा. वि. वि. पुस्तकालय)

सन् 1928–1929 मे जब 'मारवाड़ी हितकारिणी सभा' की गतिविधिया जोधपुर मे जोरो पर थी, सभा ने मारवाड राज्य लोक परिषद् का आयोजन करने का निश्चय किया। किन्तु सभा पर पाबन्दी लगा दी गई और 28 सितम्बर, 1929 को राज्यव्यापी विरोधी दिवस मनाया गया। व्यासजी ने 'तरुण राजस्थान' म एक लेख लिखकर राज्य की आलोचना करते हुए लिखा था कि जोधपुर के महाराजा उस सफेद बोतल की तरह हैं, जिसमे असली वस्तु के रग का पता चल जाता है। सर सुखदेव के दिनो मे 'सुखदेव शाही' के रग दीखते थे और अब जो राव राजा नरपत हैं, तो उसे 'नरपतशाही' के रग सामने आ रहे हैं। इस लेख के कारण व्यासजी पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उन्हे 6 वर्ष की सजा हुई।

'तरुण राजस्थान' की व्यवस्था समय-समय पर बदलती रही और उसके सपादक भी जेल के आवागमन से बराबर ग्रस्त रहे, पर इस पत्र ने अपने जीवन को सार्थक बनाने मे कोई कोर-कसर न रखी।

राजस्थान

स्वाधीनता आन्दोलन को बल प्रदान करने के लिए सचालित किये गय पत्रो की शृ खला मे श्री ऋषिदत्त मेहता द्वारा सपादित 'राजस्थान' का नाम पत्रकारिता-जगत् मे सुपरिचित रहा है। *सन् 1923 म प्रारम्भ किया गया यह पत्र* पिछले दशक की समाप्ति से पूर्व तक बू दी से प्रकाशित हो रहा था।

यह पत्र पहले ब्यावर से, फिर अजमेर से और बाद मे बू दी से प्रकाशित होने लगा। इसके सपादक श्री ऋषिदत्त मेहता और उनके परिवार ने स्वाधीनता आदोलन के दौरान भारी कुर्बानिया की थी। उनके पिता नित्यानन्द नागर ने नमक आदोलन के समय राजपूताने के प्रथम सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व किया था और उसके बाद दूसरे और तीसरे जत्थे का नेतृत्व स्वय श्री ऋषिदत्त मेहता और उनकी पत्नि श्रीमती सत्यभामा ने किया था।[1]

'राजस्थान' *के सपादक बनने से पूर्व 'प्रताप' और 'तरुण राजस्थान'* के सवाददाता के रूप के रूप मे बूँदी की प्रजा की पीडा को सशक्त वाणी देने के कारण वे अपने पत्रकारी कौशल के लिए प्रख्यात हो चुके थे।[2]

'राजस्थान' में जयपुर, जोधपुर, मेवाड और बीकानेर रियासतो मे सचालित जन-आदोलनो के बारे मे प्रचुर सामग्री छपती थी। आज के वयोवृद्ध पत्रकार और लेखक श्री राजेन्द्र शकर भट्ट इस दौर मे इसके सम्पादकीय विभाग से जुडे थे।

---

1 हाड़ोती का स्वतन्त्रता आदोलन (सम्पादक शातिलाल भारद्वाज) पृ० 91

2 वही, पृ० 84

सन् 1928–1929 मे जब 'मारवाडी हितकारिणी' म
जोधपुर मे जोरो पर थी, सभा ने मारवाड राज्य लोक परिष
का निश्चय किया । किन्तु सभा पर पाबन्दी लगा दी गई और
को राज्यव्यापी विरोधी दिवस मनाया गया । व्यासजी ने
लेख लिखकर राज्य की आलोचना करते हुए लिखा था कि
सफेद बोतल की तरह है, जिसम असली वस्तु के रंग का
सुखदेव के दिनो मे 'सुखदेव शाही' के रग दीखते थे और
हैं, तो उसे नरपतशाही' के रग सामने आ रहे हैं । इस
राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उन्ह 6 वर्ष की

'तरुण राजस्थान' की व्यवस्था समय-समय
संपादक की जेल के आवागमन से बराबर ग्रस्त रहे,
सार्थक बनाने म कोई कोर-कसर न रखी ।

राजस्थान

स्वाधीनता आन्दोलन को बल प्रदान कर
की श्रृंखला मे श्री ऋषिदत्त मेहता द्वारा सपा
जगत् मे सुपरिचित रहा है । सन् 1923 म
दशक की समाप्ति से पूर्व तक बूंदी से प्रका

यह पत्र पहले ब्यावर से, फिर अ
होने लगा । इसके सपादक श्री ऋषिदत्त
आदोलन के दौरान भारी कुर्बानिया की
आदोलन के समय राजपूताने के प्रथम
उसके बाद दूसरे और तीसरे जत्थे का
पत्नि श्रीमती सत्यभामा न किया था

'राजस्थान' के सपादक बन
सवाददाता के रूप के रूप मे बूंदी
कारण वे अपने पत्रकारी कौशल के

'राजस्थान' मे जयपुर, ज
जन आदोलनों के बारे मे प्रचुर
लेखक श्री राजेन्द्र शकर भट्ट द्वा

1 हाडोती का स्वतन्त्रता आ
2 वही, पृ० 84

आजादी के बाद इस पत्र की वह मिशनरी भूमिका तो समाप्त हो चुकी थी और व्यावसायिकता इसके सचालक-सम्पादक के लिए अपनी त्याग और तपस्यामयी पृष्ठभूमि के कारण स्वीकार्य नही थी। फलत राजस्थान निर्माण के बाद यह निर्जीव होता हुआ अन्ततोगत्वा अस्त हो गया।

राजस्थानी पाक्षिक आगीवाण

श्री जयनारायण व्यास ने 'तरुण राजस्थान' के अपने सचित अनुभव के आधार पर 1935 मे बम्बई से 'अखड भारत' दैनिक का प्रकाशन शुरू किया। यद्यपि इसका प्रकाशन-स्थल राजस्थान मे नही था, तथापि इस पत्र का उद्देश्य मध्यभारत और राजस्थान की जनता पर राजाओ द्वारा किये जा रहे अत्याचारो का भण्डाफोड कर उत्तरदायी शासन की दिशा मे विभिन्न जन-आदोलनो को शक्ति प्रदान करना था। इस युग मे दैनिक का सचालन करना साक्षात् लोहे के चन चबाना था। परिणामत आर्थिक सकटो के कारण शीघ्र ही इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

अखण्ड भारत बन्द होने के बाद भी व्यास जी का पत्रकार शान्त न हुआ। जन-नेता होने के नाते उन्होने इस सत्य को अनुभव कर लिया था कि जब तक ग्राम जनता से उनकी अपनी जुबान मे सम्प्रेषण स्थापित न किया जाय, मुद्रित सामग्री के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना लाने के उद्देश्य मे वाछित सफलता पूर्ण अशो तक प्राप्त नहीं हो सकती। इसीलिए उन्होने सन् 1937 में ब्यावर से 'आगीवाण' नामक राजस्थानी भाषा के प्रथम पाक्षिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया। वैसे इसके सपादक के रूप मे बालकृष्ण उपाध्याय का नाम छपता था, किन्तु व्यास जी ही इसके वास्तविक संपादक थे और उनका हौसला ही इसकी प्राण-वायु का कार्य करता था।

जन-आन्दोलनों की खबरें

'आगीवाण' मे राजस्थान के विभिन्न भागो में हो रहे जन आदोलनो की खबरें निडर होकर छापी जाती थी। जागीरदारो के जुल्म, सामन्तो के दमन और अत्याचार तथा समाज मे व्याप्त दुराचारों पर पत्र में प्रचुर सामग्री होती थी। यहाँ बीकानेर, जयपुर, भरतपुर तथा अलवर राज्यो की हलचल की खबरो के कुछ नमूने प्रस्तुत है —

बीकानेर

बीकानेर मे तलाशियां :—

बीकानेर मे श्री रामलालजी आचार्य और श्री गगादासजी का घर की तलाशी ता० 3 नवम्बर ने वठा की खुपिया पुलिस का इन्सपेक्टर ने लीवी। तलाश्या मे कुछ कोनी मिल्यो तो वाने गिरफ्तार कर लिया। और एक परदेशी श्री सुरेन्द्र ने भी

भी पुलिस गिरफ्तार करयो है। ऐसो अन्दाजो है कि वाइसरायजी का अठासू लौट जावा पर ये छोड दिया जासी।

('आगीवाण' पृष्ठ–13, 20 नवम्बर, 1937)

जयपुर

दांता ठिकाना मा जुल्म
(म्हारा खास खबरनिवेस सू)

जयपुर राज्य का ठिकाना दांता मे ठिकाना का नौकर चाकर घणो जुल्म कर राख्यो छै, कुछ दिन हुया लोगा ने जमीन का पट्टा लेकर बुलवाया और गरीबा का पट्टा लेकर फाडकाड्या। लोगा की जमीना ऊपर भी ठिकाना का आदमी कब्जो कर लियो छै, लुगाया, मोट्यारा ने गालियां भी घणी काडी छै, डराय धमकाय कई लोगा ने गढ सु भी काढ दिया बतावे छै।

एक आदमी ने मकान का चेजा करबा पर 20 घण्टा तक हिरासत मे राख्यो और जुर्माना की रकम लेर छोड्यो।

नाईयां सूं बेगार

गाव का आठ नाइया ने जूत्ता दिखार बेगार लेवा ने वही थी। वे बेगार करबा सु नट गया तो फिर उनसू 144/- लेकर छोड्या बतावे है।

शहर मासु नट लोगा भी बुलाय मान्या और 55/- डड का लिया है।

गैर-कानूनी मारपीट

हरीपुरा गाव का एक जाट (किसान ने) 12 घटा बिना कसूर हिरासत मे राख्यो। ऊने मान्यो गाँव का लोगां ने ऊ को चिल्लावो सुन्यो। रात ने ऊने जमानत पर छोड्यो जद और किसानो ने घायल की खाट ले जाकर पुलिस चौकी मे रिपोर्ट करी (मामलो सांभर निजामत मे बतावे है।)

भरतपुर

श्री गोकुलजी वर्मा की गिरफ्तारी
(म्हारा खास खबरनिवेस सू)

मारवाड प्रजा मण्डल रा सभापति श्री पं० अचलेश्वर प्रसादजी री गिरफ्तारी के एक दिन पछे वावा सुसुराजी श्री गोकुलजी वर्मा जा भरतपुर राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता है उणने भी वडारा जिलाम जिस्ट्रेट रा वारट रा आधार पर दफा 323, 504, 176 मायने पकड लिया। ई दफा मे जमानत मुलजिम ने पर छोड्यो जा सके है, पिण पुलिस ने जमानत पर कोनी छोड्या। कानून के खिलाफ इसी कार्यवाही राज मा होबा सू प्रजा मे असतोष फैल बारी खबर है। उम्मेद है भरतपुर रा राजाजी और बठारा

मोटा अफसर ई मामला पर गौर करेला और वाने जमानत पर छोड कर बाका मुकदमा मे कानूनी वरीयता पेश करवा की सुविधा देवेला।

अलवर

अलवर का कार्यकर्त्ता लोगां नैं सजा

अलवर का राज्य मा जिन दस राष्ट्रीय कार्यकर्ता माथे राजद्रोह से मुकदमो चालरयो हो वीको फैसलो ही गयो। चार बठा री कांग्रेस रा जो पदाधिकारी था वाने दो दो साल री कैद और दो नैं एक एक वर्ष री कैद की सख्त सजा दी थी। शेष चार रैया जी म तीन ने तो इकरार कर लियो बतावे है कि वे सार्वजनिक काम मे भाग कोनी लेसी और एक उनमे की जेल मे ही है तीन छूट गया।

ई के अलावा और भी घणा जुल्म होय रया है। साची कहवा वाला ने तो टिकाणी रहवा ही कोनी देवे।

जैपुर राज्य ने चाहिज कि इण जुल्मा री जाच करे और इस्या जानवरां की नांई मिनखा ने पिटवा सू बचावे और अत्याचार करवा वाला ने दण्ड देवे।

[आगीवाण, पृष्ठ–14, 20 नवम्बर, 1937]

साहित्यिक रचनाएं

आगीवाण मे राजस्थानी भाषा के लेखको की सृजनात्मक रचनाए भी प्रकाशित होती थी। कहानियो, लेखो तथा कविताओ को इसम पर्याप्त स्थान मिलता था, और इन रचनाओ की विषय वस्तु युग की माग के अनुरूप समाज-सुधारो, राष्ट्रीय विचारो और भावो से ओत-प्रोत होती थी।

'आगीवाण' के सपादकीय सचमुच बडे आग्नेय होते थे। देशी रियासतो के शासको को उसमे खुले आम चुनौती होती थी कि वे समय की गति को पहचानें और तद्नुसार अपने आचरण मे परिवर्तन करें।

'आगीवाण' अपनी लोकप्रियता के बावजूद बहुत दीर्घजीवी न हो सका, क्योंकि व्यासजी का यायावर जीवन पत्र के स्थायित्व के लिए अनुकूल नही था। वे कभी लोकराज्य परिषद् के काम से बम्बई, कभी जोधपुर और कभी जेल की हवा खाते थे। अत सन् 1939 म उन्होंने इससे मुक्ति प्राप्त कर ली।[1]

मीरां

राजस्थान मे नारी जागरण का शखनाद करने के लिए इस साप्ताहिक का प्रकाशन स्वतन्त्रता-सग्राम के सेनानी श्री जगदीश प्रसाद दीपक द्वारा अजमेर से सन् 1930 में आरम्भ किया गया। दीपक जी का यह विश्वास था कि राजनीतिक स्वतन्त्रता के सम्पूर्ण सुख के लिए नारी-जागरण अनिवार्य शर्त है। दीपकजी नारी

---

1. आगीवाण, 20 मई, 1939 का अंक

को राष्ट्र के पुन निर्माण की धुरी मानकर चलते थे। यह पत्र तीन दशक से भी अधिक समय तक चल कर सन् 1962 मे बन्द हो गया।

बत्तीस वर्ष के अपने जीवन मे इस पत्र ने जहा राजस्थान मे नारी-चेतना की दिशा मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, वहा इसने स्वतन्त्रता-सग्राम के शहीदो, महान् साहित्यकारो और कलाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व को उजागर करने का भी भागीरथ प्रयत्न किया।

इस पत्रिका के माध्यम से राजस्थान की अनेक लेखक और लेखिकाए साहित्य जगत् मे प्रकाश मे आई, जिनमे रानी लक्ष्मीकुमारी चु डावत, निनेश नन्दिनी चोरडिया, डा० सुधीन्द्र, ओकारनाथ दिनकर आदि के नामो का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है।

'मीरा' की एक विशेषता यह थी कि इसका दृष्टिकोण बहुत ही सोद्देश्य और वस्तुपरक होता था। इसमे जहा राजाओ के अनैतिक कार्यों की भर्त्सना की जाती थी, वहा उनके द्वारा किये गये सामाजिक एव राष्ट्रीय महत्व के कार्यों की सराहना भी की जाती थी।

जैसा कि अजमेर के पत्रकार श्री मोहनराज भण्डारी ने दीपक जी के बारे मे लिखे गये अपने एक निबन्ध मे कहा है मीरा अजमेर के जन जीवन का प्रतिबिम्ब हो बन गई थी।'

राजनीतिक चेतना का नया दौर

उन्नीस सौ पैंतीस के अधिनियम के अन्तर्गत जब ब्रिटिश शासित क्षेत्रों मे प्रादेशिक धारा सभाओ के चुनाव हुए, तो छै प्रदेशो मे कांग्रेस को भारी बहुमत प्राप्त हुआ और जुलाई 1937 मे मन्त्रिमण्डल गठित हो गये। कांग्रेस की इस असाधारण असफलता से देशी राज्यो मे चेतना की एक नई लहर फैली और वहा की जनता अपने नागरिक अधिकारो की प्राप्ति और उत्तरदायी शासन की स्थापना की दिशा मे और अधिक जागरूक और सक्रिय हो गई।

महात्मा गाधी ने देशी राज्यों की जनता का आह्वान करते हुए सामन्तशाही उन्मूलन की दिशा मे उन्हें प्रेरित किया। 'हरिजन' मे एक टिप्पणी लिखते हुए उन्होने कहा [1]

"The people of States are paymaster, and the prince and the officials are their servants also have to do the will of their masters This is literally true of awakened and enlightened people,

---

1 हरिजन, 3 दिसम्बर, 1938

who know the art of thanking and acting as of one mind I would urge the people in the other States to hasten alowly. Swaraj is for the awakened and not for sleepy and ignorant Liberty is theirs if they will have patience and selfrestraint."

इस प्रकार 1938 मे जो चेतना का नया मत्र गाधीजी ने दिया, उसका प्रभाव राजस्थान मे भी बहुत कारगर साबित हुआ। इस वर्ष राजस्थान की अधिकांश रियासतो मे प्रजा मडलों की स्थापना हो गई और इस चैतन्यपूर्ण वातावरण ने जन-जागरण को एक नई दिशा, नया मोड और नई गति प्रदान की। इसी पृष्ठभूमि मे राज्य मे नये समाचार पत्रों और पत्र-पत्रिकाओ का एक नया दौर शुरू हुआ।

प्रभात

इस नये दौर मे जो दैनिक प्रकाशित हुए, उनमे जयपुर से प्रकाशित 'प्रभात' का उल्लेख काल-क्रम की दृष्टि से सर्वप्रथम आवश्यक है। वैसे तो यह पत्र 1932 म श्री लाडली नारायण गोयल के सपादकत्व मे प्रारम्भ हुआ था और इसके सपादक मण्डल से श्री सिद्धराज डड्ढा भी सम्बद्ध थे, तथापि उस समय यह मासिक पत्र ही था। इसे दैनिक पत्र के रूप मे सन् 1938 के आसपास ही निकाला जाने लगा। किन्तु आर्थिक कठिनाइयो के कारण यह जल्दी ही बन्द हो गया।

इसके बाद सन् 1941 मे यह पत्र पुन श्री सत्यदेव विद्यालकार के सपादकत्व मे निकाला जाने लगा, किन्तु आर्थिक अवरोध ने पत्र के प्रकाशन को पुन बन्द करने के लिए विवश कर दिया।

1947 मे पुन. बाबा नरसिंहदास ने इसे उग्र राष्ट्रीय विचारधारा के साप्ताहिक के रूप मे प्रारम्भ किया। बाबाजी ने 15 अगस्त 1947 के अपने सपादकीय मे इस पत्र के बार बार बन्द हो जाने के कारणो पर प्रकाश डालते हुए इसके उद्देश्य को इस प्रकार स्पष्ट किया था [1]

जैसे सूर्य कभी-कभी बादलो में छिप जाने के कारण दिखाई नही पडता, उसी तरह 'प्रभात' भी आपके सम्मुख नही रहा है और अपना कर्तव्य उसने नही निभाया है। उत्तर ध्रुव मे छह मास के बाद सूर्य दर्शन देता है, इसी प्रकार अपनी जन्मभूमि की प्रेरणा के बिना यही जयपुर मे भी वह कभी कभी विलीन हो जाता है। अब वह अपने प्रेमी पाठकों को यह विश्वास दिलाता है कि वह कभी अदृश्य नहीं होगा।

"प्रभात सदा से ही स्वतन्त्र रहना चाहता रहा है और किसी का न बन कर रहना उसका निश्चय था। इससे वह आर्थिक क्षति का भार नही सह सकता था।

1. जयपुर की पत्र-पत्रिकाओ का स्वाधीनता आदोलन मे योगदान, पृ० 22

वह अर्थ का दास बनने से इन्कार करता रहा है। यही कारण है कि कभी कभी उसका प्रकाशन बन्द हो जाया करता था। भूचाल के थपेडो से वह लडखडा जाता था।......... आप जानते हैं कि 'प्रभात' धन उपार्जन के लिए नहीं, बल्कि विपत्ति मे आपकी सेवा करने के उद्देश्य से आया है।"

'प्रभात' का लक्ष्य राजस्थान की शक्तियो को एक सूत्र मे बाध कर राजस्थानी जनता मे फैले हुए अन्धकार को दूर कर यहाँ के जन-जीवन मे जागृति, जीवन और स्वाभिमान की भावना विकसित करना था।

उसकी स्थापना का यह लक्ष्य जब पूरा हुआ, तो 1947 मे इसके मुख पृष्ठ पर निम्नलिखित पद्याश प्रकट होने लगा था :

> हुआ समाप्त विदेशी शासन, पाया सत्ता दान।
> सदियो बाद क्षितिज पर छाई, आज अरुण मुस्कान।।[1]

किन्तु यह खेदजनक प्रकरण था कि स्वाधीनता के सूर्योदय के बाद भी यह पत्र पल्लवित न हो सका और इसके सचालको को इसे बन्द करने को वाध्य होना पडा।

नवज्योति

'नवज्योति' का प्रकाशन 1936 मे अजमेर से रामनारायण चौधरी ने प्रारम्भ किया। प्रारम्भ मे यह साप्ताहिक पत्र राजस्थान सेवक मण्डल के स्वामित्व मे था, किन्तु 1938 मे यह चौधरी जी के हाथो मे ही पूर्णत सौंप दिया गया।

रामनारायण चौधरी जैसे तपे हुए देशभक्त के सपादन मे यह पत्र बहुत ही लोकप्रिय रहा और उन्हे अपने समय के मूर्धन्य लेखको का सहयोग इसमे प्राप्त हुआ। 'नवज्योति' की रीति नीति उस समय क्या थी, इसके बारे मे स्वय श्री रामनारायण चौधरी ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं।[2]

"मेरे अखबार को यह फख्र हासिल रहा कि उन्होने निडर होकर निरकुश हुकूमत की बेजाबूतगियो, ज्यादतियो और कुचक्रो पर प्रकाश डाला, टीका की और जनता की आवाज व राष्ट्र की भावना और पीडितो की पुकार को प्रतिध्वनित किया। इसका पुरस्कार भी ब्रिटिश सत्ता ने अच्छा दिया। उसकी तरफ से अनेक बार चेतावनिया मिली, तलाशिया ली गई और 7 साल के अर्से मे प्रेस और पत्र से कई बार जमानतें तलब की गई। हैलोज साहब जिले के कमिश्नर थे। वे अपने अन्धे

---

1. जयपुर की पत्र पत्रिकाओ का स्वाधीनता आदोलन मे योगदान, पृ० 23
2 रा० ना० चौधरी, वर्तमान राजस्थान का उ थान, पृ०

काग्रेस विरोध के कारण काफी बदनाम थे। उन्होने यह हिदायत जारी करवा दी थी कि मेरे अखबार और प्रेस को म्युनिसपलटियो, सरकारी महकमो और सहायता प्राप्त सस्थाग्रो से कोई काम न दिया जाय। ईश्वर का धन्यवाद है कि इन चट्टानो से टकरा कर भी यह नाव नहीं टूटी।"

बाद मे 'नवज्योति' को श्री रामनारायण चौधरी ने अपने अनुज श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी को सौप दिया, जिन्होने इसे साप्ताहिक से दैनिक कर दिया।

'नवज्योति' का प्रचार-क्षेत्र राजस्थान के अधिकाश भागो मे था।

इस समय इसके तीन सस्करण अजमेर कोटा, जयपुर से प्रकाशित हो रहे है। जयपुर सस्करण का प्रारम्भ 1962 में किया गया था। इस पत्र ने राजस्थान के जन-जीवन को प्रतिबिम्बित करने और उसके अभाव-अभियोगों को वाणी देने मे बहुत मूल्यवान् योगदान किया है। पूर्व स्वाधीनता युग मे जहा उसने रियासती शासकों के शोषण, अत्याचार और निरकुशता के खिलाफ आवाज बुलन्द की, वहा स्वाधीनता के बाद लोकतन्त्री शासन मे नौकरशाही की मनमानी और अन्य सामाजिक विद्रुपताओ के विरुद्ध भी उसने समय-समय पर तीखी और कटु आलोचनाए की हैं। यह पत्र निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर है।

नवजीवन

1938 मे प्रारम्भ हुए राजनीतिक चेतना के नये दौर में प्रकाशित होने वाले पत्रों मे 'नवजीवन' का स्थान अनेक दृष्टियो से अग्रणी हैं। अजमेर से सन् 1939 मे प्रारम्भ किये गये इस पत्र ने न केवल राजस्थान के विभिन्न भागा मे राजाओ और जागीरदारों के खिलाफ जन-आदोलनो का समर्थन किया, अपितु राष्ट्रीय विचार धारा के सृजनात्मक साहित्य को प्रकाशन मे लाने की दिशा में भी बहुत फलदायी प्रयत्न किये।

'नवजीवन' के प्रवेशाक मे उसके लक्ष्य के रूप मे मुख पृष्ठ पर निम्न पद्याश प्रकाशित किया गया था :

प्रजा-प्रजाधिप प्रेम प्राप्त कर, कर दुख दमन-निवारन।
भेद-भाव छल छिद्र दुष्टता, दम्भ विनाशन कारन॥
प्रकटित हुआ सकल वसुधा के, शुभ सुधार का साधन।
मानव-जीवन को नवजीवन, दान हेतु 'नवजीवन'॥

सन् 1941 के अकों मे मुख पृष्ठ पर उक्त पद्याश के स्थान पर निम्न पक्तियां प्रकाशित होने लगी —

सेवक राष्ट्र-समाज का, नृप-जनता का सेतु।
'नवजीवन' प्रकटित हुआ, नवजीवन के हेतु॥

प्रवेशांक के सम्पादकीय मे पत्र की रीति नीति और सामग्री के स्वरूप के बारे मे विस्तार से चर्चा करते हुये यह कहा गया कि नवजीवन पाठको के सामने ससार की घटनाओ, विचारो और आदर्शों के भिन्न भिन्न पहलुओ का हृदयगम विवेचन करेगा, भारतीय घटना-चक्र के घात-प्रतिघातो का हितकर विश्लेषणसामने रखेगा और देशी राज्यो के शासक और शासितो के बीच सघर्ष रहित और प्रेमपूर्ण व्यवहार शैली का मार्ग-दर्शन करेगा। सम्पादकीय मे यह भी स्पष्ट किया गया कि 'नवजीवन' किसी दल विशेष का पत्र न होकर देश के राजनीतिक वातावरण का सच्चा वायुनापक यन्त्र रहेगा।[1]

'नवजीवन' के प्रवेशाक से ही इसके तेजस्वी स्वरूप का सकेत मिल जाता है। इस अक मे ही 'मेवाड के प्रधानमन्त्री अलविदा', 'सिरोही जेल मे राजबन्दियो के साथ दुर्व्यवहार', कोटा मे अकाल से हाहाकार, आदि शीर्षको से समाचार छपे हैं, जो विभिन्न भागो के जन-जीवन की हलचलो के प्रति सपादकीय जागरूकता और सवेदनशीलता के परिचायक हैं।[2]

6 जनवरी, 1940 के अक तक इस पत्र के सपादक ठाकुर नारायणसिंह रहे, किन्तु इसके बाद श्री कनक मधुकर जो अब तक सहायक सम्पादक थे, इसके सचालक सपादक हो गये। किन्तु इससे पत्र की रीति-नीति मे कोई परिवर्तन नही हुआ। श्री कनक मधुकर के सम्पूर्ण सम्पादकत्व मे निकले प्रथम अक मे भी 'मेवाड के रिश्वतखोरो का भडाफोड', 'बीकानेर मे अग्निकाण्ड', 'करौली मे अकाल' और 'जोधपुर म सभाओ पर पाबन्दी' आदि समाचार छपे हैं। तब से यह पत्र जारी है।

प्रजासेवक

प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी और 'तरुण राजस्थान' तथा 'सैनिक' मे पत्रकारिता का प्रशिक्षण प्राप्त श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा ने इस साप्ताहिक का प्रकाशन सन्[3] 8 मे जोधपुर से प्रारम्भ किया। वस्तुत यह पत्र श्री जयनारायण व्यास की प्रेरणा से मारवाड राज्य लोक परिषद् के आन्दोलन को समर्थ देने के विशेष उद्देश्य से निकाला गया था, जो आगे चलकर प्रान्त का बहुमत लोकप्रिय साप्ताहिक हो गया।

अपने निष्पक्ष समाचारो, तीखी और बेबाक टिप्पणियों तथा प्रामाणिक लेखो द्वारा इस पत्र का प्रदेश के साप्ताहिको मे अपना विशिष्ट व्यक्तित्व बन गया था।

'प्रजासेवक' जन-जीवन की समस्याओ के प्रति निरन्तर जागरूक रहा और राजस्थान-निर्माण के बाद भी जनता के अभाव-अभियोगों को वाणी देने मे वह

---

1 नवजीवन, 16 दिसम्बर, 1975, पृ० 6

2 वही, पृ० 9

3 प्रेस रजिस्ट्रार की रिपोर्ट, 1972

प्रदेश के अन्य साप्ताहिको की तुलना मे सदैव अग्रणी रहा। यद्यपि व्यावसायिक प्रतियोगिता के इस युग मे इस प्रकार के पत्र का पनपना सरल कार्य नही था, तथापि इसके सपादक के स्वाधीनता सग्राम से एक सक्रिय सेनानी के रूप मे सबद्ध रहने और उसकी निष्पक्ष लेखनी के कारण इसका अपना पृथक् स्थान प्रदेश की पत्र-कारिता मे बना रहा।

जयभूमि

जयपुर राज्य मे जन-जागृति की उत्कट कामना से प्रेरित होकर श्री गुलाब चन्द काला ने इस पत्र का प्रकाशन 1 सितम्बर, 1940 को एक पाक्षिक के रूप मे प्रारम्भ किया।[1] रग के अपने पारिवारिक कारोबार को छोडकर श्री काला ने पूर्ण रूप से अपने आपको पत्रकारिता को समर्पित कर दिया।

सितम्बर, 1943 मे यह पत्र साप्ताहिक और 1946 मे दैनिक हो गया।[2] जयपुर म आज के कई वरिष्ठ पत्रकार-श्री राजमल सघी श्री प्रवीणचन्द्र जैन, श्री नन्दकिशोर पारीक आदि गुलाबचन्द कालाजी से दीक्षित और प्रशिक्षित हुए। इस पत्र पर आर्थिक सकट के बादल बराबर मडराते रहे, किन्तु इसके सम्पादकीय विभाग के मिशनरी पत्रकारों की लगन और परिश्रम से यह पत्र अपने को सन् 1957 तक किसी न किसी प्रकार जीवित रखने में समर्थ रहा। बाद मे कालाजी ने इसे पुनर्जीवित करने के अनेक प्रयत्न किये, किन्तु उन्हें सफलता नही मिल सकी। फिर भी राजस्थान की पत्रकारिता में कालाजी ने जिस जीवट के साथ एक पत्रकार के दायित्व का निर्वाह किया, वह अनुपमेय थी।

दो पत्र : एक पत्रकार

बीते युग की एक विभूति हैं—श्री प्रियतम कामदार। सन् 1935 से लेकर 1945 तक के एक दशक के बीच प्रियतम कामदार ने दो ऐसे पत्र निकाले, जिन्होंने जयपुर रियासत मे जन जागरण का अलख जगाने मे अपना महत्वपूर्ण योगदान किया। उनमे पहला पत्र था जयपुर समाचार और दूसरा पत्र था —'प्रचार'

जयपुर–समाचार

प्रियतमजी की पैनी दृष्टि इस बात को भली प्रकार पहचानती थी कि सीधे सपाट तथ्य परक समाचारों को छापने की बजाय सृजनात्मक साहित्य के दुशाले मे लपेट कर जागीरदारी जुल्मो और सामन्ती अत्याचारो पर हमला बोलना ज्यादा सुगम

---

1 महेन्द्र मधुप, जयपुर की पत्र-पत्रिकाओ का स्वाधीनता आन्दोलन मे योगदान, पृ० 26

2 वही, पृ० 27

मार्ग है। इसलिए उन्होने सामाजिक विषमताम्रो पर चोट करने के साथ साथ जागीरी जनता के दुख दर्दों को इस माध्यम से उजागर करना शुरू किया।

ग्रामीण ऋण-ग्रस्तता ग्रौर सागडी की जिस नृशंस प्रथा का ग्राज उन्मूलन हो रहा है, प्रियतमजी ने मानव-श्रम के शोषण के इस दर्दनाक पहलू पर उन दिनों प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया था। 27 ग्रक्टूबर 1935 के ग्रक मे प्रकाशित 'ब्याज-खोरी' शीर्षक लेख मे पजाब प्रान्त मे ब्याज खाने वाले एक साहूकार को उसके देनदार द्वारा जलाकर मार डालने के समाचार का उल्लेख करते हुए कहा गया है—

'जुल्म का प्रत्याघात इस हद तक हो सकता है। छोटे छोटे ग्रामो मे बसने वाले गरीबो को साहूकार लोग किस तरह चूसते हैं, इसका ठीक-ठाक पता बहुत थोडे लोगो को होता है। यह कथा इतनी भयकर है कि उसे सुनकर नेत्रो से रक्त टपकने लगता है।'[1]

इस प्रकार प्रियतम कामदार सामन्ती दमन ग्रौर ग्रत्याचारो तथा जागीरदारो के जुल्मो पर चोट करते रहे। उन्होने जन-जीवन की पीडा को वाणी देने मे ग्रपनी लेखनी से ग्रस्त्र का काम लिया। ग्राखिरकार वह दिन ग्रा ही गया जब वे जयपुर रियासत के प्रशासन की ग्राख की किरकिरी बनने लगे। सर मिर्जा इस्माइल ने पत्र निकालने ग्रौर प्रेस रखने के लिए पाच सौ रुपये की नकद जमानत के साथ ग्रनेक कडी शर्तों की घोषणा उनके पत्र ग्रौर ग्रागे के सभावित प्रयत्नो को समाप्त करने के लिए ही की, इसकी पुष्टि उस जमाने के सरकारी मुखपत्र 'जयपुर गजट' में छपे ग्रादेशो से हो जाती है। ग्रन्ततोगत्वा सन् 1936 के ग्रन्त में तत्कालीन सरकार ने प्रियतमजी का प्रेस नष्ट कर उनके पर काट दिये।

प्रचार

फिर भी परकटे परिंदे प्रियतम कामदार ने 8 ग्रगस्त, 1942 को 'प्रचार' नाम से एक ग्रौर ग्रखबार निकाला—1942 के उस दौर में जब राष्ट्रीय चेतना ग्रपने पूरे उफान पर थी।

उन्होंने खुले ग्राम घोषणा की :

चोर, पापी ग्रौर उल्लू
सदा ग्र धेरा चाहते है
'प्रचार' पब्लिक की सर्चलाइट है।

'प्रचार' सचमुच पब्लिक की सर्चलाइट था। इसमें समाज द्रोही तत्वों, कालाबाजारी करने वालो ग्रौर मुनाफाखोरों की जमकर खबर ली गई। चोरबाजारी

---

1 प्रसिद्ध जौहरी एव समाज सेवी श्री खेलशकर के पिताश्री 'दुर्लभ' जी का लेख, पृ० 13

के खिलाफ जिहाद बोलते हुए प्रचार में एक खुली चिट्ठी छापी गई, जिसमे माँग की गई कि व्यापारी चोरो के लिए फैसले स्पेशल कोर्ट मे हो, मुकदमो की सुनवाई रामनिवास बाग जैसे सार्वजनिक स्थान पर हो, मुकदमो के फैसले एक सप्ताह के भीतर हो जायें, अपराध सिद्ध होने पर लाइसेंस रद्द किये जायें। मालदार व्यापारियों पर जुर्माने से असर नही होता इसलिए उन्हे जेल की सजा दी जाय और व्यापारी चोरो को पकडाने वाले प्रबुद्ध नागरिको को पुरस्कृत किया जाय। जयपुर राज्य के उद्योग व्यापार, हस्तकला, नगर की सफाई, प्रशासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार और ढिलाई, सभी की ओर 'प्रचार' ने जनता-जनार्दन का ध्यान आकृष्ट किया।

सन् 1944 मे जब जयपुर के एक मात्र साहसी अंग्रेजी पाक्षिक 'राजस्थान' टाइम्स' के प्रकाशन पर सर मिर्जा इसमाइल ने डिफेंस आफ इंडिया एक्ट के तहत पाबन्दी लगाई, तो 'प्रचार' ने इस पत्र की जन-जागरण सम्बन्धी ऐतिहासिक भूमिका पर पूरा विशेषांक प्रकाशित कर सरकार की इस दमन नीति की निन्दा की।

एक और जयपुर समाचार

श्री प्रियतमलाल कामदार के 'मान सूर्योदय' अथवा 'जयपुर समाचार' के बन्द होने के बाद श्री श्यामलाल वर्मा के सपादन मे जयपुर से ही इस दैनिक का प्रकाशन 8 सितम्बर, 1942 को प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक हिन्दू राष्ट्रवाद के कट्टर समर्थक रहे। हिन्दी आन्दोलन का समर्थक होने के कारण इस पत्र पर भी। जनवरी, 1943 को निषेधाज्ञा जारी कर दी गई और सम्पादक को 6 माह की जेल भुगतनी पडी। बाद मे सर वी० टी० कृष्णामाचारी के प्रधान-मन्त्रित्वकाल में 28 अक्तूबर, 1946 को इसका प्रकाशन पुन आरम्भ हुआ। अभी कुछ वर्षों पूर्व तक मह पत्र निरन्तर निकल रहा था।

लोकवाणी

जयपुर से ही जनवरी, 1943 मे साप्ताहिक 'लोकवाणी' का प्रकाशन श्री जमनालाल बजाज की स्मृति मे प्रारम्भ किया गया। इस पत्र का प्रकाशन पत्र-कारिता के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण घटना थी, क्योकि इसके प्रकाशन के पीछे राज्य के अनेक ख्यातनामा बुद्धिजीवियो का सगठित प्रयत्न था। श्री हीरालाल शास्त्री की प्रेरणा से श्री देवीशकर तिवाडी के सपादकत्व मे इसका श्रीगणेश हुआ और बाद मे श्री सिद्धराज ढड्ढा, श्री जवाहरलाल जैन, श्री पूर्णचन्द्र जैन और श्री राजेन्द्र शकर भट्ट जैसे अनेक पत्रकार इसके सम्पादन से सम्बद्ध हो गये।

प्रारम्भ मे इस पत्र का सचालन जयपुर राज्य प्रजा मण्डल के नेताओ के हाथ मे रहा और इसी कारण इसका प्रमुख लक्ष्य प्रजा मण्डल की गतिविधियों और उसके द्वारा उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिये किये जा रहे प्रयत्नों को उजागर करना था।

श्री हीरालाल शास्त्री ने लोकवाणी की भूमिका के बारे मे प्रकाश डालते हुए अपनी आत्मकथा 'प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र' मे लिखा है[1] कि 'लोकवाणी' के द्वारा लोक-शिक्षण का अच्छा काम हुआ, तो दूसरी ओर उसे नाना प्रकार की कठिनाइयो का सामना करना पडा। कई लाख रुपये का घाटा हो गया, जिसे पूरा करने के लिए भरपूर कोशिश होती रही। अन्त मे कई कारणों से ऐसी स्थिति आ गई कि लोक-वाणी बन्द हो गई। अर्से तक लोकवाणी बन्द रही। कई मामले मुकदमे खडे हो गये। एक दूसरी सोसाइटी 'राष्ट्र दर्शन सोसाइटी' ने लोकवाणी को फिर से जारी किया, पर अभी स्थिति सतोषजनक नही है।' खेद है कि लोकवाणी की स्थिति दिन प्रति दिन बिगडती गई और अन्ततोगत्वा उसने दम तोड दिया।

अलवर पत्रिका

अलवर पत्रिका' का जीवन प्रारम्भ से अन्त तक सघर्षों की लम्बी कहानी रहा है। 1 जनवरी, 1943 को इस साप्ताहिक का प्रकाशन अलवर से मोदी कु ज-बिहारी लाल ने किया। इस पत्र की प्रारम्भ मे 250 प्रतियाँ छपाई गई, जिनमे से सवा सौ प्रतिया त्रिपोलिया मे स्वय सपादक ने आवाज लगाकर एक एक आने मे बेची और शेष को शहर के प्रमुख व्यक्तियो को मुफ्त बाटी। पत्रिका का उद्देश्य प्रजा मण्डल और राष्ट्रीयता का प्रचार करने के साथ उत्तरदायी शासन की माग को गति प्रदान करना था। अपनी निर्भीकता और निष्पक्षता के कारण पत्रिका जल्दी ही लोकप्रिय हो गई।

सन् 1946 म श्री मोदी को जेल जाना पडा। उनकी अनुपस्थिति मे उनके पुत्र और भतीजे ने प्रकाशन जारी रखा।'[2]

'अलवर पत्रिका' का न केवल पराधीनता के युग मे अपितु स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी अपने अस्तित्व के लिए भारी सघर्ष करना पडा। मत्स्य सघ की स्थापना के बाद जब पहला मन्त्रिमण्डल बना और राज्य कर्मचारियो ने वेतन के मामले को लेकर आदोलन चलाया, तो पत्रिका ने उसे समर्थन दिया और परिणाम-स्वरूप 24 नवम्बर, 1948 को प्रेस को सील किये जाने के आदेश तत्कालीन प्रशासन ने दिये। यह कार्यवाही प्रेस एक्ट के तहत न की जाकर पब्लिक सेफ्टी एक्ट के तहत की गई थी। 26 जनवरी, 1949 को इसके सम्पादक को इस कदम के विरुद्ध अनशन करने का नोटिस देना पडा और आखिरकार प्रेस पर से पहरा हटाना पडा। किन्तु पत्रिका पर पाबन्दी लगी रही। शासन के इस रवैये के

1 हीरालाल शास्त्री, प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र, पृ० 64
2 मोदी कु ज बिहारी लाल, 'अलवर पत्रिका' का स्वतन्त्रता के बाद विशेषाक, पृ० 65

प्रति विरोध प्रकट करने के लिए न केवल अलवर नगर, अपितु अलवर जिले के प्रमुख कस्बों मे हड़ताल हुई। अन्ततोगत्वा जमानत पर पत्रिका के पुनर्प्रकाशन की स्वीकृति दी गई।[1]

राजस्थान मे निर्माण के बाद 'अलवर पत्रिका' का प्रकाशन जयपुर से होने लगा। किन्तु सन् 1953 मे मोदी कुंजबिहारीलाल की मृत्यु के साथ ही इसकी स्थिति नाजुक होने लगी। उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्र सुभाष मोदी ने भी इसे चलाने का प्रयत्न किया, किन्तु अनेकानेक कारणों से 1966 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया। पिछले वर्षों मे जिन पत्र पत्रिकाओं का वर्णन और विवेचन किया है, उनके अतिरिक्त भी काफी सख्या मे ऐसे पत्र थे, जिन्होंने अपने अल्प जीवन काल के बावजूद स्वाधीनता-सग्राम के दौरान राजनीतिक चेतना जाग्रत करने मे ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

अन्य पत्र पत्रिकाएं

इस दौर के अन्य पत्रों मे जयपुर से 1942 मे प्रकाशित 'जयध्वनि' साप्ताहिक, आजाद सैनिक (1942), मारवाडी गौरव मासिक (1946), 'युवक हृदय' मासिक (1946), जोधपुर से प्रकाशित गणेशचन्द्र जोशी मन्वन्तर का 'कल की दुनिया' (1940), हरीश मथावत का 'अखड' मासिक तथा जोधपुर से प्रकाशित 'नवयुग' साप्ताहिक (1944), कोटा से राजेन्द्रकुमार 'अजेय' और नाथूलाल जैन के सयुक्त सम्पादन मे प्रकाशित 'दीनबन्धु' साप्ताहिक (1944), बाबूलाल इन्दु के 'अधिकार' और 'धरती के लाल', शिवदयाल राजावत के 'चम्बल' और 'किसान सन्देश' इन्द्रदत्त स्वाधीन का 'जनवाणी' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।[2] स्वाधीनता के बाद पत्रकारिता के व्यावसायीकरण का जो सिलसिला शुरू हुआ, उससे उत्पन्न आर्थिक कुचक्र मे फसकर उक्त लगभग सभी पत्र थोड़े बहुत कालान्तर से अस्तित्वहीन हो गये।

स्वाधीनता के तुरन्त बाद

15 अगस्त, 1947 को देश के आजाद हो जाने के तुरन्त बाद यकायक पत्रों की सख्या मे काफी वृद्धि हो गई। विभिन्न रियासतो मे अनेक पत्र निकाले गये और इन पत्रो ने 1947 से 1950 तक के सन्धि काल मे राजस्थान की राजनीति उथल पुथल और उसके सघीय निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इस काल के पत्रों मे जयपुर मे 'अमर ज्योति' साप्ताहिक, उदयपुर से 'अरावली' साप्ताहिक और 'पन्द्रह अगस्त', अलवर से, 'स्वतन्त्र भारत', जोधपुर से 'रियासती', बीकानेर से 'ललकार' और 'लोकजीवन' तथा कोटा से 'जयहिन्द' साप्ता-

---

1 मोदी कुंजबिहारीलाल, 'अलवर पत्रिका' का स्वतन्त्रता के बाद विशेषांक पृ० 66–67

2 द्रष्टव्य : डा० भवर सुराणा का अप्रकाशित शोध प्रबन्ध

हिक के नामो का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है। इन सभी पत्रों ने स'मन्तवाद के विरुद्ध सघर्ष कर लोकतन्त्र की स्थापना और योजनावद्ध आर्थिक विकास के लिए अपने आपको समर्पित किया।

उक्त पत्रों के अतिरिक्त बीकानेर से श्री शम्भुदयाल सक्सेना के सपादन मे प्रकाशित 'सेनानी' श्री अम्बालाल माथुर के संपादकत्व में प्रकाशित 'लोकमत', श्री जे. बगरहट्टा के सम्पादकत्व मे प्रकाशित 'गणराज्य', जोधपुर से बंशीधर पुरोहित के सपादकत्व मे प्रकाशित 'आग' और 'ज्वाला', जयनारायण व्यास के सम्पादन मे प्रकाशित 'लोकराज' और उगमसी मोदी के 'ललकार' के नाम भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

कहना न होगा कि 1901 से 1950 तक के विगत पचास वर्षों मे यद्यपि राजस्थान मे पत्रो की संख्या मे निरन्तर वृद्धि हुई, किन्तु अलग-अलग रियासतो के अलग अलग नियम, संचार-साधनो का अभाव, अशिक्षा के कारण पाठको की नगण्य सख्या, सामन्ती दमन चक्र और पत्रो के माध्यम से विज्ञापनो के महत्व की अज्ञानता से उत्पन्न आर्थिक संकट के कारण अधिकाश पत्र या तो बहुत अल्पजीवी रहे, या लडखडाते हुए चले। किन्तु इन सबके बावजूद उन्होने अपनी वीरोचित भूमिका को एक के बाद दूसरे ने ठीक उसी तरह निबाहा, जिस प्रकार युद्ध मे एक सेनानायक के वीर गति प्राप्त करने के बाद दूसरा सेना की कमान संभालता है।

अध्याय 6

साहित्यिक पत्रकारिता के कीर्तिमान

(चुने हुए पत्रो का विशिष्ट अध्ययन)

यह एक आश्चर्यजनक किन्तु सुखद सत्य है कि अपने पिछड़ेपन के लिए बहुविज्ञापित राजस्थान जैसे प्रदेश ने साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र मे भी पराधीनता के उस युग मे कुछ ऐसे प्रयत्न किये, जिन्होने हिन्दी साहित्य के संवर्द्धन और विकास मे न केवल महत्वपूर्ण योगदान किया, अपितु अपनी गुणात्मकता से नये कीर्तिमान स्थापित किये। यहां ऐसे ही कुछ चुने हुए पत्रो का विशिष्ट अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि इन पत्रों को प्रारम्भ करने वाले वे प्रबुद्ध चेता व्यक्ति थे, जिनकी अनुरक्ति राजनीति की अपेक्षा साहित्य मे अधिक थी और जो साहित्य की विभिन्न रचनात्मक विधाओ के माध्यम से विचार-क्रांति की भूमिका निभाने के दायित्व को उठाने के लिए तत्पर थे। इस प्रकार के पत्रो मे 'विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका', 'सद्धर्म स्मारक', 'भारत मार्त्तण्ड', 'समालोचक', 'सौरभ' और 'त्यागभूमि' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

निश्चय ही राजस्थान के लिए यह गौरव का विषय है कि हिन्दी के निर्माता बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रारम्भ की गई 'चन्द्रिका' जैसी चर्चित पत्रिका के बन्द होने पर उसे पुनः प्रारम्भ करने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ।

विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका

पत्रकारिता के विद्यार्थियो से यह तथ्य छिपा नहीं है कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने काशी से 1874 मे जिस 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' का प्रकाशन प्रारम्भ किया था, वह 1880 तक अनियमित रूप से प्रकाशित होने के बाद बन्द हो गई थी। नाथद्वारा के

पडित विष्णुलाल पड्या भारतेन्दुजी के अच्छे मित्रो मे थे और उदयपुर के राजन्य वर्ग का भी उनके प्रति भरपूर आदर भाव था। इसलिए 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' की स्मृति को बनाये रखने के लिए नाथद्वारा के साहित्यकारो ने पडित मोहनलाल विष्णुलाल पड्या द्वारा सचालित 'मोहन चद्रिका' और पडित दामोदर शास्त्री की 'विद्यार्थी पत्रिका' को मिलाकर 1881 मे विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चद चद्रिका और मोहन चद्रिका' का प्रकाशन पड्याजी के स्वामित्व और शास्त्रीजी के सपादकत्व मे उदयपुर से प्रारम्भ किया।

इस सम्वन्ध मे पत्रिका के चैत्र सवत् 1938 अर्थात् सन् 1881 के अक मे निम्नलिखित सूचना प्रकाशित की गई थी[1] :—

"श्री श्री हरि

विशेष सूचना

यद्यपि चद्रिका के विज्ञापन पत्र के नियमो के नीचे मेरा हस्ताक्षर है और पत्र व्यवहार भी मेरे नाम मे ग्राहक लोग करे ऐसा लिखा है, तथापि मैंने केवल इसका स्वामित्व अपने अधीन रखकर बाकी सर्व अधिकार (सपादकत्वादि) विद्यार्थी सपादक पडितवर दामोदर शास्त्रीजी को सौंपे है, इसलिए चद्रिका सम्वन्धी सर्व रीति का पत्र व्यवहार, ग्राहकगण, या अन्यजन, उन्ही के नाम से किया करें। यदि कोई भूल करके मेरे नाम से करेंगे और मुझसे उन्हे प्रत्युत्तर नही मिलेगा, तो मै इसका दोषभागी नही। चद्रिका के परिवर्तन मे जो वृत्तपत्र या मासिक पुस्तक आते हैं उनके सपादको को भी उचित है कि वे भी शास्त्रीजी के नाम से भेजा करे।

पता	भवदीय
पडित दामोदर शास्त्रीजी सप्रे,	मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या
'विद्यार्थी सम्मिलित चद्रिका'	'हरिश्चन्द्रिका और मोहनचन्द्रिका' स्वामी
संपादक,	उदयपुर, चैत्र शुक्ल 15, गुरु सवत 1938
श्रीजी की हवेली, उदयपुर।"	

इस पत्रिका के अको की सख्या 'हरिश्चद्र चद्रिका' के अनुक्रम मे ही रखी गई थी, जैसा कि आठवें वर्षोत्सव के मुख पृष्ठ पर छपे पद्याश और उस पर अकित *कला–8 तथा किरण-एक से स्पष्ट है।*

---

1. विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका, कला 8, किरण 2
2. कला 8 उदयपुर, चैत्र, सवत 1938, किरण 1

"श्री हरि,
विद्यार्थी सम्मिलित
हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका

।। विद्वत् कुलामल स्वात कुमुदामोदा दायिका ।।
।। आर्या ज्ञान तमोहत्री श्री हरिश्चन्द्र चद्रिका ।।

।। कविजन कुमुदगन हियविकासि चकोर रसिकन सुख भरै ।।
।। प्रेमिन सुधा सो साचि भारत भूमि आलस तम हरै ।।
।। उद्यम सुऔषधि पोखि विरहिन तापि खल चोरन दरै ।।
।। हरिचन्द मोहन चन्द्रिका परकासि जग मगल करै ।।"

उक्त अश मे जो पहला सस्कृत श्लोक है, वह वही है जो मूलत 'हरिश्चन्द्र चद्रिका' के मुख पृष्ठ पर छपता था।

पत्रिका ने अपने जीवन के सात वर्ष समाप्त करने पर आठवें वर्ष का उत्सव भी बनाया था और इस अवसर पर आठवें वर्ष के प्रथमाक से एक बहुत मर्म स्पर्शी सम्पादकीय लेख भी लिखा, जो पत्रिका के सघर्षमय जीवन तथा उसकी रीति नीति पर पूर्ण प्रकाश डालता है। सम्पादकीय मे गत वर्ष मे हुए जयपुर के महाराजा रामसिंह के निधन पर भी खेद प्रकट किया गया है। सम्पादकीय के कुछ अश इस प्रकार है —

"हमारे प्रिय पाठक महाभागो आज हमारी परम प्रसिद्ध आर्यभाषा महारानी की पुत्री श्रीमती हरिश्चन्द्र चद्रिका और मोहन चद्रिका का वर्षोत्सव है। अतएव हम आदौ सर्वशक्तिमान जगदीशवर को अलौकिक भाव से कोटि कोटि धन्यवाद समर्पण करते हैं और उसके लौकिक सर्वाधिकारी स्वामी पडित श्री मोहनलाल विष्णु लाल पण्ड्या एफ टी एशियादिकतिपय विद्वत्सभा प्रदत्त उपाधि अलकारधारी दृढ आर्य की आज्ञानुसार इस चन्द्रिका के उद्देश्यानुकूल विद्या वृद्धि के उत्साहनार्थ श्री द्वारस्थ पाठशाला के योग्य बालको को विद्योपयोगी पुस्तक स्लेट आदि वस्तु देकर और साधारण दीन अनाथ ब्राह्मणों को भोजन करा कर वर्षोत्सव मनाते हैं।"

"आज उक्त चन्द्रिका का सातवां वर्ष सुखपूर्वक समाप्त होकर आठवां वर्ष प्रवेश होता है। चन्द्रिका को सात वर्ष के वय मे अनेक सुख दुख और व्याघात समय-समय पर सहन करने पड़े हैं। यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है। क्योकि जिसका प्रचार इस अनित्य ससार में होता है उसको सुख और दुख दोनों भोगने पड़ते हैं। किन्तु हर्ष की बात यही है कि उक्त चद्रिका के शत्रुओं ने अपने भरसक अनेक व्याघात उपस्थित किये परन्तु जैसे कामना से वे उपस्थित किये गये थे वैसे सफल भी हुए क्योंकि 'अनिष्ट चित्त को ग्रेषा स्वतोनिष्टम प्रपद्यते'।"

"अन्त मे हमारे सहायक विद्वद्वर इस चन्द्रिका के मूल भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी और विद्वज्जन पंडित श्री विनायक शास्त्री वेताल पंडित राधा शरण गोस्वामी, बाबू काशीनाथ वर्मा और बाबू दीपनारायण सिंह वर्मा आदि महाशय जिन्होंने कृपा पूर्वक अपने अमूल्य लेखों से हमारी सहायता की उनको धन्यवाद देकर प्रार्थना करते हैं कि ये सब इस वर्ष भी उसी प्रकार सहायता करेंगे इति शिवम् ।"[1]

उक्त सम्पादकीय अंश से यह भी स्पष्ट है कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, राधाशरण गोस्वामी, बाबू काशीनाथ वर्मा, बाबू दीपनारायणसिंह वर्मा और पंडित विनायक शास्त्री इसके प्रमुख लेखकों में थे ।

इस पत्रिका में जहाँ साहित्यिक विषयों पर लेख और सृजनात्मक विधाओं की रचनाएं छपती थी, वहां सामयिक विषयों पर टिप्पणियां और सांस्कृतिक गति विधियों की रिपोर्टें भी प्रकाशित होती थी ।

'गणगौरी' के उत्सव की रिपोर्ट का यह अंश इस दृष्टि से अवलोकनीय है —

'गणगौरी का उत्सव

आजकल 'गणगौरी का उत्सव' भी बडे समारोह और उत्तम प्रबन्ध से हो रहा है जिसमे अब की श्रीमन्महाराज की आज्ञानुसार कसरत की विचित्रता दर्शकों को ऐसी आकर्षण करती है कि इस उत्सव मे अच्छे अच्छे गुणियों ने उपस्थित हो उत्तमोत्तम कर्त्तव्य दिखाकर सबको प्रसन्न किया । श्रीमन्महाराज ने भी उत्तर विद्याभिरुचि के साथ इस विद्या की वृद्धि भी परम उचित जानकर इसी साल इसका प्रबन्ध किया और जिन-जिन लोगों ने कसरत अच्छी दिखाई उनके उत्साह वृद्ध्यर्थ यथा योग्य वस्त्र देकर सबका सम्मान किया । इस साल यह उत्सव भी नाथद्वारे म गत वर्ष से कहीं बढकर हुआ । प्राय श्रीमन्महाराज की सुदृष्टि से ऐसी ही दिन-दिन यहा की उन्नति होगी ऐसा निश्चय होता है ।"[2]

इस पत्रिका की एक उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि साहित्यिक सामग्री के साथ बीच बीच मे यह राजनीति और अर्थनीति पर भी अपने स्वतन्त्र विचार सृजनात्मक रचनाओं के माध्यम से प्रकाशित करती थी । साहित्यिक सामग्री के साथ इस प्रकार की सामग्री एक प्रकार से 'सुगर कोटेड' 'कडुवी गोली' की भांति थी, जिसकी आवश्यकता तत्कालीन जनता के मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत अधिक

---

1 विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका कला 8, उदयपुर चैत्र, सवत 1938, किरण 1, पृष्ठ 1 से 5

2 कला 8, किरण 1, पृ० 12

थी। 'पच-प्रपच' नामक एक लघु एकाकी आठवें वर्ष के दूसरे अक म छपा है। आधुनिक अर्थों मे भले ही यह एकाँकी न हो, किन्तु दो पात्रो के बीच सरस सवादो के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक स्थिति और शोचनीय आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालने का बडा मनोरजक प्रयास उसमे किया गया है। पूर्वांश म टैक्स वसूली, पुराने ग्रन्थो को जलाने, अफगानिस्तान की लडाई के फल, आर्म्स एक्ट, प्रेस एक्ट आदि पर खिन्नता व्यक्त की गई है। पच और प्रपच परस्पर इस प्रकार सवादो का आदान प्रदान करते हैं —

प्रपच कहो भाई साहब, आज किस पर इतनी पढने की धुन लगी है ? मैं कब से आया हू कुछ देखने की भी स्मृति नही ?

पच आओ भाई, मैं इस अखबार को देख रहा था, इससे तुमको देखा नहीं कहो, कहां से आये।

प्रपच आये कहा से, वह एक सभा होती है न ? वहीं से आया, पर कहो अखबार मे कुछ लडाई भिडाई की खबर है।

पच बस तुम्ह खाली लडाई से काम, और भी कुछ कभी पूछते हो ?

प्रपच और क्या पूछू मुझे तो राड रोने के समान नरम खबर अच्छी नहीं लगती।

पच नरम कैसी और गरम कैसी ?

प्रपच अब मैं क्या कहू ? तुम ही देखो, सदा अखबारो मे मैं यही देखता हू कि सरकार ने आज फलाना नया कर लगाया इसके लिए रैयत रो रही है, आज मुसलमानों के कहने पर ग्रन्थ जलाये इसलिये सब आर्य चिल्ला रहे हैं, आज यवनो ने गोहत्या की इससे सब अपना सिर फोड रहे हैं आज काबुल की लडाई का खर्चा हिन्दुस्तान पर पडेगा इससे सिर धुन रहे हैं, आज म्यानेचेस्टर वालो के लिये कल का कानून बन गया इससे सब विकल होकर पल पड़ी कर रहे हैं, आज प्रेस आक्ट के नाम से भग रहे हैं, आज आर्म्स आक्ट से लूले बने हैं, आज जमीदारी कानून से जमीन मे गड गये हैं, आज डाक्टरी कानून से अक्ल गुम हो रही है, आज बहावलपुर के नव्वाब की हिन्दुओं पर और उनके मन्दिरो पर बहादुरी सुन कर और अपने धर्म की हेलना देख कर धरती से आश्रय माग रहे हैं, यही सब रोना सदा अखबारो मे होता है।

उक्त अश के बाद के सवादों मे अविश्वस्त समाचार प्रकाशित करने वालो को प्रताडना दी गई है और आगे चल कर देश के घाटे की बजट व्यवस्था पर प्रहार किया गया है। अनुमानित आय-व्यय की तुलना मे वास्तविक व्यय कितना अधिक

हुआ है और कितना घाटा हुआ है, इसका विवरण आंकड़ो मे इस प्रकार दिया गया है[1] :—

"पच भाई, बजेटका तो मुझे मालुम नही, क्या हुआ है ?

प्रपच तो क्या यो ही अखबार देखते हो ? सुनो—

सन् 1879–80 के लिये यह अदाज हुआ था,

आमदनी 67,58,30,000
खर्च 67,46,40,000
बचत 1,19,00,000

परन्तु यह हुआ

आमदनी 68,48,40,000
खर्च 69,66,80,000
घाटा 1,18,30,000

1880–81 के लिए यह अदाज था

आमदनी 66,74,90,000
खर्च 66,32,90,000
बचत 41,20,000

परन्तु इसमे भी वही हुआ—

आमदनी 70,76,80 000
खर्च 77,03,70, 000
घाटा 62,69,0000

अब सन् 1881–82 के लिए यह अदाज किया है

आमदनी 70,98,10,000
खर्च 70,12,60,000
बचत 85,50,000

तो अब देखो 41 लाख की बचत के अदाज मे जब 61 करोड घाटा है तब अब की साल 85 लाख की बचत मे कम से कम 13 करोड का घाटा होना चाहिये या नही ? अब हर साल का यह घाटा कौन देगा ?"

सामाजिक सेवनाओ के बारे मे भी इस पत्र मे उपयुक्त सामग्री प्रकाशित की जाती थी। लोक-कल्याण की योजनाओ को समर्थन देने की सम्पादकीय युक्ति कुछ ऐसी होती थी कि सरकार के अह की तुष्टि भी होती और वांछित उद्देश्य की प्राप्ति मे भी सहायता मिल जाती। आठवें वर्ष के सातवें तथा आठवें सयुक्ताक मे

1. कला 8, किरण 2, पृ० 28

मे राणीगाम से श्रीनाथद्वारे तक वैष्णवो द्वारा रेल मार्ग बनाने के प्रस्ताव को जो समर्थन सम्पादकीय लेख मे दिया गया है, उसमे ब्रिटिश शासन के पुण्य-कार्यों की प्रशसा करते हुए कहा गया है कि विद्या दान करने, चिकित्सालयो की स्थापना करने और बद्रीनाथ, गगोत्री आदि स्थानो तक जाने की परिवहन और डाक-व्यवस्था करने मे ब्रिटिश सरकार ने जो पहल की है, वह उनके सत्कर्मों की परिचायक है। जिस पत्र मे प्रच्छन्न रूप से साहित्यिक रचनाओं की ओट मे विदेशी सत्ता की भर्त्सना की जाती हो, उसमे इस प्रकार की प्रशसा किसी विशेष उद्देश्य के बिना नही हो सकती।

चूकि वैष्णव लोग अपनी पूजी से यह रेल मार्ग बनाना चाहते थे और ब्रिटिश सरकार की स्वीकृति के बिना यह सम्भव नहीं था, इस प्रकार की प्रशस्ति प्रकटत जन-कल्याण के इस कार्य की सिद्धि के लिए ही की गई थी। सम्पादकीय के अतिम अश मे यह लक्ष्य स्पष्ट हो जाता है—

"... ......हम तो यही कहते हैं कि भारत गवर्नमट शीघ्र ही इन सत्पुरुषो का उत्साहाकुर सत्कर्म विषयक जानकर आज्ञा दे दें। इसमे सरकार का द्रव्य भी नही खर्च होता, कारण वे लोग अपनी ही मडली तैयार कर अपने द्रव्य से यह रेल बनाना चाहते हैं। वरन् ऐसे विषय मे सरकार का यश अधिक बढेगा और आज तक जो रेल या अन्य व्यापार सम्बन्धी सर्व कामो को सरकार ही करती है, प्रजा के हिस्से मे कुछ नही आता इत्यादि कलक यथार्थ देखने मे आता है वह भी ऐसा मिटेगा कि उसके बदले सरकार की सुकीर्ति अगणित होगी और व्यवसाइयो वो वा धनिको को *उद्यम का एक नया मार्ग खुलेगा। कितने हिन्दुस्थानी कला कौशल मे भी निपुण* होंगे इस पर भी सरकार के अगण्य उपकार और यात्रियो के धन्यवाद उभयत चिरस्मरणीय होंगे।"[1]

एक अन्य सम्पादकीय लेख मे राजाओ द्वारा अग्रेजी फौज और पुलिस की नकल करके अपने यहा फौजें रखने तथा पुलिस रखने पर भारी व्यय करने और जन-धन की बर्बादी करने की कटु और व्यग्यपूर्ण भर्त्सना की गई है। फौज और पुलिस मे इन लोगो को बेकार, नाकारा, और निर्वीर्य बना कर "चुग्गा चुगने वाले कबूतरों" की सज्ञा दी गई है। इस सम्पादकीय लेख का निम्न अश कितने मनोरजक ढग मे देशी राजाओ के फौजियों की मखौल उड़ाता है, यह दृष्टव्य है[2]—

---

1. विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका कला 8, किरण 7–8 उदयपुर, आश्विन, कार्तिक 1938. *पृष्ठ सख्या 164 एव 165*
2. कला 8, किरण 4, पृ० 74–75

"...............और अब रहे फौज बक्षीजी, तो देखिये कोई तो अतिवृद्ध, उनसे अपना ही शरीर नही सभाला जाता, दांत गिर गये हैं, मुख मे लार चूती है, हथियार हाथ मे उठता ही नही, परन्तु बहादरी की बातें जो उनसे पूछो तो जमीन आसमान का लेखा लगाये। शरीर मे कही कोई फोडे का भी चिन्ह हो तो उसको बन्दूक की गोली या किसी और हथियार का निशान बतलावे हमारे देशी राजस्थानो का फौज और पुलिस क्या है मानो कठपुतलियो का तमाशा है, वा वल्लमटेरों की कवायद है–किकमार्च–बोलते देर न हुई कि लगे खाली बन्दूक लेकर कदम बदलने। परन्तु जो कोई उनसे पूछे कि अरे भाई सिपाहियो, तुमने कभी बन्दूक भी छोडी है। तो विचारे बडे स्पष्ट भोलेपन से उत्तर देंगे कि–हा महाराज हमकू 20 बीस बरस राज की नौकरी करते भये है तामे दो तीन बखत तो खाली फेरे करी है, कभु काम तो पडे ही नहीं है, हम राजाजी के कबूतर हैं चुगा चुगे हैं इत्यादि" तो अब सोचना चाहिये कि ऐसी फौज से क्या लाभ है। हा भलेई बदूको और किरचो की भड-भड करलो, वा किसी की बरात के आगे निकासी मे भलेई भेज दो, वा आश्विन के दशहरे के दिन सजसजाकर राजाजी की सवारी के आगे निकाल लो और महामगल मनाओ कि हम दिल्ली फतहकर आवें, वा ग्रामीए लोगो को प्रसन्न करालो कि "अरे भैया हमने भरतपुर को दशहरा देख्यौ, सो बाजो तो अगाडी बजात जात हो और हजारन फौज देखि, जब तोप दम्म छूटी तो मै तो डर गयो, सवारी मे हाथी है, घोडा है, ऊंट है और राजा महाराज मोती की मारा पहरे बैठे हते। हमने उनकूं हाथ जोडे इत्यादि।"

"हे पाठक महाशयो, तात्पर्य लिखने का यही है कि राजा का लोक इस विषय का पुर्वापर विचार कर अपनी वृथा बढी चढी फौज और पुलिसादि को मौकूफ करके आवश्यक काम के सिपाही पेट भर रुजगार देकर नौकर रक्खे और वह द्रव्य अपनी रैयत के सुख के काम और विद्या कृषि कर्मोन्निति विषयक कामो मे व्यय करे जिससे धन का व्यय भी लाभकारी होय किमधिकम्।"

सद्धर्म स्मारक

"विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका" का एक अन्य समकालीन पत्र नाथद्वारा से प्रकाशित होने वाला "सद्धर्म स्मारक" मासिक था। सन् 1883 मे प्रकाशित इस मासिक पत्र के प्रथम अंक मे निम्न प्रकार घोषणा की गई थी :—

'यह ग्रन्थ श्री मन्महाराजाधिराज श्री मद् गोस्वामी श्री 108 श्री गोवर्धन लाल जो महाराज की आज्ञानुसार प्रति मास एकादशी के दिन प्रसिद्ध होयगो।'

उक्त घोषणा से प्रकट है कि पत्र का प्रकाशन प्रति माह को एकादशी को होता था। यह पत्र श्री सुदर्शन यन्त्रालय से प्रकाशित होता था। इसमे कुल 28

पृष्ठ होते थे। प्रत्येक अंक के अन्तरग आवरण पर निम्नलिखित श्लोक छपा रहता था —

'सद्धर्म स्मारक. कुर्य्यात् । श्री हरौ परमा रतिम् ॥
सत्तामसार ससार नरी के वर्त्तक सदा ॥'[1]

इस पत्र के मासिक अंक मे सामान्यत 28 पृष्ठ होते थे। पहले खड मे सस्कृत भाषा के धर्म ग्रन्थो का धारावाहिक प्रकाशन व्रज भाषा की टीका के साथ होता था और दूसरे खण्ड मे नाथद्वारा के समाचार प्रकाशित होते थे। सबसे पहले षोडष ग्रन्थ का प्रकाशन शुरू किया गया था और उसे बाद मे पुस्तकाकार मे भी प्रकाशित किया गया था। एतद् विषयक सूचना प्रथम वर्ष के तीसरे अंक के तीसरे आवरण पृष्ठ पर इन शब्दो मे प्रकाशित की गई है —

'सद्धर्म स्मारक के सहायकन को विदित होय जो षोडष ग्रन्थ मूल गुटकाकार मे मजबूत पूठा के साथ तैयार है जिनकी न्यौछावर डाक महसूल समेत आठ आने है। यदि आप लागन को लेयबे की इच्छा होय तो सुदर्शन यन्त्र मे सूचना लिख पठाओगे।'[2]

'सद्धर्म स्मारक' की भाषा वल्लभ सम्प्रदाय वर्ग की पाठक बहुलता के कारण व्रज भाषा थी। इसी भाषा मे नाथद्वारा की साहित्यिक सास्कृतिक गतिविधियो के समाचार छपते थे। शालिहोत्र विज्ञान के एक विद्वान के आगमन पर अश्वविद्या-विशारदो की चातुरी और अश्वो के करतब प्रदर्शन के बारे मे एक सवाद तीसरे वर्ष के प्रथम अंक म प्रकाशित हुआ है, जिससे पत्र की भाषा के स्वरूप को सहज ही समझा जा सकता है —

'वैसाख शुक्ल 5 आज उदयपुर सू एक अश्व विद्या के विद्वान, जिनको (नाथजी यह नाम प्रसिद्ध है, वे आये हैं। जिनकी उपर महाराणा सज्जनसिहजी की पूर्ण कृपा हती जिनकू यहा सू बहोत से अश्व अभ्यासार्थ दीये गये हते, देती बिरिया जो आशा राखवे मे आयी हती तदनुसार ही विनने कार्य कर दोखाया हतो। वे यहां आये पीछे पायगा मे सू अश्वरत्न दी वाये पीछे उनकी अभिलाषा पूर्ण करवे के लिए वहां दरीखानो करवे मे आयो, और इनके हाथ सू पके हुए, तथा अश्व विद्या मे कुशल, ऐसे इनके सग के मनुष्य कू यहा के अश्वन की गति चातुरी दिखाये पीछे इनको सग के अश्वन को गमन चातुर्य दीख्ये पीछे प्रसन्नता पूर्वक सभा विसृष्ट भयी।'[3]

---

1 सद्धर्म स्मारक, वर्ष 1, अंक 1, चैत्र कृष्णा एकादशी, सवत 1940, प्रथम पृष्ठ

2. सद्धर्म स्मारक, वर्ष 1, अंक 3, आवरण का तृतीय पृष्ठ

3 सद्धर्म स्मारक मासिक ग्रन्थ, वर्ष 3, अंक 1

" .. और अब रहे फौज बक्षीजी, तो देखिये कोई तो अतिवृद्ध, उनसे अपना ही शरीर नही समाला जाता, दात गिर गये हैं, मुख मे लार चूती है, हथियार हाथ मे उठता ही नही, परन्तु बहादरी की बातें जो उनसे पूछो तो जमीन आसमान का लेखा लगाये। शरीर मे कही कोई फोडे का भी चिन्ह हो तो उसको बन्दूक की गोली या किसी और हथियार का निशान बतलावे हमारे देशी राजस्थानो का फौज और पुलिस क्या है मानो कठपुतलियो का तमाशा है, वा बल्लमटेरो की कवायद है–क्विकमार्च–बोलते देर न हुई कि लगे खाली बन्दूक लेकर कदम बदलने। परन्तु जो कोई उनसे पूछे कि अरे माई सिपाहियो तुमने कभी बन्दूक भी छोडी है। तो विचारे बडे स्पष्ट भोलेपन से उत्तर देंगे कि–हा महाराज हमकू 20 बीस बरस राज की नौकरी करते भये हैं तामे दो तीन बखत तो खाली फेरे करी है, कमु काम तो पडे ही नही है, हम राजाजी के कबूतर हैं चुगा चुगे हैं इत्यादि" तो अब सोचना चाहिये कि ऐसी फौज मे क्या लाभ है। हा भलेंई बदूको और किरचो की भड-भड करलो, वा किसी की बरात के आगे निकासी म मलेई भेज दो, वा आश्विन के दशहरे के दिन सजसजाकर राजाजी की सवारी के आगे निकाल लो और महामगल मनाओ कि हम दिल्ली फतहकर आवें, वा ग्रामीण लोगो को प्रसन्न करालो कि "अरे भैया हमने भरतपुर को दशहरा देख्यौ, सो बाजो तो अगाडी बजात जात हो और हजारन फौज देखि, जब तोप दम्म छूटी तो मैं तो डर गयो, सवारी म हाथी है, घोडा है, ऊट है और राजा महाराज मोती की माला पहरे बैठे हुते। हमने उनकूं हाथ जोडे इत्यादि।"

"हे पाठक महाशयो, तात्पर्य लिखने का यही है कि राजा का लोक इस विषय का पुर्वापर विचार कर अपनी वृथा बढी चढी फौज और पुलिसादि को मौकूफ करके आवश्यक काम के सिपाही पेट भर रुजगार देकर नौकर रक्खे और वह द्रव्य अपनी रैंयत के सुख के काम और विद्या कृषि कर्मानिति विषयक कामो म व्यय करे जिससे धन का व्यय भी लाभकारी होय किमधिकम्।"

सद्धर्म स्मारक

"विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका" का एक अ य समकालीन पत्र नाथद्वारा से प्रकाशित होने वाला "सद्धर्म स्मारक" मासिक था। सन् 1883 मे प्रकाशित इस मासिक पत्र के प्रथम अक मे निम्न प्रकार घोषणा की गई थी —

'यह ग्रन्थ श्री मन्महाराजाधिराज श्री मद् गोस्वामी श्री 108 श्री गोवर्धन लाल जी महाराज की आज्ञानुसार प्रति मास एकादशी के दिन प्रसिद्ध होयगो।'

उक्त घोषणा से प्रकट है कि पत्र का प्रकाशन प्रति माह की एकादशी को होता था। यह पत्र श्री सुदर्शन यन्त्रालय से प्रकाशित होता था। इसमे कुल 28

कर्ण दोनो भाई थे और मिश्र बन्धुओ की तरह अनेक कृतियो पर सयुक्त रूप से अपना नाम अलग-अलग ढग से छापते थे । वैसे वे इतिहासकार के रूप मे पडित रामकर्ण आसोपा के नाम से ही विख्यात हैं। तथापि 'दाधीच आसोपा पडित वलदेवात्मज पडित रामकर्ण शर्मा' अथवा 'दाधीच पडित रामकर्ण आसोपा' या 'पडित रामकर्ण शर्मा श्याम करण शर्मा' आदि नाम भी उनकी कृतियो के आवरण पृष्ठो पर मिलते हैं। 'सदाचार मार्त्तण्ड' के सम्पादक यही पडित राम कर्ण आसोपा थे।

उनके श्रद्धेय गुरू पडित गट्टूलाल जी भारत मार्तण्ड की उपाधि से विभूपित थे। अपने गुरू की स्मृति को बनाये रखने के लिए श्रद्धा अभिभूत होकर उन्होंने अपने इस मासिक का नाम 'भारत मार्तण्ड' रखा था। इस पत्र के प्रथम अक मे इस तथ्य को तथा पत्र के उद्देश्य को भली भाँती स्पष्ट कर दिया गया है[1] :—

'भारत मार्तण्ड' के चिरस्मरणार्थ अपनी शक्त्यनुसार प्रयत्न करना समस्त लोगो का अवश्य कर्त्तव्य है। तिस में भी उनके शिष्य वर्ग को तो अवश्य ही इसका प्रयत्न करना चाहिये। हमने भारतमार्तण्ड के चिर स्मरणार्थ उनके नाम से 'भारत-मार्तण्ड' नामक मासिक पत्र प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इस मासिक पत्र मे उक्त महाराज के बनाये हुये सस्कृत ग्रथ जो कि प्रकाशित हो गये हैं और नही हुए हैं, वे सब भापा अनुवाद के साथ प्रकाशित किये जाए गे और उक्त महाराज का 'आर्य समुदय' नामक मासिक पत्र जो गुजराती भापा मे निकलता था उससे केवल गुजराती भापा जानने वाले ही लाभ उठा सके थे, इसलिए सर्व साधारण को उस अतिचमत्कारकारी सुधारसभरी कृति का लाभ प्राप्त करने के लिए आर्य समुदाय मे से भी अति अनूठे विपय, हिन्दी भापा मे अनुवाद कर लिखे जायेंगे। और इस पत्र को सार्वजनिक करने के लिए इसमे ऐसे ऐसे विपय लिखे जायेंगे कि जिससे सब कोई लाभ उठा सकें।"

हमारा यह उद्योग गुरू भक्ति से भारत मार्तण्ड के चिरस्मरणार्थ है इसलिए इस पत्र का नाम 'भारत मार्तण्ड' रक्खा गया है।

"जैसे सूर्य चैत्र आदि वारहो महीनो पृथक् 2 नाम धारण कर प्रकाश करता है, ऐसे यह 'भारतमार्तण्ड' भी आपके यहाँ वारहो महीनो प्रति प्रतिपदा पृथक् पृथक् प्रकार धारण कर प्रकाश करता रहेगा।"

अपने उक्त उद्देश्यो के अनुरूप पत्र के प्रथमाक मे पहले पडित गट्टूलालजी 'भारतमार्तण्ड' की जीवनी छापी गई है। तदन्तर 'मानसागर' के अन्तर्गत मारवाड के

---

1 भारत मार्त्तण्ड, वर्प 1, अक 1, पृ० 2–5

इस पत्र का वार्षिक शुल्क अग्रिम प्राप्त होने पर तीन रुपये और तदन्तर साढे चार रुपये लिया जाता था । पाठको के नाम प्रसारित एक सूचना मे यह अनुरोध किया गया है कि चार माह से उन्हे पत्र भेजा जा रहा है, अत उन्हे अग्रिम शुल्क प्रेषित कर देना चाहिये, अन्यथा 6 माह बीत जाने पर उसकी 'नोछावर' डेढ गुनी दनी होगी । यह सूचना निम्न रूप मे प्रकाशित हुई है—'प्रिय पाठक, आपको यह विदित है जो या मासिक पत्र को अग्रिम नोछावर रुपया 3) है, सो अब चतुर्थ मास को प्रवेश भयो, यदि अग्रिम देवे की इच्छा होय तो द्रव्य भेज दीजिये कारण 6 मास के भीतर भीतर अग्रिम गिन्यो जायेगो और ता पीछे पाश्चात्य नोछावर रूपये 4½ के हिसाब सो लियो जायगो जो आपकी इच्छा अग्रिम देवे की होय तो हक भेजनो ।'[1]

भारत मार्त्तण्ड

इस नाम का एक पत्र 1889 मे जयपुर से निकलने का उल्लेख रामरतन भटनागर ने किया है ।[2]

इसी नाम के पत्र जसपुर, कलकत्ता और जोधपुर से भी लगभग इसी काल मे निकलने का उल्लेख पडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने किया है ।[3] डा० महेन्द्र मधुप का यह कथन[4] कि एक ही नाम के चार पत्र कदाचित् नाम का पजीयन न कराने के कारण अलग-अलग स्थानो से निकल रहे थे, सगत नही है, क्योकि इस युग मे आज की तरह पत्रो के नामो की पुनरावृत्ति का नियन्त्रण करने के लिए कोई केन्द्रीय प्रेस रजिस्ट्रार कार्यालय नही था । देश के स्वाधीनता प्राप्त कर लेने के कई वर्षों बाद तक एक ही नाम के पत्र पृथक् पृथक् स्वामित्व मे देश के विभिन्न भागो से निकल रहे थे । स्वय राजस्थान मे नामो की ऐसी पुनरावृत्ति देखी जा सकती थी ।

जो भी हो, इस नाम का एक मात्र पत्र जोधपुर स सन् 1898 मे प्रकाशित 'भारत मार्तण्ड' ही ऐसा है, जिसका अस्तित्व असदिग्ध है । बडे परिश्रम के साथ इन पक्तियो के लेखक को पडित जयनारायण आसोपा के व्यक्तिगत सग्रह से उक्त पत्र की पुरानी प्रतिया प्राप्त हुई हैं । इसके सम्पादक पडित रामकर्ण श्यामकर्ण शर्मा थे । वाजपेयी जी और डा० मधुप ने सम्पादक का नाम रामकर्ण शर्मा 'श्याम' दिया है, जो सर्वथा निराधार और भ्रामक है । वस्तुत पडित रामकर्ण और श्याम

---

1. सद्धर्म स्मारक मासिक ग्रन्थ, वर्ष 1, अक 3, अन्तिम पृ०
2 भटनागर, रा० प्रो० हि० ज०, पृ 746
3: वाजपेयी कृत समाचार पत्रो का इतिहास, पृ० 20, 201, 234
4. महेन्द्र मधुप, जयपुर की पत्र-पत्रिकाओ का स्वाधीनता आन्दोलन मे योगदान, पृष्ठ 6

के सामूहिक कृतित्व के रूप में छापी जाती थी। दूसरे वर्ष में प्रकाशित आठ अंको का मुद्रण चार विभिन्न प्रेसो में क्रमश वैदिक प्रेस अजमेर, राजस्थान यन्त्रालय, अजमेर, सिद्धेश्वर प्रेस, बनारस और मेडिकल हाल प्रेस, बनारस से हुआ। इस वर्ष में लगभग 400 पृष्ठ की सामग्री इस पत्र में मुद्रित हुई, जैसा कि इसके अंको पर दी गई पृष्ठ सख्या की निरन्तरता से स्पष्ट है। तीसरे वर्ष में मात्र चार अंक निकले।

सन् 1905 म पत्र का प्रकाशन लडखडता रहा और इसको नियमितता का निर्वाह भी न हो सका। चौथे वर्ष मे प्रकाशित फरवरी-मार्च 1906 का सयुक्तांक ही उसका अंतिम अंक है।

'समालोचक' के प्रशाशन का लक्ष्य हिन्दी साहित्य की आलोचना के साथ-साथ युग की माग के अनुरूप सास्कृतिक पुनर्जागरण एव राष्ट्रीयता परक साहित्य के प्रकाशन मे महत्वपूर्ण योगदान देना भी था। 'समालोचक' मे किस प्रकार की समीक्षाए छपती थी, इसका आभास बाबू बालमुकुन्द गुप्त की "स्फुट कविता" नामक पुस्तक की समीक्षा के निम्नांकित अंश से सहज ही हो जाता है —

"भूमिका मे क्या चोट के वाक्य लिखे गये हैं—'भारत मे कवि भी नही है, कविता भी नही है।" कारण यह है कि कविता देश और जाति की स्वाधीनता से सम्बन्ध रखती है। जब यह देश, देश था और यहा के लोग स्वाभिमानी थे तब यहा कविता भी होती थी। उस समय की तो बची-खुची कविता अब तक मिलती है, वह याद की वस्तु है उसका आदर होता है। कविता के लिए अपने देश की बातें अपने देश का भाव और अपने मन की मौज दरकार है। हम पराधीनो मे यह सब बातें कहा ? फिर हमारी कविता क्या और उसका गुरुत्व क्या ? इससे इसे तुकबदी ही कहना ठीक है। पराधीन लोगो की तुकबदी म कुछ तो अपने दुख का रोना होता है और कुछ अपनी गिरी दशा पर पराई हसी होती है, वही दोनो बातें इस तुकबन्दी मे है।"

पाश्चात्य सस्कृति के अन्धानुकरण पर प्रहार करते हुए समालोचक ने स्वदेश प्रेम और भारतीय सस्कृति पर निरन्तर प्रभावशाली टिप्पणिया लिखी। अपने किसी समकालीन पत्र द्वारा अप्रेल-फूल विशेषांक निकाले जाने पर समालोचक ने निम्न शब्दो मे इसकी तीखी आलोचना की थी·

"अनुकरणशीलता मे भारतवासी पीछे नही रहेंगे। अच्छे गुणो का अनुकरण तो उनके अनुष्ठान की पहली सीढी है, परन्तु व्यर्थ या अनर्थक बातो के अनुकरण मे ही हमारी सब शक्तिया पर्यवसान पा जाती है। सभ्यता के मद मे होली की समया-नुमोदित ठठोली का अपाक्रमण चाहते हुए भी हम लोग 'एप्रिल फूल' की नई प्रथा

स्वर्गीय महाराजा मानसिंह का जीवन चरित्र छापा गया है। इसके बाद मारवाड के इतिहास के धारावाहिक प्रकाशन की पहली किस्त और बाद मे काव्य प्रकाश की टीका है। अन्त मे चारण कवि बाकीदास की सीह छतीसी के अ श छापे गये हैं।

पत्र के प्रथमाक मे दी गई सूचना के अनुसार इसका प्रकाशन प्रति माह की प्रतिपदा को होता था और प्रत्येक अक मे 32 पृष्ठ होते थे। इसके फुटकर अक का मूल्य चार आने और अग्रिम वार्षिक मूल्य जोधपुर निवासियो के लिए दो रुपये तथा बाहर वालो के लिए डाक व्यय सहित दो रुपये छः आने था। एक वर्ष तक नियमित चलते रहने के बाद आर्थिक कारणो से यह सुसम्पादित वैदुष्यपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करने वाला पत्र इतिहास शेष बन गया।

समालोचक

जयपुर जैसे स्थान से जहा पत्रकारिता के क्षेत्र मे कोई उल्लेखनीय प्रयत्न उन्नीसवी सदी के अन्त तक न हो सका, "समालोचक" जैसे साहित्यिक मासिक का समारभ निश्चय ही एक युगान्तरकारी घटना थी। कानूनी दृष्टि से कुछ भी स्थिति रही हो, "समालोचक" के सम्पादन के साथ पडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का नाम इस तरह जुडा हुआ था कि वे एक दूसरे के पर्याय हो गये। "समालोचक" के प्रवेशाक के अनुसार इसके सम्पादक गहमर निवासी बाबू गोपालराय गहमरी थे और प्रथम वर्ष मे इसका सम्पादकीय कार्यालय भी गहमर (गाजीपुर) मे ही था। गुलेरीजी की रचनाए इस पत्र मे दूसरे वर्ष से प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और इसका सम्पादकीय दायित्व जयपुर मे जवाहरलाल जैन वैद्य वहन करने लगे। सितम्बर, 1904 के अक मे स्वय गुलेरी जी ने इस बात का खडन किया है कि वे पत्र के सम्पादक हैं। किन्तु वस्तुस्थिति यह थी कि गुलेरीजी ही इस पत्र के सबल और पूर्णत: इसके सम्पादन से सम्बद्ध थे। राज्य सेवा मे होने के कारण चू कि *सपादक के रूप मे उनका नाम प्रकाशित किया जाना सम्भव नहीं था*, इसलिए दूसरे लोगो को इससे सम्बद्ध किया गया।

'समालोचक" के प्रकाशन वर्ष के सम्बन्ध मे भी भ्रान्त धारणाए हैं। वाजपेयीजी ने इसका प्रकाशन वर्ष 1901 माना है, जबकि रामरतन भटनागर ने अपने शोध ग्रन्थ मे इसका प्रकाशन वर्ष 1902 और बद होने का वर्ष 1904 दिया है। द्विवेदी युग के वयोवृद्ध पत्रकार पडित झाबरमल शर्मा के व्यक्तिगत सग्रह मे इस पत्र की पूरी फाइल सुरक्षित है, जिसे देखने से पता लगता है कि इसका प्रकाशन काल 1902–1906 था। अगस्त, *1902* से जुलाई *1903* तक 'समालोचक' के 7 अक लगभग 300 पृष्ठो के निकले। पहले वर्ष मे अक यूनियन प्रेस कम्पनी, जबलपुर, धार्मिक प्रेस प्रयाग और चद्रप्रभा प्रेस, बनारस से छपे। प्रथम वर्ष मे सामग्री लेखको के व्यक्तिगत नामो से न छापी जाकर 'समालोचक समिति' के

के सामूहिक कृतित्व के रूप मे छापी जाती थी। दूसरे वर्ष मे प्रकाशित आठ अको का मुद्रण चार विभिन्न प्रेसो मे क्रमश वैदिक प्रेस अजमेर, राजस्थान यन्त्रालय, अजमेर, सिद्धेश्वर प्रेस, बनारस और मेडिकल हाल प्रेस, बनारस से हुआ। इस वर्ष मे लगभग 400 पृष्ठ की सामग्री इस पत्र मे मुद्रित हुई, जैसा कि इसके अको पर दी गई पृष्ठ सख्या की निरन्तरता से स्पष्ट है। तीसरे वर्ष म मात्र चार अक निकले।

सन् 1905 म पत्र का प्रकाशन लडखडता रहा और इसको नियमितता का निर्वाह भी न हो सका। चौथे वर्ष मे प्रकाशित फरवरी-मार्च, 1906 का सयुक्ताक ही उसका अतिम अक है।

'समालोचक' के प्रशाशन का लक्ष्य हिन्दी साहित्य की आलोचना के साथ-साथ युग की माग के अनुरूप सास्कृतिक पुनर्जागरण एव राष्ट्रीयता परक साहित्य के प्रकाशन मे महत्वपूर्ण योगदान देना भी था। 'समालोचक' मे किस प्रकार की समीक्षाए छपती थी, इसका आभास बाबू बालमुकुन्द गुप्त की "स्फुट कविता" नामक पुस्तक की समीक्षा के निम्नाकित अश से सहज ही हो जाता है —

"भूमिका मे क्या चोट के वाक्य लिखे गये है—' भारत मे कवि भी नही है, कविता भी नही है।" कारण यह है कि कविता देश और जाति की स्वाधीनता से सम्बन्ध रखती है। जब यह देश, देश था और यहा के लोग स्वाभिमानी थे तब यहां कविता भी होती थी। उस समय की तो बची-खुची कविता अब तक मिलती है, वह याद की वस्तु है उसका आदर होता है। कविता के लिए अपने देश की बातें अपने देश का भाव और अपने मन की मौज दरकार है। हम पराधीनो म यह सब बातें कहां ? फिर हमारी कविता क्या और उसका गुरुत्व क्या ? इससे इसे तुकबदी ही कहना ठीक है। पराधीन लोगो की तुकबदी मे कुछ तो अपने दुख का रोना होता है और कुछ अपनी गिरी दशा पर पराई हसी होती है, वही दोनो बातें इस तुकबन्दी मे है।"

पाश्चात्य सस्कृति के अन्धानुकरण पर प्रहार करते हुए समालोचक ने स्वदेश प्रेम और भारतीय सस्कृति पर निरन्तर प्रभावशाली टिप्पणिया लिखी। अपने किसी समकालीन पत्र द्वारा अप्रेल-फूल विशेषाक निकाले जाने पर समालोचक ने निम्न शब्दो मे इसकी तीखी आलोचना की थी

"अनुकरणशीलता मे भारतवासी पीछे नही रहेंगे। अच्छे गुणो का अनुकरण तो उनके अनुष्ठान की पहली सीढी है, परन्तु व्यर्थ या अनर्थक बातो के अनुकरण मे ही हमारी सब शक्तिया पर्यवसान पा जाती है। सभ्यता के मद मे होली की समया-नुमोदित ठठोली का अपाकरण चाहते हुए भी हम लोग 'एप्रिल फूल' की नई प्रथा

को अपना रहे हैं और न्यूईयर डे पर कार्ड या डाली भेजने का रिवाज तो इतना बढ गया कि अपना वर्षारम्भ हम लोग पचागो मे ही पढते हैं। हिन्दी के एक सर्वज्ञ *मासिक पत्र ने तो अब के खास एप्रिल एडोशिन निकाल दिया है। किसी सार्वजनिक* विशेष बात पर या धर्म, इतिहास व जाति की उन्नति पर ,सवाद पत्र अपनी विशेष सख्या निकाला करते है। प्रयाग के हिन्दुस्थान रिव्यू ने काग्रेस पर कांग्रेस नम्बर और नेशनल नम्बर निकाले हैं और अवध को अगरेजी राज्य म प्रविष्ट होने को जुबिलो पर अवध नम्बर निकाला है। 'जमाना' अकबर के राज्य के 300 वर्ष पीछे उसके स्मरणार्थ अकबर नम्बर मे निकाला था। परन्तु इस पत्र की धर्म सरक्षामार्थव प्रवृत्ति जन्माष्टमी या रामनवमी नम्बर न निकाल सकी रामानुज नम्बर की कल्पना भी न कर सकी, और अप्रेल एडीशन मे परिणत हो गई। धन्य। इनक लिए ससार ही एप्रिल है, सारा जीवन ही पहली एप्रिल है और उसका परम लक्ष्य एप्रिल के दुलहे बनना बनाना ही है। एप्रिल का समकक्ष भारतवर्ष मे वैशाख मास है न ? अतएव फूल फूल कर, कुढ बुढकर, एप्रिल म ही अपनी जयन्ती मनाने वाले इस पत्र को इस वर्ष की होली का नायक 'लार्ड आफ मिसरूल' कहना चाहिए। होली के उपहार इन्हीं को सम्पूर्ण रूप से अर्पण करने चाहिये।"

(समालोचक, जनवरी, 1906)

सत्साहित्य को और विशेष रूप से राष्ट्रीय चेतना से परिपूरित साहित्य के प्रकाशन को समालोचक द्वारा बराबर प्रोत्साहित किया जाता था। जयपुर के पुराने देश भक्त और चिन्तक गणेशनारायण सोमानी की एक पुस्तक पर समालोचक' ने अपनी समीक्षा इस प्रकार प्रकाशित की थी —

"ता० 27 दिसम्बर 1905 को सर हेनरी काटन के 'न्यू इण्डिया' का हिन्दी अनुवाद काशी मे प्रकाशित हो गया। इस 'नवीनभारत' के अनुवादकर्त्ता श्री गणेश नारायण सोमाणी है, प्रकाशक मनीषि समर्थदान, राजस्थान समाचार यत्रालय, अजमेर है। पुस्तक मे प्राय 300 पृष्ठ हो गये हैं और मूल्य डेढ रुपया है। पहले हम लिख चुके हैं कि इसका हिन्दी मे प्रकाशित होना हिन्दी का एक प्रकार से सौभाग्य मानना चाहिये। राजनीति विषयो का कोई भी पुस्तक हिन्दी मे इतना बडा नही था, और हम आशा करते हैं कि इसका इतना प्रचार होगा कि साधारण अग्रेजी न जानने वाले मनुष्य भी इसके पढने से सामयिक राजनीति मे अच्छी योग्यता पाने का अवसर न चुकेंगे। इसके दसो अध्यायो मे भारत वर्ष की सरकार और प्रजा के सम्बन्ध प्रबल प्रमाणो से दिखलाये गये हैं। 'ज्यों ज्यो भारतवासी सुशिक्षित, स्वतन्त्रता प्रिय, और देशभक्त होते जाते हैं, त्यो त्यो यह बात और भी स्पष्ट रूप से प्रकट होती जाती है। जो योग्य और साहसी भारतवासी हम से ही विद्या प्राप्त करके सभ्य हो गये हैं, वे अपने विस्तृत होते हुए नये विचारो के कारण आत्मोन्नति की

समालोचक

विषय

स्वामी और प्रकाशक

'समालोचक' के तेजस्वी स्वरूप की जो झलक ऊपर प्रस्तुत की गई है, वह इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि पूरी हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र मे यह अपने ढग का एक ही पत्र था।

'समालोचक' के बाद मासिक 'भारतसर्वस्व' का प्रकाशन 11 फरवरी, 1905 से प० माधव प्रसाद शास्त्री के सम्पादन मे प्रारम्भ हुआ।[1]

तदन्तर, 1907 मे 'विद्या भास्कर' का प्रकाशन प० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी के सम्पादन मे प्रारम्भ हुआ।[2]

इसके तीन वर्ष बाद हिन्दी साहित्य समिति, आबू रोड द्वारा मासिक 'हिन्दी साहित्य ग्रन्थावली' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।[3] जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, यह कदाचित् मासिक रूप से साहित्यिक ग्रथो का प्रकाशन करता होगा।

1915 मे इसी शृ खला मे मासिक 'निबन्ध माला' के भरतपुर से प्रकाशित होने का उल्लेख भी मिलता है। उक्त अल्पजीवी पत्रो का भी उस काल मे अपना महत्व था इस बात से नकारा नही जा सकता, किन्तु 'समालोचक' के बाद साहित्य जगत् मे यदि दूसरे किसी पत्र की धाक उस युग मे रही, तो वह थी 'सौरभ' की।

सौरभ

'सौरभ' का प्रकाशन ऐसे ऐतिहासिक दौर मे हुआ, जब हिन्दी मे अनन्य भक्त सेठ गोविन्ददास ने मध्य प्रदेश से 'शारदा' का प्रकाशन आरभ किया था। सन् 1920 मे सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी पडित रामनिवास शर्मा के सम्पादकत्व मे इसका प्रकाशन झालावाड के विद्या व्यसनी महाराजा भवानीसिंह के सरक्षण मे झालरापाटन से प्रारम्भ हुआ। श्री जगदीश प्रसाद 'दीपक' के शब्दो में यह महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' की टक्कर का पत्र था।

इस पत्र के लेखकों मे मिश्रबन्धु पडित रामनरेश त्रिपाठी, बाबू सम्पूर्णानन्द, मु शी देवीप्रसाद और किशोरीसिंह बारहठ जैसे महारथी थे। इस पत्र मे न केवल साहित्यिक रचनाए ही छपती थी, अपितु 'सौर मण्डल' और 'प्लेग' जैसे वैज्ञानिक विषयो पर भी लेख छपते थे। इसमे सस्ती भावुकता को उभारने वाली रचनाए न छाप कर अध्ययन पूर्ण और गभीर सामग्री का ही समावेश अधिक होता था। सबसे सुखद आश्चर्य तो यह है कि आज भी जब राजस्थान के पत्र-सम्पादक

---

1. देखिये डा० मधुप कृत 'राजस्थान की साहित्कि पत्र पत्रिकाए' (रा० वि० वि० पुस्तकालय)
2. वही
3. हिन्दी समाचार पत्र सूची, पृ० 74

लेखको की नि शुल्क रचनाए' प्राप्त करने मे ही अपने सम्पादकीय कौशल का चमत्कार मानते है, उस युग मे भी 'सौरभ' मे प्रकाशित उपयुक्त सामग्री पर पारिश्रमिक दिया जाता था।

पडित रामनिवास शर्मा द्विवेदी युग के सरनाम सपादक थे। 'सौरभ' के सम्पादकीय उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होने लिखा था कि 'सामयिक प्रचलित आन्दोलन मे इस तरह का साहित्य उत्पन्न किया जाय कि जिसे पढ कर लोग इस आन्दोलन के स्वतत्रआदर्शवाद को इस दर्जे तक समझ सकें कि वे दूसरो के सच्चे मार्ग-दर्शक भी बन सकें। जाति के बालको की और उसके अन्य अगो की भी प्राकृतिक और आध्यात्मिक शक्तियो के विकास, उनमे आविष्कार की शक्ति की जागृति के उपायो, उनके सामुख्य मे विजयी होने के समुचित साधनो पर पूर्णत प्रकाश डाला जाये।"

उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए न केवल पडित जी ने अन्य लेखकों की सृजन-क्षमता का उपयोग किया, अपितु स्वय इस दिशा मे महत्वपूर्ण योग-दान किया। 'कलातत्व' शीर्षक एक निबन्ध मे उन्होने कहा–'कलाविश्व प्रकृति और प्रकृति-पति के रहस्य को समझने का कोमल और सौन्दर्यपूर्ण माध्यम है। इसके द्वारा मनोविज्ञान, प्रकृति–विज्ञान और सौन्दर्य विज्ञान का पाठ हम अच्छी तरह पढ सकते हैं। काव्य, कला, प्रकृति और पुरुष के न्यायोचित गुणो का स्रोत है, सगीत उसकी अन्तर्ध्वनि है, चित्र उसका मनमाना चित्रण है, मूर्तिकला उसकी प्रतीकोपासना है और वास्तुकला पूजा घर है। एक आर्य कल्पकार और कलासेवी की दृष्टि मे कला–आराधना उसी पुरुष की पूजा, अर्चा और साधना है।[1]

पडित रामनिवास शर्मा का पूरे राजस्थान मे इतना सर्व सम्मत आदर था कि पडित हरिभाऊ उपाध्याय के सभापतित्व मे 'साहित्यकुल' अजमेर नामक सस्था द्वारा सन् 1941 मे उन्हे अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया और उसमे सौरभ सम्पादक के रूप मे उनकी सेवाओ की सराहना निम्न शब्दों म की गई —' 'मौलिक विचारो के धनी। पत्र–प्रेस विहीन प्रान्त मे आज से भी बीस वर्ष पूर्व आपने मासिक 'सौरभ' के रूप मे जो ज्ञान का दीप सजोया था, वह आज भी अपने प्रकाश को साहित्य–जगत् के सम्मुख रखने म अपनी कोटि का एक ही पत्र रहा है।"[2]

ऐसे शीर्ष कोटि के विद्वान सम्पादक द्वारा सम्पादित यह पत्र भी अधिक समय तक जीवित नही रह सका। अपने राष्ट्रीय विचारो के कारण इस पत्र को मार्च 1922 मे प्रकाशन बन्द कर कीमत चुकानी पडी। पत्र के अको के अध्ययन

1 मोहनलाल मेहतो सपादित 'कला की परख' मे सकलित निबध का अश

2 नवजीवन, 21 नवम्बर, 1941, पृ० 6

से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'सौरभ' ने अपने जीवन के अल्प समय मे भी अपने दायित्व का निर्वाह पूरी सफलता के साथ किया। उदाहरण के लिए पत्र के प्रथम अक को ही लिया जा सकता है। सितम्बर 1920 का प्रथम अक 48 पृष्ठ का था, जिसमे विभिन्न विषयो पर 16 लेख प्रकाशित हुए थे। इन लेखो मे शिक्षा, भाषा, साहित्य, विज्ञान, राजनीति, खगोल, स्वास्थ्य, धार्मिक, आर्थिक एव सामाजिक विषयों पर प्रकाशित सामग्री इस बात की द्योतक है कि सम्पादक ने अपना दायित्व एक जागरूक पत्रकार के रूप मे बखूबी निभाया है।

प्रथम अक मे ही हिन्दी के प्रख्यात लेखक प लज्जा राम मेहता के 'भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा' शीर्षक लेख का समावेश इस बात का प्रमाण है कि 'सौरभ' हिन्दी पत्रकारिता की निष्ठापूर्वक सेवा करने के लिए पाठको के सामने आया था।

'सौरभ' के नियमित लेखको मे आदि से ही प० लज्जा राम मेहता, लाला कन्नोमल एम ए., प० पदम सिंह शर्मा, मिश्र बन्धु, मुशी देवी प्रसाद जी, प० प्यारे लाल मिश्र, बार-एट ला, ठाकुर किशोरी सिंहजी बारहठ, महेश प्रसाद जी मौलवी फाजिल, प० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, प० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार पालिरत्न, आत्मा रामजी बी. ए, डा० सम्पूर्णान द, प० हरिशकर भट्ट, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र' जैसे हिन्दी के धुरन्धर पचासो विद्वान लेखक रहे है। पत्र के विभिन्न अंको के अध्ययन से पता चलता है कि इन विद्वान लेखको ने परिश्रम कर उत्तमोत्तम लेख भेज कर प्रत्येक अक को पठनीय बनाया।

सितम्बर 1920 – यह उस दौर की बात है, जब किसी प्रकार के स्वराज्य की बात करना द्रोह माना जाता था, परन्तु 'सौरभ' मासिक-पत्र के प्रथम अक के प्रथम ही लेख मे आर्थिक स्वराज्य' शीर्षक से प्रकाशित लेख मे श्री विद्यालकार ने लिखा कि "इगलैंड, फ्रास, अमेरीका आदि सभी देशो मे जनता को आर्थिक स्व-राज्य मिला हुआ है। भारत वर्ष ही इस आर्थिक स्वराज्य से क्यों वचित रहे? बिना आर्थिक स्वराज्य दिए भारत की आर्थिक उन्नति के उपायो को सोचना वृथा है।"

"भारत का बिना आर्थिक स्वराज्य प्राप्त किए व्यापार व्यवसाय की उन्नति करना बालू पर महल बनाना है। बिना आर्थिक स्वराज्य के भारत का व्यापार व्यवसाय स्वार्थ की भयकर आधियो तथा खूनी तूफानो से अपने आपको कभी भी नही बचा सकता है।"

साम्प्रदायिक सौहार्द

हिन्दू-मुस्लिम एकता को परवान चढाने के लिए 'सौरभ' ने अपने अंको मे निरन्तर सामग्री प्रकाशित की। दिसम्बर 1921 के अक मे श्री दुर्गा विनायक प्रसाद

के हिन्दुओ और मुसलमानो मे परस्पर मेल' शीर्षक से प्रकाशित लेख मे लेखक ने सोदाहरण हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द्र के सम्बन्ध मे लिखा है कि "हम इस बात से कभी भी सहमत नही हो सकते जैसा कि कुछ लोगो का विचार है कि हमारे हिन्दुओ और मुसलमानो मे झगडा है और इनका निबटारा होना अथवा इन दोनो जातियो मे परस्पर मेल और प्रेम का सचार होना दुर्लभ ही नही असम्भव है। यह झूठा ख्याल है, एक ख्याली भूत के समान जनता मे मतभेद फैला रहा है और इनको डावाडोल किए हुए है। उदाहरण रूप मे देखें कि गाय से बढ कर कोई भी पशु ऐसा सीधा नही है। परन्तु यह भी जब दो चार इकट्ठी हो जाती हैं और खाने का सामान कम रहता है तो आपस मे लडने लगती हैं। फिर बतलाइये कि यदि ऐसी दशा मे पक्षपात हुआ है तो कोई नई बात नही है। यह केवल इन्ही दो जातियो मे नही है बल्कि जहा देखिए यह बात पाई जाती है। अग्रेजो मे देखिए यह सभ्य जाति वाले गिने जाते हैं। इनमे भी तो यह पक्षपात मौजूद है।"

कीमत चुकानी पडी

सौरभ की अपनी सटीक लेखनी एव स्पष्ट उद्बोधन के कारण मार्च 1922 मे प्रकाशन बन्द करने के रूप मे यह कीमत चुकानी पडी। परन्तु इससे पूर्व पत्र मे राष्ट्रीय विचारधारा के एव अन्य सामयिक लेखो के प्रकाशन के अलावा अग्रेजो के सम्बन्ध मे भी लेख प्रकाशित होते रहते थे और उनकी कारगुजारी एव नीति के सम्बन्ध मे स्पष्ट रूप से लेखनी उठाई जाती थी।

दिसम्बर 1920 के अक मे बाबू भुवनेश्वर सिंह वर्मा ने 'अग्रेजो के जातीय जीवन की कुछ विशेषताए' लेख मे लिखा है कि "अग्रेज-जाति की महत्वाकाक्षा बहुत बढी हुई है। यह रात-दिन इसी चिन्ता मे रहती है कि कोई न कोई नया भू-भाग उसके अधिकार मे आ जावे, किसी न किसी नई जाति की वह भाग्यविधात्री बने। कोई न कोई मनुष्य समुदाय उसकी सवारी की शान को बढाने वाला मिले। यह बात इस जाति के प्रत्येक मनुष्य में घर कर गई। इस बात से इसका बच्चा-बच्चा परिचित है। 'शक्तिरर्थ पतिपु स्वय ग्रहम्' अर्थात शक्ति के द्वारा स्वामी की आज्ञा के बिना बलात् उसकी वस्तु को अपने अधिकार मे करने की सामर्थ्य इसमे कूट कूट कर भरी हो, यह ब त इसकी जातीय गौरव-चिह्न बन गई है।"

अग्रेजों को साम्राज्यवादी बताते हुए लेख मे कहा है कि 'सन् 1608 ई० मे कुछ व्यक्तियो का व्यापार के लिए भारत मे आकर यहा आधुनिक अग्रेजी महान् साम्राज्य की मूल भित्ति तैयार करना इनकी महत्वाकाक्षा की ही द्योतक है। वैसे ही सुदूर प्रदेश पाताल मे जाकर वहा के रेड इन्डियन्स को तहस-नहस कर वहा एक विस्तृत सुन्दर साम्राज्य की जड जमाना, सारे भू-मण्डल मे उपनिवेशो की स्थापना करना आदि सारे काम इनकी लोकोत्तर महत्वाकाक्षा के ही प्रकाशक हैं।"

मनोरंजक तथ्य

जहा एक ओर सौरभ के लेख पठनीय, सम्पादकीय टिप्पणियां विद्वत्तापूर्ण, घटनाओ का विश्लेषणात्मक विवरण तथा कविताए भावपूर्ण है, वहा दूसरी ओर पत्र ने पत्रकारिता के क्षेत्र मे सभी क्षितिजो का स्पर्श किया है।

आगे चलकर सौरभ मे विज्ञापन भी प्रकाशित होने लगे। इस पत्र मे चित्र पहले ही छपते थे। चित्रो मे अनेक चित्र थे, जो ब्रिटिश काल की दशा एव वास्तविक तथ्यो का दिग्दर्शन कराते थे।

फरवरी 1922 के अक में 'कृषकों की दुर्दशा' शीर्षक से पत्र के पूरे पृष्ठ पर छपे चित्र मे एक गाव का चित्रण किया गया है, जिसमे एक जागीरदार को चारपाई पर बैठा हुआ बताया गया है। दूसरी ओर मुनीमजी वही खाता खोले बैठे है। धरती पर दो कृषक परिवार बैठे हैं। एक कृषक, जागीरदार के समक्ष हाथ जोडे हुए है। दूसरे कृषक के शरीर पर लगोटी है, कुर्ता नही। उसके पीछे उसका बच्चा निर्वस्त्र खडा रो रहा है। पास में कुत्ता भौंक रहा है। मानो वह अपने मालिक के प्रति वफादारी का सबूत दे रहा है कि उसके मालिक के गाढे पसीने की कमाई यह जागीरदार लिए जा रहा है। इस दृश्य मे गुवाडी के बाहर ही गृहिणी चूल्हा झोंक रही है और सिर पर हाथ रखे जागीरदार की ओर दयनीय दृष्टि से देख रही है। पास मे अनाज का ढेर लगा हुआ है, जिसे एक कृषक जागीरदार की बैलगाडी मे डाल रहा है। चित्र मे बैलो की जोडी और कुए को भी दर्शाया गया है।

निस्सदेह हिन्दी साहित्य को शक्ति और स्फूर्ति देने तथा राष्ट्रीयता का अलख जगाने जैसे महान् कार्य मे 'सौरभ" ने अविस्मरणीय भूमिका निभाई।

सम्पादक ने मार्च 1922 के अपने अन्तिम अक मे मार्मिक शब्दो मे 'अन्तिम निवेदन' शीर्षक से पाठको के समक्ष लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुए कहा है कि "पाठक हमारी अयोग्यता या हमारे दौर्भाग्य के कुफल यही है कि महान् उद्देश्य और स्वल्प सामग्री और निजी प्रेस आदि की कमियो के कारण आज अल्पायु मे या यो कहे कि जीवन के दूसरे श्वास मे ही "सौरभ" को मृत्यु का ग्रास होता देखना पडा। इसका हमे अत्यन्त शोक है, किन्तु इस गहरे शोक मे अपने एक मित्र के निम्नलिखित शब्द ही हमे थोडा बहुत ढाढस बधाते हैं।"

"सौरभ" ने जिस परिस्थिति मे जन्म लिया था, उसमे वह अपना काम कर चुका।"[1]

---

1 श्री सईद अहमद खान के सौजन्य से प्राप्त सामग्री के आधार पर

त्याग भूमि

राजस्थान की पत्रकारिता के इतिहास मे 'त्याग भूमि' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण घटना थी। 1927 मे अजमेर से प्रकाशित यह पत्रिका 'जीवन, जागृति, बल, और बलिदान' की पत्रिका थी।[1] उसके सम्पादक पडित हरिभाऊ उपाध्याय जो गाँधीवाद के कट्टर समर्थक और प्रबुद्ध विचारक थे, अजमेर मे 'त्याग भूमि' के सम्पादक का कार्यभार समालने से पूर्व इन्दौर से 'मालव मयूर' नामक साहित्यिक मासिक का प्रकाशन कर रहे थे।[2]

1927–28 मे देश मे जिस नये राजनीतिक ज्वार और सास्कृतिक पुनर्जागरण का उदय हुआ, उसको वाणी देने मे 'त्याग भूमि' ने बहुत ही मूल्यवान कार्य किया। 'प्रताप प्रतिज्ञा' के लेखक जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द और 'रक्षा बन्धन' नाटक के रचयिता हरिकृष्ण प्रेमी जो राजस्थान के बलिदान पूर्ण अतीत से पूरी तरह अभिभूत थे, इस से सम्बद्ध थे।[3]

'त्याग भूमि' के प्रत्येक अक मे लगभग 64 पृष्ठ होते थे और पहले अक के बाद के अको की पृष्ठ सख्या निरन्तरता मे छपती थी। सामग्री का जो वैविध्य इस पत्र मे दृष्टिगोचर होता था, वह उस युग की राजनीतिक, सामाजिक और सास्कृतिक गतिविधियो को प्रतिबिम्बित करता था। इसकी बहिरग साज सज्जा उतनी सुन्दर तो नही थी, जितनी कि इसके समकालीन 'विशाल भारत', 'सरस्वती' और 'माधुरी' की, तथापि सामग्री की दृष्टि से इसकी सम्पन्नता इन पत्रो से किसी प्रकार कम न थी।

इस पत्रिका मे एक ओर जहां शासकीय अत्याचारो के विरुद्ध प्रखर स्वर मे लिखी सम्पादकीय टिप्पणिया होती थी, वहा दूसरी ओर गांधीवादी विचारधारा की सृजनात्मक रचनाए भी प्रकाशित होती थी। जोधपुर मे 'मारवाडी हितकारणी सभा' की गतिविधियो का शासन द्वारा दमन किये जाने पर जब 'मारवाड यूथ लीग' नाम की दूसरी सस्था समान उद्देश्यो को लेकर अस्तित्व मे आई और उसने जन-जागृति के जो प्रयत्न किए, उन्हें 'त्याग भूमि' ने पूरी सामर्थ्य के साथ प्रचारित किया। 1931 की मई मे जब कुछ युवको ने सर्राफा बाजार मे ध्वजारोहण का प्रयत्न किया और उन पर पुलिस द्वारा अत्याचार किए गए, तो 'त्याग भूमि' ने इसका विरोध किया। इसी प्रकार 11 जून को जब लीग के सचिव के नाम स्टेट

---

1 श्री मुकुट बिहारी वर्मा, राज० श्रमजीवी पत्रकार सघ परिचय पुस्तिका, 1955, पृ० 53

2. हमारा राजस्थान, पृ० 475

3 वही, पृ० 476

कौंसिल ने यह निषेधाज्ञा जारी की कि आगामी तीन माह तक जोधपुर और उसके आसपास कोई सभाएं और जुलूस आयोजित न किये जावे, तो 'त्याग भूमि' ने इस प्रतिगामी कदम की भर्त्सना की ।[1]

बाद मे जब लोग ने इन आदेशो की अवहेलना करते हुए अपनी बैठक मे एक प्रस्ताव द्वारा श्री जयनारायण व्यास को ब्यावर मे मारवाड स्टेट पीपुल्स कान्फरेन्स आयोजित करने के लिए अधिकृत किया तो 'त्याग भूमि' ने इसकी कार्यवाही को विस्तार से साथ प्रकाशित किया ।[2] कान्फरेन्स ब्यावर मे न होकर 25 नवम्बर, 1931 को पुष्कर मे हुई और उसमे उत्तरदायी सरकार की स्थापना, नागरिक अधिकारो की माग और शिक्षा तथा स्वास्थ्य की सुविधाओ के बारे मे अनेक प्रस्ताव पारित किये गए । इन सभी प्रस्तावो को 'त्याग भूमि' मे महत्वपूर्ण स्थान दिया गया ।

इसी प्रकार प्रदेश के अन्य भागो की राजनीतिक गतिविधियो को भी 'त्याग भूमि' ने समर्थन प्रदान किया । उदाहरण के लिए निम्न अश दृष्टव्य हैं :—

हड़ताल के बाद जयपुर

हडताल का अन्त हो चुका और ऐसा प्रतीत होता है कि उसके साथ-साथ प्रजाजन के उत्साह का भी । इससे यह परिणाम निकालना कि "लोगो ने किन्ही गुण्डे-बदमाशो के बहकाने के प्रभाव मे आकर हडताल करदी थी, उन्हे खुद कोई शिकायत नही थी" जितना गलत है, उतना ही गलत होगा यह परिणाम निकालना कि "लोगो को जो शिकायतें थी, वे अब मिटा दी गई ।" सच बात यह है कि जयपुर की प्रजा को बडी बडी शिकायतें वास्तव मे है, परन्तु, किसी प्रकार का सगठन न होने के कारण, लोग (चाहे अपने घर पर बैठे बैठे शिकायतो की ही चर्चा करते हो)अपने असन्तोष को सार्वजनिक रूप मे प्रकट करने का सामर्थ्य नही रखते । जितने भी जयपुर के पढेलिखे, कार्य-कुशल और प्रभावशाली हित-चिन्तक हैं, वे राज्य की नौकरी के पाश मे बधे हुए हैं । प्रजा मे प्रभाववान् और स्थिर आन्दोलन करने योग्य सगठन के अभाव मे रीजेंसी-राज्य लाभ उठाना चाहता है और यह उद्घोषित करता है कि पिछले चार-पाच वर्षों मे जयपुर की प्रजा के कल्याण के लिए राज्य ने कुछ उठा नहीं रखा । जैसा कि मैं पहले कह चुका हू, रीजेंसी राज्य के पहले भी प्रजाजन को कुछ शिकायतें अवश्य थी, परन्तु सहानुभूति रखने वाले प्रजा के प्रेमी महाराज की छत्रछाया मे प्रजा अब से सन्तुष्ट थी ।

---

1. त्याग भूमि, 19 जून, 1931
2. त्याग भूमि, 10 जुलाई, 1931

छत पर टोपी तो जूते पर शिवाजी

"सुना है कमीशन का कार्य समाप्त हो चुका है। कमीशन की कार्यवाही करने के पीछे हुई है, इसलिए नहीं कहा जा सकता कि कमीशन की रिपोर्ट क्या होगी। परन्तु अनुमव यही है कि प्रजा के पक्ष में शायद रिपोर्ट न हो। कारण यह है कि विप्लव होने पर भी रीजेंसी-राज्य ने पुलिस की ओर खास कर पुरोहितन इन्सपेक्टर जनरल को बडे साधुवाद दिये हैं। पुलिस के सिटी-सुपरिण्टेडेंट को मुअत्तिल करने का हुक्म होने पर भी, सुना है कि, उनको पूरा वेतन मिल रहा है, कैपिटते उनका नाम जारी होगी हैं और अनेक प्रकार से उनके साथ जो व्यवहार होता है उससे उनकी वास्तविक मुअत्तिली का कुछ भी प्रमाण नही मिलता। अपराधियो को बचाने की और लीपापोती करने की यह चिन्ता साबित करती है कि हडताल का कितना प्रभाव सत्ताधीशो पर पडा हुआ है। जयपुर के जीवन पर इस हडताल का जो असर हुआ है उसे पोछ डालना मनुष्य की शक्ति के बाहर है। ऐसी स्थिति मे प्रजाजन के लिए यदि कोई उपाय हो सकता है तो वह है सगठन करना। सगठन नि स्वार्थ, कार्य-कुशल, विश्वसनीय और अनुभवी नेताओ के बिना नही हो सकता। मैं कह सकता हू कि ऐसे सज्जनो का जयपुर मे अभाव नही है। परन्तु क्या यह आशा की जाय कि उनमे से एक दो माई के लाल सेवा के क्षेत्र मे उतरेंगे।"[1]

ऊपर के अ श मे यह ध्यान देने योग्य है कि यह सम्पादकीय टिप्पणी प्रथम पुरुष मे लिखी गई है। वस्तुत 'त्याग भूमि के सम्पादकीय-लेखन की यह शैलीगत विशिष्टता थी, जिसकी आलोचना भी समाचार पत्र जगत् मे भरपूर हुई थी। हरिभाउ जी ने इस सम्बन्ध मे अपना स्पष्टीकरण निम्न शब्दो मे दिया था

मैं बनाम हम

"त्याग भूमि मे सपादक लोग अपने लिए 'हम' नही बल्कि प्राय मैं का प्रयोग करते हैं इस पर कुछ मित्रो को आपत्ति है। कुछको इसमे अहम्मन्यता की बू आती है, किसी को उपदेश की शिकायत है और कोई इसे अनधिकार चेष्टा बताते है। मुझे याद है कि जब 'मालव मयूर' निकला था, तभी एक आदरणीय सम्पदक मित्र ने इस विधि पर यह आपत्ति की थी कि "महात्माजी अपने लिए 'मैं' लिख सकते है, श्रीमती बेसेंट अपने लिए 'मैं' लिख सकती हैं, आप-हम नही।" तब मैंने अपने तमाम कारण उनके सामने रखे थे और उसके बाद उन्होने आपत्ति नही की। उलटा अब यह उसकी विशेषता का अनुभव कर रहे हैं। अब फिर एक-दो सहृदय मित्रो ने इसकी ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया है। 'विशाल भारत' के प्रथमाक मे माई बनारसीदासजी ने इस पर आपत्ति की थी। वर्तमान सपादकीय प्रथा से यह बात भिन्न भी है। इसलिए मैं समझता हू कि त्याग भूमि मे इसकी सविस्तार चर्चा पाठको के सामने एक बार कर ली जाय।

---

1 त्याग भूमि, सम्पादकीय, मार्गशीर्ष-सवत् 1984, पृ० 130-131

(1) 'हम' का प्रयोग करने की प्रथा इसलिए भली है कि सम्पादक अपने को जनता का प्रतिनिधि समझता है और उसी अधिकार से वह लिखता है। पर स्थिति वास्तव मे ऐसी नही होती। सम्पादक या प्रकाशक जनता के चुने हुए प्रतिनिधि नही होते, वे ख्वामखाह वह प्रतिनिधित्व अपनी तरफ ले लेते हैं—या मान लेते हैं, और उसके नाम पर बोलते हैं। उनकी राय जनता की राय से कई बार मिलती भी नही है। वे अपने पाठकों से या जनता से पूछकर भी अपनी राय नहीं बनाते हैं। वे जनता के स्वयम् प्रतिनिधि है। मैं सपादक को इस स्थिति को ठीक नही समझता हू। त्याग भूमि का सपादक जनता के प्रतिनिधित्व का दावा नही करता। वह उनका सेवक है। नम्र भाव से एक साधारण व्यक्ति की हैसियत से अपने विचार जनता के सामने रखता है। ऐसी दशा में 'मैं' का प्रयोग ही उचित है, उलटा 'हम' अभिमान सूचक मालूम होता है।"

त्याग भूमि के पहले पृष्ठ पर हमेशा राष्ट्रीय कविताए छपती थी। कविताओ के अतिरिक्त कहानियां, मात्र-वर्णन, गद्य काव्य, ललित निबंध और एकाकी भी पत्रिका मे स्थान पाते थे। किन्तु 'विविध' तथा 'सम्पादकीय' स्तम्भो के अन्तर्गत हमेशा राजस्थान की राजनीतिक हलचलो के समाचार और उन पर टिप्पणिया प्रकाशित होती थी। इस प्रकार 'त्यागभूमि' साहित्य एव राजनीति की मिलीजुली पत्रिका थी। किन्तु यह उल्लेखनीय है कि त्यागभूमि मे जो साहित्यिक सामग्री प्रकाशित होती थी, उसका लक्ष्य भी राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत और परिपुष्ट करने का ही होता था। उदाहरण के लिए दूसरे अक के पहले पृष्ठ पर 'पैदाकर' शीर्षक से प्रकाशित क्षेयानन्द राहत की निम्न कविता द्रष्टव्य है —

> वतन की गम गुसारी के कोई सामान पैदा कर।
> जिगर मे जोश, दिल मे दर्द, तन मे जान पैदा कर॥
> उडा ले जाये जाये दम भर मे जहाँ की यह खुराफातें।
> बपा कर ऐसा महशर या कोई तूफान पैदा कर॥
> हम अपनी शान की खातिर खुशी से जान पर खेलें।
> कि हम आन पर कुरबान वह औसान पैदा कर॥
> कदम बोसी को चल के सर के बल आयेगी आजादी।
> कि मर मिटने की ख्वाहिश ऐ दिले नादान पैदाकर॥

त्यागभूमि के विशिष्ट लेखको मे सी एफ एण्डरूज, सोहनलाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' महादेवी वर्मा, जयशकर प्रसाद जैसी हस्तियाँ थी। पत्र ने अपने दूसरे वर्ष मे 'आधी दुनिया' स्तम्भ के अन्तगत नारी जागरण की सामग्री के लगभग 16 पृष्ठ प्रकाशित करने आरम्भ कर दिये थे। फाल्गुन सवत् 1985 के अक मे इस स्तम्भ के अन्तर्गत हमारा स्त्री समाज, वेश्यावृत्ति कैसे मिटे, अबला औद्धत्य

नेपोलियन की जननी, महाराष्ट्र की स्त्रिया आदि रचनाए प्रकाशित की गई हैं।

उत्कृष्ट कोटि की सामग्री से सम्पन्न 'त्याग भूमि' की एक विशेपता यह थी कि इसमे सस्ता साहित्य मण्डल के गाधीवादी साहित्य तथा खादी सस्थाओं के अतिरिक्त और किसी के विज्ञापन नही छपते थे। इसके मुख पृष्ठ पर तो चित्र छपते ही, आन्तरिक पृष्ठो पर भी बहुरगी एव कलात्मक चित्र छपते थे। इसकी इस विशेपता का अनुकरण आगे चलकर 'विशाल भारत' ने भी किया। इस प्रकार 'त्याग भूमि' न मासिक पत्र के स्वहृदय की कई रचना भी तत्कालीन पत्रकारो के सम्मुख रखी। इन सारी विशेपताओ के साथ त्याग भूमि ने अपने निम्न लिखित ध्येय की प्राप्ति के लिए अपने आपको सदा समर्पित रखा :

आत्म-समर्पण होते जंह, जहा शुभ्र बलिदान।
मर मिटने की साध जह, तह हैं श्री भगवान्॥

कुछ और महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएं

साहित्यिक पत्रकारिता के दूसरे दौर मे परवर्ती काल के विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिकामोहन 'चन्द्रिका', 'समालोचक' 'सौरभ' और 'भारत मार्तण्ड' आदि पत्रो की परम्परा म कुछ और महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओ का उदय हुआ, जो प्रदेश मे साहित्यिक पत्रकारिता की परम्परा को आगे बढ़ाने म बहुत सहायक सिद्ध हुए। इन पत्रो म चारण, राजस्थान, गणेश, प्रकाश, हितैपी, चांदनी, भाई बहिन, बाल हित, मारवाडी गौरव, राजस्थान क्षितिज आदि प्रमुख हैं।

चारण

अखिल भारतीय चारण सम्मेलन द्वारा सन् 1938 मे इस त्रैमासिक का प्रकाशन लीवड़ी (काठियावाड) से किया गया। इस पत्र के प्रकाशक श्री शकरदान जेठी भाई देथा भले ही गुजरात मे थे, किन्तु इसके सम्पादक ठाकुर ईश्वरदान आशिया और सहायक सम्पादक शुभकरण कविया मारवाड़ के ही थे और यही से इसका सम्पादन कार्य करते थे। इस पत्र मे कुछ अश गुजराती भाषा मे भी छपता था, जिसका सम्पादन खेतसिंह नारायणजी मिश्रण करते थे।[1]

'चारण' भले ही चारण जाति के सार्वजनिक सगठन द्वारा निकाला जाता था, तथापि उसमे अन्य जातीय पत्रो की तरह केवल बिरादरी की वार्ता की भरती नहीं होती थी। वस्तुत यह एक ऐसा स्तरीय साहित्यिक पत्र था जो प्राचीन राजस्थानी के उन्नायक चारण कवियो की रचनाओ को प्रकाश मे लाता था।

1. चारण, वर्ष 1, अक 2, मुख पृष्ठ

मध्ययुगीन ऐतिहासिक चारण-काव्यों आदि पर शोधपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करने के साथ इसमे तत्कालीन प्रतिभा सम्पन्न चारण साहित्यकारो की रचनाए बराबर छपती थी। लेकिन इस बारे मे पत्र की कोई सकीर्ण नीति नही थी। चारणेत्तर विद्वानो के लेख भी इसमे बराबर स्थान पाते थे। पत्र के जो प्राचीन अक बहुत प्रयत्न करने पर लेखक को मिल पाये है, उनम पहले वर्ष के दूसरे अक म ही श्री रामनारायण चौधरी और श्री गौरीशकर हीराचन्द ओझा की रचनाए छपी हैं।

'चारण' की सामग्री का प्रारम्भ अनिवार्यत देवी की स्तुति के साथ होना था जैसा कि दो वर्षों के अको पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है। पहले वर्ष के दूसरे[1] और तीसरे[2] अक मे श्री अक्षयसिह रत्नू की देवी की स्तुति परक प्रार्थनाए छपी है, जबकि चौथे अक[3] मे स्व० कविराजा बाकीदासजी आशिया की करणी-स्तुति प्रकाशित की गई है। अन्य अको मे देवी स्तुति इसी प्रकार प्रारम्भ मे छापी गई है।

'चारण' की सामग्री का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि पत्र के राजस्थानी और गुजराती दो खण्ड होते थे। पहले खण्ड मे राजस्थानी साहित्य विषयक सामग्री का प्रकाशन हिन्दी और राजस्थानी दोनो मे होता था, जबकि दूसरे खण्ड की समूची सामग्री गुजराती मे छपती थी। कच्छ और मारवाड मे मे चारणो का जो बाहुल्य है, उसे ध्यान मे रखते हुए ही सामग्री-प्रकाशन का यह स्वरूप सम्भवत निर्धारित किया गया था। पहले खण्ड मे देवी-स्तुति के बाद सम्पादकीय टिप्पणिया, उसके बाद चारण-समाज से सम्बन्धित कुछ लेख फिर प्राचीन राजस्थानी साहित्य से सम्बन्धित रचनाए और अन्त मे सक्षिप्त समाचार छपते थे। लगभग इसी प्रकार का क्रम दूसरे खण्ड मे होता था।

चारण मे प्राचीन राजस्थानी साहित्य के प्रकाशन पर अधिक जोर था। पत्र की इस नीति के कारण डिंगल का बहुत सा ऐसा साहित्य प्रकाश मे आया, जिसकी जानकारी सामान्य पाठको को न थी। इसी प्रकार डिंगल के कुछ ऐसे पहलू भी थे जिन पर 'चारण' के माध्यम से सर्वथा नई रोशनी डाली गई। उदाहरण के रूप मे 'डिंगल साहित्य मे हास्य रस' (उदयसिह दधवाडिया)[4] 'बाधा कोटडिया' (आईदानसिह बारहठ)[5] तथा तथा 'राजस्थानी कवियो का प्रकृतिप्रेम (उदयसिह

1 चारण, वर्ष 1, बसन्त पचमी, सवत् 1995, अक–2
2 चारण, वर्ष 1, अक्षय तृतीया, सवत् 1996, अक–3
3 चारण, वर्ष 1, रक्षा बन्धन सवत् 1996, अक–4
4 चारण, वर्ष 1, अक 2, पृ० 25
5. चारण, वर्ष 1, अक 3, पृ० 33

दधवाडिया)[1] आदि लेख ऐसे हैं जो राजस्थानी साहित्य के अपेक्षाकृत अज्ञात पक्षो पर प्रकाश डालते है।

'चारण' मे सामाजिक कुरीतियो, अन्ध विश्वासो और रूढियो के विरुद्ध भी प्रत्येक अक मे प्रर्याप्त सामग्री प्रकाशित होती थी। अशिक्षित पत्नियो के मूर्खतापूर्ण आचरण पर कटाक्ष करते हुए पहले वर्ष के दूसर अक में इस प्रकार टिप्पणी की गई है :—

'पति के जीते जी बीमारी मे उसके इलाज के लिए अपने पैरो की कडिया या एकाध जेवर जो उसके पास हो बेच देने की उसे नही सूभती पर उसके द्वादशे के तो लड्डू ही बनें, इसके लिए कर-जमीन सब कुछ दे देने को अपना कर्त्तव्य समझती है और बडे सवेरे वा शाम अपने और पति के पारस्परिक स्नेह और वियोग के विलाप चिल्ला चिल्ला कर रोते हुए करने मे ही अपनी कुलीनता की रक्षा मानती है।"[2]

इस प्रकार समाज और साहित्य दोनों को 'चारण' ने अपना वैचारिक योग दान किया। किन्तु यह त्रैमासिक पत्र भी आवश्यक व्यवस्था और प्रबन्ध-पटुता के अभाव मे लगभग 3 वर्ष ही जीवित रह सका।"

प्रकाश

1938 के बाद जिन साहित्यिक पत्रो का उदय हुआ, उनमे 'प्रकाश' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सन 1939 मे इस पत्र का प्रकाशन जयपुर से श्रीमती कमला देवी के सपादन मे प्रारम्भ हुआ। सन् 1940 मे श्रीमती कमलादेवी के देहान्त के बाद इसका सपादन-भार कमलाकर 'कमल' ने सम्भाला। इस पत्र का उद्देश्य इसके जुलाई 1939 के अक के अनुसार 'राजस्थान मे सच्चे साहित्य का प्रचार करना यहा की उज्ज्वल विभूतियो के जीवन चरित्र प्रकाश मे लाना और साहित्य के सहारे देश और जाति को अध-कूप से बाहर निकाल कर उन्नति की ओर ले जाना था।[3]

प्रकाश ने अपनी सामग्री मे महिला समाज मे सुधार लाने वाले लेखो को विशेष स्थान दिया। उसके जून-अगस्त, 1940 के शिक्षाक मे प्राचीन शिक्षा पद्धति और अर्वाचीन शिक्षा पद्धति का एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए दोनों के गुण-दोषों का सम्यक् विवेचन किया गया।[4]

स्वाधीनता का मन्त्र भी उसने साहित्य की विभिन्न रचनात्मक विधाओं द्वारा दिया।

---

1. चारण वर्ष 1, अंक 4 पृष्ठ 4
2 चारण वर्ष 1, अंक 2, पृ॰ 4
3 प्रकाश, जुलाई, 1939, मुख पृ॰
4. प्रकाश, जून- अगस्त 1940

हितैषी

दयाशकर पाठक द्वारा सम्पादित यह पत्र जयपुर से जुलाई, 1940 मे प्रकाशित हुआ।[1] इस पत्र को उस युग के प्रसिद्ध साहित्यकारो और लेखको यथा, पडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, पुरोहित हरिनारायण आदि का सक्रिय सहयोग प्राप्त था।

यह पत्र भी लगभग 3 वर्ष चल कर बन्द हो गया।

राजस्थान और राजस्थानी

सवत् 1925 म श्री किशोरसिंह समस्हिरपय द्वारा 'राजस्थान' नामक त्रैमासिक का पकाशन राजस्थानी भाषा, साहित्य, इतिहास एव सस्कृति के अभ्युत्थान के लिए कलकत्ता स किया गया। इसी प्रकार सन् 1939 मे 'राजस्थानी' नामक पत्रिका का भी श्री अगरचन्द नाहटा के सपादकत्व म कलकत्ता से ही प्रकाशन किया गया। राजस्थानी साहित्य और सस्कृति के पुनरुत्थान के लिए इन दोनों ही पत्रो की सेवाए बहुत लघुजीवी होने पर भी मूल्यवान् थी। ये दोनो ही पत्र लम्बे समय तक नहीं चल सके और अर्थ सकट तथा अन्य व्यवस्थापकीय कारणो से इन्हे बन्द करना पडा।[2]

गणेश

राजस्थानी साहित्य और सस्कृति की सेवा करने के लिए राजस्थान के बाहर से निकाले जाने वाले उक्त पत्रो की शृखला म ही 'गणेश' नामक हास्यप्रधान साप्ताहिक का प्रकाशन सन् 1934 मे कोटा के सुपरिचित राजनेता और साहित्य-सेवी श्री अभिन्न हरि द्वारा किया गया।[3] इस पत्र मे कोटा राज्य की गतिविधियो पर आधारित हास परिहास और व्यग्य प्रधान रचनाए प्रकाशित होती थी। इस पत्र पर तत्कालीन कोटा राज्य के शिक्षा-निदेशक द्वारा मानहानि का मुकदमा चलाया गया था, जिसके कारण पत्र को असमय ही बन्द करना पडा।

इसके बाद अभिन्न हरिजी ने कोटा से 'अग्रसर' साप्ताहिक का प्रकाशन किया। कोटा राज्य की अवाछित गतिविधियो का भण्डाफोड करने के कारण इस पत्र को भी कोप-भाजन बनना पडा।

चांदनी

श्री अम्बिकेश कुन्तल द्वारा सचालित और श्री नन्द किशोर पारीक तथा श्री राधाशरण जोशी द्वारा सपादित यह साहित्यिक एव सिने-पत्रिका मई, 1946

---

1 महेन्द्र मधुप, स्वाधीनता सग्राम म जयपुर की पत्र-पत्रिकाओ का योगदान पृष्ठ 28

2 रा० श्रमजीवी पत्रकार सघ, परिचय पुस्तिका, 1956, पृ० 61

3. वही पृ० 63

मे जयपुर से प्रारम्भ हुई। इस पत्रिका का जीवन दो वर्ष से भी कम रहा, किन्तु इस अल्प अवधि मे ही इसने साहित्यिक एव सिने-जगत् मे अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। श्री गोपालसिंह नेपाली,[1] उपेन्द्रनाथ अश्क,[2] भगवती चरण वर्मा[3] और रामकृष्ण शिलीमुख[4] जैसे चोटी के साहित्यकार इसकी साहित्यिक सामग्री को सवारते थे, तो किशोर शाहू[5] और सुविख्यात् फिल्म अभिनेत्री मुमताज शान्ति[6] के पति बली साहब इस पत्र के लिए फिल्मो सम्बन्धी रचनाएं लिखते थे। फिल्मों सम्बन्धी सामग्री के अतिरिक्त इसमे कहानिया, कविताए तथा एकाकी प्रकाशित होते थे।

चाँदनी मे फिल्मो की निष्पक्ष आलोचना छपती थी और यथा आवश्यकता इसमें चित्रो का समावेश भी होता था। जयपुर जैसे पिछडे क्षेत्र को देखते हुए उस युग मे जैसा अन्तरग और बहिरग इस पत्र का होता था, वह सचमुच इन दो तरुण सम्पादकों के कठोर श्रम और पत्रकारी कौशल का चमत्कार था।

इस पत्र मे 'क्या आपको मालूम है' शीर्षक से एक स्थायी स्तम्भ छप्पन छुरी के नाम से लिखा जाता था, जिसमे फिल्म जगत् के सितारो के जीवन की हलचल पर मर्म ठे कटाक्ष होते थे।

'चादनी' मे रगीन चित्र भी पर्याप्त मात्रा मे छपते थे। उस जमाने के मुद्रण साधनों को देखते हुए, इस प्रकार की रगीन छपाई भी राजस्थान मे अद्वितीय ही थी।

'चादनी' से पूर्व श्री नन्दकिशोर पारीक ने 'पारीक' नामक पत्र भी सन् 1945 मे निकाला था, जो अल्पकाल के बाद ही बन्द हो गया। इस पत्र का विद्या-भूषण अक साहित्य-जगत् मे काफी चर्चित रहा। पारीक समाज से घोषित यह पत्र विशुद्ध रूप से साहित्यिक तो न था, फिर भी इसमे साहित्यिक सामग्री प्रचुर मात्रा मे होती थी।

भाई बहन और बाल हित

मासिक पत्रों की इस शृंखला मे जयपुर से प्रकाशित 'भाई बहन' और उदयपुर से प्रकाशित 'बाल हित' का उल्लेख करना भी यहा अप्रासगिक न होगा। ये

---

1. चांदनी, दिसम्बर, 1946, पृ० 21
2. चादनी, अगस्त-सितम्बर, 1946, पृ० 15
3. चांदनी, दिसम्बर, 1846, पृ० 9–20
4. चांदनी, जून-जुलाई, 1946 पृ० 3
5. वही, पृ० 60
6. चांदनी, अगस्त-सितम्बर, 1946 पृ० 25

दोनो ही पत्र बालक-बालिकाओं तथा उनके अभिभावकों को उपयुक्त मानसिक सामग्री देने के लिए निकाले गये थे 'बालहित' का प्रकाशन, 1935 मे और 'भाई-बहन' का प्रकाशन 1946 मे प्रारम्भ हुआ था।

'भाई बहन' के सपादक रतनलाल जोशी ने वर्ष मे दो विशेषाक निकाल कर बालको को रोचक एव शिक्षाप्रद सामग्री देने की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किया। बालको मे स्वाधीनता की भावना भरने का इस पत्र का विशेष लक्ष्य था। अप्रैल 1946 के अक मे इसके सम्पादक द्वारा लिखित एकाँकी 'नौ अगस्त' तथा अन्य रचनाओं से पत्र का यह उद्देश्य स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।[1]

'बालहित' का उद्देश्य माता पिताओं और अध्यापकों का सही मार्ग दर्शन करना था। गिजु भाई की 'शिक्षण पत्रिका' की टक्कर का यह पत्र श्री कालूलाल श्री माली और जनार्दन राय नागर के सपादन मे 'पितृ सघ' उदयपुर द्वारा प्रकाशित किया जाता था।

अप्रैल, 1940 मे प्रकाशित इसका 'फ्रायड अक' बाल-शिक्षा के विशेषज्ञों और बाल मनोवैज्ञानिकों मे काफी चर्चित रहा। सिगमन फ्रायड की खोजो मान्यताओं और धारणाओं का सागोपाग विवेचन इस विशेषाक म प्रस्तुत किया गया था। इस अक की सारी सामग्री अधिकारी विद्वानो द्वारा लिखी गई थी और उसका काफी अश अग्रेजी से अनुदित था।[2]

राजस्थान क्षितिज और अन्य मासिक

अलवर स सन् 1945 मे ऋषि जैमिनी कौशिक द्वारा 'राजस्थान क्षितिज' नामक ऐसे मासिक का प्रकाशन किया गया, जिसे हिन्दी डाइजेस्ट की सज्ञा दी जा सकती है। यह पत्र राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयो पर जिस उच्च स्तर की सामग्री आज से तीस वर्ष पूर्व प्रकाशित करता था, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उस युग मे इसने पत्रकारिता के क्षेत्र मे एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था।

इसम आवरण के बाद के पहले पृष्ठ पर हर अक मे सम्पादक की 'जरूरी विज्ञप्ति' छपती थी, जिसम प्रकाशित सामग्री की सामयिकता और उसके औचित्य पर प्रकाश डाला जाता था और एक प्रकार से यह पाठको से सपादक का सीधा साक्षात्कार करने का प्रयत्न था।

---

1. महेन्द्र मधुप, स्वाधीनता सग्राम मे जयपुर की पत्र पत्रिकाओं का योगदान पृ० 45
2. नवजीवन, 4 मई, 1940, पृ० 8

'जरूरी विज्ञप्ति' के बाद इसमे सामयिक घटनाओ से सम्बन्धित कुछ चित्र और उसके बाद सम्पादकीय टिप्पणिया प्रकाशित होती थी। इसके बाद रोचक और ज्ञानवर्द्धक साहित्यिक लेखो, कविताओ, तथा कहानियो का समावेश होता था।

पत्र को चलाने के लिए इसके सम्पादक को कितना सघर्ष करना पडा होगा, इसका अनुमान इन सम्पादकीय पक्तियो से सहज ही लगाया जा सकता है —

'राजपूताना पिछले सौ साल से ऐसा सो रहा है कि मानो इसने अफीम खाली हो। यह सच है कि राजपूताना म अफीम चीन से भी ज्यादा खाई जाती है। प्रान्त की ऐसी विकट मूर्च्छना के बीच पिछले पचास वर्षो मे अनेक पत्र निकले और बन्द होते चले गये। मुझे भी लोगो ने चेतावनी दी कि यह उजाड देश है। मै एक मामूली मिशनरी ठहरा और मिशनरी को उजाड देश मे कार्य करने मे जरा ज्यादा मजा आता है।'[1]

'राजस्थान क्षितिज' के सपादक ऋषि जैमिनी कौशिक राजस्थान के रग मे डूबे बडे भावुक व्यक्ति रहे है और आज भी कलकत्ता मे प्रवासी राजस्थानियो के बीच राजस्थानी सस्कृति के बहुरगी वैभव को उजागर करने मे लगे है। 'राजस्थान-क्षितिज' मे लिखे हुए उनके यात्रा विषयक लेख और सम्पादकीय बहुत ही हृदयग्राही शैली म लिखे होते थे। 'अलवर से कलकत्ता', शीर्षक यात्रा वृत्तान्त[2] और 'अरे राजस्थान के साथ सामूहिक धोखा हुआ है'[3] शीर्षक लेख सम्पादक की तल्ख लिखावट और उसकी कलम के तेवर की पहचान कराते है।

इस पत्र को उस युग के अनेक समर्थ लेखको का सहयोग प्राप्त होने पर भी घाटे की अर्थ व्यवस्था के कारण यह दीर्घजीवी न हो सका और इसके अगस्त-सितम्बर, 1948 के अन्तिम पृष्ठ पर विवश होकर सपादक को यह घोषणा करनी पडी

'यदि कोई सज्जन 'राजस्थान क्षितिज' के प्रकाशन और मुद्रण का भार लेना चाहते है, तो पत्र व्यवहार करें। नरेन्द्र भवन, अलवर।'

चू कि इस अक के बाद का कोई अक उपलब्ध नही है, अत यह अनुमान किया जाता है कि पत्र का प्रकाशन आगे सम्भव नही हो सका।

आगे चलकर साहित्यिक पत्रो की इसी यशस्वी परम्परा मे श्री राजेन्द्र कुमार 'अजेय' द्वारा 'ज्योति', श्री वैद्य विजय शकर शास्त्री द्वारा 'राष्ट्र भाषा', श्री मृणाल

---

1 ऋषि जैमिनी कौशिक, राजस्थान क्षितिज, मई, 1948, पृ० 9-10
2 राजस्थान क्षितिज, मई, 1948, पृ० 11-18
3. राजस्थान क्षितिज, जून, 1948, पृ० 14-17

इस प्रकार श्रवण-प्रक्रिया द्वारा सहस्रो की संख्या मे लोगो पर समाचार पत्रो द्वारा दिये गये विचारो का प्रभाव होता था।

स्वाधीनता पूर्व के समाचार पत्र सम्पादको की भूमिका सही अर्थों मे एक धर्म-प्रवर्तक की भाति थी। विदेशी शासन के खिलाफ जिहाद बोलना और राजनीतिक चेतना का सचार करना ही उनका एक मात्र लक्ष्य था। तथ्य तो यह है कि उस युग की राजनीति भी साहित्य के साथ पूरी तरह घुल-मिल गई थी। साहित्यिक पत्रो म भी जो सामग्री छपती थी, उसकी अधिकाश म राजनीति से ओतप्रोत होती थी।

भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रो के प्रभाव को लार्ड रिपन के काल से लेकर काग्रेस के स्वाधीनता सग्राम तक बराबर अनुभव किया गया और यह भी अनुभव किया गया कि भारत की पत्रकारिता व्यवसाय न होकर एक मिशन के रूप म ही जन-कल्याण के प्रति समर्पित हो सकती थी।

'रामराज्य' के पत्रकार अक म प० बनारसीदास चतुर्वेदी ने ठीक ही कहा था कि जिस देश मे 90 फीसदी आदमी अशिक्षित हो, जनता घोर अन्धकार मे भटक रही हो, एक ही नही, बीसियो कार्य क्षेत्र विशेषज्ञ कार्यकर्ताओ के अभाव मे सूने पड़े हो, वहा पत्रकारों का मिशनरी रूप ही कल्याणकारी बन सकता है।'

इसमे कोई सन्देह नही कि जहा ब्रिटिश शासित प्रदेशो मे पू जीपतियो और नौकरशाही का प्रभाव समाचार पत्र जगत के एक भाग को ग्रस्त करने लगा था, राजस्थान के पत्र और पत्रकार अपनी उसी मिशनरी भावना से बराबर कार्य कर रहे थे। रूखा सूखा खाकर और जेलो की काल कोठरियो मे आये दिन जाकर भी यहा के मिशनरी पत्रकारो की तेजस्विता म कोई अन्तर नही आया। किन्तु स्वतत्रता प्राप्ति के बाद सन् 1950 मे राजस्थान के निर्माण की प्रक्रिया पूरी हो जाने पर प्रदेश म पत्रकारिता की यह मिशनरी भूमिका स्वत समाप्त हो गई। राज्य म काग्रेस के सत्तारूढ होते ही एक ओर क्षीण पुण्य सामन्तशाही सिहासनच्युत होने पर अपनी रही सही प्रतिष्ठा और राजनीतिक तथा आर्थिक स्वार्थों की रक्षा के लिए सजग हो गई और दूसरी ओर अब तक त्याग और बलिदान की भावना से ओतप्रोत जन नेता भी राजनीतिक शक्ति हथियाने के लिए आतुर होने लगे। परिणाम स्वरूप नये नये राजनीतिक दलों के और उनमे भी अलग अलग गुटो के अपने अखबार निकलने लगे।

1952 के आम चुनावो के बाद तो पत्र-पत्रिकाओ की सख्या म निरन्तर वृद्धि होने लगी। सत्तारूढ लोगो के समर्थन अथवा विरोध म नये नये अखबार सामने आने लग। पचवर्षीय योजनाओ के बनने और प्रदेश म सर्वांगीण विकास क नाना प्रकार क कार्यक्रम हाथ म लिये जाने के फलस्वरूप शिक्षा और सचार के माध्यमो

में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए और परिणामत समाचार पत्रों का विकास भी तीव्र गति से होने लगा। संविधान में प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की गारन्टी और दमन और भय की भावना के समूल नष्ट हो जाने के परिणाम स्वरूप प्रदेश के विभिन्न भागों से अनेक दैनिक, साप्ताहिक, साहित्यिक मासिक और अन्य विचार प्रधान पत्र-पत्रिकाएं निकालने की दिशा में प्रवुद्ध एव स्वतन्त्र-चेता व्यक्ति प्रेरित हुए और इसी पृष्ठभूमि तथा नये परिवर्तित परिवेश में पत्रकारिता के विकास की दूसरी यात्रा सम्पन्न हुई। किन्तु यह विकास-यात्रा प्रतिस्पर्द्धा और प्रतियोगिता की भावना से आप्लावित समाचार पत्रों के व्यावसायीकरण की कथा है। पत्रकारिता को पेशे के रूप में अपनाये जाने के कारण अर्थ-लाभ की लालसा, परिवर्तित परिवेश में राजनीतिक प्रभाव की प्रबल आकांक्षा और सत्ता को प्रभावित करने के अपने सामर्थ्य के निर्माण की मनोवृत्ति ने इस युग की पत्रकारिता को घनीभूत रूप से प्रभावित किया। किन्तु यह भी सत्य है कि समाचार पत्रों ने इस युग में राजनीतिक सत्ता और प्रशासन की विद्रूपताओं पर जन-हित में प्रहार करने और सामाजिक कल्याण के नये क्षितिजों का विस्तार करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान किया।

विगत ढाई दशकों में राजस्थान निर्माण से पूर्व चले आ रहे समाचार पत्रों ने जहां कुछ ने अपनी जड़ें जमाई और कुछ काल शेष हो गये, वहां दूसरी ओर बड़ी संख्या में दैनिकों, साप्ताहिकों, पाक्षिकों, मासिकों और द्वैमासिक और त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाओं ने जन्म लिया।

दैनिक पत्र

इस युग में जो दैनिक प्रकाशित हुए, उनमें राष्ट्रदूत, नवयुग, राजस्थान पत्रिका, अधिकार, अमर राजस्थान, न्याय, जलते दीप, तूफान, यंग लीडर, जन गण, जन नायक, तरुण राजस्थान, लोकमत, कलम, जय राजस्थान उदयपुर एक्सप्रेस, प्रतिनिधि, समाचार-जगत्, असुन्दरा-संवाद आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें से कुछ प्रमुख पत्रों का संक्षिप्त इतिवृत्त यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

राष्ट्रदूत

1 अगस्त, 1951 को इस दैनिक का समारम्भ जयपुर से वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के प्रबन्धक संचालक और सहभागी श्री हजारीलाल शर्मा द्वारा किया गया। इसके प्रथम सम्पादक राजस्थान की पुरानी पीढ़ी के सुपरिचित पत्रकार और 'रियासती' के भूतपूर्व सम्पादक श्री सुमनेश जोशी थे। उसके बाद सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और भूतपूर्व मत्स्य संघ में सार्वजनिक निर्माण एवं गृह मन्त्री श्री युगल किशोर चतुर्वेदी जिन्हें भरतपुर से प्रकाशित 'नवयुग सन्देश' के सम्पादन का अच्छा अनुभव था, इस पत्र के सम्पादक बने। श्री चतुर्वेदी के बाद इसके सम्पादन का

दायित्व श्री दिनेश खरे ने और तदन्तर श्री शिवपूजन त्रिपाठी ने सभाला। इस समय श्री राजेश शर्मा इसके सपादक है, जबकि प्रबन्ध सम्पादक के रूप मे श्री राकेश शर्मा का नाम छपता है।

'राष्ट्रदूत' राजस्थान मे पहला पत्र था, जिसने यह कल्पना की कि पत्रकारिता अब एक उद्योग है और उसके सचालन के लिए बड़ी पूजी अनिवार्य आवश्यकता है।

'राष्ट्रदूत' यद्यपि किसी राजनीतिक दल का पत्र कभी नहीं रहा, पर इसके सचालकों की राजनीतिक रुझान इसकी रीति-नीति का नियमन बराबर करती रही।

पिछले लगभग तीन दशक से प्रकाशित यह पत्र आज पत्रकारिता के क्षेत्र मे अपना विशिष्ट स्थान बना चुका है।

नवयुग

राजस्थान निर्माण के बाद दल गत राजनीति के निश्चित उद्देश्यो की पूर्ति के लिए निकाले जाने वाले इस दैनिक का समारम्भ 21 फरवरी, 1955 को हुआ। काग्रेस के सत्तारूढ दल द्वारा सरक्षित इस पत्र के प्रधान सम्पादक श्री हरिदेव जोशी, सम्पादक श्री ऋषिकुमार मिश्र और प्रबन्ध सम्पादक श्री विश्वनाथ वामनकाले थे वस्तुत इस पत्र का आविर्भाव श्री काले की प्रेरणा से ही हुआ था।

इस पत्र का प्रारम्भ बडी पूजी से काफी साज-सामान के साथ हुआ और तत्कालीन सुखाडिया सरकार को समर्थन देने की अपनी भूमिका का भी इसने सफलता पूर्वक निर्वाह किया। समाचार पत्र के रूप मे इसका यही उद्देश्य सर्वोपरि था। किन्तु इसके रविवारीय परिशिष्टो और दीपावली विशेषाको ने निश्चित रूप से प्रदेश के पुरातत्व, इतिहास, साहित्य और सस्कृति को उजागर करने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रदेश के सभी प्रख्यात लेखको का सहयोग इसे प्राप्त था।

इस पत्र के सम्पादकीय आज के पैट्रियट दैनिक के सपादक और भूतपूर्व ससद श्री ऋषिकुमार मिश्र स्वय लिखते थे और उनकी पैनी कलम के कारण ही इस पत्र के अग्रलेखो के पाठको की सख्या अच्छी खासी थी। 'नवयुग' की टक्कर के सम्पादकीय लेख हिन्दी के तथाकथित राष्ट्रीय दैनिको के सम्पादकीय लेखो से भी कही ऊचे स्तर के होते थे।

यह सचमुच विडम्बना थी कि राजस्थान के अन्य पत्र जहा अर्थ-सकट और साधनो के अभाव मे जीवित नही रह सके, अर्थ की सहज प्राप्ति और साधनो की बहुलता ने इस पत्र की प्राणवायु को दूषित कर दिया और अन्त मे श्रमजीवी पत्र-कारो के वेतन-विवादो और मुकदमेबाजी के साथ सन् 1964 मे इसने दम तोड दिया।

राजस्थान पत्रिका[1]

एक साधनहीन श्रमजीवी पत्रकार केवल अपनी पैनी कलम और कठोर श्रम के सहारे किस प्रकार एक बडे पत्र का निर्माण कर सकता है, इसका ज्वलन्त उदाहरण राजस्थान पत्रिका है।

'राष्ट्रदूत' के अल्प वेतन भोगी किन्तु सूझबूझ वाले रिपोर्टर और 'घुमक्कड़-राम की डायरी' शीर्षक लोकप्रिय स्तम्भ के लेखक श्री कपूर चन्द्र कुलिश ने 7 मार्च, 1956 को उन हालात मे जब कि अपने भूतपूर्व पत्र मालिक से तीन माह का वेतन न मिला था, फकत पाच सौ रुपये की पू जी उधार लेकर राजस्थान पत्रिका' का सायकालीन दैनिक के रूप म प्रकाशन प्रारम्भ किया। पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यो को अपने गाव मालपुरा मे छोड कर वे जोधपुर के अपने पत्रकार मित्र श्री हरमलसिंह को लिवा लाये और यह पत्रकार द्वयी एक स्वप्न को साकार करने के लिए पूरी तरह कृत सकल्प हो गई।

पहले दिन $18 \times 22/2$ के आकार मे चार पृष्ठ का अखबार निकाला गया और यही क्रम अगले 6 माह तक चला रहा। छह माह के बाद $20 \times 30/2$ के आकार मे एक बडा पृष्ठ निकाला जाने लगा। पत्र की बिक्री से होने वाली आय के अतिरिक्त 30 रुपये प्रति माहवार देने वाले 24 विज्ञापनदाता भी जुटाये गये और इस प्रकार 750 रुपये प्रति माह विज्ञापन की आय भी होने लगी। फिर भी अर्थ सकट के कारण 7–8 माह के बाद पत्रिका को एक माह के लिए बन्द करना पडा। किन्तु कर्मनिष्ठ श्रमजीवी पत्रकारो ने अपना हौसला टूटने नही दिया और पांच सौ रुपये की उधार अर्थ व्यवस्था कर पुन पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया।

एक माह के उस अन्तराल को छोड कर पत्रिका 1956 से 1961 तक सायकालीन दैनिक के रूप मे चलती रही। इस बीच इसकी ग्राहक सख्या भी आठ सौ से बढ कर तीन हजार हो गई। स्वेज नहर के सकट के समय तो इसकी लगभग 6 हजार प्रतिया बिकने लगी।

1962 के चुनावो से पूर्व 20×30 के आकार मे इसके चार पृष्ठ निकलने लगे। चुनावो के बारे मे निष्पक्ष चर्चा करने और सोद्देश्य राजनीतिक विश्लेषण के कारण इसकी प्रसार-सख्या मे और भी वृद्धि हुई और इसकी लोकप्रियता यहा तक बढी कि चुनाव के उम्मीदवार इसकी पाच पाच सौ और हजार-हजार प्रतिया अपने चुनाव क्षेत्रो मे बटवाने के लिए खरीद कर ले जाने लगे। चुनावो के बारे मे इसकी सम्पादकीय भविष्यवाणी अपनी सूक्ष्म दृष्टि एव वस्तु परकता के कारण इतनी सही

---

1. प्रकाशक एव सपादक श्री कपूरचन्द कुलिश से व्यक्तिगत साक्षात्कार पर आधारित।

निकली कि कांग्रेस और विरोधी दलों के बराबर संख्या में (88 88) उम्मीदवार विजयी हुए। उस समय जबकि स्वतन्त्र पार्टी के सामन्तों के प्रभाव और महारानी के जादू की चारों तरफ चर्चा थी, पत्रिका ने यह अप्रत्याशित अनुमान लगा लिया था।

सन् 1966 में डा० काटजू और श्री बालकृष्ण कौल ने पत्र की लोकप्रियता और भावी सम्भावनाओं को देखते हुए इसके संचालन के लिए एक सार्वजनिक सोसाइटी बनाने की दिशा में पहल की। सोसाइटी का गठन हो गया, कुछ धन संग्रह भी किया गया, किन्तु वित्तीय भार बराबर बढ़ते रहने के कारण अन्ततोगत्वा सोसाइटी के द्वारा भी संचालन दायित्व का निर्वाह कठिन हो गया। परिणामतः सोसाइटी विघटित करदी गई और जयपुर के उद्योगपति श्री हरिश्चन्द्र गोलछा को पत्र का संरक्षण देने का निश्चय किया गया। श्री गोलेछा ने न केवल सारा आगामी व्यय वहन करने का आश्वासन दिया, अपितु पुराने ऋणों को चुकाने का भी उत्तरदायित्व लिया। किन्तु श्री गोलेछा की आर्थिक सहायता बहुत अल्पजीवी रही और बाहर से उनके संरक्षण का लेबिल लगे रहने पर भी पत्र के संघर्ष का दूसरा दौर शुरू हो गया। संघर्ष के इसी दौर में सिनेमा के विज्ञापन और दूसरे व्यावसायिक विज्ञापन जुटाने की दिशा में विशेष प्रयत्न किये गये। मुद्रण यन्त्रों का विस्तार किया गया और किस्तों पर मशीनें भी खरीदी गई। 1965 के भारत पाक युद्ध के दौरान पत्रिका की लोकप्रियता और बढ़ने लगी। इसके द्वारा दिये गये तुकान्त नारे जनता की जुबान पर चढ़ गये।

प्रदेश की राजनीति में 1966 में जो अप्रत्याशित बवंडर खड़े हुए और उनके बारे में जो ताजा से ताजा समाचार पत्रिका ने दिये, उससे इसकी प्रामाणिकता को और चार चाँद लग गये।

1967 के महा निर्वाचन के दौरान तो इसने 16 वर्ष पुराने और साधन सम्पन्न पत्र 'राष्ट्रदूत' को भी प्रसार की दृष्टि से पीछे छोड़ दिया। 1967 में जो गोली कांड जौहरी बाजार में हुआ था, उसकी रिपोर्टिंग पत्रिका में ऐसी जीवन्त हुई कि मांग की तुलना में प्रतियां कम मुद्रित होने के कारण एक एक प्रति एक रुपये तक में बिकी। इस प्रकार इसकी प्रसार संख्या में वृद्धि का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह निरन्तर ही बढ़ता गया।

1968 में जब पत्रिका की निष्पक्ष नीति के कारण इसके तथाकथित संरक्षक श्री हरिश्चन्द्र गोलेछा को राजनीतिक दृष्टि से अपनी स्थिति असुविधाजनक लगने लगी, तो दिसम्बर, 1968 में उन्होंने प्रेस का कनेक्शन काट दिया। विवश होकर संपादक को पत्र का प्रकाशन राजस्थान राज्य सहकारी मुद्रणालय में कराना पड़ा। श्री गोलेछा भी इस बीच 'राजस्थान पत्रिका' के नाम से कई दिन तक दैनिक का

प्रकाशन करते रहे। मामला अदालत मे गया और चू कि कानूनी दृष्टि से श्री कर्पूर चन्द्र कुलिश ही इसके प्रकाशक, मुद्रक और सम्पादक थे, अप्रैल 1969 मे उन्हे प्रेस का कब्जा वापस मिल गया और पत्रिका के उनके स्वामित्व को भी कानूनी दृष्टि से सम्मत माना गया। कुछ शुभेच्छुओ के प्रयत्नो से पत्रिका के सचालन के लिए एक ट्रस्ट बनाने का निर्णय किया गया किन्तु ट्रस्ट का प्रारूप बन कर ही रह गया, उसका रजिस्ट्रेशन नही हो सका। इसी बीच पत्र का प्रसार और बढ गया और मुद्रण व्यवस्था मे असुविधा अनुभव की जाने लगी। परिणामत पत्र के प्रकाशक सम्पादक ने बडे हौसल के साथ येन केन प्रकारेण साधन जुटा कर नागपुर से पाच लाख रुपये मे रोटरी मशीन खरीद ली।

रोटरी की खरीद के साथ ही पत्र ने अपना पुराना कार्यालय और प्रेस भी छोड दिया और गुलाब बाग मे अपना नया कार्यालय स्थापित कर फरवरी, 1971 म पत्र का प्रकाशन यहा से चालू कर दिया।[1] इसके तुरन्त बाद ही लोकसभा के चुनाव हुए और उसके परिणाम स्वरूप जो राजनीतिक हेरफेर प्रदेश की राजनीति मे हुए, उनके कारण सुखाडिया मत्री मडल को त्याग पत्र देना पडा और बरकत उल्ला खा राजस्थान के मुख्य मन्त्री बने। 1972 मे बरकत उल्ला खा के सत्तारूढ होने से पूर्व *'राजस्थान पत्रिका' का सुखाडिया विरोधी स्वरूप जन आकाक्षाओ* के इतना अनुरूप था कि पत्र की लोकप्रियता और बढ गई।

अपने गभीर सम्पादकीय लेखो, विशेष फीचर्स, कामिक स्ट्रिप्स तथा नगर परिक्रमा, मझधार मे और साप्ताहिको की राय आदि नियमित स्तम्भो के कारण इसके पाठको की सख्या मे निरन्तर वृद्धि होती रही। सन् 1974 से पत्र ने अपने रविवारीय सस्करण को 'इतवारी पत्रिका' के नाम स बडी सजधज के साथ प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया जो अब विभिन्न प्रयोगो से गुजरता हुआ एक राजनीति प्रधान साप्ताहिक का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। 1972 के बाद राजस्थान पत्रिका की जय यात्रा और सुनिश्चित हो गई और इस बीच वह प्रगति के नित नये सोपान चढती रही। मुद्रण के आधुनिकतम साधन जुटाने के लिए वह सक्रिय है।

संवाददाताओ का जाल

'राजस्थान पत्रिका' ने राज्य के प्रमुख नगरो और कस्बों मे अपने सवाददाता नियुक्त किये हुए हैं, जो सुविधानुसार तार अथवा टेलीफोन द्वारा समाचार भेजने के लिए अधिकृत हैं। पर ने अपने कार्यालय को राज्य के प्रमुख नगरो से टेलीप्रिन्टर लाइनों द्वारा सवद्ध कर दिया है, जिससे इन प्रमुख नगरो के समाचार बडी तत्परता और त्वरा से मिलने लगे हैं।

---

1 वर्तमान मे पत्रिका का मुख्यालय अपने निजी भवन केसरगढ जयपुर मे और जोधपुर सस्करण का कार्यालय श्यामगढ की हवेली मे स्थित है।

निकली कि कांग्रेस और विरोधी दलों के बराबर सख्या मे (88 88) उम्मीदवार विजयी हुए। उस समय जबकि स्वतन्त्र पार्टी के सामन्तो के प्रभाव और महारानी के जादू की चारो तरफ चर्चा थी, पत्रिका ने यह अप्रत्याशित अनुमान लगा लिया था।

सन् 1966 मे डा० काटजू और श्री बालकृष्ण कौल ने पत्र की लोकप्रियता और भावी सम्भावनाओ को देखते हुए इसके सचालन के लिए एक सार्वजनिक सोसाइटी बनाने की दिशा मे पहल की। सोसाइटी का गठन हो गया, कुछ धन सग्रह भी किया गया, किन्तु वित्तीय भार बराबर बढते रहने के कारण अन्ततोगत्वा सोसाइटी के द्वारा भी सचालन दायित्व का निर्वाह कठिन हो गया। परिणामत सोसाइटी विघटित करदी गई और जयपुर के उद्योगपति श्री हरिश्चन्द्र गोलेछा को पत्र का सरक्षण देने का निश्चय किया गया। श्री गोलेछा ने न केवल सारा आगामी व्यय वहन करने का आश्वासन दिया, अपितु पुराने ऋणो को चुकाने का भी उत्तरदायित्व लिया। किन्तु श्री गोलेछा की आर्थिक सहायता बहुत अल्पजीवी रही और बाहर से उनके सरक्षण का लेबिल लगे रहने पर भी पत्र के सघर्ष का दूसरा दौर शुरू हो गया। सघर्ष के इसी दौर मे सिनेमा के विज्ञापन और दूसरे व्यावसायिक विज्ञापन जुटाने की दिशा मे विशेष प्रयत्न किये गये। मुद्रण यन्त्रो का विस्तार किया गया और किस्तो पर मशीनें भी खरीदी गई। 1965 के भारत पाक युद्ध के दौरान पत्रिका की लोकप्रियता और बढने लगी। इसके द्वारा दिये गये तुकान्त नारे जनता की जुबान पर चढ गये।

प्रदेश की राजनीति मे 1966 मे जो अप्रत्याशित बवडर खडे हुए और उनके बारे मे जो ताजा से ताजा समाचार पत्रिका ने दिये, उससे इसकी प्रामाणिकता को और चार चाद लग गये।

1967 के महा निर्वाचन के दौरान तो इसने 16 वर्ष पुराने और साधन सम्पन्न पत्र 'राष्ट्रदूत' को भी प्रसार की दृष्टि से पीछे छोड दिया। 1967 मे जो गोली काड जौहरी बाजार मे हुआ था, उसकी रिपोर्टिंग पत्रिका मे ऐसी जीवन्त हुई कि माग की तुलना म प्रतिया कम मुद्रित होने के कारण एक एक प्रति एक रुपये तक मे बिकी। इस प्रकार इसकी प्रसार सख्या मे वृद्धि का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह निरन्तर ही बढता गया।

1968 मे जब पत्रिका की निष्पक्ष नीति के कारण इसके तथाकथित सरक्षक श्री हरिश्चन्द्र गोलेछा को राजनीतिक दृष्टि से अपनी स्थिति असुविधाजनक लगने लगी, तो दिसम्बर, 1968 म उन्होने प्रेस का कनेक्शन काट दिया। विवश होकर सपादक को पत्र का प्रकाशन राजस्थान राज्य सहकारी मुद्रणालय मे कराना पडा। श्री गोलेछा भी इस बीच 'राजस्थान पत्रिका' के नाम से कई दिन तक दैनिक का

प्रकाशन करते रहे। मामला अदालत मे गया और चूंकि कानूनी दृष्टि से श्री कर्पूर चन्द्र कुलिश ही इसके प्रकाशक, मुद्रक और सम्पादक थे, अप्रैल 1969 मे उन्हे प्रेस का कब्जा वापस मिल गया और पत्रिका के उनके स्वामित्व को भी कानूनी दृष्टि से सम्मत माना गया। कुछ शुभेच्छुओ के प्रयत्नो से पत्रिका के सचालन के लिए एक ट्रस्ट बनाने का निर्णय किया गया किन्तु ट्रस्ट का प्रारूप बन कर ही रह गया, उसका रजिस्ट्रेशन नही हो सका। इसी बीच पत्र का प्रसार और बढ गया और मुद्रण व्यवस्था मे असुविधा अनुभव की जाने लगी। परिणामत पत्र के प्रकाशक सम्पादक ने बडे हौसले के साथ यन केन प्रकारेण साधन जुटा कर नागपुर से पाच लाख रुपये मे रोटरी मशीन खरीद ली।

रोटरी की खरीद के साथ ही पत्र ने अपना पुराना कार्यालय और प्रेस भी छोड दिया और गुलाब बाग मे अपना नया कार्यालय स्थापित कर फरवरी, 1971 मे पत्र का प्रकाशन यहा से चालू कर दिया।[1] इसके तुरन्त बाद ही लोकसभा के चुनाव हुए और उसके परिणाम स्वरूप जो राजनीतिक हेरफेर प्रदेश की राजनीति मे हुए, उनके कारण सुखाडिया मत्री मडल को त्याग पत्र देना पडा और बरकत उल्ला खा राजस्थान के मुख्य मन्त्री बने। 1972 म बरकत उल्ला खा के सत्तारूढ होने से पूर्व 'राजस्थान पत्रिका' का सुखाडिया विरोधी स्वरूप जन आकाक्षाओ के इतना अनुरूप था कि पत्र की लोकप्रियता और बढ गई।

अपने गभीर सम्पादकीय लेखो, विशेष फीचर्स, कामिक स्ट्रिप्स तथा नगर परिक्रमा, मझधार म और साप्ताहिको की राय आदि नियमित स्तम्भो के कारण इसके पाठको की सख्या मे निरन्तर वृद्धि होती रही। सन् 1974 से पत्र ने अपने रविवारीय सस्करण को 'इतवारी पत्रिका' के नाम स बडी सजधज के साथ प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया जो अब विभिन्न प्रयोगो से गुजरता हुआ एक राजनीति प्रधान साप्ताहिक का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। 1972 के बाद राजस्थान पत्रिका की जय यात्रा और सुनिश्चित हो गई और इस बीच वह प्रगति के नित नये सोपान चढती रही। मुद्रण के आधुनिकतम साधन जुटाने के लिए वह सक्रिय है।

संवाददाताओं का जाल

'राजस्थान पत्रिका' ने राज्य के प्रमुख नगरो और कस्बो मे अपने सवाददाता नियुक्त किये हुए हैं, जो सुविधानुसार तार अथवा टेलीफोन द्वारा समाचार भेजने के लिए अधिकृत हैं। पर ने अपने कार्यालय को राज्य के प्रमुख नगरो से टेलीप्रिन्टर लाइनो द्वारा सबद्ध कर दिया है, जिससे इन प्रमुख नगरो के समाचार बडी तत्परता और त्वरा से मिलने लगे हैं।

---

1 वर्तमान मे पत्रिका का मुख्यालय अपने निजी भवन केसरगढ जयपुर मे और जोधपुर सस्करण का कार्यालय श्यामगढ की हवेली मे स्थित है।

पत्र ने अंग्रेजी के बडे समाचार पत्रो की तरह अपने विशेष सवाददाताओ के महत्वपूर्ण समाचारो को उनके नाम से प्रकाशित करने की भी परम्परा राज्य की पत्रकारिता मे स्थापित की है। इससे न केवल संवाददाताओ को नई से नई जानकारी प्राप्त करने की दिशा मे प्रोत्साहन मिला है, अपितु पाठको के प्रति उनके दायित्व बोध को भी वल मिला है। जो कार्यालय सवाददाता न होकर केवल 'स्टिंगर' हैं, उन्हे दायित्व के अनुसार नियमित रूप से पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। इसी प्रकार विभिन्न लेखको को भी पत्र द्वारा आमन्त्रित सामग्री पर पारिश्रमिक दिया जाता है। पत्र मे जो फोटो प्रकाशित किये जाते हैं, उन पर भी नियमानुसार मानदेय देने की व्यवस्था है। सपादकीय विभाग के जो पत्रकार अपने सामान्य दायित्व के अतिरिक्त विशेष लेख आदि लिखते हैं, उन्हे भी अतिरिक्त रूप से पारिश्रमिक दिये जाने का प्रावधान है। सभी कर्मचारियो को वार्षिक बोनस, मकान-किराया और वस्त्रो के लिए वार्षिक अनुदान की उदार परम्परा भी पत्रिका ने आरम्भ की है।

सम्पादकीय विभाग

पत्र के सम्पादकीय विभाग के सभी सदस्यो को पालेकर अवार्ड की सिफारिशों के अनुसार वेतन देने के अतिरिक्त 1 जनवरी, 1975 से मूल वेतन का दस प्रतिशत मकान किराया-भत्ता पहले से ही दिया जा रहा है। पत्र के जो अधिशासी अधिकारी हैं, उनमे से प्रत्येक का 25 हजार रुपये का बीमा भी व्यवस्थापकीय विभाग द्वारा कराया गया है।

पत्र के सम्पादन, निष्पादन और साज-सज्जा मे किसी प्रकार का शैथिल्य न आये, इसके लिए कर्मचारियो की साप्ताहिक और पाक्षिक बैठकें आयोजित की जाती हैं, जिनमे गत अको का लेखा-जोखा लिया जाकर भावी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाती है।

प्रेस कमीशन की सम्मति के अनुसार यद्यपि पत्र मे सामग्री और विज्ञापन का अनुपात 60 40 रखने का प्रयत्न किया जाता है, तथापि कभी कभी विज्ञापन का अनुपात पचास प्रतिशत तक चला जाता है, जो वांछनीय न होते हुए भी व्यावसायिक दृष्टि से पत्र की सफलता को और अधिक सुनिश्चित करने वाला है।

इस प्रकार 'राजस्थान पत्रिका' आज राजस्थान का न केवल सर्वाधिक लोकप्रिय दैनिक है, अपितु व्यावसायिक दृष्टि से भी सबसे अधिक सफल पत्र है। सम्पादकीय सूझ-बूझ, कर्मचारियो की टीम स्प्रिट और सुन्दर तथा स्वच्छ मुद्रण इसकी सफलता के मूल आधार हैं। पत्रिका ने प्रदेश मे साहित्यिक एव सास्कृतिक गतिविधियो को प्रोत्साहन देने मे भी अपना योगदान किया है। आथर्स गिल्ड आफ

इण्डिया को प्रतिवर्ष दस हजार रुपये श्रेष्ठ कृति को पुरस्कृत किये जाने के लिए प्रदान करने का उसका सकल्प सभी क्षेत्रो मे सराहा गया है ।

अमर राजस्थान

जयपुर से 1960 मे इस सायकालीन दैनिक का समारम्भ श्री मवर शर्मा द्वारा किया गया । वे ही इस पत्र के प्रकाशक, सम्पादक और मुद्रक हैं ।

'अमर राजस्थान' मे देश-विदेश के समाचारो की तुलना मे प्रादेशिक समाचारो को वरीयता दी जाती है और अपने स्थानीय रग के कारण उसकी पाठक सख्या मुख्यत राजधानी मे हो है ।

पत्र मे समय समय पर विशेष लेख भी प्रकाशित किये जाते है । सन् 1963-64 मे इस पत्र मे 'आज का पर्चा' शीर्षक एक स्थायी स्तम्भ नगर की समस्याओ पर लिखा जाता था, जो काफी लोकप्रिय हुआ ।

इस पत्र मे आवश्यकतानुसार पी० टी० आई०, यू० एन० आई० की सेवाए न ली जाकर केवल समाचार भारती' तथा 'प्रेस एशिया इन्टरनेशनल' की सेवाय ली जाती है । इन एजेन्सिया के अतिरिक्त आकाशवाणी, भारत सरकार के पत्र सूचना कार्यालय तथा जन सम्पर्क निदेशालय द्वारा प्रसारित सामग्री का उपयोग भी इसमे पर्याप्त परिमाण मे किया जाता है ।

सन् 1970 मे इस पत्र ने अपनी एक दशाब्दी पूर्ण करने पर बृहदाकार विशेषाक प्रकाशित किया था, जिसमे राजस्थान के औद्योगिक एव आर्थिक विकास पर मूल्यवान् सामग्री प्रकाशित की गई थी ।

यह पत्र बराबर सरकार–समर्थक रहा है और इसका उद्देश्य प्रदेश के विकास के लिए किए जा रहे कार्यों को रचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का रहा है ।

'अमर राजस्थान' अपने साधनो की सीमाओ क बावजूद पाठको को प्रतिदिन ताजा समाचार देने के साथ सामयिक महत्व के मुद्दो पर सम्पादकीय टिप्पणिया और लेख भी बराबर उपलब्ध करता रहा है । इस पत्र को अपने रचनात्मक दृष्टिकोण के कारण केन्द्रीय तथा राज्य सरकार द्वारा बराबर सरक्षण मिलता रहा है ।

अधिकार

यह पत्र सन् 1955 मे श्री विष्णु शर्मा 'अरुणेश' तथा श्री कृष्णकुमार सौरभ भारती' द्वारा साप्ताहिक के रूप म जयपुर से प्रारम्भ किया था, जिसे ठीक एक दशक बाद 1965 मे दैनिक रूप दे दिया गया ।

सहकारिता के आधार पर प्रकाशित इस दैनिक के चार पृष्ठो की सामग्री मे देश और प्रदेश के समाचारो के अतिरिक्त विशेष लेख भी प्रकाशित किये जाते

हैं । प्रदेश मे यही एक ऐसा समाचार पत्र है जो नियमित रूप से एक कालम मे सस्कृत भाषा मे भी समाचार प्रकाशित करता है ।

इस पत्र के तीन सस्करण कोटा, बीकानेर व फरीदाबाद से भी प्रकाशित किए जाते हैं ।

मशाल

श्री विपिन प्रभाकर द्वारा यह पत्र जयपुर से सन् 1955 मे प्रकाशित किया गया था । लगभग आठ वर्ष बाद सन् 1963 मे इसे दैनिक के रूप मे निकाला जाने लगा ।

कुछ स्थानीय राजनीतिज्ञो द्वारा पोषण प्राप्त होने के कारण आरम्भ मे तो यह पत्र नियमित रूप से निकलता रहा किन्तु सम्पादकीय सूझ–बूझ के अभाव मे न तो इसकी पाठक सख्या मे विशेष वृद्धि हो सकी और न व्यावसायिक विज्ञापन ही इसे पर्याप्त मात्रा मे मिल सके । फलत यह बीच–बीच मे बन्द होता रहा ।

सन् 1965 मे श्री विपिन प्रभाकर ने इसे पुनर्जीवित करने के प्रयत्न किए और सन् 1967 के आस पास चुनावो के समय इसने स्थानीय पत्रो मे फिर अपना एक स्थान बना लिया किन्तु व्यवस्थापकीय शैथिल्य और अर्थाभाव के कारण यह अन्ततोगत्वा बन्द हो गया ।

यग लीडर

गगानगर के समाचारो को विशेष प्रमुखता के साथ प्रकाशित करने के उद्देश्य से इस पत्र का प्रकाशन जयपुर से श्री जिनेन्द्र कुमार जैन द्वारा सन् 1967 म किया गया था ।

यह पत्र अपना एक साप्ताहिक सस्करण भी प्रकाशित करता है, जो दैनिक से आधे आकार मे होता है । साप्ताहिक सस्करण मे कुछ लेख, कविताए तथा फिल्मो सम्बन्धी सामग्री प्रकाशित होती है ।

तरुण राजस्थान

सन् 1966 मे इस पत्र का प्रकाशन जोधपुर से श्री जयनारायण व्यास के पुत्र श्री देवनारायण व्यास द्वारा प्रारम्भ किया गया था । श्री व्यास के देहावसान के बाद उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मी व्यास इसका सचालन और सम्पादन ने लगी ।

चार पृष्ठो मे प्रकाशित इस दैनिक मे पश्चिमी राजस्थान के समाचारो को प्रमुखता दी जाती है और जोधपुर, जैसलमेर, बाडमेर, जालौर, पाली आदि जिलो मे इसका अच्छा प्रसार है । इसका स्वामित्व अब जलते दीप के सचालको ने ग्रहण कर लिया है ।

जन गण और जलते दीप

ये दोनो ही पत्र जोधपुर से क्रमशः श्री माणक चौपडा और श्री माएक मेहता द्वारा प्रारम्भ किए गए थे। 'जलते दीप' का प्रकाशन सन् 1966 मे और 'जन गए' का प्रकाशन सन् 1967 मे प्रारम्भ किया गया था।

ये दोनो ही पत्र 'तरुण राजस्थान' की तरह पश्चिमी राजस्थान की राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक एव सास्कृतिक गतिविधियो से सम्बन्धित सामग्री को प्राथमिकता देते हैं। इनकी अपनी रीति-नीति स्पष्ट रूप से प्रदेश के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र के कार्य-कलापो और गतिविधियों को प्रचारित करने की है। 'जलते दीप वर्त्तमान सम्पादक श्री पदम मेहता के सम्पादन मे निरन्तर प्रगति पर है और उसकी व्यावसायिक सफलता असदिग्ध है।

न्याय

श्री विश्वदेव शर्मा द्वारा सपादित यह दैनिक अजमेर से सन् 1953 मे एक साप्ताहिक के रूप मे प्रारम्भ हुआ था। प्रारम्भ में इस पत्र का स्वरूप विशुद्ध साहित्यिक था। सन् 1963 मे मगल सक्सेना के विशिष्ट सम्पादकत्व मे दीपावली के अवसर पर प्रकाशित इसका वृहदाकार विशेषाक साहित्य जगत् मे बहुत चर्चित हुआ था। इसी प्रकार 16 जनवरी, 1968 के अक मे प्रकाशित पी० एन० ओक के सनसनी खेज लेख, क्या अरबो पर विक्रमादित्य का शासन था,[1] ने भी विद्वत्समाज मे अरब और भारत के प्राचीन सम्बन्धो को नये परिप्रेक्ष्य मे देखने की विचारोत्तेजक प्रेरणा दी थी।

1970 मे दैनिक के रूप मे प्रकाशित होने के बाद यह पत्र राजस्थान की राजनीति मे सक्रिय रुचि लेता रहा है। अजमेर नगर की स्थानीय समस्याओं पर इसका तीखा और बेबाक लेखन इसकी लोकप्रियता को बढाने मे बहुत सहायक रहा है।

इस पत्र की गणना आज प्रदेश के विकासशील दैनिको मे है और शनै शनैः यह व्यावसायिक दृष्टि से भी सफलता की ओर अग्रसर हो रहा है।

जय राजस्थान

प्रसिद्ध स्वतन्त्रता-सेनानी और 'पन्द्रह अगस्त' साप्ताहिक के यशस्वी सम्पादक श्री चन्द्रेश व्यास द्वारा इस पत्र का प्रकाशन 1972 म उदयपुर से किया जा रहा है। दक्षिणी राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने वाले इस दैनिक का प्रभाव-क्षेत्र विशेष रूप से उदयपुर, भीलवाडा, चित्तौडगढ, डूगरपुर और बासवाडा जिलो मे हैं।

---

1. नवज्योति, 16 जनवरी, 1968

इस पत्र की स्पष्ट नीति अपने आपको एक क्षेत्रीय दैनिक के रूप मे विकसित करने की रही है। यही कारण है कि इसकी सामग्री क्षेत्रीय गतिविधियों और समस्याओ से विशेष रूप से सम्बन्धित रही है।

बिना किसी राजनीतिक गुट के सरक्षण के पत्रकारिता के विशुद्ध सिद्धांतो पर आधारित यह पत्र बराबर उन्नति क पथ पर अग्रसर है। आज जहा दैनिक पत्रो के सचालन के लिए प्रभूत पू जी-विनियोजन अनिवार्य हो गया है, यह पत्र अपने पाठको से पोषण प्राप्त कर जीवित है और इसकी इस सफलता के मूल मे इसके सम्पादक की सूझ-बूझ, जन समस्याओ मे गहरी पैठ और उसकी कारगर कलम है।

उक्त दैनिको के अतिरिक्त मारवाड टाइम्स (जोधपुर), लोकमत (बीकानेर), उदयभानु (धौलपुर), धनुर्धर (बासवाडा), गगानगर पत्रिका (गगानगर), सीमा-सन्देश (गगानगर), कलम (बीकानेर), धार ज्योति (बीकानेर), राजस्थान टाइम्स (अलवर), जन नायक (कोटा), चम्बल (कोटा), धरती के लाल (कोटा), सजय (झालावाड), जोधपुर टाइम्स (जोधपुर), जयगढ (जयपुर), युग पुरुष (कोटा), अरानाद (अलवर), बूक (जयपुर) आदि और भी दैनिक प्रदेश के विभिन्न भागो से इस अवधि म निकले हैं, किन्तु कुछ को छोडकर शेष या तो अनियमित हैं, या साप्ताहिक के रूप मे निकलने लगे हैं, अथवा बन्द हो गए हैं।

साप्ताहिक और पाक्षिक पत्र

प्रेस रजिस्ट्रार की रिपोर्ट् स[1] के अनुसार राजस्थान मे स्वातन्त्र्योत्तर युग मे कुल मिला कर छोटे मोटे लगभग चार सौ साप्ताहिक और पाक्षिक प्रदेश के विभिन्न भागो से निकले हैं। इन पत्रो का प्रभाव क्षेत्र अपने-अपने जिले तक सीमित रहा है। यद्यपि ये सभी साप्ताहिक प्रदेश की राजनीतिक हलचलों के प्रति सवेदनशील रहे हैं, तथापि जिले की राजनीति, प्रशासन, स्वायत्त, शासन, सामाजिक, सास्कृतिक और साहित्यिक गतिविधिया ही इनका वर्ण्य विषय रही है।

समाचार साप्ताहिको की दृष्टि से इन पत्रो का महत्व प्राय. नगण्य ही रहा है, क्योकि त्वरित सचार व्यवस्था के इस युग मे विलम्ब से छपे समाचार प्रधान साप्ताहिको को पाठको का सरक्षण पत्र की गुणात्मकता के आधार पर प्राप्त होना प्रकटत बहुत दुष्कर है।[2] ऐसी परिस्थिति मे जब तक कोई साप्ताहिक अथवा

---

1 देखे प्रेस रजिस्ट्रार की रिपोर्ट् स, 1965 से 1977 तक

2 डॉ० आर० मननेकर से लेखक का व्यक्तिगत विचार-विमर्श

पाक्षिक अपने निजी स्रोतो से कोई विशिष्ट सामग्री पाठको को सुलभ न कराये, उसकी माग जन सामान्य मे होना सम्भव नही है। एक विदेशी पत्रकार के अनुसार

"हिन्दी के अधिकाश साप्ताहिक एक या दो व्यक्तियो के बलबूते पर चलने वाले हैं। सामग्री सकलन, लेखन, विज्ञापन-सग्रह और मुद्रण-व्यवस्था का दायित्व प्राय एक ही व्यक्ति के द्वारा वहन किया जाता है। परिणामत ऐसे पत्रो से बहुत उच्च स्तरीय सामग्री देने की आशा नही की जा सकती। आज हिन्दी मे जितने भी साप्ताहिक निकल रहे हैं, उनमे से अधिकाश को पाठक वर्ग का पोषण प्राप्त नही है। वे या तो राजनीतिज्ञो के भाषण और चित्र छाप कर उनके व्यक्तिगत अनुग्रह को प्राप्त कर विज्ञापनो के रूप मे राजकीय सरक्षण द्वारा जीवित हैं, अथवा पीत पत्रकारिता द्वारा सार्वजनिक कार्यकर्ताओ मन्त्रियो और अधिकारियों का ब्लैक मेलिग करते हैं। छोटे-छोटे अचलों मे, वे जिला स्थित अधिकारियो जैसे—जिलाधीश, अतिरिक्त जिलाधीश, पुलिस अधीक्षक, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर तथा अन्य जिला स्तरीय अधिकारियो की प्रशस्तियां और चित्र छाप कर उनके माध्यम से स्थानीय महत्व के विज्ञापन प्राप्त कर अथवा कुछ कार्यालयो म पत्र की प्रतियों की खरीद करवा कर परोक्ष सरक्षण की दिशा म सचेष्ट रहते हैं।"

'कागज की कमी और बढते हुये मूल्यो के दौर मे न्यूज प्रिंट का कोटा भारत सरकार से लेकर उसे बाजार म बेचन, पत्र द्वारा उत्पन्न अपने प्रभाव से बसो के परमिट लेने, भूखड आवटित करा कर ऊचे मूल्यो पर बेचने, राशन की दुकानें अपने सगे सम्बन्धियो के नाम मे आवटित कराने आदि की दुष्प्रवृत्तिया भी इन छोटे साप्ताहिको के सचालको मे पनपी हैं। एक दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति यह रही है कि इन साप्ताहिको के अधिकांश सचालक-सपादक प्राय अधकचरे, अर्द्ध शिक्षित व्यक्ति हैं, जिन्हें न सम्पादन कला का प्रशिक्षण प्राप्त है, न उनम अध्ययन और स्वाध्याय की मनोवृत्ति है और न उनम इस पेशे के लिए आवश्यक निष्ठा और लगनही है।[1]"

आलोचन को प्रेरित करने वाले उक्त विचार राजस्थान के साप्ताहिको के सदर्भ मे कहा तक प्रासगिक हैं, यह विचारणीय है, किन्तु इस लेखक के विनम्र मत मे यह निश्चित है कि राजस्थान के साप्ताहिको ने ग्रामीण क्षेत्रो मे सामाजिक एव राजनीतिक चेतना लाने की दिशा मे बहुत सशक्त एव सराहनीय योगदान किया है। इनमे से कुछ प्रमुख पत्रो का परिचय यहा प्रस्तुत किया जा रहा है।

अमर ज्योति

श्री नारायण चतुर्वेदी, भूदेवदत्त शर्मा और श्री वीरेन्द्र सिंह चौहान के सयुक्त प्रयत्नो से प्रारम्भ किया गया यह पत्र यद्यपि मूलत राजनीतिक उद्देश्यो

1. हिस्लाप कालेज नागपुर के पत्रकारिता विभाग द्वारा आयोजित गोष्ठी मे दिये गये भाषण के आधार पर

की पूर्ति को सामने लेकर आया था और व्यास समर्थक अपनी भूमिका को इसने भली प्रकार अन्जाम दिया था। तथापि राजनीति के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र मे भी इसने अपना अच्छा स्थान बना लिया था। इसके सम्पादकीय विभाग से श्री राजेन्द्र कुमार 'अजेय' के सम्बद्ध होने के कारण उस काल में लोक प्रिय कवि सुधीन्द्र, रामनाथ कमलाकर, कर्पूरचन्द कुलिश और सिद्धार्थदेव मेघदूत आदि का सहयोग इसे प्राप्त था। इसके सहायक सम्पादक श्री 'अजेय' स्वयं उस युग के चर्चित कवियो और लेखको म अग्रणी थे।

सितम्बर, 1951 मे राज्य के धूला ठिकाने मे हुई अत्याचार को एक घटना को लेकर श्री अजेय की 'जब कि खुल कर धूल धूला म उडी सरकार की' शीर्षक कविता ने सामन्ती खेमों मे सनसनी पैदा करदी थी ।

'अमर ज्योति' के मुख पृष्ठ पर अनिवार्य रूप से कविताए ही छपती थी। दूसरे पृष्ठ पर एक व्यग्य स्तम्भ छपता था, जिसके नीचे निम्न पक्तिया प्रकाशित होती थी

> साफगोई की आदत है तेरे दीवाने की।
> बात मतलब की बे खौफ कह गुजरता है ॥

श्री अजेय के बाद इस पत्र के सपादन से श्री रावत सारस्वत और एक लम्बे अर्से तक इन पक्तियो का लेखक भी सबद्ध रहा। 1952 से 1954 के बीच इस पत्र का कलेवर राजनीतिक कम और साहित्यिक अधिक हो गया था। 1954 तक अमर ज्योति' पूर्वी राजस्थान के बहुत लोकप्रिय साप्ताहिको मे हो गया था और गाव गाव मे इसके पाठक और गुण ग्राहक बन गये थे, किन्तु इसके सचालक-सपादक श्री नारायण चतुर्वेदी के सक्रिय राजनीति मे आ जाने के कारण शनै शनै इसके स्तर मे गिरावट आती गई और जन सामान्य का सरक्षण प्राप्त यह पत्र सरकारी च दे पर पचायती राज और सहकारी सस्थाओ के कार्यालयो की शोभा बढाने के प्रयोजन मात्र का ही रह गया। यह पत्र वैसे आज भी चल रहा है किन्तु इसका वह प्राणवान कलेवर और तीखा तेवर अब केवल स्मृति की वस्तु है।

पन्द्रह अगस्त

15 अगस्त, 1951 को उदयपुर से श्री चन्द्रेश व्यास के सपादकत्व मे प्रारम्भ किया गया यह साप्ताहिक सचमुच प्रदेश के पठनीय साप्ताहिको मे से था। इस पत्र का सबसे बडा आकर्षण सम्पादक की अपनी कलम से लिखी गई सामग्री होती थी, जिसकी सरल-तरल शब्दावली और शैली वैशिष्ट्य पाठक को बाध लेते थे ।

एक समाचार साप्ताहिक के रूप मे इसके राजनीतिक समाचार, राष्ट्रीय विचार धारा की कविताए, और दो टूक सम्पादकीय टिप्पणिया प्रबुद्ध वर्ग द्वारा

उत्सुकता के साथ पढी जाती थी किन्तु इस सारी विशेषता के बावजूद व्यावसायिक दृष्टि से यह सफल न हो सका। अब 'जय राजस्थान' के साप्ताहिक संस्करण के रूप मे इसका प्रकाशन अवश्य होता है, किन्तु इसका अपना वह मौलिक स्वरूप अब अस्तित्वहीन हो चुका है।

कांग्रेस संदेश

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस द्वारा सन् 1950 मे प्रारम्भ किए गए इस पत्र का स्वरूप निर्माण उस समय हुआ जब सन् 1952 मे श्री विश्वनाथ वामनकाले ने इसके संपादन का दायित्व ग्रहण किया। बम्बई और मध्यप्रदेश मे पत्रकारिता की दीक्षा और अनुभव प्राप्त श्री काले ने इस पत्र को एक दलीय पत्र के ऊपर उठाकर विचार प्रधान और साहित्यिक पत्र बना दिया।

इस पत्र को उस जमाने की नई पीढी के प्रतिभा सम्पन्न सभी लेखकों का सहयोग प्राप्त था। श्री काले ने लेखको को उस समय पारिश्रमिक देने की परम्परा डाली, जब हिन्दी के बडे-बडे पत्र भी पारिश्रमिक देने की उदारता कम ही दिखाते थे।

कांग्रेस सन्देश मे कविताए, इन्टरव्यूज, लघु कथाए और रेखा चित्र अधिक परिणाम मे और दलीय प्रचार की सामग्री न्यूनतम रूप मे छपती थी।

'हिन्दुस्तान समाचार' के वर्तमान सहायक सम्पादक श्री सीताराम झालानी ने पत्रकारिता के क्षेत्र मे प्रथम प्रवेश 'कांग्रेस सन्देश' के माध्यम से ही किया था।

सेनानी

कोटगेट, बीकानेर से 1950 मे प्रकाशित इस साप्ताहिक के संचालक संपादक प्रसिद्ध साहित्यकार और देश भक्त श्री शम्भूदयाल सक्सेना थे। यह पत्र पश्चिमी राजस्थान के साप्ताहिको मे अग्रणी था। श्री शम्भूदयाल सक्सेना और उनके मित्रो द्वारा ही इसकी अधिकाश सामग्री लिखी जाती थी। बाद मे उनके पुत्र शेखर सक्सेना ने इसका भार संभाल लिया। प्रारम्भ मे यह पत्र जन-जागरण के जिन उद्देश्यो को लेकर चला था, वे शनै शनै व्यावसायिक स्वार्थों के कोहरे से ढक गये और अब यह एक सामान्य सावधिक प्रकाशन रह गया है।

नया राजस्थान

जयपुर से 1955 मे प्रारम्भ किया गया यह साप्ताहिक पत्र राजस्थान साम्यवादी दल का मुख पत्र था और इसके संपादक श्री हरिकृष्ण व्यास थे, जो आजकल दिल्ली से प्रकाशित 'जन युग' दैनिक का संपादन कर रहे हैं।

कांग्रेस सरकार पर योजनाबद्ध ढग से प्रहार करना और साम्यवादी दल की गतिविधियों का प्रचार करना इसका मुख्य लक्ष्य था। एक राजनीतिक दल का पत्र होते हुए भी इसमें जो सामग्री छपती थी, वह जन सामान्य को आकृष्ट करने वाली

होती थी और इसकी प्रसार सख्या भी सन्तोषजनक थी। लगभग 5 वर्ष चलते रहने के बाद यह पत्र राजनीतिक एव आर्थिक कारणो से बन्द कर दिया गया।

ग्राम राज

'कांग्रेस सन्देश' और 'नया राजस्थान' जैसे दलीय पत्रों की तरह यह पत्र समग्र सेवा सघ की और से भूदान और सर्वोदयी विचारधारा के प्रचार के लिए सन् 1952 मे जयपुर से एक पाक्षिक के रूप म प्रारम्भ किया गया था और आज भी बराबर प्रकाशित हो रहा है। भूदान, नशाबन्दी और बिनोबा भावे की विचारधारा की सवाहक अन्य सामग्री इसमे प्रकाशित की जाती है। पहले इसके सम्पादक श्री सिद्धराज ढड्ढा थे। आजकल श्री जवाहिरलाल जैन इसके सम्पादक और श्री त्रिलोकचन्द जैन और सरदारमल जैन उनके सहयोगी हैं। यह पत्र किसी प्रकार का व्यावसायिक दृष्टिकोण न अपना कर विशुद्ध रूप से अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित है।

गणराज्य

श्री रामरतन कोचर द्वारा सचालित इस पत्र का प्रकाशन बीकानेर से सन् 1952 मे आरम्भ किया गया था। यह पत्र श्री चिरजीव जोशी 'सरोज' के सपादन काल मे अपने चर्मोत्कर्ष पर था।

'बिलट्ज' शैली की पत्रकारिता मे निष्णात् श्री सरोज ने इस पत्र को सनसनीखेज खबरो तथा व्यग्य-चित्रो से एक विशिष्ट ही व्यक्तित्व प्रदान कर दिया था। पत्र की साज-सज्जा भी अन्य प्रादेशिक पत्रो की तुलना मे सवथा ढर्रे से हट कर अपने प्रकार की ही थी। पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र' जैसे धुर-धर पत्रकार और साहित्य-स्रष्टा इस पत्र के नियमित स्तम्भ लेखको मे थे। सन् 1962 के आसपास जब पत्र जयपुर से निकलने लगा तो कुछ समय बाद उग्रजी भी इस पत्र के सपादकीय विभाग पर आ गये थे। उग्रजी की तीखी टिप्पणियो के कारण पत्र की पाठक सख्या में अच्छी खासी वृद्धि हो गई थी। किन्तु 'उग्रजी' और सरोज दोनो ही साहित्यिको की अलमस्ती मे इस पत्र का व्यावसायिक पक्ष बराबर उपेक्षित होता रहा और अन्ततोगत्वा पत्र के सचालक को इसे बन्द करने को बाध्य होना पडा। श्री सरोज ने आगे चलकर 'नवयुग' पाक्षिक का प्रकाशन भी अपने उसी तेवर के साथ किया, किन्तु व्यावसायिक सफलता के अभाव मे यह भी 'गणराज्य' की गति को प्राप्त हो गया।

आयोजन

राजस्थान के पुराने पत्रकार और स्वाधीनता सेनानी श्री सुमनेश जोशी द्वारा यह पत्र पचायती राज की गतिविधियो को उजागर करने के लिये ग्रामीण पाठको की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए जयपुर से 1960 मे आरम्भ किया। सुमनेशजी जहा लेखन कार्य मे कुशल थे, वहां पत्र मे सामग्री के साज सज्जापूर्ण

प्रस्तुतीकरण म भी पूरे निष्णात् थे । इस पत्र का अन्तरग और बहिरग दोनो ही वडे आकर्षक थे । उदार राजकीय सरक्षण के कारण यह पत्र राज्य की पचायती राज सस्थाओं म भारी सख्या मे पहुचता था, किन्तु जन सामान्य मे इसकी पाठक सख्या लगभग नगण्य थी । यही कारण था कि सरकारी सरक्षण मे शिथिलता आते ही यह पत्र लगभग 3 वर्ष बाद ही बन्द हो गया ।

अणिमा

यह पत्र साहित्यिक मासिक के रूप मे पहले कलकत्ता से और फिर 1967 मे जयपुर से निकलने लगा । इसके साहित्यकार सम्पादक शरद देवडा ने इसे साहि यक मासिक के रूप मे स्थापित करने के वडे प्रयत्न किये, किन्तु अन्ततोगत्वा उन्हे अनुभव करना पडा कि राजनीति का पल्ला पकडे बिना प्रदेश की पत्रकारिता म जमा। टेढी खीर है । फलत 1971 के आसपास इसे साप्ताहिक का रूप दे दिया गया । व छित सरक्षण प्राप्त न होते हुए भी इस पत्र मे राजनीति और साहित्य की स्तरीय सामग्री स्थान पाती रही ।[1] श्री शरद देवडा की प्रतिभा इसके सामग्री-सयोजन म उजागर होती रही और उनके व्यक्तित्व की विशिष्ट छाप इसके सम्पादन पर देखी जा सकती है ।[2]

सपादक की व्यावसायिक मजबूरी के वावजूद इस पत्र के माध्यम से अनेक प्रतिभा सम्पन्न लेखक और लेखिकाओ को आगे आने का अवसर मिला है । कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित इसके दो नारी विशेषाक इस दृष्टि से विशेष रूप से चर्चनीय हैं ।[7] पिछले कई वर्षों से अणिमा' को दैनिक बना दिया गया है और वह अपने इस रूप मे सार्थक भूमिका का निर्वाह कर रहा है ।

चू कि सभी साप्ताहिको का ढाचा न्यूनाधिक रूप से एक जैसा है, स्थानाभाव के कारण यहां उन सबके बारे म पृथक् पृथक् परिचय न देकर विभिन्न धाराओ का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ चुने हुए साप्ताहिको और पाक्षिको का परिचय ही ऊपर के अनुच्छेदो मे प्रस्तुत किया गया है । फिर भी राजस्थान निर्माण के बाद से अब तक प्रकाशित किये गये प्रमुख साप्ताहिको, पाक्षिको आदि की एक विस्तृत सूची परिशिष्ट म समाविष्ट की जा रही है, जबकि इन पत्रो की सामग्री के स्वरूप और गुणात्मकता पर अगले अध्याय मे सक्षिप्त विश्लेषण किया गया है ।

---

1 देखिये, अणिमा का 23 अक्तूबर, 75 का अक ।

2 देखिये, 19 दिसम्बर, 75 का 'अणिमा' विशेषाक

3 देखिये, 12 नवम्बर, 75 का महिला विशेषाक

साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएं

राजस्थान मे जिस साहित्यिक पत्रकारिता की परम्परा का सूत्रपात मोहनलाल विष्णुलाल पड्या, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, रामकर्ण आसोपा, रामनिवास शर्मा और हरिभाऊ उपाध्याय जैसे महारथियों ने किया था, उसे प्रशस्त करने का दायित्व स्वाधीनता प्राप्ति के बाद राजस्थान के साहित्य सुधियो की नई पीढी ने अनेक कष्ट उठा कर अपने सिर पर वहन किया ।

राजस्थान निर्माण के बाद जिन साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने जन्म लिया उनमे नई चेतना (बीकानेर), ज्योति (जयपुर) विजयी (जयपुर), मरुवाणी (जयपुर। मरु भारती (पिलानी), प्रेरणा (जोधपुर), लहर (अजमेर), वातायन (बीकानेर), मधुमती (उदयपुर) परम्परा (जोधपुर) शोध पत्रिका (उदयपुर) वरदा (बिसाऊ) वानर (जयपुर), वैज्ञानिक बालक (जयपुर), आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यो प्रदेश के विभिन्न भागो मे इस काल म सौ स भी अधिक पत्रिकाए प्रकाशित हुई हैं, जिनके बारे मे विस्तृत जानकारी यहां देना सभव नही है। अत कुछ प्रमुख पत्र पत्रिकाओं के बारे मे ही विस्तार से चर्चा करना अभीष्ट होगा ।

नई चेतना (द्वैमासिक)

श्री लक्ष्मीकान्त तथा गजानन्द प्रसाद के सम्पादकत्व मे 1950 मे बीकानेर से प्रकाशित इस द्वैमासिक पत्रिका ने प्रगतिशील खेंय के लेखको को उजागर करने की दिशा म बडा महत्वपूर्ण कार्य किया। वस्तुत प्रगतिशील यथार्थवाद का प्रतिपादन करने म इस पत्रिका ने जो पहल की और जो अवदान इसका रहा, उसे साहित्य के विद्यार्थी आज भी स्वीकारते हैं ।

सरदार जाफरी, यशपाल, रागेय राघव, राजेन्द्र यादव, प्रभाकर माचवे, मजरूह सुल्तानपुरी, डा० रामविलास शर्मा आदि चोटी के लेखकों का सहयोग इसे प्राप्त था। अपने अल्प जीवन म ही इस पत्रिका ने साहित्य जगत् में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था ।

विजयी (मासिक)

विजयवर्गीय समाज द्वारा पोषित यह साहित्यिक मासिक सन् 1950 मे जयपुर से बडी तैयारी के साथ प्रारम्भ किया गया था। प्रसिद्ध कलाकार श्री रामगोपाल विजयवर्गीय इसके मुख्य सरक्षक और श्री गोपीचन्द वर्मा इसके सम्पादक थे। सर्व श्री हरि कृष्ण प्रेमी, रामगोपाल विजयवर्गीय, मृणाल, मनदूत, गोकुल प्रसाद शर्मा इन्दु आदि इसके प्रमुख लेखको मे थे। श्री विजयवर्गीय की अधिकाश साहित्यिक कहानिया इसी पत्र मे प्रकाशित हुई। अपनी ठोस सामग्री सुन्दर साज-सज्जा और कलात्मक चित्रों के कारण वह पत्र-साहित्य-रसिको मे काफी लोकप्रिय हो गया था, किन्तु अर्थाभाव के कारण यह कुछ वर्ष चलकर बन्द हो गया ।

ज्योति (मासिक)

जयपुर से श्री राजेन्द्र कुमार 'अजेय' द्वारा सन् 1950 मे प्रकाशित इस साहित्यिक पत्रिका के केवल दो अक निकल पाये । तथापि वे दोनो अक ही साहित्य-जगत् मे काफी चर्चित रहे। इसके प्रबन्ध सम्पादक श्री कृष्णकुमार द्विवेदी के अनुसार इस पत्रिका के दोनो अको मे बहुत उत्कृष्ट कोटि की कविताए और लघु कथाए प्रकाशित हुई थी और इसका मुद्रण भी उस युग के साधनो को देखते हुए बहुत अच्छे स्तर का था। इस प्रकार यह पत्रिका अपने स्वल्प किन्तु सार्थक जीवन से ही राजस्थान की साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास मे स्मरणीय बन गई।

मरुवाणी (मासिक)

राजस्थानी के सुप्रसिद्ध कवि तथा 'बादली' और 'लू' जैसे बहु विश्रुत् काव्यो के प्रणेता श्री चन्द्रसिंह द्वारा सस्थापित राजस्थान भाषा प्रचार सभा की ओर से इस पत्रिका का समारम्भ सन् 1953 म जयपुर से किया गया था और अभी तक यह पत्रिका श्री रावत सारस्वत के सम्पादन मे बराबर निकल रही थी। राजस्थानी भाषा मे प्रकाशित इस पत्रिका ने निस्सन्देह राजस्थानी के पुराने और नये साहित्य को उजागर करने तथा नई पीढी के राजस्थानी लेखको को प्रकाश मे लाने का बहुत मूल्यवान् कार्य किया है। इन पक्तियो के लेखक द्वारा किया गया कालिदास के 'मेघदूत' का राजस्थानी अनुवाद और भर्तृहरि की नीति, शृगार तथा वैराग्य शतक का बहु चर्चित अनुवाद भी इसी पत्रिका द्वारा प्रकाशित किया गया था।

'मरुवाणी' ने कालिदास के 'ऋतु सहार', उमर खैयाम की रूबाइया, तथा जफरनामे का राजस्थानी अनुवाद भी प्रकाशित किया है। इस पत्रिका ने राजस्थान की नई पीढी के अनेक लेखको को राजस्थानी मे लिखने को प्रोत्साहित किया है। श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की 'हू गोरी किण पीव री' 'तास रो घर' श्री रामनाथ व्यास की 'लेनिन काव्य कुसुमाजलि' और श्री छत्रपतिसिंह का 'तिरसकू' इसी प्रोत्साहन का फलदायी परिणाम है।

'मरुवाणी' ने यूरोपीय भाषाओ की कविताओ को प्रकाश मे लाने और राजस्थानी के उन्नायको के व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रकाशित करने की दिशा म भी पहल की है। 'जनकवि उस्ताद', 'शिवचन्द भरथिया' और 'सूर्यकरण पारीक' विशेषाक पत्रिका के इसी साहित्यिक अनुष्ठान का परिचय कराते हैं।

यद्यपि इस पत्रिका को राज्य सरकार का आशिक सरक्षण प्रतियो की केन्द्रीय खरीद और विज्ञापनो के रूप मे उपलब्ध था, तथापि आर्थिक सकट के कारण अब यह स्थगित कर दी गई है।

मरु भारती

बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट, पिलानी की ओर से प्रकाशित यह त्रैमासिक साहित्यिक शोध पत्रिका 1953 से प्रारम्भ हुई थी और इसके सम्पादक वहा के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० कन्हैयालाल सहल थे। इसके सम्पादक मण्डल मे जो वस्तुत परामर्शदातृ मण्डल ही था, पण्डित भावरमल शर्मा, डा० दशरथ शर्मा और अगरचन्द नाहटा जैसे राजस्थानी सस्कृति के उद्‌भट विद्वानो के नाम भी प्रकाशित होते रहे है।

'मरुभारती' वस्तुत राजस्थानी लोक सस्कृति के बारे मे विशेष रूप से शोध-पूर्ण सामग्री प्रकाशित करती रही है। निहालदे सुल्तान, पाबूजी राठौड़, तेजाजी आदि के बारे मे इसम प्रकाशित गवेषणापूर्ण सामग्री अनुसधित्सुओ के लिए बहुत सहायक सिद्ध हुई है। राजस्थानी लोक कथाओ के अभिप्रायो (मोटिफ्स) पर भी इसमे सहल जी के अनेक अन्वेषणपूर्ण लेख प्रकाशित हुए हैं।

चू कि शोध पत्रिकाओं के लिए वाछित स्तर की सामग्री का सहज प्रवाह बने रहना कठिन है, यह पत्रिका सम्भवत इन्ही कारणो से बीच-बीच म अनियमित होती रही है।

नव निर्माण

श्री नेमीचन्द भावुक राजस्थान के बड़े सेवाभावी हिन्दी सेवक रहे हैं। इसी सेवा भावना से प्रेरित होकर उन्होने कुमार साहित्य परिषद् नाम की सस्था का गठन किया था और इसी सस्था के तत्वावधान मे यह पत्र जोधपुर से सन् 1953 मे प्रारम्भ किया गया था।

इस पत्र मे नवोदित साहित्यकारों की रचनाओ को उदारतापूर्वक स्थान मिलता था। नई प्रतिभाओ को प्रोत्साहन देने का पुण्य कार्य इस पत्र ने किया किन्तु अर्थाभाव के कारण यह कुछ वर्ष बाद ही पत्रकारिता के मन्च से अन्तर्ध्यान हो गया।

राजस्थान साहित्य

राजस्थान साहित्य सस्थान, उदयपुर द्वारा यह पत्र सन् 1954 मे प्रारम्भ किया गया था और इसके सपादक पडित जनार्दन राय नागर और भगवतीलाल भट्ट थे। इस पत्र का उद्देश्य जहा राजस्थान के प्राचीन साहित्यिक वैभव को प्रकाश म लाना था, वहीं अर्वाचीन साहित्य का भी प्रकाशन करना था। चू कि न तो इसे राजकीय सरक्षण प्राप्त था और न राजस्थान मे आने वाले बाहर के उच्च स्तरीय अन्य पत्रों की तुलना मे इसे पोषण देने वाले पाठक प्राप्त हो सके, यह पत्र बहुत दीर्घ जीवन प्राप्त न कर सका।

प्रेरणा

जोधपुर से द्वारा जनवरी, 1953 म इस साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन श्री देवनारायण व्यास ने स्वय के सम्पादन मे प्रारम्भ किया। बाद मे श्री कोमल कोठारी भी इससे सबद्ध हो गये।

इस पत्रिका मे 'मार्डन रिव्यू' की तरह प्रारम्भ मे टिप्पणिया और बाद में अन्य सामग्री का प्रकाशन किया जाता था। राजस्थानी लोक साहित्य को प्रकाशित करने में इस पत्र की विशेष रुचि थी।[1]

इस पत्र ने शैक्सपीयर के ओथेलो नाटक का श्री सोमनाथ गुप्त द्वारा किया हुआ हिन्दी रूपान्तर भी धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया था।[2] पत्र मे साहित्यिक सामग्री के अतिरिक्त यदा कदा राजनीतिक और आर्थिक विषयो पर भी सामग्री प्रकाशित होती थी। प्राचीन राजस्थानी के दोहो और सोरठो का प्रकाशन भी इसमे यदा-कदा किया जाता था किन्तु कुल मिला कर इस पत्रिका का कोई विशिष्ट व्यक्तित्व निर्मित नही हो सका और इसके प्रकाशन म निरन्तरता का निर्वाह भी नही किया जा सका। श्री देवनारायण व्यास के स्वर्गवास के बाद इसका प्रकाशन बन्द हो गया था, किन्तु उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी ने इसे फिर एक बार पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया था।[3]

लहर

अजमेर को स्वाधीनता पूर्व युग मे अनेक प्रतिष्ठित पत्रो को जन्म देने का गौरव प्राप्त है। यही वह केन्द्र था जहा से स्वतन्त्रता सेनानी अपनी विचार धारा को जन-मानस तक पहुचाने के लिए और सामन्ती दमन-चक्र से बचने के लिए साप्ताहिक पत्रो का सचालन करते थे।

सौभाग्य से राजस्थान के ख्याति प्राप्त साहित्यिक मासिक लहर' को जन्म देने का गौरव भी अजमेर को ही प्राप्त हुआ। सन् 1956 मे श्री प्रकाश जैन के सचालन सपादन मे प्रकाशित यह पत्र पूजीपतियो द्वारा सचालित साधन सम्पन्न पत्रों के मुकाबले मे भी अखिल भारतीय स्तर पर अपना स्थान बनाने मे समर्थ हुआ है। इस पत्र ने जहाँ राजस्थान की नई पीढ़ी के प्रखर प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकारों को प्रकाशन दिया, वहां इसमे अपने आपको प्रान्तीयता की सीमा मे आबद्ध रखना स्वीकार नहीं किया। इसमे विभिन्न प्रादेशिक भाषाओ के रचनाकारो की कृतियो को

---

1. देखिये प्रेरणा, वर्ष 2, अंक 2 से 7
2. देखिये प्रेरणा, वर्ष 1, अंक 11
3. श्रीमती लक्ष्मीदेवी से व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर

भी स्थान मिला और हिन्दी के अनेक मूर्धन्य कवियो और कथा-लेखको ने इसके कलेवर को सवारा।

इसके विश्व कविताअ, राजकमल मूल्याकन विशेपाक और पजाबी साहित्य विशेपाक[1] ने तो साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र मे नये कीर्तिमान स्थापित किये। भारतीय साहित्य जगत् को इसके अवदान के बारे मे न्यूजीलैंड की प्रख्यात त्रैमासिक पत्रिका 'लेंडफाल' से निम्न अभिमत प्रकट किया था

'Lahar–though a monthly, It has poraistantly referred journalistic writing and its special number have always been of singular value It has admirably succeeded in assessing the day-to-day literary situation in an objective manner which in india is a really difficult task"

"लहर" को आज दो दशाब्दि के बाद भी आर्थिक सकट और अपने अस्तित्व के लिए सघर्ष की स्थिति से मुक्ति नही मिली है।

वातायन

बीकानेर के दो उत्साही साहित्यिक श्री हरीश भादानी और विश्वनाथ द्वारा सचालित सम्पादित इस त्रैमासिक का प्रारम्भ जुलाई, 1961 मे हुआ।[2] 1964 से इसे मासिक बना दिया गया। 1966 से विश्वनाथ इस पत्रिका से अलग हो गये और श्री पूनम दइया श्री भादानी के सहयोगी बने।

इस पत्र के रगमचीय' एकाकी नाटक विशेपाक', 'गीत विशेपाक,' 'उपन्यास विशेपाक' और "राजस्थान कथा यात्रा के बीस वर्ष विशेपाक" साहित्य-जगत् मे काफी चर्चित रहे।

अपने इन सराहनीय प्रयत्नो के बावजूद इस पत्र के मूल मे सम्पादको की अपनी वैयक्तिक यश-कामना के प्राधान्य के कारण उसका वह स्वरूप न बन सका, जो अन्य प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रो की तुलना म स्थायित्व प्राप्त कर सकता। श्री पूनम दइया के शिक्षा सेवा मे चले जाने तथा श्री भादानी की नेत्र-ज्योति क्षीण हो जाने से भी इस पत्र को भारी आघात पहुचा। अन्तत भारी आर्थिक घाटे की चपेट सह कर इसे सन् 1974 मे बन्द करने का निश्चय करना पडा।

कविताएँ

सही अर्थ मे राजस्थान की विधा मूलक इस एक मात्र साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन 1961 मे जयपुर से प्रारम्भ हुआ।[3] श्री कृष्ण बल्लभ शर्मा के सम्पादक

---

1 देखिये लहर दिसम्बर 1964

2 प्रथम अ क लेखक के व्यक्तिगत सग्रह मे उपलब्ध हैं।

3 इस पत्र के प्रारम्भिक अ क भी लेखक के निजी पुस्तकालय मे उपलब्ध हैं।

होने के कारण इसका सम्पादकीय कार्यालय जयपुर मे और श्री प्रेम मडारी के प्रबन्ध सम्पादक होने के कारण व्यवस्थापकीय कार्यालय जोधपुर मे था ।

इसमे कोई सन्देह नही कि इस पत्र ने जहा नई कविता के कवियो को प्रकाश म लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया वहा पाश्चात्य देशों की आधुनिक काव्य-धारा से भी रूपान्तरित रचनाओ द्वारा पाठको को परिचित कराया ।

यह एक मात्र पत्रिका थी, जिसकी विशेष साहित्यिक महत्ता को दृष्टिगत होते हुए राज्य सरकार ने तीन हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की । किन्तु इस प्रोत्साहन के बावजूद आर्थिक सकट के कारण यह पत्रिका मात्र दो वर्ष चल कर बन्द हो गई ।

मधुमती

राजस्थान साहित्य अकादमी की यह पत्रिका त्रैमासिक के रूप म सन् 1960 म प्रारम्भ हुई थी । 1965 म इस मासिक बना दिया गया । साहित्य अकादमी का यह दुर्भाग्य रहा है कि प्रारम्भ से ही इसके कार्यकलापो मे राजनीति घर कर गई और इसका दुष्परिणाम सस्था की इस मुख पत्रिका को भी भुगतना पडा । इन्ही कारणा से इसके प्रकाशन मे बार बार व्यवधान उपस्थित होता रहा । फिर भी राजस्थान के साहित्यकारो का नया कृतित्व पर्याप्त परिणाम मे इसके माध्यम से सामने आया है ।

इस पत्रिका म कविताए, कहानिया, एकाकी, रेखा चित्र आदि सभी सृजनात्मक विधाओ की रचनाए छपती रही हैं । प्रादेशिक और विदेशी भाषाओ की रचनाओ के अनुवादो को प्रकाशित करने की दिशा मे इधर विशेष रूप से प्रयत्न किये गये हैं । शनै शनै पत्रिका का अपना निजी व्यक्तित्व बना है और उसके इस निखरे हुए रूप के प्रति सृजन धर्मियो का ममत्व बढा हैं ।

सृजनात्मक साहित्य के अन्य पत्र

उक्त पत्र पत्रिकाओ के अतिरिक्त राजस्थान निर्माण के बाद जो लघु पत्र-पत्रिकाए प्रकाशित हुई हैं, उनमे उदयपुर से प्रकाशित 'बिन्दु', भरतपुर से प्रकाशित 'उन्मेष' और 'सम्प्रेषण', जयपुर से प्रकाशित 'अकथ' धरातल' और 'निष्ठा' अलवर से प्रकाशित 'कविता' तथा गगानगर से प्रकाशित मूर्ख समाचार' आदि मुख्य हैं ।

'बिन्दु' को छोड कर लगभग ये सभी पत्रिकाए नई पीढी के तरुण साहित्यकारो द्वारा प्रकाशित की गई ।

'बिन्दु' के सपादको मे थी नन्द चतुर्वेदी, श्री प्रकाश आतुर, नेमनारायण जोशी और नवल किशोर थे । यह पत्र अपनी समीक्षात्मक टिप्पणिया तथा विश्लेषणात्मक निबन्धों के कारण चर्चित रहा । विदेशी भाषाओ की रचनाओ के रूपान्तरो को भी इसम पर्याप्त स्थान दिया गया ।

शोध एव अनुसधान की पत्रिकाओं मे 'परम्परा' त्रैमासिक का राजस्थान की पत्रिकाओ मे विशिष्टि स्थान है। राजस्थानी शोध सस्थान, चौपासनी द्वारा सन् 1961 मे प्रारम्भ की गई इस पत्रिका ने प्राचीन राजस्थानी साहित्य को प्रकाश मे लाने की दिशा मे विशेष प्रयत्न किया है। इसका प्रत्येक अक किसी न किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्धित होता है। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थो के सम्पादित पाठ प्रकाशित करने से लेकर इसके द्वारा राजस्थानी पद्य और गद्य की विभिन्न विधाओ की अनेक दुर्लभ कृतिया प्रकाश मे आई हैं। इसके उल्लेखनीय अको मे गोरा हट जा, राजस्थानी साहित्य का आदिकाल, राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल, डिंगल कोष, जेठवा-ऊजली, नीति परकास, रसराज, सूर्यमल मिश्रण अंक आदि विशेष रूप मे उल्लेखनीय हैं।

पत्र के सम्पादक नारायणसिंह भाटी ने राजस्थानी वातो और ख्यातो को प्रकाश मे लाने के लिए 'परम्परा' का सराहनीय सदुपयोग किया है। अनेक वेलि[1] और वचनिकाए[2] भी परम्परा के विशेषाको के माध्यम से प्रकाशित की गई।

'परम्परा' के अतिरिक्त बिसाऊ से श्री मनोहर शर्मा के सम्पादकत्व मे प्रकाशित 'वरदा' त्रैमासिक, श्री विद्याधर शास्त्री के सम्पादकत्व मे प्रकाशित 'विश्वम्भरा', डूगरपुर से ओकारेश्वर पुरोहित के सम्पादन मे प्रकाशित 'वाग्वर' और बोरूदा से प्रकाशित 'वाणी' और 'लोक सस्कृति' तथा जोधपुर से प्रकाशित 'लोक साहित्य' के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

किन्तु इन सभी शोध पत्रिकाओ के सामने स्तरीय सामग्री के अभाव की समस्या बराबर बनी रहती है। व्यावसायिक दृष्टि से तो इनके सफल होने का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, किन्तु सम्पादकीय दायित्व को सुचारू रूप से निभाने म भी इन्हे अधिकारी विद्वानों का समुचित सहयोग तत्परता से नही मिल पाता। यही कारण है कि लगभग सभी अनुसधान परक पत्रिकाए निर्धारित समय पर प्रकाशित नहीं हो पाती।

नया दायित्व बोध

राजस्थान मे हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ का जो विकास पिछले सौ वर्षों से अधिक की अवधि म हुआ है, उससे निस्सन्देह प्रदेश की लोक चेतना को जाग्रत करने म और साहित्य के सवर्द्धन मे एतिहासिक योग दान प्राप्त हुआ है।

लगभग एक सदी तक सघर्षों के दौर से गुजरने और तदन्तर आपात् स्थिति के दुष्परिणामो को भोगने के बाद निस्सन्देह राजस्थान की पत्र पत्रिकाओ के सपादको

---

1. देखिय राव रतन री बेलि (परपरा विशेषाक)
2 माताजी री वचनिका (परपरा विशेषांक)

को सोचने की एक नई दिशा मिली है और उन्हें बदली हुई परिस्थितियों के सन्दर्भ मे जन-आकांक्षाओं के अनुरूप अपने नये दायित्व का बोध हुआ है । जो लोग केवल सरकार से कागज का कोटा प्राप्त करने के लिए ही पत्रकार होने का लेबिल टागे हुए हैं अथवा परिवहन आदि की सुविधा भोगने के लिए ही जिन्होने पत्रकार होने का स्वाग रचा है, उनके इस क्षेत्र से हट जाने पर जो निष्ठावान् और कर्मठ पत्रकार रह जायेंगे, उन्हे अब अधिक सुविधाए और विकास के अधिक अच्छे अवसर उपलब्ध हो सकेंगे । निश्चय ही इससे प्रदेश की पत्रकारिता का स्वस्थ विकास होगा और राज्य स्तर पर भी इस दिशा में अधिक प्रभावी प्रयत्न करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा ।

अध्याय 8

पत्र-पत्रिकाओं की सामग्री और प्रस्तुतीकरण

(क्रमिक विकास का सोदाहरण निरूपण)

राजस्थान मे हिन्दी पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का जो इतिवृत्त पिछले अध्यायो मे प्रस्तुत किया गया है, उससे यह स्पष्ट है कि अन्य हिन्दीभाषी राज्यो से पचास वर्ष पीछे रहने के बावजूद इस राज्य मे हिन्दी पत्र पत्रिकाओ के इतिहास की एक शताब्दी समाप्त हो चुकी है। सौ वर्षों का यह समय देश मे राजनीतिक सामाजिक आर्थिक और सास्कृतिक परिवर्तनो की दृष्टि मे बहुत घटना पूर्ण और हलचल भरा रहा है।

प्रकटत इन सभी परिवर्तनो और उथल पुथल का प्रभाव प्रदेश की पत्रकारिता पर भी पडा है। पत्रकारिता के क्षेत्र मे ज्यो-ज्यो नये मोड आते गये, पत्र-पत्रिकाओ की सामग्री और उसके प्रस्तुतीकरण मे भी शिल्प और शैली की दृष्टि से बराबर विकास होता रहा। इस क्रमिक विकास का निरूपण और विवेचन करते समय यह ध्यान मे रखना होगा कि भाषा, शिल्प और शैली के परिवर्तन बहुत तीव्र गति से नही होते। विशेष रूप से भाषा का विकास तो प्राय मन्थर गति से ही होता है।

1901 से पूर्व तक की स्थिति

यह पहने कहा जा चुका है कि राजस्थान मे पत्रकारिता म क्षेत्र मे जो प्रारम्भिक प्रयत्न हुए, उनमे से अधिकाश की भाषा उर्दू बहुल थी। देसी रियासतों के राज-काज मे उर्दू और फारसी के प्रभाव के कारण इन पत्रो की लिपि तो देवनागरी होती थी, किन्तु भाषा उर्दू मिश्रित ही होती थी। राजपत्रो मे तो सामग्री के रूप म केवल सरकारी सूचनाए, विज्ञप्तिया और घोष-

एाए उनो की त्यो छपती थी। उनमे किसी प्रकार का परिवर्तन, सशोधन अथवा सपादन नहीं होता था।

'मारवाड गजट' मे रियासत की आज्ञाओ के साथ कुछ सरकारी खबरें भी छपती थी। 'उदपुर गजट' 'जयपुर गजट' तथा अन्य राज्यों से इन्ही के अनुकरण पर प्रकाशित गजटो की स्थिति लगभग एक सी ही थी। ये प्रकाशन वैसे भी शुद्ध पत्रकारिता की श्रेणी मे नही आते।

बाद मे आर्य समाज के प्रभाव से जो धार्मिक और सुधारवादी पत्र निकले, उनमे अधिकाश सामग्री धार्मिक विषयो पर ही होती थी और इनकी भाषा सस्कृत निष्ठ होती थी। जयपुर से प्रकाशित 'सदाचार मार्त्तण्ड'[1] की भाषा का निम्नाकित नमूना इन पत्रो के भाषागत स्वरूप को इ गित करता है "मनुष्य चाहे तो ब्राह्मण को आदि लेकर जो चार वर्ण हैं, उनम हो अथवा चार आश्रमो म से किसी आश्रम को अगीकार किये हो, परन्तु जिस जिस वर्ण के योग्य जो-जो आचरण वेद शास्त्र की आज्ञानुसार कर्त्तव्य हैं अवश्य ही करें"

पत्रकारिता के इस प्रारम्भ-काल म उदयपुर से 'विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चद्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका' तथा 'सद्धर्म स्मारक' जैसे जो साहित्यिक पत्र निकले उन पर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र द्वारा प्रतिपादित पत्रकारिता की पूरी छाप थी। भारतेन्दु ने जिस प्रकार की भाषा का आश्रय लिया था, वह न तो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रयुक्त सस्कृत निष्ठ थी और न राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द द्वारा प्रयुक्त उर्दू बहुल थी। उन्होंने मध्यम मार्ग को ग्रहण किया था और उसी का प्रभाव उक्त पत्रिकाओं पर था।

'विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका' मे प्रकाशित 'पच-प्रपच' शीर्षक परिसवाद मे उस युग की पत्रकारिता की स्थिति और उस काल की भाषा और शैली पर अच्छा प्रकाश डाला गया है[2] —

" प्रपच पहिले अखबार वालो को सोचना चाहिये, कि जिस विषय पर हम लिखते है वह विषय हम अच्छी तरह मूलतत्व समेत जानते हैं वा नही ? हमारी और सरकार की राय क्यो भिन्न होती है ? क्या इसमे सरकार केवल अपना ही लाभ देखती है वा हम लोगो को भी कुछ खबर रखती है ? जिस विषय को हम लिखने बैठे हैं और जैसी हम अपनी राय इस वक्त दे रहे हैं वैसी ही हमारी राय अन्त तक रहेगी वा कही बदल जाएगी। केवल चार हमारे समान ही अल्प बुद्धि-वालो ने हमारे समान ही अपने अभिप्राय प्रकट किये परन्तु वे कदाचित् हमको

1 भारत मार्त्तण्ड, प्रवेशाक, 1885

2 कला 8, किरण 3, पृ० 25-28

बदलने तो नही पडेगें ? इत्यादि सोच विचार कर जब चिल्लायेंगे तो अवश्य सरकार सुनेगी। नही तो रोने स्वभाव वाले बालक को मा क्या, कोई भी गोद मे नहीं लेगा।"

पच– प्रपच राज, तुमने ठीक कहा। हमारे अखबार वालो की यही दशा हो रही है, इसी से न तो उनके ऊपर सरकार खयाल करती है, न उनके पाठक तक झुक कर देखते हैं।

प्रपच– भला, यह जाने दो, बतलाओ क्या तुम्हारे अखबार मे इस दफे लिखा है ?

पच– अब क्या बतलाऊ ? वही जो तुम रोना रोये। लार्ड रिपन पर सदेश लिखा है।

प्रपच– अब देखो, पहिले इनकी कितनी तारीफ की। सुनते सुनते कान खा गए, अब यह लम्बा चौडा सन्देह ? घन्य हैं आप और आपके अखबार, और सुनने वाले, और लिखने वाले ? अब मैं जाता हू।

भारतेन्दु बाबू की हिन्दी का वर्चस्व उस काल की पत्रकारिता पर ही नही रहा, अपितु आगे भी चलता रहा। सभी पत्रो के सामने हिन्दी का यही आदर्श रहा और और यही रूप आगे चल कर पल्लवित और पुष्पित हुआ। भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता का प्रभाव राजस्थान की तत्कालीन साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ पर यह भी पडा कि उन्होने ज्ञान-विज्ञान के विविध विषयो पर सामग्री प्रकाशित करने की दिशा मे प्रयत्न किये। इस प्रकार की सामग्री का भाषा मे स्वत ही सस्कृत और अग्रेजी भाषाओ के तद्भव रूपो का समावेश होने लगा। भाषा के बारे मे इस दृष्टिकोण से गद्य के विकास मे बहुत सहायता मिली। इससे अभिव्यक्ति की दुरूहता दूर हुई, उसमें सुस्पष्टता आई और उसका एक सन्तुलित स्वरूप शनै शनै उभरने लगा। यह भाषा पत्रकारिता के लिए एक अच्छा माध्यम सिद्ध हुई क्योकि विविध विषयों पर विचारो की व्यंजना के लिए इसका सहज रूप सभी को ग्राह्य होने लगा।

इस भाषा मे ऐसे सम्पादकीय लेख और अग्रलेख भी लिखे जाने लगे जो जन सामान्य से सम्बन्ध रखते थे और जिनका सार्वजनिक महत्व था। 'चन्द्रिका' मे प्रकाशित 'देशी राज्यो की फौज' पर लिखे गये सम्पादकीय का यह अश[1] इस दृष्टि से अवलोकनीय है —

'आजकल हमारे समस्त हिन्दुस्तानी राजाओ ने अग्रेजी फौज और पुलिस की नकल करके अपने-अपने राज्यो मे कोट बूट पतलून और किरचादि प्रचार कर दी है, जिस

1 कला आठ, किरण 4, पृ० 73–76

राज मे देखो उसमे नील बन्दर पुलिस के कान्स्टेबल और लाल वाले लगूर फौज के सिपाही देख पडते हैं, परन्तु न तो राजा लोग कुछ समझते हैं और न उनके अधिकारी पुरुष, जिनका नाम मिथ्या प्रशसक कहा जाये तो भी अनुचित नही, कुछ विचार करते हैं कि यह बन्दर सभा न है तो है क्या ? जब कोई मनुष्य किसी राजा या राजाओं के अधिकारियो के सम्मुख अग्रेजी फौज की प्रशसा करे तो राजा साहिब अपना मुख खोल कर आज्ञा करते हैं कि तुमने हमारी फौज और पुलिस को नही देखा है ? अथवा जब कोई साहब वा दूसरे राज का कोई राजा उनके राज मे आता है तब उसको यह बडे बडे महाशय लोग अपनी फौज की कवायद और पुलिस आदि को एक प्रकार के तुहफा की भाँति वैसे ही अनुराग और भाव से दिखाते हैं, जैसे कोई विद्वान बगाल की एशियाटिक सोसाईटी या रायल एशियाटिक सोसायटी वा इगलैंड के ब्रिटिश म्यूजियम को देखने जाते हैं ।

" ·· · सिपाहियों को नौकरी के 4 रुपये महावारी मिलते हैं, वे भी कई महिने झक झक कर, उनमे से वर्दी के दाम भी काटे जाते हैं, परेट भी करनी पडती है, बोली बोल कर पहरा भी बदलना पड़ता है,लेने भी रहने को नहीं होती है, गरमी मे सूर्या तपते हैं, बरसात मे भीगते हैं और ठड मे हिमालय गलते हैं । जब काबुल जैसे युद्ध के समाचार सुनते हैं तब धोती बिगाड देते हैं । गरीबो को मारने के लिए तो इनके मन मे अग्रेजी सिपाहियो का सा जोश और जोष भर जाता है और वे उन गरीबों को मात्र खूब ठोक पीट कर अपना अग्रेजी सिपाही का सा बाना दिखाते और ठसक मनाते हैं ।

"जो वास्तविक विचार किया जावे तो राजस्थानों की फौज और पुलिस व्यर्थ राज के सिर पर एक प्रकार के लाखो रुपयो का भार है । राजाओ को विचारना चाहिये कि दस-दस पदरह-पदरह लाख रुपया साल का खरच रखते हैं, परन्तु कभी यह खरच सफल भी हुआ, वा कभी सफल होने की आशा भी है । हमारी सम्मति मे तो श्री श्री जगदीश्वर कभी काम न डाने नही तो ऐसा ही हाल होगा जैसा यहा पर लिखा जाता है । काली पीली और नीली वर्दी काम न आवेगी, किन्तु ताली पीट कर उलटा हास्य होगा ।

" ·· ""अतएव हे महावीर राजगण, इन व्यर्थ फौजो और नील बन्दरो के एक पुलिस रूप समूह को मौकूफ करके जितना द्रव्य आप लोगो का इसमे व्यय होता है उतना विद्या और कृषि कर्मोन्नति मे खरच करो, जिससे कुछ समय मे आप महाशयों की आमदनी द्विगुण और त्रिगुण होकर राजकोष में धन पुष्कल एकत्र हो जाय । प्रथम तो जब तक अग्रेज सरकार का राज्य है तब तक फौज और पुलिस रखने की आवश्यकता कुछ नही है क्योकि अब तो दुनिया भर मे यूरोप की पाँच बडी बादशाहतो ने अमन कर दिया है और दिन पर दिन शाति होनी जाती है, इसके

सिवाय आप लोग कभी मत समझलो कि फौज न रखने से आप महाशयो की कुछ अप्रतिष्ठा होगी, किन्तु आप और आपकी प्रजा परस्पर प्रसन्न रहेगी। यदि आप सुनीति से न्याय करेंगे और ऐसी कोई कुचाल चलेंगे ही नही कि जिसमे आपसे कोई तू भी कह सके तो सब वाह वाह ही कहेंगे। आप महाशयो की अपनी अप्रतिष्ठा व्यर्थ की फौज और पुलिस रखने मे समझनी चाहिये, क्योकि निरी विचारी वर्दी ही क्या करेगी। फौज मे तो वास्तविक ताकत का काम है। भला 4 रु० मासिक पाने वाले काबुल जैसे घोर महाभारत मे क्या लडेंगे। वरन् दुम दवा कर घर भाग आवेंगे। यह निश्चय रखना चाहिये कि आपके राज्यो को ब्रिटिश गवरमेंट ने अपनी बादशाही सत्ता के सरक्षित किया है जो कदाचित् कोई काम भी पडा तो श्रीमति भारतेश्वरी आप आपके राज्यो की रक्षा करेगी।''

इस काल में भारतेन्दु से प्रभावित पत्रकारिता के साथ-साथ दयानन्द से प्रभावित आर्य समाजी पत्रकारिता की दूसरी धारा भी समानान्तर चल रही थी। 'आर्य सिद्धान्त' 'पुष्कर प्रदीप' और 'भारतोद्धारक' ऐसे ही पत्र थे। ये पत्र आर्य समाजी पत्रकारिता के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे, जिनमे जटिल हिन्दी का प्रयोग न होकर सरल हिन्दी पर अधिक बल दिया जाता था। इन पत्रों की भाषा में किसी प्रकार के साहित्यिक अलंकरण के दर्शन नहीं होते और न ही इनमे व्याकरण के नियमों का कड़ाई से पालन किया गया है। वस्तुतः इनकी भाषा किसी सार्वधिक प्रकाशन के लिए उपयुक्त न होकर अपने प्रवचनात्मक ढंग के कारण मच के लिए अधिक उपयुक्त कही जा सकती थी।

जैसा कि अन्यत्र उल्लेख किया जा चुका है, इस काल मे साप्ताहिक समाचार पत्र की सज्ञा के अन्तर्गत आने वाला एक मात्र पत्र मनीषि समर्थदान द्वारा सम्पादित 'राजस्थान समाचार' था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह पत्र भी अपने प्रारम्भ काल मे राजनीतिक विषयो पर सामग्री देने से पूव आर्य समाजी विचारधारा की सामग्री प्रकाशित करता था, जैसा कि पंडित बालमुकुन्द गुप्त के इस कथन से प्रकट होता है :—

''कई साल से 'राजस्थान समाचार' की कई बातें बदल गई हैं। एक तो उसके धर्म विश्वास मे परिवर्तन हुआ है। अब उक्त पत्र कोई दो साल से (1903) अपने को आर्य समाजी नही जाहिर करता, वरच पुरानी चाल का हिन्दू बताने की चेष्टा करता है। आर्य समाजियो की तरफदारी के लेख भी उसमे नही निकलते, वरंच कभी-कभी पुराने हिन्दू धर्म की तरफदारी की एक दो बातें उसमे निकल जाती है।''

इस प्रकार 1901 से पूर्व तक राजस्थान से धर्म और समाज सुधार की पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हुई, उनकी सामग्री और भाषा पर दयानन्द की आर्य समाजी

पत्रकारिता का प्रभाव था, तो दूसरी ओर साहित्यिक पत्रों पर भारतेन्दु द्वारा प्रतिपादित पत्रकारिता की छाप थी।

1901 से 1950 तक की झलक

इस युग के प्रारम्भ मे 'समालोचक' और 'सौरभ' जैसे जो साहित्यिक पत्र निकले उनमे मुख्यतः साहित्यिक लेख, कविताए, कहानिया और समालोचनाए प्रकाशित होती थी। चूकि सौभाग्य से इनका सम्पादकीय दायित्व उस युग के दो साहित्य महारथी पडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी और पडित रामनिवास शर्मा के हाथो मे था, इनकी भाषा पूर्व पत्रो की तुलना मे बहुत निखरी हुई और परिष्कृत थी। इन दोनो ही पत्रो के माध्यम से न केवल पाठको को प्राजल भाषा मिली, अपितु साहित्येतर विषयो पर भी साहित्यिक शैली मे लिखी हुई प्राणवान् रचनाए मिली।

'समालोचक' मे तो प्रारम्भ मे जो सामग्री छपी, उस पर किसी लेखक विशेष का नाम ही न जाता था। सभवतः गुलेरी जी ही समूची सामग्री लिखते थे, जैसा कि पडित बद्रीनारायण चौधरी द्वारा सम्पादित 'आनन्द कादम्बिनी' मे भी होता था और जिस पर टिप्पणी करते हुए भारतेन्दु बाबू को लिखना पडा था कि 'जनाब, यह किताब नहीं कि जो इकेले ही इकराम फरमाया करते हैं। बल्कि अखबार है जिसमे अनेक जन-लिखित लेख होना आवश्यक है और यह भी जरूरत नही कि सब एक तरह के लिख्खाड हो।[1] ऐसा प्रतीत होता है कि गुलेरी जी ने भी इस भूल को शीघ्र ही अनुभव कर लिया और कुछ समय बाद उसमे विविध विद्वानो द्वारा लिखित सामग्री प्रकाशित होने लगी।

'समालोचक' मे प्रयुक्त खडी बोली किस सीमा तक परिष्करण को प्राप्त कर चुकी थी, इसका अनुमान उसके नवम्बर, 1902 के अक मे प्रकाशित 'भारत की शंका' शीर्षक लेख के निम्नाश से किया जा सकता है।[2]

'अग्रेजी शिक्षा के प्रथम फल स्वदेश की सब सामग्री पर विराग, धर्म मे अनास्था, लोकाचार से अश्रद्धा और आहार-व्यवहार से अभियित होती थी। अपने धर्म के प्रति आक्रमण, धर्म सस्कार क्या अपनी जाति के प्रति अश्रद्धा, उन्ननयन और देशाचार के प्रति घृणा ही स्वाधीन चिन्तन का परिचायक हो उठा था।'

'समालोचक' के माध्यम से न केवल उच्च कोटि की समालोचना का एक स्वरूप सामने आया, बल्कि बडी सख्या मे खडी बोली की स्तरीय कविताए और

---

1 भटनागर, रा० ग्रो० हि० ज०, पृ० 482

2 समालोचक, नवम्बर, 1902, पृ० 23

'नवजीवन' का 16 दिसम्बर, 1939 का प्रथम अक ही उस परिवर्तन का सूचक है, जो राजस्थान के पत्रकारिता-जगत् मे होने जा रहा था। इस पत्र मे न केवल सामग्री का वैविध्य ही दृष्टिगोचर हुआ, अपितु समाचारो और सपादकीय टिप्पणियो के लेखन तथा साहित्यिक सामग्री के रचना शिल्प मे भी एक नवीनता और ताजगी के दर्शन हुए।

नमूने के तौर पर 'नवजीवन' के प्रथम अक का सर्वेक्षण करने से ही उन नये तत्वा का सम्यक् दिग्दर्शन हो जाता है जो साप्ताहिक पत्रकारिता में समाविष्ट होने लगे थे। इस अक के प्रथम पृष्ठ पर राष्ट्रीय विचारधारा की 'पुण्य पर्व' शीर्षक कविता, गाधीजी के विचारो के उद्धरण बडी प्रमुखता के साथ सुसज्जित रूप से प्रस्तुत किये गये हैं। दूसरे पृष्ठ पर विदेशों के समाचार हैं, जिनमे फ्री जर्मन रेडियो के हवाले से हिटलर को गोली से उडाने की धमकी, ब्रिटेन के सात जहाज डूबने तथा राष्ट्रसघ की कार्यवाही का सक्षिप्त ब्यौरा दिया गया है। राष्ट्रसघ की कार्यवाही का वृत्तान्त देते हुए पत्र ने *फिनलैंड के प्रतिनिधि डाक्टर होलसरी की अपील का जो* आशिक अनुवाद दिया है, उससे पत्र के भाषागत स्वरूप पर अच्छा प्रकाश पडता है। अनुवाद का वह अश इस प्रकार है —

"फिनलैंड सहानुभूति तथा आसुओ से अधिक चाहता है। आसू तो वह स्वय ही खूब बहा चुका है। इस बेईमानी से भरे हुये 'आक्रमण' के मुकाबले मे हमे सहानुभूति से अधिक की जरूरत है। हम यह लडाई मनुष्यो के अधिकारो की रक्षा के लिये लड रहे है। हम समस्त शुभ चिन्तको से सहायता की प्रार्थना करते हैं। हम केवल एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्ताव के शस्त्र से आक्रमणकारियो की गोलियो, गोलो व गैस के मुकाविले म फिन प्रजा की रक्षा नही कर सकत। यदि आप हमारी मदद करेंगे, तो सारी मानव जाति आप लोगो को सभ्यता के रक्षको के नाते आशीर्वाद देगी। अतएव आप सब फिन लोगो के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करें, जैसे कि वे खुद रक्त बहा कर अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर रहे हैं।"

पृष्ठ 3 पर 'अन्तर्राष्ट्रीय शतरज' शीर्षक से योरोपीय राजनीति पर एक लेख है, जिसमे रूस, जर्मनी पौलैंड, डेनमार्क, स्वीडन आदि के पारस्परिक राजनीतिक दांव पेचो और उनके सभावित परिणामो का विश्लेषण किया गया है। चौथे पृष्ठ पर राजस्थानियो के नाम एक अपील प्रकाशित की गई है जिसम गैर जिम्मेदार, स्वार्थी व यश लोलुप कार्यकर्ताओ के वाग्जाल मे न फस कर सच्चे और निर्भीक कार्यकर्ताओ का साथ देने का अनुरोध किया गया है। पाचवें पृष्ठ पर 'हमारी नीति' शीर्षक से अग्रलेख है, जिसमे 'नवजीवन' के प्रकाशन के उद्देश्य और प्रदेश मे पत्रकारिता की परिस्थितियों पर विचार किया गया है। पृष्ठ 6 पर 'जिन्ना मुक्ति दिवस', क्षत्रियो का जागरण तथा 'आचार्य रामदेवजी' शीर्षक से सपादकीय टिप्प-

लिया हैं। पृष्ठ 7 पर 'अफीम की पीनक' शीर्षक से एक व्यग्य स्तम्भ है, जिसका निर्वाह आगे भी बराबर होता रहा है। इसी पृष्ठ के एक कोने पर इन्दौर के हवाले से कपडे के भावो मे तेजी के समाचार हैं। पृष्ठ 8 पर, राजेन्द्र बाबू के स्वास्थ्य, जिन्ना मुक्ति दिवस, वर्धा में काग्रेस कार्य समिति की तैयारियों, मदनमोहन मालवीय के पुत्र गोविन्द मालवीय पर किसी गोरे सिपाही द्वारा किये गये आक्रमण तथा जबलपुर में दगे आदि के समाचार हैं। पृष्ठ 9 और 10 पर उदयपुर, भीलवाडा, चित्तौडगढ, काकरौली, सागवाडा, बिजोलिया, छोटी सादडी, कोटा, सिरोही, जोधपुर, भरतपुर, करौली, मथुरा, धौलपुर आदि क्षेत्रो की जनता के अभाव-अभियोगो के समाचार हैं। पृष्ठ 11 पर मेवाडी बोली में राजस्थानी की कहावतो पर एक लेख और 'सत्ताधारी' शीर्षक से श्री यशवन्तसिंह नाहर का एक गद्य गीत है। पृष्ठ 12 पर 'खाक्सार आन्दोलन क्या है ?' 'शीर्षक लेख में इस आन्दोलन के प्रवर्त्तक अलामा मशरिकी इनायत उल्ला की जीवनी और कार्यकलापो पर प्रकाश डाला गया है। पृष्ठ 13 पर आदिवासी निवासियो के बारे में 'प्रकृति के वे भोले बालक' शीर्षक से लेख और 'रैन बसेरा' शीर्षक से एक कविता छपी है। चौदहवें पृष्ठ पर 'रावत अर्जुन सिंह चूडावत' शीर्षक से एक ऐतिहासिक लेख और पन्द्रहवें पृष्ठ पर सीकर में जागीरदार सम्मेलन और मैयो कालेज के प्रिन्सीपल के त्याग पत्र के समाचार हैं। इसी पृष्ठ पर पहले कालम में सवाददाताओ के लिए विस्तृत निर्देश हैं। पृष्ठ 16 पर मोटे टाइप मे कुछ पुस्तको और अजमेर की एक आयुर्वेदिक फार्मेसी की औषधियों के विज्ञापन हैं। इस अक और इसके बाद के अको की सामग्री का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि सवादो मे तथ्यात्मक निरूपण के साथ-साथ सम्पादकीय टीका-टिप्पणी करने की प्रवृत्ति बहुत अधिक है। दूसरे अर्थों मे समाचारो में सम्पादकीय विचारधारा और दृष्टिकोण का सपुट हैं। इस पत्र के प्राय सभी अको मे देश-विदेशो के समाचारो मे अपनी राष्ट्रीय विचारधारा को बराबर आरोपित किया गया है। साहित्यिक सामग्री के रूप मे जो गद्य गीत और कविताए प्रकाशित की गई हैं, उनमे भी देश-भक्ति और स्वाधीनता की भावना ही प्रखर रूप मे अभिव्यक्त हुई है।

जिस प्रकार आजकल सम्पादक और सवाददाता विभिन्न स्थानो की यात्रा कर वहा की स्थिति का अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करते हैं, 'नवजीवन' मे यह सिलसिला 40 वर्ष पूर्व ही प्रारम्भ कर दिया था। सपादक ने अपनी इस प्रकार की एक यात्रा की रिपोर्ट बीकानेर के बारे मे निम्न शब्दो मे प्रस्तुत की है[1] :—

---

1. नवजीवन, 4 मई, 1940, पृ० 3

"सब कर जो कुछ हमने अनुभव लिया उससे यह सहज मे कहा जा सकता है कि पुलिस विभाग मे रिश्वत खोरी का अखड साम्राज्य है। इस ओर वहा के आई०जी०पी० का भी हमने ध्यान आकर्षित किया। खुद उनके खिलाफ भी हमे अनेक आरोप मिले, जिन्हे हमने नि सकोच उनके सामने रखा है। कुछ का समाधान करने का उन्होने प्रयत्न भी किया—यह हर्ष की बात है। आज थानो मे चल रही रिश्वतखोरी के अनेक प्रमाण हमने उन्हे जाहिर किये। कुछ को उन्होने सफेद झूठ बतलाया और कुछ पर उन्होने ध्यान देने को कहा है। पर पुलिस विभाग प्राय हर जगह बदनाम ही बदनाम हो सो बात नही, उनके साहसिक कार्यों के अनेक किस्से भी हमे मिलते हैं। कही कही तो मुजरिमो का पता लगाने मे पुलिस ने कमाल हासिल किया है। ऐसे ही कुछ प्रशसात्मक कार्य बीकानेर पुलिस के भी हमे मिले हैं—ऐसा कहने मे कोई हिचक लाना अपने पद धर्म से च्युत होना होगा। फिर भी हम आशा करते है कि बीकानेर के प्रधान महोदय इस विभाग की ओर अधिक सतर्क रहेगे।

"यद्यपि महाराजा सा० के वहा नही होने से हमारा उनसे मिलना नही हो सका, फिर भी उनकी प्रशसा मे हमने जो कुछ सुना—उसम रात के दो दो बजे तक जग कर रियासत के सब कामो को उसी दिन समाप्त करने का विशेष गुण प्रत्येक महाराजा के लिये अनुकरणीय है। पर, उनके विरोध मे प्रसिद्ध की जाने वाली बात कि वे सार्वजनिक कार्यों को पनपने देने को कतई तैयार नही, कुछ सत्य लिए हुए ही मालूम पडी। आशा है, महाराजा युग धर्म को पहचानेंगे और समय के साथ अपनी मनोवृत्ति को बदल कर राज्य मे सार्वजनिक जीवन को पनपने देंगे।

"हमने श्री बाफना के सामने वहा की सब स्थिति रक्खी। पहले स्थापित हुए प्रजा मण्डल को बिलकुल कुचल दिये जाने की राज्य की एक खराब मनोवृत्ति का भी जिक्र किया गया। उन्होने उसके लिए विशेष कारण बता कर अब जन्म ले रहे प्रजा मण्डल अथवा किसी भी सच्चे सार्वजनिक कार्य को अपना पूरा पूरा सहयोग देने की भावना प्रकट की।

"बीकानेर के स्वास्थ्य, शिक्षा विभाग, फौज, पावर हाउस, न्याय विभाग और जकात महकमे के भी अनेक रोमाचकारी किस्से सुनने मे आये। शिक्षा विभाग मे कन्या-स्कूलो मे फैल रहा व्यभिचार और जकात की लूट रियासत के लिए शर्म की बात है। सी० आई० डी० का ताता और गाधी टोपी का भय रियासत की एक विचित्रता मालूम हुई।"

इस प्रकार 'नवजीवन' ने आगे जन्म लेने वाले समाचार पत्रो के सामने सरल भाषा, रोचक वर्णन शैली, और सामग्री-वैविध्य का एक आदर्श प्रस्तुत करने मे अपने अग्रणी होने का प्रमाण प्रस्तुत किया। इसके बाद जो साप्ताहिक प्रकाशित

हुए उनमे न्यूनाधिक रूप से सामग्री, शिल्प तथा शैली का वही रूप काल-क्रम से विकसित होकर सामने ग्राया। इन पत्रो की भाषा जहा सरल हिन्दी थी, वहा इनके सवादो मे सम्पादकीय टीका-टिप्पणी करने की प्रवृत्ति बराबर प्रचलित रही। सामग्री के रूप मे इन सभी पत्रो मे रियासती क्षेत्रो की जनता के ग्रभाव-ग्रभियोगो पर लेख ग्रौर उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए किये जा रहे ग्रान्दोलनो पर टिप्पणिया भावनात्मक शैली मे यात्किंचित् ग्रतिरजना के साथ प्रकाशित होती रही।

समाचार प्रधान साप्ताहिको के साथ साथ जो साहित्यक पत्रिकाए निकली उनका भी मूल स्वर यद्यपि राष्ट्रीयता परक ही था, तथापि उसकी ग्रभिव्यक्ति ग्रौर प्रस्तुतीकरण के माध्यम के रूप मे कहानी, कविता, एकाकी ग्रादि सृजनात्मक विधाग्रो को ग्रगीकार किया गया।

स्वातन्त्र्योत्तर युग ग्रौर दैनिक पत्र

कुछ छुट-पुट प्रयत्नो को छोडकर राजस्थान मे दैनिक पत्रो का युग 'लोक-वाणी' के प्रकाशन से ग्रारम्भ हुग्रा। ग्रग्रेजी ग्रौर हिन्दी के राष्ट्रीय स्तर के दैनिका के नमूने पर प्रकाशित होने वाला 'लोकवाणी' प्रथम दैनिक था। स्वाधीनता प्राप्ति ग्रौर राजस्थान निर्माण से पूर्व यह पत्र स्वभावत रियासती शासन के दमन, ग्रत्याचार ग्रौर प्रतिगामी गतिविधियो के विरुद्ध जिहाद बोलता रहा। किन्तु 1950 से इसके स्वरूप म भी बदलती हुई राजनीतिक ग्रौर सामाजिक परिस्थितियो के सन्दर्भ मे परिवर्तन ग्राया।

चू कि स्थान की सीमा के कारण प्रत्येक दैनिक का विस्तृत विवेचन यहा न तो सम्भव ही है ग्रौर न वाछनीय ही, ग्रत यहा लोकवाणी, राष्ट्रदूत, नवयुग, नव-ज्योति, ग्रधिकार ग्रादि कतिपय प्रमुख पत्रो के ग्रको की सामग्री के ग्राधार पर ही प्रदेश के दैनिको की सामग्री ग्रौर उसके विशिष्ट लक्षणों का विश्लेषण करना ग्रभीष्ट होगा।

राजस्थान मे दैनिको की सामग्री के मुख्य तत्व देश-विदेश तथा प्रदेश के समाचार, सम्पादकीय लेख, विशेष फीचर्स, बाल-स्तम्भ, फिल्म-चर्चा, पुस्तक-समीक्षा, ज्योतिष, स्वास्थ्य प्रश्नोत्तर ग्रादि हैं ग्रौर इन्ही बिन्दुग्रो पर यहा सोदाहरण दिग्दर्शन प्रस्तुत किया जा रहा है।

समाचार

समाचार की परिभाषा नाना प्रकार से करते हुये पत्रकारिता के सभी पडितो ने एक मत से यह स्वीकार किया है कि समाचार वह है, जिसमे समाज के एक बडे भाग की दिलचस्पी हो ग्रौर ऐसी घटना से सम्बन्धित हो, जो पहले कभी घटित न हुई हो। इस दृष्टि से राजनीतिक गतिविधियां, प्राकृतिक प्रकोप, ग्रपराध, चमत्कार

पूर्ण घटनाए, वैज्ञानिक उपलब्धिया, खेलकूद की प्रवृत्तिया आदि सभी समाचार के विषय हैं। सक्षेप मे जीवन के हर क्षेत्र की हलचल समाचार का रूप ले सकती हैं।

इस सन्दर्भ म राजस्थान के समाचार पत्रो के समाचार स्रोतो की सक्षेप मे चर्चा करना अनुपयुक्त न होगा। समाचार के स्रोत वैस तो प्रत्येक पत्र के अपने साधनो के अनुसार होते हैं, तथापि निम्नलिखित श्रोतो का उपयोग सामान्यत न्यूनाधिक रूप मे सभी पत्रो को करना होता है—(1) समाचार एजेन्सियो की सेवा (2) केन्द्रीय और राज्य सरकारो की सूचना सेवाए (3) प्रधान कार्यालय तथा प्रदेश और देश के विभिन्न भागो म नियुक्त सवाददाता (4) स्थानीय रिपोटर, (5) सम्पादक के निजी सम्पर्क।

जहां तक समाचार एजन्सियो का सम्बन्ध है, राजस्थान म पी०टी०आई०' और 'यू०एन०आई० दा बडी अग्रजी की एजेन्सियां है। इनके अतिरिक्त हिन्दी की दा प्रमुख एजेन्सियां हिन्दुस्तान समाचार' और समाचार भारती' है। राजस्थान के समाचार पत्रो म से अधिकाश पत्र इन्ही एजेन्सियो की सेवाए प्राप्त करते रहे हैं। कुछ बडे पत्र इन एजेन्सियो क अतिरिक्त 'प्रेस एशिया इन्टरनेशनल', इन्फा' आदि की सेवाए भी लेत हैं। ज्यो-ज्यो उक्त दा हिन्दी एजेन्सियो का विकास होता जा रहा है, अग्रेजी की सेवा का उपयोग कम होता जा रहा है, क्योकि अग्रेजी की सेवा जहाँ महगी है, वहा उसकी सामग्री के अनुवाद की भी समस्या है।

एजेन्सियो के अतिरिक्त राज्य के जन सम्पर्क निदेशालय और भारत सरकार के पत्र सूचना कार्यालय की समाचार सेवा का भी पर्याप्त उपयोग किया जाता है। राज्य के जन सम्पर्क निदेशालय म एक पृथक् समाचार शाखा है। इस शाखा मे राज्य के विभिन्न विभागो से और अपने जिला स्थित कार्यालयो से प्रतिदिन जो समाचार प्राप्त होत है, उन्हे नियमित रूप से दिन मे दो बार समाचार पत्रों को भेजा जाता है। ये समाचार मुख्यत प्रशासन की नीतियो और गतिविधियों से सम्बन्धित होत हैं। इनमे मत्रियो द्वारा उद्घाटित विभिन्न समारोहो, बडी औद्योगिक और सिंचाई योजनाओ, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओ, सार्वजनिक निर्माण के कार्यों स्वायत्त शासन सस्थाओ की प्रवृत्तियो, पचवर्षीय योजनाओ की उपलब्धियो, कानून और सुरक्षा के उपायो, समाज कल्याण के लिए राज्य द्वारा उठाय गये कारगर कार्यों आदि की जानकारी विशेष रूप से होती है।

भारत सरकार के पत्र सूचना कार्यालय द्वारा केन्द्रीय सरकार की गतिविधियो, ससद की कार्यवाही तथा अन्य नीति विषयक सूचनाए, घोषणाए और विज्ञप्तिया प्रसारित की जाती हैं। इन दानो ही स्रोता से प्राप्त सामग्री मे से समाचार पत्र अपनी आवश्यकतानुसार चयन करके उपयोग करते हैं।

उक्त स्रोतों के अतिरिक्त पत्र के जो अपने निजी सवाददाता और रिपोर्टर होते हैं, वे सभी प्रकार के सभावित समाचार-स्रोतो से सक्रिय सम्पर्क स्थापित कर समाचार प्राप्त करते हैं।

सम्पादक के अपने निजी सम्पर्क भी समाचार-प्राप्ति के प्रभावशील स्रोत होते हैं। राजनीतिक हलचलो और प्रशासनिक हेरफेरो के बारे मे अक्सर विशेष समाचार *इन्ही निजी सम्पर्क स्रोतो से प्राप्त होते हैं।*

प्रादेशिक समाचारों की प्रमुखता

राजस्थान के दैनिको की समाचार-सामग्री का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर एक यह तथ्य सामने आता है कि 1950 से 1960 के बीच जहा ये समाचार पत्र अग्रेजी समाचार-एजेन्सियो की अन्तर्राष्ट्रीय खबरो को महत्वपूर्ण समझ कर प्रमुखता के साथ प्रकाशित करते थे, वहा 1960 के बाद यह प्रवृत्ति घटी है और इसका स्पष्ट कारण यह है कि अपने दीर्घ अनुभव से उन्होंने इस तथ्य को पहचान लिया कि यह क्षेत्र राष्ट्रीय स्तर के दैनिको का है। दिल्ली से प्रतिदिन जयपुर मे आने वाले राष्ट्रीय दैनिको को ये खबरें देश की राजधानी से उनके प्रकाशित होने के कारण निश्चित रूप से पहले प्राप्त होती रही हैं और उनका प्रकाशन वे अधिक तत्परता से करते हैं, जबकि राजस्थान के पत्रो को इन समाचारों की प्राप्ति और प्रस्तुतीकरण मे विलम्ब हो जाता था। इसके अतिरिक्त व्यावहारिक अनुभव ने उन्हे यह पाठ भी पढा दिया कि प्रादेशिक पत्रो को अपने प्रदेश के समाचारो की प्रमुखता देने से ही उनकी पाठक सख्या मे वृद्धि हो सकती है। परिणामत आज राजस्थान के सभी दैनिक प्रादेशिक समाचारो को अधिक प्रमुखता देने लगे हैं। प्रादेशिक समाचारो के बाद देश के अन्य भागो के समाचार और बहुत सक्षेप मे अन्तर्राष्ट्रीय समाचार छापे जाते हैं।

राजनीतिक समाचार

प्रादेशिक समाचारों मे अधिकाश समाचार राजनीतिक गतिविधियो अथवा राजनेताओ के भाषणो से सम्बन्धित होते हैं। राजनीतिक समाचारो का सर्वाधिक बाहुल्य निर्वाचनो के समय होता हैं। 1952, 57, 62, 67, और 72 के चुनावो के समय के समाचार पत्रो का अवलोकन किया जाय तो विज्ञापनो को छोडकर कुल सामग्री का 60 प्रतिशत से भी अधिक अ श राजनीतिक हलचलो मे सम्बन्धित होता है। इसी प्रकार विधान सभा तथा ससद के अधिवेशनो के समय भी इस प्रकार के समाचारो का परिमाण बढ जाता है, जो अस्वाभाविक नही है।

चुनाव सम्बन्धी समाचारों का जहा तक सम्बन्ध है, इनके प्रकाशन के सम्बन्ध मे राजस्थान के दैनिको मे अभी उस गाभीर्य का अभाव है, जो राष्ट्रीय स्तर के पत्रो मे देखा जाता है। चुनावो के समय प्रदेश के दैनिकों का स्वरूप ही जैसे बदल जाता है। कुछ पत्र तो प्रचार के पोस्टरो का रूप धारण कर लेते हैं। चुनाव

के समय समाचारो का स्वरूप कैसा हो जाता है, इसका अनुमान केवल दो समाचारो के निम्न शीर्षको से ही किया जा सकता है :—

'वोटो पर डाका डालने वाले सामन्ती तत्वो को जनता मत नही देगी।
चौमूं की सर्वजनिक सभा मे वक्ताओं के भाषण।[1]
कांग्रेस को समाप्त करने सम्बन्धी महारानी का बयान हास्यास्पद'
सामन्तवाद के खडहर पर खडे होकर कांग्रेस से टक्कर लेना
'छोटे मुह बडी बात' के समान—
पत्रकार सम्मेलन मे महारानी गायत्री देवी द्वारा दिये गये गर्वोक्तिपूर्ण बयान पर राज्य वित्त मन्त्री बी० एन० जोशी की प्रतिक्रिया।

किन्तु दूसरी ओर चुनाव प्रचार के इसी कोलाहल मे से कुछ कुशल रिपोर्टर मानवीय रुचि की ऐसी सामग्री भी निकाल लाते हैं, जो उनके द्वारा समर्थित दल के उम्मीदवारो के लिए तो लाभदायक होती ही है, पाठको का मनोरजन भी करती हैं।

नीचे प्रस्तुत किये जा रहे इस प्रकार के दो समाचारो म से पहला गायत्री देवी के बारे मे है और दूसरा मोहनलाल सुखाडिया के बारे मे। दोनो ही समाचार राजनीतिक होते हुए भी मानवीय रुचि के रजक है।

पगरख्या ही को न[3]

भाडारेज। हाल ही महारानी गायत्री देवी चुनाव प्रचार हेतु सामरिया (दस्सी) मे जब एक मीटिंग मे भाषण समाप्त कर उठी, उनकी सहायिका ने उन्ह खडे होते ही पैर मे चप्पल पहनाई तो एक किसान ने लोगों का ध्यान उस ओर दिखाया और कहा 'म्हाको अबार तो या महारानीजी अया कह रही थी कि मैं थाकी सेवा करूंगी, पण या सू तो आपकी पगरख्या ही नही पैरी जावै जद आपणी काई सेवा करेगी।'

मुख्यमन्त्री और नाइयो से दहशत[4]

चौमू, 26 अप्रेल। राजस्थान के वर्तमान मुख्यमन्त्री सुखाडिया जिनसे आज राजा महाराजा दहशत खाते हैं—किसी जमाने मे न सिर्फ राजा महाराजाओ से बल्कि नाइयो तक से दहशत खाते थे और उनके डर से घर मे दुबक रहत थ।

---

1 लोकवाणी, 1 मई, 1968 मुख पृष्ठ
2. लाकवाणी, 2 मई, 1968 मुख पृष्ठ
3 दैनिक नवज्योति, 23 अप्रैल, 1968, मुख पृष्ठ पर बाक्स
4. नवज्योति, 27 अप्रैल, 1968, मुख पृष्ठ पर बाक्स

"इस बात की चर्चा आज श्री सुखाडिया ने 'चौमू' की सभा मे सामन्तीकाल के अत्याचारों के प्रसग मे खुद की । उन्होने बताया कि जब वे छोटे थे और उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का देहावसान हो गया था, तब वे सात दिन तक इस डर से घर मे दुबके रहते थे कि कही कोई नाई जूते मे पानी भर कर उनका सिर न घोट दे ।"

इसी प्रकार विधान सभा के सत्र के समय भी जो पत्र जिस दल विशेष या व्यक्ति का समर्थन करता है, उसकी झलक समाचार पत्रो मे सहज ही मिल जाती है । कुछ अपवादो को छोडकर न्यूनाधिक रूप मे इस मामले मे पत्रों की यही स्थिति है । यदि सत्तारूढ दल के विरुद्ध कोई समाचार पत्र हुआ, तब तो विरोधी पक्ष के वक्ताओं के भाषण ऐसी सुर्खी के साथ छापे जाते हैं कि पत्र का सारा सन्तुलन ही डगमगाने लगता है । इसी प्रकार यदि किसी राज्याधिकारी का मामला विधान सभा में उठता है और पत्र का कोई सवाददाता या सपादक सयोग से इसका विरोधी हुआ, तो उसके सम्बन्ध मे प्रश्नोत्तर की सामग्री को एसी विशिष्ट सज्जा के साथ छापा जाता है, जैसे वह कोई चन्द्रलोक पर मानव के उतरने की ऐतिहासिक घटना हो । इस प्रकार की प्रवृत्ति का दिग्दर्शन कराने के लिए यहा केवल एक ही उदाहरण देना पर्याप्त हागा ।[1]

(1) श्री सुखाडिया ऐसी सफेद झूठ कहेगे, मैं मान नही सकता ।
विधान सभा मे राजस्व मन्त्री कुभाराम का बयान ।

(2) 'राजस्व मण्डल का गठन अवैधानिक सदस्यो की शका
कांग्रेस की आपसी फूट का प्रशासन पर प्रभाव
मन्त्री-मण्डल की स्वीकृति बिना अध्यादेश जारी करने का आरोप ।'

राजनीतिक समर्थन के लिये समाचारो के इस प्रकार के प्रस्तुतीकरण के अतिरिक्त विशेष सामग्री भी आवश्यकतानुसार प्रकाशित की जाती है । विभिन्न मुख्य मन्त्रियो के दो वर्ष पूरे करने, दस वर्ष पूरे करने अथवा 16 वर्ष पूरे करने पर भी प्रदेश के विभिन्न समाचार पत्रो द्वारा प्रशस्ति पर आलेख प्रकाशित किय जाते हैं । इस प्रकार के सूचना मूलक आलेख आवश्यक हो सकते हैं, तथापि पत्रकारिता की मर्यादा यह माग करती है कि वह उद्देश्य परक दृष्टि से इस प्रकार की सामग्री लिखी जाय । उपलब्धिया और असफलताओं का सतुलित लेखा-जोखा लेने की सम्यक् दृष्टि इस प्रकार के लेखन मे होनी चाहिए । इस प्रकार के लेखन का एक नमूना 'राजस्थान पत्रिका' के सपादक कर्पूरचन्द कुलिश द्वारा लिखित वह आलेख है जो 13 नवंबर, 1964 को श्री सुखाडिया के शासन के दस वर्ष पूरे होने पर लिखा गया था ।'

---

1 राष्ट्रदूत, 16 सितंबर, 1966, मुख पृष्ठ

सुखाडिया ' दुर्बलता जिसका सबसे बडा बल है, शीर्षक इस ग्रालेख मे सपादक ने उद्देश्य परक दृष्टि से जहा मोहनलाल सुखाडिया को प्रदेश मे स्थायी शासन देने का श्रेय दिया, वहा उनकी दुर्बलताग्रो को भी रेखाकित किया । ग्रालेख मे कहा गया कि 6 नवबर, 1954 को उनके नेता चुने जाने से पूर्व राज्य में पाच सरकारें बनी पर एक को भी स्थायित्व प्राप्त नहीं हुग्रा । किन्तु साथ ही उन्होने खडू माई रिपोर्ट से उठे विवाद ग्रौर उन दो प्रस्तावो का उल्लेख भी किया, जिनके द्वारा श्री सुखाडिया को दल का विश्वास प्राप्त करने को विवश होना पडा ।[1]

पंचायतीराज संस्थाओं के समाचार

राजस्थान में पचायती राज की स्थापना के बाद 1960 से पचायत समितियो ग्रौर ग्राम पचायतों के समाचारो को भी ग्रच्छा खासा स्थान मिलने लगा । पचायत समितियो द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाग्रो तथा कार्यालयो में पत्रो की खरीद भी इसके मूल में प्रेरक तत्व थी । प्राय प्रत्येक दैनिक मे प्रचुर परिणाम मे इन सस्थाग्रो की गतिविधियो के समाचार छपे हैं । *'राजस्थान पत्रिका'* में तो पचायत समितियो की गतिविधिया स्तम्भ लगभग एक दशक तक चला है । पूरे दो-दो कालम इन सस्थाग्रो की कार्य-प्रगति को दिये जाते थे[2] किन्तु सामान्य पाठक की इनमें कोई रुचि नही थी ।

ग्रपराधो के समाचार

राजस्थान के दैनिको ने विशिष्टीकरण के इस युग में पिछले एक दशक मे ग्रपराध समाचारो के सकलन ग्रौर प्रकाशन पर भी पर्याप्त ध्यान दिया है । ग्रपराध समाचारो का सारा सौन्दर्य उनमें निहित सूक्ष्म तथ्यो के उल्लेख में है ।[3] इस प्रकार की रिपोर्टिंग के लिए बहुत ही सूक्ष्म तत्वान्वेषी दृष्टि, निष्पक्षता, निर्भीकता ग्रौर पैनी कमल का होना ग्रनिवार्य है । दुर्भाग्य से राजस्थान के समाचार पत्रो के ग्रपराध सबधी समाचारो में ग्रभी इन तत्वो का ग्रभाव है ग्रौर इसका स्पष्ट कारण यह है कि इनके सवाददाताग्रो को इस क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण देने की व्यवस्था नही है । यही कारण है कि सार्वजनिक महत्व के ग्रन्य ग्रपराध समाचारो की ग्रवज्ञा करके या उन पर उचित ध्यान न देकर हत्या ग्रौर बलात्कारो के समाचारो को नमक-मिर्च लगा कर ग्रौर उत्तेजक ढग से छापने की एक ग्रस्वस्थ परिपाटी चल पडी है । बलात्कार की घटनाग्रा को छापते समय तो सवाददाता स्त्री के लिए ग्रनेक वार

---

1. राजस्थान पत्रिका, 13 नवबर, 1964, पृ० 3
2. राजस्थान पत्रिका, 11 नवबर, 13 नवबर, 18 दिसबर, 1964
3. इन्डियन एक्सप्रेस के विशेष प्रतिनिधि श्री के०सी० सोधी से विचार-विमर्श ।

नवोढा, षोडषी, प्रेम दीवानी और पुरुष के लिए मजनू रोमियो, अल्हड व प्रेमी जैसे विश्लेषण का प्रयोग कर पाठक की काम वृत्ति को गुदगुदाने का प्रयत्न करते हैं। इतना ही नही, इन समाचारो को विशेष रूप से मुख पृष्ठ पर दो दो, तीन तीन कालम के शीर्षक देकर छापते हैं। इस प्रकार के समाचारो को प्रमुखता देने का मोह वे सवरण नही कर पाते। यहा ऐसे ही कुछ समाचार आशिक रूप से उद्धृत किये जा रहे हैं, जो उक्त मनोवृत्ति से प्रेरित होकर मुख पृष्ठ पर तीन-तीन कालम के शीर्षक लगा कर छापे गये हैं।

जोधपुर मे महिलाओ के अनैतिक व्यापार व व्यभिचार के अड्डे[1]

जोधपुर, 30 अप्रैल विगत लम्बी अवधि से जोधपुर नगर म स्त्रियो के अनैतिक व्यापार और व्यभिचार के अनेक अड्डे शहर के कई सफेद पोश प्रमुख व्यक्तियो के सरक्षण मे तथा पुलिस की पूरी जानकारी मे चल रहे हैं। हाल ही म इन अड्डो मे से एक अड्डे की अनैतिक गतिविधियो का भण्डा फोड रेखा नामक एक महिला ने किया है, जो येन केन प्रकारेण उक्त अड्डे से भाग निकलने मे सफल हुयी।

• इस महिला को लगभग डेढ दो साल से उक्त अड्डे पर अनैतिक व्यापार के लिए रखा गया। गत लम्बी अवधि से वह अड्डे से भाग जाने के लिए व्याकुल थी, लकिन कोई उपयुक्त अवसर नहीं मिला।

• इस अड्डे की सचालिका कोई शान्ति तथा राधा नामक महिलाए हैं जिनके दुश्चरित्र के बारे मे पुलिस को पूर्ण जानकारी बताई जाती है। रेखा को चार वर्ष पूर्व कलकत्ता से भगा कर लाया गया बताते हैं। महिला ईसाई धर्म की बताई जाती है। परन्तु जोधपुर म उसे ठेठ मारवाडी वेश-भूषा मे रखा जाता रहा है।

हरिजन महिला का शील भग[2]

बाडमेर, 3 मई। विशाल ग्राम की उस हरिजन महिला की डाक्टरी परीक्षा हो चुकी है, जिसके साथ गत 27 अप्रैल को बलात्कार किया गया था। पुलिस उस व्यक्ति का पकडने म अभी तक असफल रही है, जिस पर बलात्कार का आरोप है।

यह हरिजन महिला जब जगल मे लकडिया काट रही थी, तो उसके साथ किसी उचक्के ने अभद्र व्यवहार किया और उसका शील भग किया गया।

. . . .

---

1. लोकवाणी, 1 मई, 1968, मुख पृष्ठ
2. लोकवाणी, 4 मई, 1968, मुख पृष्ठ

अशोका होटल से नग्नावस्था में प्रेमी युगल गिरफ्तार[1]

जयपुर, 4 मई। स्थानीय स्टेशन रोड पर स्थित अशोका होटल के एक कमरे पर कोतवाली पुलिस अधिकारी रामकुमार ने अपने दलबल के साथ छापा मार कर लड़के और लड़की को नग्न अवस्था में गिरफ्तार कर लिया।

............जाच के दौरान पुलिस अधिकारी रामकुमार को सूचना मिली कि उड़ाई गई 13 वर्षीय लड़की सुदेश एक लड़के के साथ अशोका होटल मे ठहरी हुई है। पुलिस अधिकारी ने अपने दलबल के साथ अर्द्ध रात्रि को होटल के कमरे पर छापा मार कर लड़के और लड़की को नग्नावस्था में बरामद कर लिया।

....

आर्थिक समाचार

राजनीतिक स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता अनिवार्य शर्त है और इसी अनिवार्यता को स्वीकार करते हुए आज देश के आर्थिक विकास के लिए सभी दिशाओं मे कार्य हो रहा है। कृषि के विकास के लिए सिंचाई सुविधाएं, दोहन, उर्वरको और उन्नत बीजो का वितरण, कृषि फार्मों का यन्त्रीकरण, कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना, खनिज सम्पदा का मशीनो के निर्माण के कारखाने आदि सैकड़ो की सख्या मे प्रारम्भ की गई विविध गतिविधिया आर्थिक समाचारो की सामग्री का रूप लेती हैं। इसी प्रकार प्राकृतिक कोप, यथा-अनावृष्टि, अतिवृष्टि, अकाल, टिड्डियों का आक्रमण, महामारियों का प्रसार आदि की घटनाओं के परिणाम भी प्रकारान्तर से अर्थ मूलक ही है।

वस्तुत पचवर्षीय योजनाओं के क्रियान्वयन के फलस्वरूप आर्थिक गतिविधिया इतनी बढ गई हैं कि अग्रेजी मे तो आर्थिक विषयो के स्वतन्त्र दैनिक 'इकोनोमिक टाइम्स' 'फाइनेन्शल एक्सप्रेस' और 'बिजनैस स्टेंडर्ड' आदि प्रकाशित होने लगे हैं। इसी प्रकार अन्य समाचार पत्रो मे भी आर्थिक समाचारो को निरन्तर महत्व मिलने लगा है, क्योकि हर पाठक का सम्बन्ध उससे होता है और उसकी हर समस्या किसी न किसी रूप मे अर्थ मूलक होती है। इसलिए खाद्यान्नो, वस्त्रो, और सोने-चादी के भावो से लेकर बिक्रीकर, आयकर, भवन एव सम्पत्ति कर तक सभी समाचारो मे उसकी रुचि होती है। समाचार पत्रो के सम्पादको ने पाठको की इस आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए अपने पत्रो मे पर्याप्त स्थान इस प्रकार के समाचारो के लिए सुरक्षित कर दिये हैं।

राजस्थान के समाचार पत्रो मे इस प्रकार के समाचारो को प्रमुखता देने मे सबसे पहले 'राष्ट्रदूत' ने पहल की और उसने इस कार्य के लिए विशेष रूप से अपने

---

1 लोकवाणी, 5 मई, 1968, मुख पृष्ठ

वाणिज्य सवाददाता को नियोजित किया। अन्य दैनिको—राजस्थान पत्रिका, नव-ज्योति और अधिकार ने भी इन समाचारो को स्थान की सीमा ध्यान रखते हुए उचित 'कवरेज' देना प्रारम्भ किया। 'राजस्थान पत्रिका' तो आर्थिक गतिविधियो पर माह मे दो बार 'अर्थ चक्र' नाम से पृथक् आलेख ही प्रकाशित करने लगा है और इसके सामान्य दैनिक अक मे भी आर्थिक समाचार नियमित रूप से छपते हैं। यद्यपि इन पत्रो के आर्थिक सवाददाताओ को इस कार्य के लिए कोई विशेषीकृत प्रशिक्षण नही दिया गया है, तथापि सतत् अभ्यास और अनुभव से अब आर्थिक गतिविधियो पर स्तरीय सामग्री प्रकाशित होने लगी है।

वैसे बाजार भावो को देने की परम्परा तो राजस्थान म लगभग सौ वर्ष पुरानी हो चुकी है। 'जयपुर गजट' और 'सज्जन कीर्त्ति सुधारक' जैसे रियासती राजपत्र भी खाद्यान्नो के भावो के समाचार प्रकाशित करते थे। किन्तु आज की विकासशील अर्थ व्यवस्था से इस प्रकार के समाचार विस्तृत विश्लेषण के साथ प्रकाशित होने लगे हैं।

राजस्थान की राजधानी मे जवाहरात उद्योग काफी विकसित हो चुका है। यहा के जवाहरात उद्योग मे लगे व्यावसायी न केवल देश मे ही रत्नो का व्यापार करते है, बल्कि विदेशो मे भी करोडो रुपयो के जवाहरात का निर्यात करते हैं। उदयपुर क्षेत्र मे पन्ने की खानो के निकलने से और ब्राजील तथा रूस आदि के खरड का आयात करने से यहाँ रत्न-उद्योग पिछले दो दशको मे तीव्र गति से पनपा है और सैकडा की सख्या मे रत्नो को काटने और तराशने वाले कारीगर यहा इस काम मे दक्षता प्राप्त करते जा रहे हैं। जवाहरात-उद्योग की इसी विकासशील स्थिति के यहा के समाचार पत्रो को इस विषय मे सामग्री प्रकाशित करने के लिए प्रेरित किया है और एक अच्छा खासा पाठक वर्ग केवल इन खबरो के लिए ही इन समाचार-पत्रो को पढता है।

इन समाचार पत्रो के सवाददाताओ ने स्थानीय जौहरियो के साथ सक्रिय सम्पर्क स्थापित कर और उनके साथ वैचारिक आदान-प्रदान कर के उत्तम कोटि की टिप्पणियां और समीक्षाए प्रकाशित करने का दायित्व सफलतापूर्वक वहन किया है। इसका एक ताजा उदाहरण हीरे के उद्योग मे प्रतिकूल स्थितियो से व्याप्त होने का है। इस बारे मे 'राजस्थान पत्रिका' के विशेष सवाददाता 'मणि' ने अपना विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया है :—

भारत के हीरा उद्योग पर सकट के बादल[1]

"भारत के हीरा उद्योग के लिए अप्रत्याशित रूप से एक नया और जबरदस्त खतरा पैदा हो गया है और इस व्यवसाय को निकट भविष्य मे भारी घाटा उठाना

---

1. राजस्थान पत्रिका, 24 नवम्बर, 1975

केवल व्यावसायिक दृष्टि से अपितु मानवीय दृष्टि से भी खेल जगत् की अनेक ऐसी विभूतियों को उजागर किया गया है, जो उपेक्षा के शिकार हो रहे थे। पत्रिका के सवाददाता अब्दुल गनी ने ही पाठकों के समक्ष पहली बार यह रहस्योद्घाटन किया कि सुप्रसिद्ध पहलवान गुलाम मुहम्मद 'गामा' का लालन-पालन जोधपुर में ही हुआ था और उन्हें कुश्ती के गुर यहीं पर बूटा पहलवान ने सिखाये थे।[1]

पत्रिका ने ही प्रतिष्ठित खिलाडियों के इन्टरव्यू प्रकाशित करने की दिशा मे भी पहल की और इस प्रकार समाज म उनके विशिष्ट व्यक्तित्व को उजागर किया। अब तक केवल राजनेताओं, शिक्षाविदों और प्रकांड विद्वानों के इन्टरव्यू ही प्रादेशिक पत्रों म बहुलता के साथ प्रकाशित होते रहे हैं। खिलाडियों के इन्टरव्यू प्रकाशित करने की इस परम्परा से निश्चित ही खेल-कूद मे जीवन को समर्पित करने वाले व्यक्तियों भी यह एहसास होने लगा है कि समाज म उनकी ओर भी कोई देखने वाला है और कुछ कोने तो ऐसे हैं, जहा उनकी कला के प्रति सम्मान की भावना अपनी पूर्ण निष्ठा के साथ है। चदगीराम का एक ऐसा ही इन्टरव्यू यहा प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमे राजस्थान के उपेक्षित पहलवानों की दशा और भी ध्यान आकृष्ट किया गया है —[2]

"मास्टर चन्दगीराम फिर अखाड़े मे उतरे!

"क्या कुश्तिया लडना छोड दिया ? मास्टरजी चौंके। नहीं जी। यह आपने कैसे जाणा ? हरियाणवी भाषा का पुट लिए मास्टर चदगीराम बोले। आप अब हरियाणा सरकार के खेल विभाग म उपनिदेशक हो गये है। 'सो के होया, हू तो पहलवान ही।"

"दो वर्ष पूर्व जयपुर के बाद मास्टर चदगीराम से गगापुर म मुलाकात हुई। राजस्थान की भूमि पर गगापुर मे मास्टर चदगीराम को मैंने लडते देखा। उनको पटो म वो खिंचाव नही था लकिन उनके पजो म वही पकड थी जिससे परेशान हो महाबली महरदीन ने पनाह चाही थी।

'मास्टरजी ने कुश्ती से पहले हुई भेंट म अपने बालों को बताया। समझा नही मैने कहा। बोले पेट मे गैस बनता था, इसलिए बाल उड गए और अखाडे से हटना पडा।

"तो मास्टरजी सतपाल से लडेंगे ? क्यू नही ? अभी और लडूगा और फिर चुनौती स्वीकार करूगा। महरदीन ने कनाडा से आकर चुनौती दी है। आपका क्या विचार है ? आज ही लड सकता हू।

---

1 इतवारी पत्रिका' 9 नवम्बर, 1975, मुख पृष्ठ पर गनी का लेख।

2. राजस्थान पत्रिका, 9 नवम्बर, 1975

"मास्टरजी ने बताया कि आज कल युवा पहलवानों को तैयार कर रहा हूं। दो पहलवानों को यहां भी लाया हूं। क्या आपको सरकार की मदद मिलती है ? मास्टरजी हसे। उसके बिना हम कैसे जिन्दा रह सकते हैं ? पहलवानों को सरक्षण मिलता आया है और मिलता रहना चाहिए, तभी भारतीय कुश्ती कला को जिन्दा रखा जा सकता है।

"मैंने सोचा, मास्टरजी ने क्या बात कही है। काश ! राजस्थान मे भी पहलवानो को हरियाणा और पजाब की तरह सरपरस्ती मिलती तो महरदीन और रघुवीर जैसे पहलवानों को राजस्थान न छोड़ना पड़ता। भूतपूर्व राजस्थान केसरी रघुवीर ने हरियाणा पुलिस मे नौकरी पाई है। राजस्थान मे नही।"

विविध समाचार

समाचारो के उक्त प्रमुख प्रकारो के अतिरिक्त स्थानीय जनजीवन मे समस्याओं जैसे-बिजली पानी की अव्यवस्था, आवास-समस्या, अस्पतालों मे रोगियो की दुर्दशा, छात्रों के लिए कापी और किताबों की किल्लत तथा ऐसी ही कितनी ही कठिनाइया, मानवीय रुचि की अप्रत्याशित घटनाओं जैसे पुनर्जीवन की घटनाए, अनमेल विवाह, विशिष्ट व्यक्तियों के प्रेम सम्बन्ध, विवाह, मृत्यु, सास्कृतिक कार्यक्रमो के आयोजन आदि अगणित विषय हैं, जिन्हे विविध समाचारो की श्रेणी मे रखा जा सकता है। इन समाचारो के लेखन की गुणात्मकता सवाद लेखक की विशिष्ट योग्यता और सामर्थ्य पर निर्भर करती है। जिस सवाददाता की जितनी पैनी दृष्टि होती है, उसे इस प्रकार के समाचारो को सुरुचिपूर्ण और मनोरञ्जक बनाने मे उतनी ही सफलता मिलती है।

दैनिक जीवन की समस्याओं की ओर शासन का ध्यान आकृष्ट करते समय सवाददाता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह निष्पक्ष दृष्टि से तथ्यों को सामने रख दे और उसमे अपनी ओर से कोई टीका-टिप्पणी न करे। किन्तु पिछले एक दशक तक सवाददाता अपनी वैयक्तिक टिप्पणी समाचारो मे करने से नहीं चूकते थे। वस्तुत यह प्रवृत्ति उन्ह स्वतन्त्रतापूर्व के पत्रों से विरासत के रूप मे मिली थी, जब समाचारो मे सम्पादकीय दृष्टिकोण अनिवार्य रूप से होता था, क्योंकि उस समय समाचारो के स्रोत कम थे और कुछ सामग्री प्राप्त होती थी, उसे प्रस्तुत करते समय लोक जागरण के उद्देश्य से सपादकीय दृष्टिकोण को अन्तर्निहित कर दिया जाता था। किन्तु समाचार लेखन की आधुनिकता इस प्रवृत्ति को उचित नहीं मानती। यदि किसी सवाद विशेष पर टिप्पणी आवश्यक है, तो उसे सपादकीय टिप्पणी के रूप मे पृथक् से लिखा जा सकता है।

राजस्थान के समाचार पत्रों में संवादों में टिप्पणी की यह प्रवृत्ति किस सीमा तक थी, इसे 'लोकवाणी' में स्थानीय 'माधोविलास' के बारे में प्रकाशित इस संवाद से समझा जा सकता है :—

माधो विलास में अव्यवस्था[1]

"जयपुर, 7 मई। स्थानीय माधो विलास सूत्र से प्राप्त सूचना के अनुसार यहां के मरीजों को ठीक समय पर न तो औषधियां उपलब्ध होती हैं और न ही पथ्यकर भोजन प्राप्त हो रहा है।

"ज्ञात हुआ है कि माधो विलास के प्रधान चिकित्सक गत 20 अप्रैल से अवकाश पर हैं। उनकी अनुपस्थिति से वहां की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई है। आयुर्वेद औषधालयों में अनुशासन हीनता चरम सीमा पर पहुंची हुई है। माधो विलास भी उससे अछूता नहीं है।

" • स्मरण रहे, माधो विलास में 100 मरीजों के रहने की व्यवस्था है। अतः यह जरूरी है कि वहां प्रधान चिकित्सक के अतिरिक्त कम से कम तीन अन्य प्रथम श्रेणी के अनुभवी वैद्यों की ड्यूटी लगाई जाय। इसकी कमी गत कई वर्षों से चली आ रही है। परन्तु विभाग की ओर से कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। आयुर्वेद मन्त्री को इस ओर अविलम्ब ध्यान देना चाहिये।"

समाचारों में उक्त संवाद की तरह सुझावपरक प्रवृत्ति अब लगभग समाप्त हो चुकी है, फिर भी देहातों और कस्बों से संवाददाताओं के रूप में कार्य कर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा भेजे गये जो समाचार ध्यानपूर्वक उप संपादक द्वारा संपादित करने से रह जाते हैं, उनमें यदा-कदा इस प्रकार की भाषा का प्रयोग मिल जाता है।

दैनिक जीवन की समस्याओं से सम्बन्धित समाचारों के अतिरिक्त मानवीय रुचि के जो समाचार प्रकाशित होते हैं, उनमें इतना वैविध्य है कि उन सबका विश्लेषण और उदाहरण देने के लिए यहां स्थानाभाव की कठिनाई अनुमति नहीं देती, अतः नीचे कुछ ऐसे समाचार उद्धृत किए जा रहे हैं, जिनमें इन समाचारों की प्रकृति, लेखन-शिल्प और बहुरंगता का अनुमान किया जा सकता है।

"नियमित जीवन से दीर्घायु[2]

"जमवारामगढ़, 27 अक्टूबर। निकटवर्ती बिलोची की ढाणी सामोतावाली के निवासी श्री वोयताराम शर्मा 106 वर्ष के हो चुके हैं।

---

1. लोकवाणी, 8 मई, 1968, मुख पृष्ठ
2 राष्ट्रदूत, 28 अक्टूबर, 1975

"श्री शर्मा अभी भी स्वस्थ हैं और अपनी दिनचर्या नियमित रखते हैं। उनके दात भी अभी तक सुरक्षित हैं। गाय-भैसो का चारा डालना, कुए पर जाकर पानी लाना तथा अन्य रोजमर्रा के कार्य बिना किसी कठिनाई के कर लेते हैं। श्री शर्मा का परिवार भी भरा-पूरा है। दो पुत्र एक पुत्री, दो पुत्र वधुएं, तीन-चार पौत्र, सात पौत्रिया तथा उनकी धर्म पत्नी सहित सभी लोग साथ रह रहे हैं।"

सता हो गया[1]

जबलपुर, 23 नवम्बर (यू एन आई)। अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष मे एक अपनी पत्नी की जलती चिता मे आत्मदाह कर के सता हो गया।

यह घटना गत मगलवार को यहा से करीब 65 मील सलेमाबाद के नजदीक बाडी गाव मे हुई। यह जानकारी पुलिस के उप अधीक्षक ने आज यू. एन. आई को यहा दी।

60 वर्षीय पत्नी की चिता को आग लगाने के बाद शोकाकुल लोग स्नान करने के लिए निकटवर्ती नदी की ओर चले गए। शोकग्रस्त 63 वर्षीय विधुर लालू-साहू चिता में कूद गया और मर गया।

"जोधपुर व्यभिचार कांड

अदालत मे यौन विकास को लेकर दिलचस्प चर्चा[2]

(पत्रिका सवाददाता)

"जोधपुर, 17 दिसम्बर। क्या किसी प्रदेश की विशेष भौगोलिक स्थिति जलवायु, खानपान व वातावरण आदि किसी युवती के यौन-विकास को प्रभावित करते हैं। क्या उत्तरप्रदेश में जिस युवती को उक्त तथ्यो को ध्यान मे रखते हुए विकसित माना जा सकता है, क्या उसी उम्र की लडकी बगाल मे अविकसित ही रह जायगी, जबकि उत्तरप्रदेश और बगाल की भौगोलिक स्थिति, जलवायु व खान-पान आदि मे भिन्नता है।

"यह प्रश्न आज यहा सत्र न्यायाधीश मिलापचन्द जैन की अदालत में जोधपुर व्यभिचार काड पर बहस के समय उपस्थित हुआ, जिसमे अभियुक्त के० एल० जैन, जगमोहन ताबी, ओम प्रकाश और रामगोपाल पुरोहित पर कमला और जेठी नाम की दो वैश्याओं के साथ व्यभिचार करने का आरोप है। अभियोगी पक्ष के वकील

---

1 राजस्थान पत्रिका, 24 नवम्बर, 1975

2. राजस्थान पत्रिका, 18 दिसम्बर, 1975

मस्तूर मल सिंघवी और उम्मेदनाथ भंडारी ने मेडिकल ज्यूरिस्ट डी० पी० दयाल से जिरह करते हुये चिकित्सा और यौन-सम्बन्धी अधिकारी विद्वानो की पुस्तकों का हवाला देते हुए इन प्रश्नो का उत्तर चाहा, डा० पी० दयाल जिन्होंने कमला और जेठी नाम की वैश्याओं की डाक्टरी जाच और रसायनिक जाच की थी, कहा कि निश्चित ही भौगोलिक स्थिति, जलवायु व खानपान आदि का यौन-विकास पर प्रभाव पडता है।

"उन्होने अपने बयान मे कहा कि राजस्थान लघु उद्योग निगम के कार्यालय से 359 की दूरी पर महादेव जी की गुमटी बनी हुई है। वह एक पूजा का स्थान है लेकिन उन्होंने कहा कि उस गुमटी पर किसी को पूजा करते हुए नही देखा। टेली-फोन पर इतला मिलते ही वह पाच मिनट के अन्दर घटना स्थल पर पहुच गये।

"सर्किल इन्सपेक्टर ने कहा कि दोनों लडकिया कमरे के अन्दर थी। कमरे मे दो पलग लगे हुए थे। उन्हाने बताया कि दोना लडकियों की सुरक्षा के लिए वे उन दोनो को बाजू के कमरे मे ले गये। उस समय वे अर्ध नग्न अवस्था मे थी। एक ने ब्रेसरी और लहगा पहन रखा था और दूसरी के केवल ब्लाउज था।

"उन्होंने कहा कि मुआवना मौके पर योगेन्द्र कुमार और सवदेव मौजूद थे।

"उन्होने कहा कि उत्तर प्रदेश और मारवाड की भौगोलिक स्थिति और खानपान को देखते हुए हो सकता है दोनों लडकियों-कमला और जेठी की उम्र 18-19 वर्ष की हो ?

"अभियोगी पक्ष की ओर से मारवाडी लडकियो के यौन विकास से सम्ब-न्धित एक लेख का हवाला देते हुए मेडिकल ज्यूरिस्ट से यह प्रश्न पूछा गया था।"

सम्पादकीय लेख[1]

समाचार पत्र की रीति-नीति तथा किसी समस्या विशेष पर उसके दृष्टि-कोण को समझने की दृष्टि से किसी भी समाचार पत्र का सपादकीय अथवा अग्रलेख बहुत महत्वपूर्ण होता है। सम्पादकीय के विषय राजनीतिक, सामाजिक, सास्कृतिक आदि कुछ भी हो सकते हैं। अखबार मे सपादक का यही वह मच है, जिसके माध्यम से यह अपनी राय किसी विषय पर प्रकट कर सकता है और अपने निजी दृष्टिकोण से उसका विश्लेषण कर सकता है। वह गम्भीरता पूर्वक अपनी मान्यताओं, धार-णाओं और विचार-धारा को व्यक्त करते हुये किसी भी विषय का खडन अथवा मडन कर सकता है और यथा आवश्यकता सुझाव दे सकता है। किन्तु सम्पादकीय

---

1. जार्ज फोक्स मोट, न्यू सर्वे आफ जर्नेलिज्म, पृ० 258

लेख की गरिमा सपादक के व्यक्तित्व और उसकी लेखन-क्षमता तथा उद्देश्य परक दृष्टि के लिए उसकी सार्वजनिक प्रतिष्ठा पर निर्भर करती है।

राजस्थान के सभी समाचर पत्रो मे सम्पादकीय लेख लिखे जाते है, किन्तु उनके पाठको की सख्या बहुत कम है। परीक्षण के रूप मे लेखक द्वारा विभिन्न वर्गों के सौ पाठको से सार्वजनिक वाचनालयो और सूचना केन्द्रो मे साक्षात्कार करने पर यह परिणाम सामने आया कि उनमे से केवल ग्यारह व्यक्ति सपादकीय लेख पढना पसन्द करते थे। इनमे भी चार वे विद्यार्थी थे, जो प्रतियोगिता परीक्षाओ के लिए तैयारी कर रहे थे और इस अभिप्राय से सपादकीय पढते थे कि सामयिक विषयो पर परीक्षा मे आने वाले निबन्धो के लेखन मे उससे सहायता मिलेगी। वस्तुत यह प्रवृत्ति राजस्थान के पत्रो के बारे म ही नही, सामान्यतया सामाचार पत्रों के पाठको मे इस रुचि का अभाव हुआ है। इसके प्रमुख कारण पाठको का सपादक या पत्र विशेष के प्रति पूर्वाग्रह, अन्य रुचिकर सामग्री का बाहुल्य, समयाभाव आदि माने जा सकते हैं। फिर भी सम्पादकीय या अग्रलेख लिखने की परम्परा का निर्वाह राजस्थान मे बराबर हो रहा है।

किन्तु जहा तक विदेशी या भारतीय स्तर के मामलों से सम्बन्धित सपादकीय लेखो की सामग्री का विश्लेषण किया गया है, यह पाया गया है कि उन पर अग्रेजी पत्रो के सम्पादकीय लेखो का प्रभाव है। कई बार तो वे अग्रेजी पत्रो के अग्रलेखो के रूपान्तरण मात्र होते हैं। किन्तु प्रादेशिक समाचार पत्रो के कार्यालयो मे सदर्भ-सामग्री की अनुपस्थिति और सपादक के बहुमुखी दायित्व के कारण चिन्तन मनन के लिए अवकाश और मुक्त मानसिक स्थिति के अभाव के कारण क्षम्य माना जा सकता है, किन्तु राष्ट्रीय स्तर के हिन्दी दैनिक भी इस दोष से मुक्त नही है। फिर भी राजस्थान के अधिकाश समाचार-पत्र स्थानीय समस्याओ पर निष्पक्ष और उद्देश्य परक दृष्टि से सम्पादकीय लेख लिखने की दिशा म सदैव सचेष्ट रहे है। इसके प्रमाण-स्वरूप अनेक सम्पादकीय लेख प्राप्त हो सकते हैं। यहा जयपुर नगर की आवास समस्या से सम्बन्धित एक अग्रलख का अश इस तथ्य की पुष्टि म सहायक सिद्ध होगा :—

कच्ची बस्तियों की समस्या[1]

"यदि नगर विकास न्यास का उद्देश्य केवल मात्र आवास समस्या का समाधान होता तो लखपतियों, करोडपतियो तथा दलालों को मकान बनाने के लिए बडे-बडे भूखड नहीं दिये जाते। यदि आवास की दृष्टि से भूमि-वितरण किया जाता तो

---

1. लोकवाणी, 21 नवम्बर, 1967

ग्राज कच्ची झोंपडियो मे रहने वालो तथा ग्रन्य जरूरतमन्द लोगो के सामने ग्रावास की समस्या मुह बाये खडी नही रहती । स्पष्टत नगर विकास न्यास की ग्रदूरदर्शिता का इससे बढ कर ग्रौर क्या प्रमाण होगा कि ग्राज बडे-बडे ग्रधिकारियो, विभाग के सचालको, सेठो, पूजीपतियो, चाटुकारो, राजनीतिक दलालो के बगलों के ग्रगल-बगल हजारो गज जमीन खाली पडी हुई हैं । जिस जमीन पर कई गरीबो के मकान बन सकते थे, वहा एक व्यक्ति का बगला बना हुग्रा गरीबो की गरीबी का उपहास कर रहा है । क्या नगर विकास न्यास के पास ग्रावास समस्या की यही एक मात्र सर्वोतम योजना थी ? क्या समाजवाद लाने की यह प्रक्रिया सही है ? ग्राज भी नगर मे ऐसी जमीनें खाली पडी हैं, जिसको यदि ग्रधिग्रहण करने की कोशिश की जा सके तो 47 हजार ही नही, बल्कि एक लाख की ग्राबादी से ग्रधिक लोगो की ग्रावास समस्या सहज ही हल हो सकती है । किन्तु, इस मानवीय ग्रावश्यकता की ग्रोर ध्यान देने की किसको फुर्सत है ।"

स्थानीय समस्याग्रो के ग्रतिरिक्त समूचे देश ग्रौर समाज को प्रभावित करने वाली समस्याग्रो, नीतियो ग्रौर निर्णयो के बारे मे भी समय-समय पर कुछ पत्रो ने ग्रच्छे ग्रग्रलेख लिख कर जनता का ध्यान ग्राकर्षित किया है । भारत-पाक युद्ध ग्रौर महा निर्वाचनो के समय तथा प्रधानमत्री की चुनाव-याचिका के बाद घटनाग्रो पर 'राजस्थान पत्रिका' के संपादक श्री कर्पूरचद कुलिश ने मुख पृष्ठ पर ग्रपने नाम से ग्रनेक ऐसे प्रखर सम्पादकीय लिखे थे, जिन्होने जन-मत को काफी प्रभावित किया था । श्री कुलिश ने मुख पृष्ठ पर ग्रपने नाम से सपादकीय लेख लिखने की यह प्रणाली कदाचित् इन्डियन एक्सप्रेस के सम्पादक फ्रेंक मोरेस से ग्रहण की थी, क्योकि गत 25 वर्षों मे इसी पत्र मे इस प्रकार के सम्पादकीय लेखो के दर्शन पहली बार हुए थे ग्रौर उसके बाद 'राजस्थान पत्रिका' मे वे दृष्टिगोचर हुए ।

ग्रापात स्थिति के दौरान कडी सैन्सरशिप के बावजूद इस पत्र ने ग्रनेक दमदार सम्पादकीय लिखे, जिनमे से सेवाग्रो की प्रतिबद्धता पर लिखे गये ग्रग्रलेख का यह ग्रश दृष्टव्य है[1] —

"......... 'सरकारी सयत्र के काम करने के ग्रपने तौर-तरीके है । उसमे कल-पुर्जे ऐसे भी हैं जो घिसे-पिटे हैं ग्रथवा जिनकी कार्यक्षमता घटी हुई है । ऐसी स्थिति म यदि पूरे सयत्र पर निगरानी न रखी जाय तो वाछित परिणाम नही मिल सकत । इसके लिए प्रशासन म ग्रपेक्षित कसावट लाना तथा उसे लक्ष्य पूर्ति के प्रति प्रेरित एव प्रोत्साहित रखना ग्रावश्यक हो, इससे कौन ग्रसहमत होगा । इन दिनो

1. राजस्थान पत्रिका, 30 जुलाई, 1975

अनेक कदम उठाये गये हैं तथा अनुशासन को कसा जा रहा है ताकि सरकारी विभागो मे कामकाज अधिक हो।

"पर इसके साथ यह सावधानी भी बरतनी होगी कि नेतृत्व द्वारा निर्देशित कार्यक्रम के प्रति अगाध निष्ठा एव उत्साह प्रकट कर देना ही यथेष्ट नही है, बल्कि इसकी सही कसोटी तो वस्तुत परिणाममुखी है। इस बारे मे यह सावधानी भी बरतने की जरूरत है कि कोई अफसर या कर्मचारी केवल अपनी आस्था या निष्ठाओ की मौखिक घोषणा करके अपनी अयोग्यता एव अक्षमता को न छुपा सके। क्योंकि सही और वास्तविक परिणाम तभी मिलेंगे जब कि प्रशासकीय निपुणता एव शासन-प्रबन्ध की योग्यता का स्तर भी बना रहे। प्रशासन प्रबन्ध स्वय अपने आप मे एक और कुशलता है जो एक विशेष प्रकार की प्रतिभा एव लम्बी अवधि के अनुभव द्वारा अर्जित होती है। अत प्रशासकीय क्षमता एव कुशलता के साथ उसके दायित्व बोध के सन्तुलन को कायम रखा जाना भी जरूरी है। विकास कार्यों मे और खास तौर पर पिछड़े क्षेत्रों मे सेवाओ की तकनीकी शाखा म गैर जानकार लोगो का अनावश्यक हस्तक्षेप न हो, इसका भी पूरा खयाल रखा जाना चाहिये।"

"पर यह बात भी निर्विवाद है कि यदि नेतृत्व एव नौकरशाही मे आपसी सम्पर्क एव समझ का स्तर सन्तुलित नहीं है तो विकास कार्यों पर इसका विपरीत प्रभाव पड सकता है। एक वेपरवाह और अयोग्य नौकरशाही किसी भी देश की विकास-प्रक्रिया को अवरुद्ध बना देती है और इस सन्दर्भ मे मुख्य मन्त्री के आव्हान एव उद्बोधन के आशय समझे और माने जाने चाहिये।"

सम्पादकीय लेख निस्सदेह महत्वपूर्ण हैं, किन्तु आज के पाठक की वैविध्य मयी रुचि की इतनी सामग्री पत्रो मे निकलने लगी है, कि सम्पादकीय लेख के पढने की ओर बहुत कम लोगो का ध्यान जा पाता है। फिर भी जो प्रबुद्ध वर्ग है, वह सपादकीय लेखों की उपयोगिता के बारे मे आश्वस्त है। राष्ट्रीय स्तर के पत्रो की तुलना मे हिन्दी प्रदेशो से प्रकाशित होने वाले छोटे पत्रो के इन सम्पादकीय लेखो का महत्व है, उसे स्वीकार करते हुए भारत के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री जे पी चतुर्वेदी ने एक स्थान पर ठीक ही कहा है

"The leading articles of small papers like *Rajasthan Patrika* of Jaipur are a treat I did a feature for two months for All India Radio about Hindi editorials and I always had a very hard choice in elimination These papers reflected truly national sentiment...."

विशेष सामग्री

नाना प्रकार के समाचारो से पाठक को सूचित करने के बाद उसकी मानसिक क्षुधा को शांत करने के लिए समाचार पत्रो ने अपने दीर्घ अनुभव से कुछ विशेष

प्रकार की समाचारेतर सामग्री का भी स्वरूप विकास किया है। इस प्रकार की सामग्री मे फीचर्स या विशेष लेख तथा हास्य व्यग्य के स्तम्भ प्रमुख हैं।

जहा तक फीचर्स का सम्बन्ध है, यह एक विशेष विद्या है, जो अग्रेजी के अनुकरण पर हिन्दी पत्रो म आई है। फीचर्स मे जहा समाचार पत्र की तथ्यात्मकता होती है, वहा घटना विशेष, विषय विशेष या व्यक्ति विशेष के बारे म विस्तृत ब्यौरा और विश्लेषण भी होता है और इसकी शैली इस बात पर निर्भर करती है कि लेखक म कितनी सवेदनशीलता, तथ्यो को कलात्मक ढग से प्रस्तुत करने की निपुणता और यथा आवश्यकता कल्पना के उपयोग की सामर्थ्य है।[1] इस दृष्टि से राजस्थान के समाचार पत्रो मे अभी बहुत अच्छे स्तर के फीचर्स दृष्टिगोचर नही होते। इसका एक कारण जहा अच्छे फीचर लेखको का अभाव है, वहा दूसरी ओर सदर्भ सामग्री की सुविधा या घटना-स्थलो पर जाकर अध्ययन करने अथवा व्यक्ति विशेष से सम्पर्क करने के लिए यात्रा-व्यय वहन करने की सामर्थ्य अभाव भी इसका मूल कारण है। फिर भी फीचर-लेखन की दिशा म उत्साह जनक प्रयत्न हो रहे हैं।

हास्य-व्यग्य के स्तम्भ

फीचर्स के बाद दूसरा मुख्य चर्चनीय विषय हास्य व्यग्य स्तम्भो का है। जैसे मिष्ठान के साथ नमकीन और भोजन मे साग सब्जी के साथ चटनी की आवश्यकता होती है, समाचार पत्रो की सामग्री मे भी इस प्रकार के हल्के-फुल्के स्तम्भो की आवश्यकता पडती है। इस दृष्टि से राजस्थान के समाचार पत्र हिन्दी के भारतीय स्तर के 'हिन्दुस्तान' और 'नवभारत टाइम्स' स भी आगे है। यहा के सभी दैनिक इस तरह का कोई न कोई स्तम्भ चलाते रहे हैं। लोकवाणी मे 'यत्र-तत्र-अन्यत्र' शीर्षक से एक स्तम्भ चलाया जाता था। नवज्योति 'यदा कदा सर्वदा' शीर्षक से और अधिकार 'येन-केन प्रकारेण' शीर्षक से इस तरह के स्तम्भो का निर्वाह करते रहे हैं। इन स्तम्भो का ध्येय वैसे हास परिहास पूर्ण ढग से सामयिक घटनाओ पर हल्की-फुल्की साहित्यिक शैली मे कटाक्ष करना होता है, जिसका मूल उद्देश्य मनोरजन होता है, किन्तु कभी-कभी स्तम्भ लेखक इस मर्यादा का उल्लघन कर व्यक्ति विशेष पर आक्षेप करने की दुष्प्रवृत्ति से नही बच पाते। उदाहरण के लिए 1967 के बाद जब मन्त्रिमण्डल का गठन हो रहा था, शासकीय दल के सभी प्रमुख विधायक मन्त्री बनने के प्रयत्न म भाग-दौड कर रहे थ। जहाँ तक इस भाग-दौड पर चुटकी लेने का प्रश्न है, वह तो सगत कही जा सकती है, पर उसम व्यक्ति विशेष को लक्ष्य बनाना कदापि सुरुचिपूर्ण नही कहा जा सकता, जैसा कि निम्न-लिखित रचना मे हुआ है —

1. जार्ज फौक्स, न्यू सर्वे आफ जर्नेलिज्म, पृ० 192

अत्र-तत्र-सर्वत्र

एक अनार सौ बीमार : एक ध्यान प्रमोद तलवार[1]

आप कौन हैं ?
मैं महिला कांग्रेसी एम० एल० ए० हूँ।
आप टिकिट पर जाती हैं या मुख्य
पेट बदल कर कांग्रेसी विधायिका
बनी हैं ?
नहीं, मैं अपने क्षेत्र से कांग्रेस के टिकिट
पर जीत कर आई हूँ।
फिर परेशान क्यों हो रही हैं ?
दिल के अरमान पूरे नहीं हो रहे हैं।
क्या हैं आपके अरमान ?
मैं मन्त्री बनना चाहती हूँ।
तो क्यों नहीं बन रही हैं ?
यही तो मौसम है।
कांग्रेस दल के नेता की मर्जी पर
सब कुछ निर्भर है।
क्या कहते हैं नेताजी ?
कहा, देखा समय आने दो।
फिर अड़चन क्या है ?
इसीलिए कि एक अनार सौ बीमार हैं।
मन्त्री बनने के मुख्य क्या हेतु ?
समय पर सब कुछ हो जाता है। इस बात
पर टाल दिया जाता है।
आप पढ़ी लिखी हैं ?
हूँ—पालिका की अध्यक्षा भी रह चुकी हूँ,
जनता से सम्पर्क भी रखती हूँ, फिर भी
नम्बर नहीं आ रहा है।
शासन की भांति क्यू लगी है क्या मन्त्री
बनने वालों की ?

---

1. लोकवाणी, 6 मई, 1967

हा, सभी मन्त्री बनना चाहते हैं,
धमकी देकर ।
मैं अपना अधिकार मागती हू ।
आपका ही अधिकार क्यो है ?
मै महिला जाति
का प्रतिनिधित्व कर सकती हू,
कई वर्षों से आश्वासन दिया जा रहा है, मगर
जब समय आता है, तो भाग्य के छीके किसी
और के टूट जाते है ।
आपके पक्ष मे विधायक कितने हैं ?
लगभग एक दर्जन ।
फिर भी आप परेशान ?
जी मैं परेशान इसलिए भी हू कि मैंने
लोगो को कह रखा था कि मन्त्री बनने पर एक
एक पाई चुका दू गी–ज्यो ज्यो समय बीतता
जाता है–लोगो का विश्वास उठता जा रहा है ।
मुझ से क्या चाहती हैं ?
मैं चाहती हू कि आप कोई ऐसा प्रयोग करें
जिससे दलीय नेता का दिमाग मेरी ओर फिर जाय ।
अच्छा आपका नाम क्या है ?
मुझको लोग कहते है
कान्ता खतूरिया ।

....

दण्डवत् बाबूजी ।
आइये, बैठिये ।
बैठती हू ।
कौन हैं आप ?
मैं लेखिका, कवयित्री, गल्प रचयिता,
और राजस्थानी भाषा की प्रबल समिर्थका ।
और कुछ कहिए, अपने बारे मे ।
मैं देश–विदेश मे घूम चुकी हू । मेरा
साहित्यिक क्षेत्र मे बडा सम्मान है ।
अखबार वाले मेरी रचनाए छापने के लिये

लालायित रहते है। मैं किसी जमाने मे रानी
थी और आज भी मेरा परिवार सब साधन सम्पन्न है।
आप क्या चाहती हैं ?
मैं राजस्थान मन्त्रिमण्डल मे मन्त्री बनना चाहती हू।
बाधा क्या पहुच रही है ?
मेरे साथ अनेक महिलाए मन्त्री बनना चाहती हैं।
फिर आप ही क्यो मन्त्री बनना चाहती हैं ?
इसलिये कि मैं उम्मीदवार महिलाओ मे
सर्वाधिक योग्य हू। मन्त्रिमण्डल मे योग्यता
आकी जानी चाहिये।
सर्वगुण सम्पन्न होने पर भी आप निराश क्यो है ?
राजनीति मे आशा की जगह निराशा ही लोगो के
अधिक हाथ लगती है।
आपने मन्त्री बनने की इच्छा जाहिर की है न ?
मैं खाक छान चुकी हू, फिर भी सतोषजनक
उत्तर नही मिल रहा है।
क्या कहते है ?
धैर्य रखिये, याग होगा तो मिल जायेगा।
फिर जल्दबाजी क्यो है ?
क्योकि एक म्यान है और अनेक तलवार हैं।
विधायक अपने पक्ष म कितने है ?
बहुत कम।
जनता से सम्पर्क है ?
नही के बराबर।
मुझ से क्या चाहती हैं ?
आप कुछ ऐसा मन्त्र पढिये कि दल के नेता
मेरे सिवाय किसी को मन्त्रिमण्डल मे नही लें।
नाम क्या है आपका ?
मुझको साहित्यिक जगत म कहते हैं—
रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत।

परन्तु इस प्रकार का लेखन व्यक्तिपरक (सब्जेक्टिव) न होकर किस प्रकार उद्देश्यपरक (आब्जेक्टिव) बनाया जा सकता है, इसके दो उत्तम उदाहरण नवज्योति मे प्रकाशित दल-बदल की प्रवृत्ति पर कटाक्ष करने वाले आलेख 'दल, निर्दल,

दलदल, दल बदल' तथा हिन्दी के प्रश्न पर अधिकार मे प्रकाशित 'हिन्दी का कल्याण' शीर्षक आलेख कहे जा सकते हैं।

यदा-कदा-सर्वदा

दल, निर्दल, दलदल, दल बदल[1]

दलो मे दल निर्दल
शेष सब दल दल।
मारी गई क्या आपकी अक्ल ?
जो निर्दल को कहते हो दल।
'निर्दल' म भी तो दिखता है दल।
लेकिन नही है उसमे दिल। इसी से
नही पाया किसी दल मे मिल। दल मे
दिल के बिना दल, इसीलिये निर्दल।
नही होगा इससे फिर दल बदल।
देश मे तो दीखता सभी जगह दल-बदल
दल के बदले दल न हो तो क्या
सत्ता नही सकती चल।
इसीलिये तो दल बदल चाहते हैं सभी दल
लेकिन तभी जब जाता हो दूसरा,
उनके यहाँ दल बदल।
इसी से तो गारत हुआ
बगाल मे सयुक्त दल।
और बिहार मे बने मुख्यमन्त्री मण्डल।
जो हैं निरे बडल।
लेकिन अभी तो भारी दीखता है बडल
उलट गया है अब उसका भी टाट कमडल।
तैयार कर लिया होगा कोई नया दल.... ...

येन केन प्रकारेण

हिन्दी का कल्याण[2]

हिन्दी का क्या किया जाये ?

---

1. नवज्योति, 24 मार्च, 1968
2. अधिकार, 2 मई, 1967

सम्पर्क भाषा बनाइये।
राजगोपालाचारी भी कुछ ऐसी ही बात बोलते हैं।
क्या बोलते है राजाजी ?
यही कि हिन्दी बाजारू भाषा हो सकती है, राष्ट्र भाषा नही।
क्या बाजारू और सम्पर्क शब्दो मे कोई अन्तर नहीं है ?
अन्तर तो है किन्तु मामूली। सम्पर्क मे आने वाली भाषा धीरे-धीरे एक स्थिति मे बाजारू ही बन जाती है।
क्या हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा नही मिल सकता ?
दर्जा तो हमारे सविधान ने ही प्रदान कर दिया किन्तु आले दर्जा नेता उस दर्जे तक हिन्दी को पहुचने देना नही चाहते।
यह गिरा हुआ काम वे क्यो करते हैं ?
इन नेताओं की पार्टियां विदेशी धन के बलबूते पर चलती हैं। यदि वे हिन्दी के विरुद्ध और अग्रेजी के समर्थन मे जोर न लगाये तो विदेशी धन मिलना बन्द हो सकता है।
विदेशी धन के लालच मे देश के साथ गद्दारी करना तो अक्षम्य अपरा १ है
अपराध तो तब हो, जब वे रंगे हाथो पकडे जायें।
उनको पकडा क्यो नही जाता ?
वे इतने चिकने हो चुके हैं कि पकडने पर फिसल जाते हैं।

राष्ट्रदूत दैनिक उक्त प्रकार की साहित्यिक शैली मे तो कोई नियमित स्तम्भ प्रकाशित नही करता, किन्तु 'कटीले तीर' शीर्षक से एक लघु स्तम्भ अवश्य प्रकाशित होता है, जिसमे समाचार पत्रो मे प्रकाशित समाचारो की कुछ पत्तियाँ चुन कर उन पर तीखे ढ ग से कटाक्ष करने का प्रयत्न किया जाता है। इस स्तम्भ मे भी यदा-कदा व्यक्ति विशेष या सरकार पर आक्षेप करने की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है, किन्तु कुल मिला कर इसकी सामग्री पाठको का अनुरजन करने म समर्थ होती है। इस स्तम्भ के अन्तर्गत किये जाने वाले लेखन का भी एक छोटा सा नमूना यहां प्रस्तुत है :—

कटीले फूल[1]

उत्तर प्रदेश मे डिग्री के लिए विद्यार्थियो को 6 माह ग्रामीण क्षेत्रों मे सेवा करनी होगी।

---

1 राष्ट्रदूत, 28 अक्टूबर, 1975

—जो लोग बाल ही नही काटते वे फसल कैसे काटेंगे ?

× × ×

राजस्थान मे महिलाओ को कैद से विशेष छूट ।
—लेकिन इसका अर्थ मैके जाना नहीं है ।

× × ×

—भीलवाडा मे कुत्तो की भी नसबन्दी ।
—कोई ऐसा उपाय भी किया जाना चाहिये कि वे काटना भी कम कर दें ।

× × ×

—तलाक कानूनो को और सरल बनाया जाय ।
—ना समझ फिर न फस जायं, इसकी भी व्यवस्था होनी चाहिये ।

× × ×

—रबी की भी बढिया फसल के आसार से जमाखोरी मे घबराहट ।
—अब उपभोक्ता नही, घुन उन्हे दुआ देंगे ।

— गुलबा

उक्त स्तम्भो मे सर्वथा पृथक् स्तम्भ 'मझधार मे मिडलची' के नाम से राजस्थान पत्रिका मे प्रकाशित होता था । प्रथम पुरुष मे आत्मकथात्मक शैली मे लिखा जाने वाला यह स्तम्भ मध्यवर्गीय परिवारो के जीवन की परेशानियो और उलझनो पर मीठी चुटकियो से भरा होता था । इसमे यदा-कदा व्यग्य का भी अच्छा सम्पुट होता था । यहा बानगी के रूप मे इस स्तम्भ का भी एक आलेख प्रस्तुत किया जाता है —

"मझधार मे[1]

"यो मिडलची भाग्यशाली तो नहीं है लेकिन इस बार सोचा कि क्यो नही किस्मत ही आजमा ली जाये । ऐसा इरादा करके लाटरी का टिकिट खरीद लिया । पडौसी लाला रामभरोसे की सलाह थी कि उसके पीछे 'जय श्री हनुमानजी महाराज' भी लिख देना, सो वैसे ही किया । इसके अलावा रोजाना 'महाकाली तेरा वचन न जाये खाली' का पाठ भी किया लेकिन नतीजा कुछ भी नही निकला ।

"इसके बाद सोचा कि भाग्य की आजमाइश कुछ अन्य क्षेत्रो मे भी की जाये । लिहाजा मित्रों से सलाह की और अखबारो पर नजरें दौडानी शुरू करदी कि ऐसा कौनसा तरीका हो सकता है । लेकिन उनमे एक तरीका बहुत ही आसान लगा । दीपावली के अवसर पर आजकल कई तरह की प्रतियोगिताए चल रही हैं । कोई

1. राजस्थान पत्रिका, 30 अक्टूबर, 1975

रियायती दरों पर माल बेच रहा है और कोई उपहार मे नई तरह की चीजें दे रहा है और कोई नये पैक म माल बेच रहा है।

"मिडलची का मन इन सभी के प्रति ललचाने लगा। घी, बूटपालिश कपडा, जूते, टूथपेस्ट, रेडियो, ट्रांजिस्टर और न जाने क्या क्या चीजें है जिन पर रोजाना कुछ न कुछ चीजो के उपहार की घोषणा हो रही है। मिडलची ने इन सभी का हिसाब लगा कर देखा। इरादा तो यह था कि अगर सौ रु० म डेढ सौ रु० या सवा सौ रु० का भी माल आ जाये तो उसे उन्हे खरीद डालें। अगर इससे कम मे हो तो कोई फायदे की बात नही थी। लेकिन पैसे पैसे का हिसाब लगाने के बाद यही जाहिर हुआ कि 5 या 6 प्रतिशत से ज्यादा बचत हरगिज नही हो सकती।

'मिडलची ने पहले तो इरादा किया कि पाच प्रतिशत म भी यह सौदा हो जाये तो क्या बुरा है, लेकिन एक ख्याल यह भी आया कि अनावश्यक चीजें खरीदने से क्या फायदा है। इससे तो अच्छा यही है कि सौ रु० बचत खाते मे ही डाल दिये जाय। पाच रु० का व्याज तो वहा से भी मिल जायेगा और बेकार की चीजो को खरीदने की जरूरत भी नही पडेगी।"

अन्य स्तम्भ

उक्त स्तम्भो के अन्तर्गत पाठको के पत्र, राशि फल, स्वास्थ्य चर्चा आदि स्तम्भ भी प्रदेश के दैनिक पत्रो मे निरन्तर प्रकाशित होते हैं। पाठकों के पत्रो मे प्राय प्रकाशित सामग्री पर टीका-टिप्पणी और स्थानीय समस्याओ और अभाव-अभियोगो पर मत-अभिमत समाविष्ट होते हैं। अनेक बार किसी विषय विशेष पर वाद-विवाद का माध्यम भी यह स्तम्भ बन जाता है। राशि फल मे प्रतिदिन ज्योतिष के आधार पर विभिन्न राशि वालो के लिए भविष्य फल प्रकाशित किये जाते हैं, किन्तु इन स्तम्भो मे पाठकों की रुचि होते हुए भी इनकी उपादेयता सदिग्ध है क्योकि गणित की दृष्टि से इस प्रकार के भविष्य फलो को तर्क सम्मत नही माना जा सकता। इसी प्रकार स्वास्थ्य सम्बन्धी स्तम्भो म भी आयुर्वेद और होमियोपैथी के वैद्य और डाक्टरो द्वारा समस्याओ का जो समाधान प्रस्तुत किया जाता है, वह भी वांछनीय नही है, क्योकि रोगी से साक्षात्कार के बिना पूरा उसका इतिहास जाने किसी भी प्रकार की औषधि के सेवन का सुझाव देना कदापि उचित नही कहा जा सकता। इससे अपने आप ऊट-पटाग औषधि के सेवन की प्रवृत्ति को भी बढावा मिलता है, जो जन स्वास्थ्य की दृष्टि से विघातक ही है। केवल राजस्थान के ही नही, सभी स्थानों से प्रकाशित हिन्दी भाषाओ के पत्रो म ये स्तम्भ देखे जाते हैं। केवल सम्यक् आचार सहिता के निर्माण से ही इस प्रकार की सामग्री के प्रकाशन पर अकुश रखा जा सकता है।

उक्त स्तम्भो के अतिरिक्त नगर की हलचलो, पुराने इतिहास और संस्कृति पर भी कुछ स्तम्भ चलाये जाते हैं। इस प्रकार के स्तम्भो मे 'राष्ट्रदूत' मे प्रकाशित 'घुमक्कडराम की डायरी' और 'राजस्थान पत्रिका' मे प्रकाशित 'नगर परिक्रमा' स्तम्भ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नगर परिक्रमा' के माध्यम से जयपुर के प्राचीन इतिहास, सामाजिक जीवन, रीति-रिवाजो आदि पर महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाश मे आई है और यह स्तम्भ पाठको मे बहुत लोकप्रिय हुआ है।

इधर चलचित्रों की समीक्षा और सगीत, नृत्य, नाटक आदि पर भी समीक्षाए प्रकाशित होने लगी है, किन्तु लेखको मे विषयगत दक्षता के अभाव मे इस प्रकार की सामग्री मे अभी उस स्तरीयता का अभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है, जो अग्रेजी पत्रो मे सामान्यतया विद्यमान रहती है। इस प्रसग मे सगीत, नृत्य और नाटको पर 'गौरवध' शीर्षक से श्री विजय वर्मा द्वारा लिखित स्तम्भ अवश्य अपवाद माना जा सकता है। श्री वर्मा की परख, पैनी दृष्टि और बेवाक लिखावट के कारण यह एक पठनीय स्तम्भ है, किन्तु इसकी नियमितता का निर्वाह बराबर नही हो पाता। जहा तक छाया-चित्रो का सबध है, राजस्थान के प्राय सभी दैनिक अब पर्याप्त परिमाण मे उनका उपयोग करते है, किन्तु इन चित्रो के प्रकाशन के पीछे प्राय व्यक्तिपरक दृष्टि होने तथा कुछ विशिष्ट लोगों को अनुगृहीत करने की मनोवृत्ति के कारण वे बहुधा पाठक वर्ग द्वारा अवज्ञा-भाव से ही देखे जाते है।

साप्ताहिक पत्रो की सामग्री

राजस्थान निर्माण से पूर्व के साप्ताहिका की सामग्री के स्वरूप और प्रस्तुतीकरण पर पहले चर्चा की जा चुकी है। यह सही है कि राजस्थान निर्माण के बाद प्रदेश मे साप्ताहिकों की बाढ सी आई है और उनकी सख्या म निरन्तर वृद्धि होती रही है। आज प्रदेश म चार सौ से भी अधिक साप्ताहिक विभिन्न स्थानो से प्रकाशित होते हैं, किन्तु उनका ढाचा लगभग एक जैसा है किसी पत्र को अपना विशिष्ट व्यक्तित्व बनाने मे सफलता नही मिली। इनकी प्रसार-सख्या भी बहुत सीमित है और शिक्षण सस्थाओ अथवा सरकारी कार्यालयों म ये पत्र पहुचते भी है, वहा उनके पाठको की सख्या लगभग नगण्य है।

अधिकाश साप्ताहिको मे जन सपर्क निदेशालय द्वारा भेजे गये प्रेस-नोट, स्थानीय लेखको और कवियों की सामान्य स्तर की रचनाए और अदालतो के सम्मन तथा सरकारी टैण्डर नोटिस और सरकार द्वारा जारी किये गये सजावटी विज्ञापन प्रकाशित होते हैं। पिछले कुछ वर्षों से छोटे साप्ताहिको की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए जन सम्पर्क निदेशालय ने प्रति शनिवार 'साप्ताहिकी' शीर्षक से प्रदेश के विभिन्न भागों के समाचारो का एक सार-सक्षेप भेजना प्रारम्भ किया है, जो बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

किन्तु साधनो की सीमाओं के बावजूद इन पत्रो के माध्यम से स्थानीय लेखकों को काफी प्रोत्साहन मिला है और एक अंश तक जिलों की जन-समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने मे भी इनका योग-दान रहा है।

जिलों से प्रकाशित साप्ताहिक पत्रो की सबसे बड़ी समस्या उनकी छोटी पूंजी है, जिसके कारण न तो वे पारिश्रमिक देकर स्तरीय सामग्री प्राप्त कर पाते और न उत्तम मुद्रण व्यवस्था के अभाव मे उनका बहिरंग स्वरूप ही निखर पाता। ये पत्र बहुधा एक व्यक्ति के श्रम से ही सचालित होते हैं। लगभग शत प्रतिशत साप्ताहिकों के स्वामी ही उनके सपादक, विज्ञापन व्यवस्थापक और प्रसार-नियामक होते है।

जहा तक समाचारो का सम्बन्ध है, उनके कोई विशेष स्रोत नही है और इसी कारण लगभग दैनिको मे प्रकाशित समाचारो की सक्षिप्त पुनरावृत्ति ही उनमे होती है, जिससे उस बासी सामग्री के प्रति पाठकों मे कोई जिज्ञासा या ललक नही होती। फिर भी जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, प्रदेश के विभिन्न भागो मे फैले लेखको के साहित्य को प्रकाशित करने मे उनके प्रयत्न निस्सदेह सराहनीय है। साहित्य सवर्द्धन मे दैनिको के रविवासरीय सस्करणो और साप्ताहिक पत्रो के योग-दान की चर्चा सक्षेप मे अगले अध्याय मे की जा रही है।

मासिक द्वैमासिक और त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाओं की सामग्री

यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि राजस्थान के निर्माण के बाद यद्यपि प्रदेश के विभिन्न भागो से अनेक मासिक द्वैमासिक और त्रैमासिक पत्रिकाए प्रकाशित हुई हैं, किन्तु व्यावसायिक प्रतियोगिता के इस युग मे उनमे से एक भी पत्र की स्थिति सुदृढ़ नही है। न तो उनका प्रकाशन नियमित रूप से होता है और न उनकी सामग्री का स्वरूप तथा साज सज्जा विकसित हो सकी है। इसका मुख्य कारण यह है कि राज्य सरकार, अकादमियो अथवा कुछ प्रतिष्ठित सस्थाओ द्वारा सचालित कतिपय पत्र-पत्रिकाओं को छोड कर शेष प्राय साहित्यिको के निजी प्रयत्न हैं, जो अपने निजी व्यय पर इस प्रकार के प्रकाशनो का प्रयत्न अपनी साहित्यिक रुचि तथा यश-लिप्सा से प्रेरित होकर करते हैं। फिर भी अपनी साधन-सीमाओं के बावजूद इन पत्रो के हिन्दी के विकास मे समुचित योगदान किया है, जिसका मूल्याकन ही अगले अध्याय की मुख्य विषय वस्तु है।

साहित्यिक पत्रो की परिस्थितियो और उनके आर्थिक सकट के बारे मे यहा विस्तार मे न जाकर यहा प्रदेश के सर्वाधिक चर्चित पत्र 'लहर' के उस सपादकीय का उद्धृत करना ही पर्याप्त होगा, जो इन पत्रो की व्यथा-कथा को सही रूप मे व्यजित करता है[1] —

---

1 लहर, जून 1968 पृ० 3-4

"बिना एक भी दिन का अवकाश लिये, सभी क्षेत्रो से कट कर, हर दायित से लगभग उदासीन रह कर, ग्यारह वर्ष की यात्रा पूर्ण करने और बारहवें वर्ष क देहरी पर खडे होने के बाद दमघोटू स्थितियों को ही जीना और झेलना पडे, त क्या कहा जाय ?

"..........इस पू जीवादी और आपाधापी की व्यवस्था मे व्यावसायि पत्रिकाएं मानुमती के कुनबे के स्वरूप के बाद भी कभी साहित्य की मसीहागिर करते है, कभी कला की एकमात्र पक्षधर बन जाती हैं । उसके लिए किसी कृति य कुश्ती के दगल मे कोई अन्तर नही है । और अपने साधनो के सहस्र हाथो से जब जैसा भी षडयन्त्र रचना चाहती हैं, रचती है । और अपना पुण्य दायित्व मानक केवल एक ही कार्य करती है, रचनाकारो मे आपसी मन-मुटाव और अव्यावसायिक पत्रिकाओ को एक-दूसरे से पृथक् करने का । कभी इसकी और कभी उसकी पीठ प हाथ रख कर वे उस युद्ध और आक्रोश से बचने के अपने प्रयत्न करती रहती हैं, ज उनसे लडा जाने वाला हो और दुर्भाग्य की बात है कि आज तक वे अपने प्रयत्न मे सफल होती रही है ।

यह सही है कि अव्यावसायिक पत्रिकाओ के पास जीने के साधन नही ह और उनकी अधिक से अधिक शक्ति और समय पत्रिका को जीवित रखने के लिए आर्थिक शक्ति जुटाने मे ही खर्च हो रही है और भली प्रकार वे अपने साहित्यिक दायित्वो की भी पूर्ति नही कर पाती । किन्तु अपनी आपसी दूरी को कम करके असली शत्रु को पहचानने और पूरी तैयारी से उन पर चोट करने के अतिरिक्त अ और कोई उपाय नही है ।"

अध्याय 9

सृजनात्मक साहित्य के क्षेत्र में पत्रकारिता का योग-दान

(सावधिक पत्र पत्रिकाओ के विशेष संदर्भ में)

यह एक कटु सत्य है कि हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास मे पत्रकारिता के योग-दान का स्वतन्त्र मूल्याकन अभी तक भी सम्भव नही हो पाया है। हिन्दी साहित्य के इतिहासो मे जहा भी पत्र पत्रिकाओ का प्रसग उपस्थित हुआ है, इतिहास लेखको और समीक्षको ने केवल कुछ प्रसिद्ध और बहु चर्चित पत्र-पत्रिकाओ का नामोल्लेख करके सन्तोष कर लिया है। यह तथ्य को गहनतापूर्वक अनुभव किये जाने की आवश्यकता है कि भाषा के विकास और साहित्य के सदर्भ मे पत्र-पत्रिकाओ की भूमिका पुस्तको से भी अधिक महिमामयी रही है। पुस्तक-व्यवसाय का विकास होने से पूर्व तो साहित्य के प्रकाशन का प्रमुख माध्यम ही पत्र-पत्रिकाए रही हैं। इस दृष्टि से भारतेन्दु पत्रिका, सरस्वती, विशाल भारत आदि पत्र-पत्रिकाओ के नाम तो सुविदित हैं, पर देश के विभिन्न भागो से प्रकाशित न जाने कितनी जानी-अनजानी पत्रिकाओ और पत्रो ने आधुनिक हिन्दी के निर्माण और निखार के पुनीत अनुष्ठान मे अपनी आहूति दी है। राजस्थान जैसे प्रदेश मे जो सामन्ती शासन व्यवस्था के कारण हर क्षेत्र मे अन्य राज्यो की तुलना म पिछडा हुआ रहा है, यद्यपि पत्र-पत्रिकाओ का प्रादुर्भाव बहुत विलम्ब से हुआ, तथापि अपने एक शताब्दि के इतिहास मे अपने अस्तित्व के लिए सघर्षरत रहते हुए भी उन्होने भाषा और साहित्य के विकास मे जो उल्लेखनीय योगदान किया है, उसका आकलन एक स्वतन्त्र ग्रन्थ का विषय है। विषय की मर्यादा को ध्यान मे रखते हुए यहा केवल साहित्य-सवर्द्धन मे सावधिक पत्र-पत्रिकाओ के विशिष्ट योग-दान की ही सक्षिप्त चर्चा की जा रही है।

जैसाकि पहले उल्लेख किया जा चुका है, राजस्थान मे पत्र-पत्रिकाग्रो को दीर्घ जीवन दुर्लभ ही रहा। कुछ पत्र बन्द हुए, तो कुछ नये निकले, किन्तु उनके प्रकाशन का सिलसिला बराबर जारी रहा।

चूंकि स्वाधीनता पूर्व पत्रकारिता का मूल उद्देश्य राजनीतिक चेतना का विकास करना था, इस युग मे साहित्य ग्रौर राजनीति दोनो का ग्रन्योन्याश्रित सम्बन्ध था। राजस्थान समाचार, तरुण राजस्थान, नवीन राजस्थान ग्रौर राजस्थान जैसे पत्रो मे एक ग्रोर जहा मुख्य रूप से रियासती शासन के ग्रत्याचार ग्रौर दमन के कारनामा के विरुद्ध समाचार छाप कर जन-जागृति फैलाई, वहा इन पत्रो ने समय समय पर देश भक्ति पूर्ण कविताए ग्रौर कहानिया भी प्रकाशित की। त्यागभूमि तो मूलत साहित्यिक पत्र के रूप मे ही प्रारभ किया गया था ग्रौर उस युग के ग्रनेक लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार उसकी लेखक पक्ति मे थे। इससे पूर्व विद्यार्थी सम्मिलित हरिशचन्द्र चन्द्रिका ग्रौर मोहन चन्द्रिका, सद्धर्म स्मारक ग्रादि जो साहित्यिक पत्र निकले उनकी सामग्री का विश्लेषण करते समय यह बताया जा चुका है कि ये पत्र भी राजनीतिक चेतना मूलक देश-भक्ति पूर्ण रचनाग्रो ग्रौर विचारो को पर्याप्त महत्व देते थे। यहा तक कि 'समालोचक' जैसा पत्र भी स्वदेशी ग्रान्दोलन ग्रौर ग्रग्रेजी शिक्षा के दुर्गुणो जैसे विषयो पर सामग्री प्रकाशित करता था। तात्पर्य यह है कि साहित्यिक कहे जाने वाले पत्रो ने भी शैली, शिल्प ग्रौर प्रस्तुतीकरण के ग्रन्तर के साथ देश की तत्कालीन ग्रावश्यकता के ग्रनुरूप राजनीतिक चेतना मूलक सामग्री को प्राथमिकता प्रदान की। यो ग्राज की भाषा मे यह भी कहा जा सकता है कि उन्होने प्रभूत परिमाण मे राजनीतिक साहित्य ग्रथवा सामयिक महत्व के साहित्य को प्रकाशित किया।

राजस्थान की हिन्दी पत्र पत्रिकाग्रो के योगदान को भारतीय परिप्रेक्ष्य मे देखने पर ज्ञात होता है कि उन्नीसवी सदी के ग्रन्तिम चरण म हिन्दी पत्रकारिता ने न केवल खडी बोली के स्वरूप को विकसित करने मे सहयोग दिया, ग्रपितु उसके माध्यम से राजनीति, इतिहास, शिक्षा ग्रौर विज्ञान ग्रादि विषयो की जानकारी जन-सामान्य तक पहुचाई, जो उस युग की सबसे बडी ग्रावश्यकता थी। यद्यपि इस युग मे राजस्थान स प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाग्रा की सख्या नगण्य ही थी, फिर भी जो प्रारम्भिक प्रयत्न किये गये उनसे प्रदेश म हिन्दी के विकास की ग्राधारशिला रखने म बडी सहायता मिली। राजस्थान मे जहा राज-काज मे फारसी ग्रौर उर्दू का बोलबाला था ग्रौर इन भाषाग्रो के ज्ञाता ही 'ग्रालिम फाजिल' समझे जाते थे, वहा 'सज्जन कीर्त्ति सुधाकर' जैसे साप्ताहिक का राजकीय सरक्षण म प्रकाशित होना भी एक घटना थी। इसी प्रकार उदयपुर से प्रकाशित 'चन्द्रिका' से लेकर 'भारत मार्त्तण्ड' तक जितने प्रयत्न हुए, चाहे वे कितने ही ग्रल्पजीवी रहे हो, खडी बोली को लोकप्रिय बनाने मे उनकी ऐतिहासिक भूमिका थी।

इसके बाद बीसवी सदी के पूर्वार्द्ध मे भी प्रदेश से जो पत्र-पत्रिकाए राजस्थान से निकली, चाहे वे साप्ताहिक हो या मासिक, द्वैमासिक हो या त्रैमासिक, उन्होंने भी हिन्दी की तत्कालीन धारा के साथ अपना सगम स्थापित कर गद्य और पद्य की भाषा के स्वरूप को विकसित करने, साहित्य के प्रति लोगो मे रुचि विकसित करने, लेखकों का एक समुदाय खडा करने और उनसे विविध विधाओं मे रचनाए लिखवाने की प्रेरणा देने का ऐतिहासिक कार्य किया। यहाँ यह कहना भी अप्रासगिक न होगा कि जब आज भी प्रदेश म विशुद्ध साहित्यिक पत्र पत्रिकाओ दुरावस्था है, तो उस समय तो इनके स्वतन्त्र विकास का प्रश्न ही नही था। कुछ छुट-पुट प्रयत्नो को छोडकर साहित्य-सवर्द्धन कार्य साप्ताहिको के माध्यम से ही सम्पन्न हुआ और आज भी स्थानीय सर्जकों के लिए साप्ताहिको के पृष्ठ ही मुख्य आधार है।

बीसवीं सदी का पूर्वार्द्ध

बीसवी सदी के पूर्वार्द्ध तक प्रमुख साप्ताहिकों और अन्य सावधिक पत्रो ने साहित्य की विभिन्न विधाओ म साहित्य को जो अवदान दिया, उसका प्रतिदर्श-सर्वेक्षण (सैम्पल सर्वे) कुछ चुनी हुई पत्र-पत्रिकाओ के आधार पर ही यहा प्रस्तुत किया जा रहा है।

विभिन्न विधाओ मे जो साहित्य इन पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से सामने आया, उसके सदर्भ मे यह भी दृष्टव्य है कि जहा इस काल मे अन्य हिन्दी प्रदेशो मे प्रतिष्ठित लेखको का ध्यान साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं मे हट कर पुस्तको के प्रकाशन पर केन्द्रित होने लगा था और तेजी से पुस्तके छपने लगी थी, राजस्थान में साहित्यिक पुस्तको के प्रकाशन की दिशा मे कोई विशेष परिवर्तन नही हुए थे, इसलिए प्रदश का लगभग समूचा साहित्यिक अवदान पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही हुआ। विभिन्न विधाओं मे किय गये इस अवदान के विवेचन से पहले भाषा के बारे मे भी सक्षिप्त चर्चा अभीष्ट होगी।

भाषा

चूकि भाषा ही पत्रकारिता की रीढ होती है, उसे सुदृढ बनाने मे इस युग के पत्रकारो ने बडा परिश्रम किया। उन्नीसवी शताब्दी की हिन्दी पत्रकारिता मे भाषा हिन्दी के विविध रूप दृष्टिगत होते है। कलकत्ता के पत्रकार बगला की शब्द-योजना और मुहावरो स प्रभावित थे, तो हिन्दी प्रदेशो के पत्रकारो मे से कुछ बाबू शिव प्रसाद सितारे हिन्द की फारसी मिश्रित हिन्दी के हिमायती थे और कुछ बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रतिपादित सरल-तरल हिन्दी के समर्थक थे। किन्तु बीसवी सदी के प्रारम्भ मे हिन्दी को एक रूपता देने वाली शैली का विकास पडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया। उन्होने उर्दू फारसी के शब्दो के बाहुल्य को दूर कर सस्कृत के

तद्भव और सरल शब्दो के प्रयोग से हिन्दी को एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया। राजस्थान की इस काल की पत्र-पत्रिकाओं मे भी भाषा के इसी स्वरूप के दर्शन होते हैं।

हिन्दी के परिष्कार और उसके प्राजल स्वरूप के विकास मे राजस्थान के तत्कालीन पत्रो का योगदान किस सीमा तक रहा, इसे समझने के लिए 'समालोचक' से एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है .—

"बगलादेश मे कोलाहल के साथ-साथ स्वदेशी वस्तुओ के प्रचार का आन्दोलन फैलता जा रहा है। गाव-गाव मे सभा होती है। स्वदेशी आन्दोलन देश भर मे व्याप्त होना चाहिए। बगाली पडितो ने शास्त्रो मे से स्वदेशी वस्तुओ के श्लोक खोजने आरम्भ किये हैं।"[1]

उक्त उद्धरण से इतना स्पष्ट है कि यहा के पत्रकार हिन्दी गद्य मे पडिताऊ पन के समर्थक नही थे। वे सीधी और बोध-गम्य हिन्दी के पक्षधर थे और अनिवार्य होने पर विदेशी शब्दो से भी उन्हे परहेज नही था।

गुलेरी जी के लगभग दो दशक बाद 'सौरभ' के यशस्वी सम्पादक श्री राम-निवास शर्मा ने भी इसी परम्परा को प्रशस्त किया। उन्होंने साहित्य विषयो के अतिरिक्त साहित्येत्तर विषयो पर भी लोक-शिक्षण की दृष्टि से प्रचुर परिमाण मे साहित्य प्रकाशित किया और उसे वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत किया। किन्तु उनके प्रस्तुतीकरण मे भी भाषा का स्वरूप कही दुरूह नही हुआ। वह प्रसाद गुण सम्पन्न, किन्तु उर्दू फारसी के शब्दों से मुक्त रही। 'अनावृष्टि' पर टिप्पणी करते हुए वे एक स्थान पर लिखते हैं :—

'लोग समझते हैं कि वृष्टि का कारण मानसून ही है, परन्तु इस विज्ञान को हिन्दू लोग समझने लगे है। उनके पूर्वज इससे बिल्कुल अनभिज्ञ थे। किन्तु बात वस्तुतः ऐसी नही है और वह इसलिए कि उनके ग्रन्थो मे इस समय भी वृष्टि-अनावृष्टि का वैज्ञानिक तत्व मौजूद है। इससे यह प्रतीत होता है कि उनकी दृष्टि मे वृष्टि के कारण भौतिक भी थे। श्रीमद् भागवत म ही स्वय श्रीकृष्ण वृष्टिकर्त्ता किसी देवता विशेष को नही मानते। वे स्पष्ट शब्दो मे अपने पिता नन्दजी से कहते हैं .—'वृष्टि का कारण कोई देवता विशेष नही, अपितु रजस्तत्व ही है।'

'सौरभ' के बन्द हो जाने के बाद साप्ताहिको का जो दौर आया, उसमे लगभग सभी पत्र थोडी बहुत साहित्यिक सामग्री अवश्य प्रकाशित करते थे। किन्तु इस दिशा मे सबसे अधिक योगदान 'नवजीवन' का है। 'नवजीवन' एक प्रकार से

1, समालोचक, वर्ष 1905, पृ० 49

उस युग मे साहित्य प्रधान साप्ताहिक था। राजनीतिक घटना-चक्र से पाठकों को कुछ पृष्ठो से अवगत कराने के बाद श्रेष्ठ साहित्य का प्रकाशन ही उसके दृष्टि-बिन्दु मे सर्वोपरि रहता था। इतना ही नही, 'नवजीवन' ने मेवाड में राज-काज म हिन्दी के प्रयोग के लिए भी आन्दोलन चलाया और भाषा और साहित्य की समस्याओं पर विचार विमर्श करने के लिए साहित्य सम्मेलन के मेवाड अधिवेशन का आयोजन भी करवाया। हिन्दी के प्रसार और विकास के लिए 'नवजीवन' के योगदान का एक ज्वलन्त उदाहरण 'मेवाड़ म हिन्दी का प्रश्न' शीर्षक वह निबन्ध है, जिसमे कहा गया है कि —

'सरकारी भाषा वह ही होनी चाहिये जो जन-साधारण समझ सके। मेवाड सरकार भी अपनी भाषा को हिन्दी ही कहती है। यहा की लिपि तो देवनागरी है, परन्तु सरकारी भाषा न्यायालयो, कचहरियो, अन्य सरकारी विभागो, कानूनो व गजट मे प्रयोग की जाने वाली भाषा मेवाडी नही, राजस्थानी नही, हिन्दी नही, यह है अरबी और फारसी के शब्दो से सनी हुई उर्दू। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत में मुसलमान राज्य के स्थापना काल ही से राज-दरबारो की भाषा, दिल्ली के दरबार की अधीनता या नकल के कारण, फारसी व उर्दू हो चली। यही विदेशी हुकूमत और सस्कृति की छाप, स्वाधीनता व सास्कृतिक पवित्रता की दुहाई देने वाले हिन्दुओ सूर्य के दरबार म अब भी मौजूद है।

"नये प्रधान मंत्री के साथ अंग्रेजी का प्रादुर्भाव"

इसके उपरान्त नये प्रधान-मन्त्री सर टी०बी० राघवाचार्य, जो हिन्दी से प्राय अनभिज्ञ कहे जाते है, के आने के समय से ही भारत के वर्तमान शासको की भाषा अगरेजी का प्रचार यहा भी जोरों से बढ रहा है। अनेक कानून व घोषणायें केवल अगरेजी ही मे निकाली जाती है, और उनका हिन्दी या उर्दू कोई अनुवाद भी नहीं दिया जाता।

"अत आवश्यक है कि जन-साधारण की भाषा हिन्दी को सरकारी भाषा बनाई जावे। परन्तु कोई भाषा प्रस्तावो से नही बदली जा सकती। फिर भी निम्न सुझाव इस प्रश्न को हल करने मे सहायता दे सकते हैं —

1 सरकारी विज्ञप्तिया, घोषणायें, कानून व आज्ञायें लिखने वालो का उद्देश्य एक मजी हुई उर्दू नही लिखकर जन-साधारण की भाषा लिखना हो।

2 न्यायालयो आदि की भाषा हिन्दी घोषित की जाय और प्रत्येक प्रार्थना-पत्र या दावे आदि हिन्दी म ही देना अनिवार्य हो।

3 सरकारी सूचनायें अग्रेजी म नही छापी जावें और वैसा हो भी तो साथ म हिन्दी अनुवाद आवश्यक हो।

4 सरकारी मसविदे तैयार करने वाले मुंशी और अनुवादक हिन्दी की अच्छी योग्यता वाले हों।

5. राजस्थान-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और इसकी मेवाड़ में स्थित शाखायें शक्ति भर इस प्रश्न को हल करवाने का प्रयत्न करें।"

इस प्रकार 'नवजीवन' ने साप्ताहिक होने के नाते न केवल हिन्दी को जनता के निकट लाने और उसके प्रसार में योग दिया अपितु प्रशासन पर भी हिन्दी के प्रयोग के लिए नैतिक दबाव डाला।

'नवजीवन' की इस परम्परा का निर्वाह समसामयिक अन्य साप्ताहिकों तथा परवर्ती[1] पत्रों ने भी किया।

इन पत्रों के बाद भाषा और साहित्य की दृष्टि से सन् 1945 मे अलवर से प्रारम्भ किये गये मासिक 'राजस्थान क्षितिज' ने भी जोश-खरोश के साथ अपनी भूमिका अदा की। चूंकि यह ज्ञान-विज्ञान के विषयो पर विभिन्न स्रोतो से साहित्यिक शैली मे सामग्री प्रस्तुत करने वाला पत्र था, इसकी भाषा कुल मिलाकर बहुत प्रांजल थी और इसके संपादक स्वयं भावनापूर्ण ढंग से बहुत परिष्कृत हिन्दी में लिखने वाले होने के कारण प्रायः अन्य लेखकों की रचनाओं को भी उसी तरह तराश कर प्रस्तुत करते थे। उनके ब्रिटेन विरोधी एक सम्पादकीय का निम्न अंश पत्र की भाषा के स्वरूप को इंगित करता है[2] 'यदि यह सच है कि प्रकृति मनुष्य की महान दुष्टताओं का प्रतिरोध अवश्य लिया करती है, तो जहां ग्रेट ब्रिटेन के अनेक दुष्टताएं की है, वहां आज वह अन्तिम (शायद अन्तिम) दुष्टता विश्व शान्ति के प्रति यह कर रहा है कि वह खरी विश्व शान्ति का नहीं, प्रतिक्रियावादी विश्व शान्ति का अपना योग दे रहा है। प्रकृति इसका प्रतिशोध कितना भयकर लेगी, यह कल्पना कर हम सिहर उठते हैं।'

उपर्युक्त पत्रों के समसामयिक लगभग सभी पत्रों की भाषा विषयक नीति और उसका व्यावहारिक रूप न्यूनाधिक रूप में समान ही रहा।

इस प्रकार बीसवी सदी के पूर्वार्द्ध मे राजस्थान से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की भाषा और हिन्दी के विकास मे उसके योग का जो संक्षिप्त निरूपण ऊपर के अनुच्छेदो मे किया गया है, उससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इन सावधिक पत्रों ने लगभग पांच दशकों में शनैः शनैः हिन्दी का वह रूप अंगीकार कर लिया था, जिसे सारे देश मे एक मानक भाषा के रूप में मान्यता मिल चुकी थी। फिर भी

1. नवजीवन, 7 जुलाई, 1941 पृ० 4
2. राजस्थान क्षितिज, 1948, पृ० 7

इन पत्रा की सामग्री के वैविध्य के सन्दभ म ही भाषा विषयक विश्लेषण किया जाना चाहिए। प्रकटत समाचार साप्ताहिक की भाषा और साहित्यिक मासिक की भाषा एक नहीं हो सकती, ज्ञान विज्ञान के विषयो की भाषा और गद्य काव्य की भाषा का रूप समान नहीं हो सकता। इसी प्रकार यदि उसी पत्र म महिलाओ और बालको का स्तम्भ भी हो, तो उसकी भाषा भी पृथक् ही स्वरूप ग्रहण किये हुए होगी। इन सभी पहलुओ पर विचार करन क बाद यह सहज भाव स स्वीकार किया जा सकता है कि जहा समाचार साप्ताहिको न बोलचाल क शब्दो क निरन्तर प्रचलन के द्वारा इस युग म हिन्दी को जनता क निकट लान की दिशा म एतिहासिक सेवा की, वहा उन्ही पत्रो म आशिक रूप स प्रकाशित साहित्यिक सामग्री और विशेष रूप से प्रकाशित अन्य साहित्यिक पत्रो की सामग्री ने हिन्दी क शब्द भण्डार को भी समृद्ध किया और उसक साहित्यिक वैभव म भी वृद्धि की।

कविता

परिमाण की दृष्टि स देखा जाय तो समालोचक और 'सौरभ' जैसे साहित्यिक पत्रो से लकर लोक जागरण क लिए सचालित साप्ताहिको त्यागभूमि मीरा नवज्योति, नवजीवन और बाद म जयभूमि और लोकवाणी तक क अनेकानेक पत्रो म कविताओ का प्रकाशन सर्वाधिक हुआ। प्राय प्रत्यक पत्र म ही कविताओ को स्थान दिया जाता था। 1900 स लेकर 1950 तक प्रदेश मे हिन्दी का जो स्वरूप लोकप्रिय हुआ, उसम कविताओ का बडा योगदान है क्योकि खडी बोली जिस प्रौढत्व को प्राप्त कर चुकी थी और हि दी समथको द्वारा जिस प्रकार की मानक हिन्दी का प्रतिपादन किया जा रहा था उस काव्य क माध्यम स ही बल प्राप्त हुआ।

बीसवी सदी क पूर्वार्द्ध म प्रकाशित पत्र पत्रिकाओ म साहित्यिक दृष्टि स प० रामनिवास शर्मा द्वारा सम्पादित 'सौरभ' न कविताओ का प्रकाशन प्रचुर-परिमाण म किया। चू कि यह पत्र बीसवी सदी क दूसर दशक म ही प्रकाशित हुआ था इसम प्रकाशित पद्य रचनाओ म भाषा के उस प्राजल रूप के दशन तो नही होत जो चौथे अथवा पाचवे दशक म पाया जाता है तथापि पहल दशक की तुलना म इन रचनाओ म भाषा का विकास प्रकटत दृष्टिगोचर होता है।

सौरभ म यद्यपि राजनीति प्रधान परवर्ती साप्ताहिको की तरह विद्रोहात्मक और क्रान्तिदर्शी विचार धारा की कविताए प्रकाशित नही हुई तथापि नीति विषयक शिक्षात्मक तथा महापुरुषो की प्रशस्ति परक कविताए इसम बराबर छपती रही। इन रचनाओ म छ दो के भी वही पुरान प्रयोग मिलते हैं। स्वय रामनिवास शर्मा दोहा हरिगीतिका कवित्त और सवैया आदि छन्दो म लिखते थे।

सौरभ म किस प्रकार की कविताए छपती थी इसकी बानगी 'अमर भारत' नामक एक रचना म देखी जा सकती है —

इन कटकों में, किस हेतु बिद्ध रहे हो,
ऐ श्याम गात वाले !
करुणा भरे हृदय से, क्या शब्द कर रहे हो,
वर विज्ञ बात वाले !
शोभित लता द्रुमों से, उद्यान वह वही है,
पर है न वे हवाएं !
हां सींचता नही जो, माली निठुर वही है,
सुनता नही व्यथाएं !
पाला पड़ा शिशिर में, फूला फला नही यह,
पतझड़ हो गया है !
इसका निदान क्या है ? उपवन हरा नही,
यह झखाड़ हो गया है !
नितनित उपद्रवों म, तू सोच देख कैसा,
हेमन्त अन्त होगा !
पत्ता नही हिलेगा, फिर क्या यहां खिलेगा,
कैसा बसन्त होगा !

'सौरभ' की ही भांति, 'त्याग भूमि' ने भी ! कविताओं का प्रचुर परिमाण मे प्रकाशन किया। किन्तु 'त्याग भूमि' मे प्रकाशित कविताएं विशुद्ध रूप से राष्ट्रीय भावनाओं का जागृत करने वाली होती थी।

इसके हर अंक मे चार-पांच कविताएं नियमित रूप से प्रकाशित होती थी, जिसका मूल स्वर देशभक्ति परक होता था। 'हिन्दुस्थान' शीर्षक एक रचना का निम्न पद्यांश देखिये :

रक्त-सुधा छिड़का जिस भू पर
राजस्थान-सिंह 'मृत' जाग !
जिस वन का था शिवा-केसरी,
वह है प्यारा हिन्दुस्थान !
अब भी जहां खिले रहते हैं,
योगी होकर भी अरविन्द !
जिनका रस चखने आते हैं,

दूर विदेशो से सुभलिन्द !
गाधी सा नर-देव जहा है,
अखिल विश्व का पुरुप-प्रदान !
जिसका है हमको अति गौरव,
वह है प्यारा हिन्दुस्थान !!

'त्यागभूमि' के बाद 'चारण' नामक साहित्यिक पत्र ने भी राजस्थान के काव्य-साहित्य को समृद्ध बनाने मे योग दिया। यद्यपि इस पत्र के लेखको मे समाज के अन्य वर्गों के लोग भी सम्मिलित थे, किन्तु चारण-सभा का पत्र होने के नाते, इसमे अधिकाश रचनाए चारण कवियो द्वारा लिखी हुई ही होती थी। किन्तु इन रचनाओ म हिन्दी के विकास की दृष्टि से कुछ तथ्य सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकनीय हैं। चारण कवियो ने हिन्दी को अपना कर न केवल डिंगल के उस मोह को तोडा, जिसके पास मे वे पिछली पाच शताब्दियो से बधे थे, अपितु हिन्दी के छन्दो को भी उदारता पूर्वक अपनाया। इस प्रसग मे हरिगीतिका छन्द मे लिखी हुई जाति गौरव विषयक एक कविता का निम्न अ श दृष्टव्य है[1] :—

जिसने कभी निज जाति का सोचा नही उद्धार है।
बस जन्म लेना जगत मे उस व्यक्ति का निस्सार है।
जो जाति के हित के लिए निज प्राण अर्पण कर चुका।
वह मर चुका है आज पर ससार सागर तर चुका ॥

जहा तक इस युग के साप्ताहिकों का सम्बन्ध है, हिन्दी काव्य कोप मे उत्कृष्ट कोटि के कवियो की रचनाए देने का सबसे अधिक श्रेय पहले अजमेर से और बाद मे उदयपुर से प्रकाशित 'नवजीवन' को है। 'नवजीवन' ने राष्ट्रीय विचार-धारा की कविताओ का प्रकाशन सबसे अधिक किया। राजस्थान से बाहर के मूर्धन्य कवियो मे सोहनलाल द्विवेदी, हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशकर भट्ट इसके कलेवर को अपनी कविताओ से सवारते थे, तो राजस्थान से जनार्दनराय नागर, सुधीन्द्र, देवीलाल सामर, हरिनारायण किकर, मोहनसिंह सेंगर आदि इसमे अपनी रचनाए निरन्तर प्रकाशित कराते थे। इनमे से आगे चलकर सुधीन्द्र ने तो राष्ट्रीय विचार-धारा के कवि के रूप मे अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की और 'नवजीवन' मे प्रकाशित अधिकाश रचनाए आगे चलकर उनके 'शखनाद' और 'प्रलय वीणा' नामक ख्याति प्राप्त सग्रहो मे छपी।

---

1. चारण, वर्ष 2, अक 4, पृ० 31

माहनलाल द्विवदी की सुप्रसिद्ध कविता 'तू अपनी धुन के पीछे चल' भी पहली वार 'नवजीवन' के 15 अप्रैल, 1940 के अक मे ही छपी। उदयशकर भट्ट की 'थके पथिको से' शीर्षक कविता 11 मई, 1940 के अक मे और हरिकृष्ण प्रेमी की 'आह्वान' शीर्षक कविता भी 'नवजीवन' के ही 8 जुलाई, 1940 के अक मे प्रकाशित हुई। प्रेमीजी की यह कविता उस राष्ट्रीय काव्य-धारा की प्रतीक है, जिसका अनुसरण उस युग के अधिकाश कवि कर रहे थे। इस कविता मे विदेशी शासन से लोहा लेने का आह्वान निम्न प्रकार किया गया है।[1]

सहेगा तापो से बलिदान।

वहा तोप-तलवारें होगी और यहा पर प्राण।
लाल-लाल आकाश सिखाता आज शहीदी शान।
पशु-बल, अत्याचार, कपट ने ताने तीर-कमान।
वढो-वढो आगे सीना कर सिहो की सन्तान।
सर्वनाश गाता है, तो गाने दो पागल तान।
मर-मिटने म ही मिलना है मृदु अमरत्व महान्।
युग-युग का अन्याय हृदय म उठा रहा तूफान।
रणभूमि सौ सौ तानो से करती है आह्वान।

इसी प्रकार मोहनसिह सेंगर की 'दीपावली' शीर्षक लघु रचना मे आजादी के दीवानो के तन-मन म सुलगती ज्वाला का वरदान इस प्रकार किया गया है[2] :–

क्यो कहते हो आज दिवाली ?
तन जलता है, मन जलता है
रोम-रोम म छाई लाली,
नेत्र-दीप निशि दिन जलते हैं,
दीवानो की सदा दिवाली।

राष्ट्रीय काव्य-धारा की कविताओ के प्राधान्य के बावजूद 'नवजीवन' मे छायावादी युग के प्रभाव से महादेवी वर्मा, पत आदि के प्रभाव से यदा-कदा रागात्मक गीतो को भी स्थान मिलने लगा था, जैसाकि सुधीन्द्र के निम्न गीत से स्पष्ट होता है[3] —

मैं तुम्हारी आरती का टिमटिमाता एक दीपक।
मृत्तिका का मिल गया, यह रूप जिसके हाथ लग कर।

1. नवजीवन, 8 जुलाई, 1940, मुख पृष्ठ
2 नवजीवन, 8 अक्तूबर, 1941, मुख पृष्ठ
3 नवजीवन, 28 दिसम्बर, 1941, पृष्ठ 2

किस पुजारिन ने न जाने, स्नेह भी उर मे दिया भर ।
तूल धर कर भी जगा पाया इसे कोई न अब तक ।
मैं तुम्हारी आरती का टिमटिमाता एक दीपक ।
मैं बुझूं भी तो तुम्हारा, क्या न होगा पूजनार्चन ।
हो सकेगा किन्तु जीवन म नही फिर धन्य यह तन ।
लौ उठा दो घू तुम्ही निज श्वास से यह प्राण पावक ।
मैं तुम्हारी आरती का टिमटिमाता एक दीपक ।

उक्त गीत की भाषा और व्यजना से हिन्दी कविता की द्विवेदी युगीन इति-वृत्तात्मकता से आगे की विकास-यात्रा का सकेत मिलता है ।

आगे चल कर प्रगतिवादी काव्य-धारा की रचनाओ को 'राजस्थान क्षितिज' मे भरपूर स्थान मिला । उदाहरण के लिए छत्रपतिसिंह की 'धनिक नगर' शीर्षक रचना का यह अ श देखिए[1] :—

कट कट, पट पट
सर सर, फर फर
चलती बग्घी, चलती मोटर
घोड़ो की टापो से प्रतिपल
बिजली की जाती चमक निकल
मोटर की घर घर से उठ कर
चलते गरीब फुटपाथो पर
यह कोलतार की सड़क और यह धनिक नगर
यह हवा महल,
यह राज महल,
देखो पैसो की चहल-पहल
पर इधर देख, ये क्यो पैदल ?

राजस्थान-क्षितिज के समकालीन जयपुर मे प्रकाशित चादनी ने भी हिन्दी के स्वनाम धन्य कवियो भगवती चरण वर्मा, गोपालसिंह नेपाली और अश्क आदि की रचनाएं प्रचुर परिमाण मे प्रकाशित की । भगवती बाबू की 'ट्राम'[2] और नेपाली की 'अखण्ड भारत'[3] शीर्षक रचनाए प्रकाशित करने का सौभाग्य इसी पत्र को प्राप्त हुआ ।

---

1 राजस्थान क्षितिज, अप्रेल, 1948, पृ० 51
2. चादनी, दिसम्बर, 1946, पृ० 35
3. वही, पृ० 21

इस प्रकार राजस्थान के पत्रों में राष्ट्रीय धारा, छायावादी काव्य धारा और प्रगतिशील काव्य-धारा की रचनाओं को काल क्रम से पर्याप्त स्थान प्राप्त हुआ और प्रदेश के और बाहर के कवियों ने अपनी काव्य सुरभि को इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से शिक्षित समुदाय तक पहुंचा कर साहित्य के प्रति उनकी रुचि के संवर्द्धन में अपना सक्रिय योगदान किया।

गद्य काव्य

राजस्थान के पत्र-पत्रिकाओं में गद्य काव्य का प्रकाशन भी प्रभूत परिमाण में हुआ। दिनेश नन्दिनी चोरडिया, देवीलाल साभर, राज्यलक्ष्मी साधना, जनार्दन राय नागर, यशवन्तसिंह नाहर और जीवनसिंह चौधरी आदि प्रदेश के अनेक साहित्यकारों ने गद्य-गीत की विधा में अपना साहित्य प्रदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित किया। इन गद्य गीतों की भाषा बहुत प्राजल, लालित्यपूर्ण और प्रवाहमयी होती थी। उदाहरण के लिए जनार्दनराय नागर का यह गद्य गीत दृष्टव्य है[1] —

छाया के समान जीवन के साँझ-सवेरे हैं,
स्मृतियां अमर परियों सी दुख-सुख के मंच पर नाचा करती हैं,
और सपनों का अनंत जीवन-निर्माण छाया के खेल दिखता है।
सभ्यता की प्राण धारायें तब किस ठोस भूमि पर बहती हैं?
किस लिये संस्कृति के जुगते-बुझते दीपक संसार के मन्दिरों
पर जला करते हैं?

अत्यंत लंबा और भारी, हमारे उत्थान और पतन का इतिहास
क्या हमारे रुदन और हास्यों की छाया मात्र नहीं हैं?
तब छाया का खेल खेलता, जीवन के अंधेरे और उजरे पथ पर
वह कौन, वह कौन सत्य जीता चला जा रहा है?
अखण्ड मौन भरी निद्रा के बाद भी जिसकी स्मृति हरी
रहती है।

जो वसन्त की मिठास का अनुभव करता
और पतझर की हाय में नवीन जीवन का उल्लास निरखता है
जो असंख्य कोटि प्रलयों में सोता और सर्गों में जागता रहता है
वह कभी अनंत आशा सा और कभी अनंत निराशा सा
छाया-माया की रंगभूमि पर जीवन का गीत गाता
कौन अमर है, कौन अजर है।

---

1. नवजीवन, 16 जून, 1941, मुख पृष्ठ

अन्य विधाएं

कविता और गद्य काव्य के अतिरिक्त इस युग के साप्ताहिको और अन्य सावधिक पत्रो ने कहानियो और रेखा-चित्रो का प्रकाशन भी किया, किन्तु वह बहुत स्वल्प परिमाण मे है। वैसे भी हिन्दी मे कथा-साहित्य का सृजन इस युग मे अपनी प्रारम्भिक अवस्था मे ही था। कथा-साहित्य का कोई पृथक पत्र तो राजस्थान से प्रकाशित नही हुआ, किन्तु त्यागभूमि, नवजीवन, राजस्थान क्षितिज आदि मे समय-समय पर कुछ रचनाए अवश्य प्रकाशित हुई, जिनका साहित्यिक दृष्टि से कोई महत्व नही है। इस दिशा मे एक मात्र उपलब्धि 'चादनी' की कही जा सकती है। 'चादनी' मे उस युग के शीर्षस्थ लेखक उदय शकर भट्ट, भगवती चरण वर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क आदि कथा-लेखको की कहानिया प्रकाशित की गई। इसके सम्पादक द्वय का पत्र के लिए फिल्म सम्बन्धी सामग्री जुटाने के सम्बन्ध मे बम्बई से निरन्तर सम्पर्क रहता था और सयोग से उक्त सभी लेखक उस समय बम्बई के चल-चित्र जगत् मे अर्थ और कीर्ति की कामना से अपना भाग्य आजमा रहे थे। 'चादनी' के अकेले दिसम्बर, 1946 के अक मे ही उपेन्द्रनाथ अश्क की 'नीरा'[1] और भगवती बाबू की 'आवारे'[2] शीर्षक दो कहानिया छपी हैं।

एकाकी नाटक भी बहुत कम सख्या मे छपे हैं। केवल 'चादनी' और 'राजस्थान क्षितिज' मे ही कुछ एकाकी दृष्टिगोचर होते हैं। राजस्थान से केवल देवीलाल सामर और प्रो० इन्दु शेखर ने एकाकी लेखन की दिशा मे कुछ प्रयत्न किये थे, जो इन पत्रो के माध्यम से प्रकाश मे आये। 1950 के इर्द-गिर्द डा० सरनामसिंह और हरिनारायण मैठीवाल के भी कुछ एकाकी 'राष्ट्र भाषा' मे प्रकाशित हुए। नाटको के अभाव की यह स्थिति अभी पिछले दशक तक भी प्रदेश मे पूर्ववत् बनी हुई थी। अभी पिछले 5-7 वर्षों मे अवश्य इस दिशा मे कुछ श्लाघनीय प्रयत्न हुए हैं, जो अधिकाशत. पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से सामने आये हैं।

निबन्ध और यात्रा वर्णन भी इस युग की पत्र-पत्रिकाओ मे स्वल्प परिमाण मे ही प्रकाशित हुए हैं। इनमे साहित्यिक दृष्टि से 'राजस्थान क्षितिज' मे प्रकाशित श्री बरुआ के यात्रा-वर्णन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सूक्ष्म निरीक्षण, चित्रोपम व्यजना और *भावनापूर्ण शैली के कारण ये यात्रा-वर्णन बहुत ही हृदयग्राही बन पडे* हैं। 'अलवर से कलकत्ता' शीर्षक यात्रा-वर्णन का यह अश श्री बरुआ की भावनामूलक शैली का अच्छा उदाहरण है[3] :—

---

1. चादनी, दिसम्बर, 1946, पृ० 23
2. वही पृ० 9
3 राजस्थान क्षितिज, मई, 1948, पृ० 15

'प्रात' काल कानपुर आ गया। नाश्ता करते हुये नगर की अट्टालिकाओं की शिखाओं के ऊपर मिलों की गगन चुम्बी चिमनियां और उनसे धुआ निकलता हुआ मैं देखता रहा। संयुक्त प्रांत गंगा, जमुना और अन्य छोटी-मोटी नदियों के दुग्ध से पोषित भाग्यवान प्रान्त है। आदिम काल में आर्यों ने अपने चरण यहीं रखे थे। आर्य संस्कृति यहीं बालिका से षोडषी और प्रौढ युवती हुई थी। मुगल-सभ्यता के भवितव्य और उसके श्राप भी यहीं कारगर हुये थे, पर यह कानपुर आज जिस लोक-संस्कृति का पड़ाव अपनी छाती में समाये हुये है, वह भारत का कितना हित और अहित कर रहा है, इस पर मैं क्या फैसला दे सकता हूं ? पूंजीपति कहते हैं, देश को पाश्चात्य राष्ट्रों की होड़ में मशीनों का 'वरण' करना चाहिये। तो मैं नाहक सोच बैठता हूं कि भारत को पूर्ण रूप से ही पश्चिम क्यों नहीं बन जाना चाहिये ? *क्यों वह ऐशिया के नेतृत्व की तैयारी कर रहा है।* पर शायद मेरी भावुकता इन धनपतियों के कानों तक न पहुंच सकेगी। और ये मिल की चिमनीयां कृषकों को मजदूरों में परिवर्तित कर उनकी आहें उस काले धुवें के रूप में ऊपर उड़ाती रहेगी।…… ……'

निबन्ध और यात्रा-वर्णनों के अतिरिक्त साहित्य-समीक्षाएं प्रकाशित होने का सिलसिला भी इस युग की पत्र-पत्रिकाओं में बराबर चलता है, किन्तु इन समीक्षाओं में सन्तुलित और तत्वान्वेषी दृष्टि के दर्शन बहुत कम होते हैं। फिर भी रामकृष्ण शिलीमुख, कन्हैयालाल सहल, मरनामसिंह शर्मा प्रभृति विद्वानों द्वारा लिखी गई समीक्षाएं जो यदा-कदा ही प्रकाशित होती थी, अच्छे स्तर की होती थी।

बीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध

संयोग से बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध का प्रारम्भ 1950 में राजस्थान-निर्माण के साथ ही होता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, स्वाधीनता प्राप्ति और तदन्तर राजस्थान के एक संगठित राजनीतिक इकाई के रूप में अस्तित्व में आने के बाद विगत 25 वर्षों में राजस्थान में दैनिकों के जन्म और नये नये साप्ताहिकों तथा मासिक पत्रों के प्रकाशन से हिन्दी की साहित्यिक अभिवृद्धि में उल्लेखनीय योग दान मिला है।

जहां तक दैनिकों का सम्बन्ध है, उनके माध्यम से ज्ञान विज्ञान की विविध शाखाओं की सामग्री को सरल भाषा में जनता तक पहुंचाने में सबसे अधिक सहायता मिली है। आर्थिक गतिविधियों और औद्योगीकरण की प्रगति, पंचवर्षीय योजनाओं के क्रियान्वयन, विज्ञान की नई-नई खोजों और तकनीकी अनुसंधानों के कारण सहस्रों की संख्या में नये शब्द इस युग में समाचार पत्रों के माध्यम से प्रचलित हुए हैं। किन्तु शब्द निर्माण में राजस्थान के पत्रों ने इस सम्बन्ध में अपनी ओर से कोई

विशेष योग-दान किया हो, ऐसा नही है। चू कि इस प्रकार की समूची सामग्री सरकारी स्रोतो और शोध तथा अनुसधान के बडे प्रतिष्ठानो द्वारा जारी की जाती रही है, उनके द्वारा अग्रेजी शब्दो के लिए प्रयुक्त हिन्दी पर्यायो को राजस्थान के पत्रो ने भी अपना कर उन्हे लोकप्रिय बनाने मे सहायता दी है। राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रो म जो नये शब्द आये हैं, उन्हे राजस्थान के पत्रो ने अपनाया है। क्योकि यह अपने आप मे स्वतन्त्र अध्ययन का विषय है, यहा ऐसे शब्दो की सूची मात्र देने से कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध नही होगा। अत यहा केवल उनके साहित्यिक अवदान पर ही चर्चा करना प्रासगिक होगा।

राजस्थान के दैनिको मे प्राय सभी के अपने रविवारीय परिशिष्ट निकलते हैं। इन परिशिष्टो मे सामयिक विषयो के लेखो के अलावा कविताए, कहानिया, रेखा चित्र और रिपोताजे प्रकाशित होते है, जो अधिकाशत प्रदेश के साहित्यकारो द्वारा लिखे हुए होते हैं। इन पत्रो के दीपावली, होली और राजस्थान दिवस अको मे विशेष रूप से स्तरीय सामग्री का प्रकाशन होता है। रविवारीय परिशिष्टो मे राजस्थान पत्रिका का सस्करण 'इतवारी पत्रिका' मे इस दिशा मे विशेष प्रयत्न किये हैं। इस सस्करण म सामयिक महत्व के एक विशेष लेख के अतिरिक्त, कविताए, कहानी, चित्र-कथा तथा बालोपयोगी सामग्री प्रकाशित होती है। राष्ट्रदूत, नवज्योति न्याय और अधिकार भी अपनी अपनी साधन-सीमाओ म अच्छी सामग्री देने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु रचनाकारों को पारिश्रमिक न देने के कारण विशिष्ट कोटि की सामग्री का अभाव निरन्तर बना ही रहता है।

दैनिक पत्रो की तरह साप्ताहिक पत्रो मे भी समाचारो के अतिरिक्त सृजनात्मक साहित्य की विभिन्न विधाओ की रचनाए प्रकाशित होती है, किन्तु पारिश्रमिक देने की असमर्थता तथा सीमित प्रसार-क्षेत्र के कारण इन पत्रो मे भी वाछित स्तर की सामग्री शनै शनै दुर्लभ होती जा रही है। फिर भी 'अमरज्योति', 'प्रजासेवक', 'लोकजीवन' 'सेनानी' तथा 'ललकार' आदि पत्रो को प्रदेश के सर्जको का अच्छा सहयोग मिला है। प्रदेश की नई और पुरानी पीढ़ी के अनेक कवि सुधीन्द्र, नन्द चतुर्वेदी, ज्ञान भारिल्ल, कमलाकर, कन्हैयालाल सेठिया, कपूरचन्द कुलिश, परमेश्वर द्विरेफ, मनोहर प्रभाकर, प्रकाश आतुर, शलभ, ताराप्रकाश जोशी, मूलचन्द पाठक आदि प्रारम्भ मे इन्ही दैनिको और साप्ताहिको के माध्यम से उजागर हुए हैं। कथा-लेखको मे परदेशी, यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र", मनोहर वर्मा आदि एकाकीकारो मे जयसिंह राठौड, मगन सक्सेना, आलोचको मे कन्हैयालाल सहल, सरनामसिंह शर्मा, डा० दिनेश, देवराज उपाध्याय आदि और भी अनेक नाम हैं, जिन्हें सरनाम करने मे इन पत्रो ने उनके रचना-काल के प्रारम्भिक चरण मे अपना यथाशक्य योगदान किया है।

प्रमुख साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं की भूमिका

वस्तुत सृजन की विभिन्न विधाओ मे जीवन के विराट स्वरूप को अभिव्यक्ति देने म प्रदेश से निकलने वाली साठोतर साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ ने विशेष रूप से अपनी भूमिका अदा की है।

जैसाकि पहले उल्लेख किया जा चुका है, बिन्दु, सम्प्रेषण, वातायन, मधुमति कविता, आदि साहित्यिक पत्रिकाओ ने नवलेखन को विशेष रूप से उजागर किया है।

राजस्थान मे कविता के क्षेत्र मे अनेक नवीन प्रतिभाए पिछले डेढ-दो दशको मे उभरी हैं इनमे से अनेक अब अपनी सतत साधना द्वारा शीर्ष पक्ति मे अपना स्थान बना चुकी है। इनमे से एक और वे हैं जो उच्च कोटि के गीतो द्वारा मन की रागात्मक अनुभूतियो, प्रकृति के सौन्दर्य और मन के अन्तर्द्वन्दो को अभिव्यक्ति देते है, तो दूसरी और वे लोग है जो छन्द के बन्धनो से मुक्त होकर आधुनिक युग की विसगतियो, कुंठाओ, आदर्श और आचरण के बीच की खाई को और विरोधाभासो को वाणी देते है।

यहा कवियो की लम्बी सूची न देकर इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि राजस्थान की पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से प्रकाशित अधिकाश कविताए आज के राजस्थानी कवियो के विद्रोही स्वर को व्यजित करती हैं। आज के युग की विसगतियो और विद्रूपताओ क प्रति उनके मन की तपन इन कविताओ मे अपनी पूरी ताकत के साथ व्यक्त हुई है। ये कविताए इस बात का प्रमाण है कि राजस्थान के कवि पूरी तरह अपने युग और उसके परिवेश के प्रति सवेदनशील हैं और अपने दायित्व को हर स्थिति मे ईमानदारी के साथ अनुभव करते हैं।

कवियो की तरह कथा-लेखक भी प्रदेश की विभिन्न साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से कथा साहित्य का सवर्द्धन कर रहे हैं।

निश्चय ही राजस्थान की पत्र-पत्रिकाओ में प्रकाशित कथाओ के माध्यम से आज के मनुष्य के अस्तित्व और उसके द्वन्द्वात्मक पक्ष तथा सघर्ष को वाणी दी है और इस प्रकार अपने युग को प्रतिविम्बित करने मे अपना योगदान किया है।

कविता और कहानी के अतिरिक्त राजस्थान की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ ने एकाकी, निबन्ध, विभिन्न भाषाओ की रचनाओ के अनुवाद और आलोचना के क्षेत्र मे भी प्रदेश के और बाहर के सृजन धर्मियो के कृतित्व को स्थान देकर अपने दायित्व का निर्वाह किया है। किन्तु जहा तक आलोचना का सम्बन्ध है, वह

पर्याप्त परिमाण मे होते हुए भी अभी गुट परस्ती, और 'अहोरूपम्' 'अहोध्वनि' की भावना से ग्रस्त होने के कारण अभी वाछित स्तर का स्पर्श नहीं कर पाई है। किन्तु यह स्थिति इसलिए क्षम्य है कि कुल मिला कर पूरे हिन्दी-जगत् मे ही आलोचना की यही स्थिति है। चूंकि राजस्थान मे साहित्यिक पुस्तको के प्रकाशन की दिशा मे पिछले डेढ दशक मे तेजी से प्रगति हो रही है और प्रचुर परिमाण मे प्रदेश के रचनाकारो का कृतित्व पुस्तको के रूप मे तथा प्रदेश से बाहर के अनेकानेक पत्रो के माध्यम से सामने आ रहा है, यहा प्रस्तुत किया गया यह सक्षिप्त निरूपण उस योगदान का अनुमान करने मे सहायक होगा जो राजस्थान की पत्र-पत्रिकाओ ने साहित्य के संवर्द्धन की दिशा मे किया है।

अध्याय 10

उपसंहार

पिछले पृष्ठो मे राजस्थान की वैविध्य पूर्ण हिन्दी पत्रकारिता का गत एक शताब्दि का जो इतिवृत्त लिपिबद्ध किया गया है और उसके क्रमिक विकास का जो विवेचन और विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, उसके आधार पर यह निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राजस्थान के अधिकाश समाचार पत्रो और पत्र-पत्रिकाओ ने विविध व्यवधानों और साधन-सीमाओं के बावजूद अपने दायित्व को निष्ठापूर्वक निभाया हैं। उन्होने न केवल लोकमत को अभिव्यक्ति दी है, अपितु उसके निर्माण मे भी अपनी सक्रिय भूमिका अदा की है। समाज की वेदना और सत्रास को वाणी देने तथा दमन और अत्याचारो के विरुद्ध आवाज बुलद करने और जन-कल्याण की दिशा मे मार्ग-दर्शन करने मे प्रदेश के कर्तव्यनिष्ठ पत्रकारो ने सदैव अपने साहस और दायित्व-बोध का परिचय दिया है। फिर भी इस दायित्व बोध के स्वरूप काल-सदर्भ मे आवश्यकताओ के अनुरूप परिवर्तित होते रहे हैं।

पत्रकारिता और पिछड़ापन

सामन्ती शासन के कारण राजस्थान जिस प्रकार जीवन के दूसरे क्षेत्रो मे भी अन्य प्रदेशो की तुलना मे पिछडा रहा है, पत्रकारिता के क्षेत्र मे भी उसे इसी स्थिति का सामना करना पडा है। बगाल, उत्तरप्रदेश और बिहार की तुलना मे यहा पत्रकारिता का श्री गणेश लगभग पचास वर्ष बाद हुआ और उसके बाद भी उसकी गति बडी शिथिल रही। प्रदेश मे पत्रकारिता के अभ्युदय मे होने वाले इस असाधारण विलम्ब और मन्द प्रगति के मुख्य कारण सक्षेप मे निम्न प्रकार माने जा सकते हैं।

1. हिन्दी प्रदेशो मे भी जो तथाकथित शिक्षित समुदाय और समाज का प्रबुद्ध वर्ग समझा जाता था, उस पर भी पहले फारसी और उर्दू का तथा बाद मे अंग्रेजी का प्रभाव पर्याप्त समय तक रहा। इस अल्प सख्यक समुदाय को छोड कर जो साधन सम्पन्न होने के कारण अपनी शिक्षा का प्रबन्ध करने मे समक्ष था, समाज का एक बडा वर्ग शिक्षा की सुविधाओ से वचित था और इसीलिये साक्षरता के प्रसार की विलम्बित गति ने स्वभावत पत्रकारिता के जन्म और विकास को भी प्रभावित किया।

2. हिन्दी पत्रकारिता का श्री गणेश होने के बाद यहा के पत्रो के आगे अग्रेजी की उन्नत पत्रकारिता का कोई आदर्श न होने के कारण लम्बे अर्से तक अलकृत भाषा के प्रयोग और जनता की आम फहम भाषा को अपनाने की प्रवृत्ति के प्रति उदासीनता की भावना ने भी इसकी प्रगति मे व्यवधान उत्पन्न किये।

3. बगाल और गुजरात मे जिन धार्मिक और सामाजिक आन्दोलनो के कारण वहा की भाषाई पत्रकारिता को प्रोत्साहन मिला, उनके प्रभाव से अन्य हिन्दी प्रदेशो की भांति राजस्थान भी बहुत लम्बी अवधि तक बेखबर रहा। इस प्रकार के आदोलनो ने राजस्थान को बहुत विलम्ब से प्रभावित किया।

4 चूंकि पत्रकारिता के प्रारम्भिक चरण मे उसके अधिकाश कर्णधार पडित बशीधर वाजपेयी, पड्याजी, गुलेरीजी और मनीषि समर्थदान जैसे साहित्यकार ही रहे, पत्रकारिता और साहित्य परस्पर एक दूसरे से ऐसे सश्लिष्ट रहे कि सूचना प्रधान समाचार पत्रो का जन्म और विकास वाछित गति से नही हो सका।

5 भारत के अन्य प्रगतिशील प्रदेशो के विपरीत राजस्थान मे साक्षरता की स्थिति बहुत दयनीय होने के कारण पाठको का मिलना दुष्कर था। यही कारण है कि उन्नसवी सदी मे तो यहा हिन्दी पत्रो का अस्तित्व कुछ अपवादो को छोड कर लगभग नगण्य सा रहा। राजकीय सरक्षण प्राप्त पत्रों को छोड कर, जिन प्रबुद्ध लोगो ने उस युग मे लोकधर्मी पत्रकारिता को अपनाया, उन्ह कितना भारी सघर्ष करना पडा हागा, इसकी कल्पना तो इसी तथ्य मे की जा सकती है कि ग्राहक बनाने के लिए भी अनेक पत्रकारो को इधर-उधर भटकना पडता था और अपने पत्रो की सामग्री पढ कर सुनानी होती थी। प्रारम्भ मे तो इन पत्रो के ग्राहक धनाढ्य और और अभिजात वर्ग के ही लोग थे, किन्तु बाद मे व्यावसायिक वर्ग के लोग भी वाणिज्य पर प्रभाव डालने वाले समाचारो के महत्व को दृष्टिगत रखते हुये पत्रो के ग्राहक बनने लगे।

6. सबसे बडा व्यवधान वह भातक्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था थी, जिसम टाइप राइटर तक रखने तक के लिए स्वीकृति लेनी पडती थी और सार्वजनिक कल्याण के लिए किसी सस्था को प्रारम्भ करने के लिये भी उसके कार्यकर्ताओ को कार्यालय मे अपने को शासन की दृष्टि मे असदिग्ध और राजभक्त दिखाने के लिए किसी राजा महाराजा की तस्वीर टागनी पडती थी।

राजनीतिक पत्रकारिता का योगदान

एक-दो अपवादो को छोड कर, राजस्थान म हिन्दी पत्रकारिता की बागडोर 1922–23 से पहले तक लगभग साहित्यिको के हाथ मे ही रही और वस्तुत राजस्थान सेवा सघ के बनने और तरुण राजस्थान के प्रारम्भहोने के बाद ही राजनीतिक पत्रकारिता ने अपनी जडें जमाना प्रारम्भ किया। इसके बाद तो उत्तरोत्तर पत्रो की सख्या मे वृद्धि होने लगी। किन्तु इन सभी पत्रो के सपादन से लगभग वे ही लोग सबद्ध थे, जो स्वाधीनता-सग्राम के सेनानी थे। इसलिये 1947 स पूर्व देश के अन्य भागो की तरह राजस्थान मे पत्रकारिता का मूलभूत लक्ष्य देश की स्वाधीनता के लिए सघर्ष करना और उसकी प्राप्ति के हर प्रयत्न को सबल प्रदान करना रहा। अरविन्द घोष की मान्यता थी कि राजनीतिक स्वतन्त्रता राष्ट्र की प्राण वायु है और इसकी अवज्ञा करके सामाजिक सुधार, शैक्षणिक सुधार, औद्योगिक विस्तार तथा नैतिक उत्थान के प्रयत्न निरी अज्ञानता के परिचायक हैं। राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्ति की इसी शीर्ष आवश्यकता को यहा के पत्रों ने अपना आदर्श रखा और इसकी प्राप्ति के लिये बडे से बडे सघर्ष मोल लेकर अपने तेजस्वी स्वरूप को प्रकट किया। 1923 से 1947 तक की अवधि वस्तुत राजनीतिक पत्रकारिता की दृष्टि से सर्वाधिक रूप मे महत्वपूर्ण थी। इस युग म न केवल राजस्थान के पत्रो ने देश के स्वराज्य आन्दोलन को सशक्त बनाने के लिये जन जागृति का शख फूका, अपितु देशी रियासतो मे होने वाले दमन, शोषण और अत्याचारो को समाप्त कर उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिये भी भरपूर प्रयत्न किये। बिजोलिया का किसान आन्दोलन, नीमूचाणा का हत्याकाड, देशी राज्य लोक परिषद् और प्रजा मण्डलो के आन्दोलन और न जाने कितने ही अन्य जन-आन्दोलनो ने राजस्थान म पत्रकारिता के माध्यम से अपने को पुष्ट बना कर निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति म सफलता प्राप्त की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी जब तक राजस्थान का एक राजनीतिक इकाई के रूप मे निर्माण नहीं हो गया यहाँ के पत्र और पत्रकार एकीकरण की प्रक्रिया मे बाधक तत्वो के विरुद्ध बराबर सतर्क रहे। इस भूमिका का एक पुण्य परिणाम यह हुआ कि पत्रकारिता साहस के साथ सम्मान की वस्तु बन गई और जिसने इस क्षेत्र मे कदम रखा, वही सम्मानित हो गया। प्रत्येक पत्र का सगठन, साहस, त्याग और बलिदान का प्रतीक बन गया और इसमे काम करने वाले व्यक्तियो को बडे

आदर और श्रद्धा के भाव स देखा जाने लगा। किसी भी पत्र के सम्पादकीय विभाग का व्यक्ति पत्र के सचालक अथवा सचालकों के समक्ष निरा वेतनभोगी कर्मचारी नही था, बल्कि वह देश और समाज की सेवा के इस यज्ञ म अपने आपको भागीदार मानता था। यदा-कदा मतभेद की स्थिति म त्याग पत्र देने पर भी उसे आजीविका की चिन्ता न हो कर दुख इस बात का होता था कि उसे देश सेवा के एक सम्मान-नीय अवसर से वचित होना पडेगा।

राष्ट्रीय चेतना के प्रसार मे इन पत्रो का कितना मूल्यवान योगदान रहा, इसका अनुमान इसी तथ्य स किया जा सकता है कि लार्ड कर्जन जैसे व्यक्ति ने भी कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह म भाषण देते हुये इस सत्य को स्वीकार किया कि देश के विभिन्न भागो म जन-जागरण लाने की दिशा म आधुनिक सभ्यता के युग मे सम्प्रेषण के इस सशक्त सयत्र ('माइटी एन्जिन आफ कम्यूनिकेशन") ने ऐतिहासिक भूमिका अदा की है।

स्वाधीनता प्राप्ति क बाद निश्चय ही देश के अन्य भागो की तरह राजस्थान मे भी पत्रकारिता एक मिशन न होकर व्यवसाय बन गई और बदली हुई परिस्थि-तियो के सदर्भ मे उसका स्वरूप और भूमिका भी बदल गई। फिर भी राजनीतिक चेतना लाने का उसका कार्य आज भी अपने ढग से जारी है।

इस बात की आज बहुत बडी आवश्यकता है कि प्रदेश मे जन-चेतना को प्रबुद्ध करने की दिशा मे पत्र पत्रिकाओ के योगदान का विशद् मूल्यांकन किया जाय और पत्र-पत्रिकाओ मे बिखरी उस सारी सामग्री का सरक्षण और अनुरक्षण किया जाय जिसने स्वाधीनता सग्राम के दौर म कोटि-कोटि जनता की भाव भूमि को नई स्फुरणा और चेतना से ऊर्जस्वित किया था।

समस्यायें और समाधान

आज राजस्थान म पत्र-पत्रिकाओ की जो विषम स्थिति है, उसके मूल मे क्या कारण है और उनका निवारण कैसे हो यह एक विचारणीय प्रश्न है। यदि लोक-शिक्षण और जनमत निर्माण क इस सशक्त माध्यम का लोकतत्री ढग से स्वस्थ विकास किया जाना है, तो जो समस्यायें हैं, उनका समाधान ढू ढना ही होगा। कुछ ऐसे मुख्य बिन्दु हैं, जो यहाँ विशेष रूप से चिन्तनीय हैं।

पडोसियो से प्रतिद्वन्दिता

राजस्थान के पत्रो के लिए दिल्ली और उत्तर प्रदेश की पत्र-पत्रिकाये सदा कठिनाई बनी रही हैं। दिल्ली के समाचार पत्र प्रदेश पर सदा छाये रहे। इसी प्रकार दिल्ली और इलाहाबाद के मासिक पत्रो की सदा धूम रही। यहा तक कि बगाल और बम्बई की पत्रिकाओ की आज भी धूम है। इन पत्र-पत्रिकाओ की

सामग्री और सजधज के आग राजस्थान की पत्र-पत्रिकाए कभी नही टिक पाई। पू जी की कमी के अलावा पत्रा का त्रुटिपूर्ण चयन रुचिपूर्ण सामग्री का अभाव प्रबन्ध पटुता को कमी आदि इसके मुख्य कारण है।

फिर भी यह हर्ष का विषय है कि इस सघर्ष से अब कुछ दैनिक समाचार पत्र अवश्य उभर कर ऊपर आये है। उनके सतत् प्रयत्नो ने पाठक की रुचि उनके सामग्री प्रस्तुतीकरण मे उत्पन्न की है। उनके अग्रलेखो से पाठका मे ज्ञानवर्द्धन का विश्वास जमा है और कुछ स्तम्भो के लिये पाठक लालायित रहन लगे हैं।

परन्तु *आज भी एक जागरूक पाठक के लिए राजस्थान का एक समाचार-*पत्र पर्याप्त नही होता। अभी वे अन्तर्राज्यीय और अन्तर्राष्ट्रीय समाचारो, लेखो व फीचरो को कागज या अन्य सुविधाओ क अभाव म पाठक को उतनी मात्रा म नही दे पा रहा है जिस मात्रा म गुजरात, बगाल या दक्षिण का एक पत्र अपने प्रदेश के पाठको को देता है। वहा के पाठक को अपना स्थानीय पत्र पढने के बाद दिल्ली का समाचार पत्र आवश्यक नही लगता। इसके स्पष्ट दो कारण है—राजस्थान मे समाचार पत्र पढने की अब तक की आदत और दूसरे राजस्थान मे हिन्दी के पत्रो का दिल्ली के हिन्दी पत्रो से व्यावसायिक सघर्ष।

जबकि दिल्ली म बैठ कर एक समाचार पत्र सात से आठ राज्यो म फैलाव की बात तुरन्त सोच सकता है, राजस्थान से निकलने वाला पत्र केवल राजस्थान मे ही अपने पाव जमाने की बात करता है। इस प्रकार एक छोटे पैमाने पर धन्धे की स्थिति आज भी उसी प्रकार सामने खडी है।

पत्रिकाओं का सघर्ष

ऐसी ही स्थिति का सामना प्रदेश की मासिक पत्र पत्रिकाओ को करना पड रहा है। हिन्दी और राजस्थानी भाषा को साहित्यिक पत्रिकायें 25 साल स सघर्षशील हैं पर प्रकाशक शायद एक को भी आत्म निर्भर नहीं बना पाय। ज्ञान और विज्ञान से सम्बधित कुछ अन्य पत्रिकाय वर्षो से सघर्षरत हैं। उनम सामग्री का स्तर और सरल प्रतिपादन वाछित उद्देश्यो की पूरी पूर्ति करता है परन्तु इस सब के बाद भी वे सकट ग्रस्त हैं। इन पत्रिकाओ का भी सीधा टकराव दिल्ली और बम्बई स पू जीपतियो द्वारा सचालित उन पत्र-पत्रिकाओ स है, जिनकी साधन सम्पन्नता का जादू पाठको पर बखूबी प्रभाव करता है। इन पत्रिकाओ के बारे म चिन्तन की आवश्यकता है। वित्तीय सस्थाओ द्वारा ऋण तथा राजकीय सरक्षण द्वारा उनकी आर्थिक कठिनाइयो को दूर करन की बात सोचना आवश्यक है।

समाचार सेवायें

दैनिक पत्रो का सीधा लक्ष्य ताजा समाचारो को पाठक तक पहुचाना है। इनक लिए समाचार एजेंसिया काम भी कर रही हैं। अब अग्रेजी सेवाओ

की तरह हिन्दी मे भी सेवायें उपलब्ध है। इसस राज्य के हिन्दी दैनिकों को देश के समाचार प्राप्त करने मे सुविधा हुई है। परन्तु साप्ताहिक अभी इस प्रकार की सेवायें राज्य मे प्राप्त करने से वचित रहे हैं।

एक साप्ताहिक का आधार मूल रूप से समाचार देना न होकर सम सामयिक घटनाओं की चर्चा, उनका विश्लेषण और व्याख्या है। परन्तु इस प्रकार के लेख, फीचर उपलब्ध कराने वाली कोई एजेन्सी नहीं है। राज्य म इस प्रकार के प्रयास हुए हैं पर वे ऐजेन्सियाँ इसलिए बन्द हो गई कि उनकी सेवायें किसी साप्ताहिक ने नही ली या ली तो उसका सेवा का मूल्य समय पर नही चुकाया।

सरकारी सूचना सेवाएँ

यह हर्ष का विषय है कि इस सम्बन्ध मे केन्द्र और राज्यो की सूचना सेवाए इस अभाव की पूर्ति की दिशा मे इधर काफी सचेष्ट हुई हैं। इस बात का समझने की आवश्यकता है कि पत्रकार और प्रेस सूचना सेवाये एक ही क्षेत्र मे काम करने वाले दो सहयोगी पक्ष हैं। इनके कार्य क्षेत्र अथवा गतिविधिया म किसी प्रकार का भी विरोध अथवा असगति नही। दोनो का काम जनता तक समाचार पहुचाना और एक स्वस्थ लोकमत का सृजन करना है। इस काम मे पत्रकार समाचारो के सकलन और सम्पादन द्वारा योग देते हैं। इसलिये सरकार के लिये यह आवश्यक है कि समाचार पत्रो को वे तमाम सुविधायें जुटाये जो पत्रकारो को समाचार सकलन करने के लिय आवश्यक है। राज्य सूचना सवाओ और सवाददाताओं के कार्य मे एक मूलभूत अन्तर यह है कि सूचना सेवाएँ अपनी सामग्री किसी पत्र विशेष को न भेज कर सभी को समान रूप से भेजती हैं।

कई बार यह शका की जाती है कि मे वास्तव मे राज्य सूचना सेवाओ की कोई आवश्यकता भी है कि नही। कई एक पत्रकारो का मत है कि सूचना अधिकारी समाचारो के स्वतन्त्र प्रवाह को अवरुद्ध करते है। समाचार सकलन मे पत्रकारो की स्वतन्त्र प्रतिस्पर्द्धा से कई एक ऐसे समाचार निकल सकने है जो सूचना अधिकारियो क अनधिकृत हस्तक्षेप से रुक जात हैं। यह धारणा भ्रमजन्य है। पत्रकारो की प्रतिस्पर्द्धा और समाचार सकलन की होड म कई बार राष्ट्री व समाज के सामूहिक हितो को क्षति पहुच सकती है, इसे रोकना प्रेस सूचना सेवाओं का काम है। प्रेस सूचना कार्यालयो द्वारा वितरित सामग्री से छोटे-छोटे और साधनहीन समाचार पत्रो का बहुत काम चल जाता है और बडे-बडे और सम्पन्न समाचार पत्रो को समाचार सकलन और लेखन की नई दिशाओं का ज्ञान होता है, जिससे पत्रकारिता का स्तर उत्तरोत्तर प्रगति करता रहता है।

जिला स्तरीय पत्रो की विशेष कठिनाइयाँ

इस सन्दर्भ म सबसे चिन्ताजनक स्थिति उन पत्रो की है, जो जिलो से प्रकाशित होते ह और जिनका प्रचार-प्रसार मुख्यत अपने ही क्षेत्र तक सीमित रहता हैं। पीत पत्रकारिता म प्रवृत्त अवांछनीय तत्वो द्वारा सचालित पत्रो के अलावा इन क्षेत्रो से ऐसे पत्र भी निकल रहे है, जो समाज की उपयोगी सेवा कर रहे हैं। वस्तुत समाजवादी अर्थव्यवस्था की ओर उन्मुख वर्तमान सामाजिक ढाचे के परिवर्तन मे ऐसे लघु पत्रो का महत्व सर्वाधिक है। ये पत्र ग्रामीण जनता मे, एक ओर जहा आगे बढने की प्रवृत्ति पैदा करत है, वही दूसरी ओर उनकी शैक्षणिक, सास्कृतिक आवश्यकताओ की पूर्ति भी करते है। किन्तु उनकी आर्थिक विपन्नता उन्ह उत्साह के साथ अपना कर्त्तव्य पालन करने मे बाधा डालती रहती है। अत समय की माग है कि इन लघु पत्रो की आर्थिक स्थिति सुदृढ बनाने के लिए नए ढग से प्रयास किये जाए और ऐसे ठोस कदम उठाये जाए जिसस वे भी अपने क्षेत्र की सामाजिक एव सास्कृतिक प्रगति म और अधिक सार्थक भूमिका निभा सकें।

प्रदेश के अनेक जिलो स अब दैनिक समाचार पत्र भी प्रकाशित होने लगे हैं। इनकी आवश्यकता इसलिए पडी कि बडे नगरो से निकलने वाले बडे पत्रो मे जिलो के ग्रामीण अचलो के समाचारो की या तो उपेक्षा होती है अथवा उन्हे स्थान ही नही मिल पाता। यदि कोई समाचार निकलता भी है तो बहुत विलम्ब से।

जिला स्तर के दैनिक पत्रो मे 12 से 24 घण्टे के अन्दर ही जिले के कौने-कौने के समाचार प्रकाशित हो जात हैं और उनकी जानकारी जनता और अधिकारियो को तुरन्त हो जाती है। इस सन्दर्भ म यह कहना अत्युक्ति नही कि जिले के प्रत्येक अचल म प्रशासनिक व्यवस्था विद्यमान होने के बावजूद जिल के अधिकारियो को अनेक घटनाओ की जानकारी समाचार पत्रो का पढने के बाद ही होती है। तभी वे जाच पडताल शुरू कर पात है अथवा अपने उच्चाधिकारियो तक उन घटनाओ की सूचना दे पात हैं। इस प्रकार जिला स्तर के ये दैनिक पत्र जनता और सरकार दोनो ही बहुमूल्य सेवा कर रहे है। किन्तु ऐसा करने मे इन पत्रो को जो जोखिम उठानी पडता है या कठिनाइयाँ सहनी पडती हैं उनकी ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। कभी उन्ह असामाजिक तत्वो का कोपभाजन बनना पडता है तो कभी आंचलिक अधिकारियो की प्रताडना सहनी पडती है। प्रभावशील व्यक्तियो द्वारा अवांछनीय सामग्री का प्रकाशनार्थ भेजने के लिए सवाददाताओ पर जिस प्रकार से दबाव डाला जाता है। और सही समाचारो को भेजने पर जिस कदर धमकियाँ दी जाती है, वह आज सर्वविदित है। फिर भी इन बातो की कम ही परवाह कर ये

पत्र अपने अवैतनिक किन्तु निष्ठावान सम्वाददाताओं के बल पर अपना कर्त्तव्य पालन करते रहने के लिए कृत सकलल्प हैं।

इन पत्रों के द्वारा प्रतिदिन की घटनाओं तथा विकास कार्यों की जानकारी होने के साथ-साथ ग्रामीण पाठकों में ज्ञानार्जन की अभिरुचि भी पैदा होती रही है। इनके माध्यम से कृषि विषयक लेख तथा उपयोगी कृषि समाचार भी उन्हे पढने को मिल जाते है। इस प्रकार ये जिला स्तरीय दैनिक पत्र अपनी वर्तमान भूमिका द्वारा एक बडी ही जटिल और कठिन सामाजिक सेवा तथा ग्रामीण अचलो के सास्कृतिक उत्थान का कार्य कर रहे है। अत. इन जिला स्तरीय दैनिक पत्रों का अस्तित्व बने रहना शासन के हित और जनहित म भी उतना ही आवश्यक और महत्वपूर्ण है जितना स्वय इन पत्रो के हित म। अत. इन विशेष स्थिति के पत्रों के सम्बन्ध मे इनकी समस्याओं और कठिनाइयों पर अलग से और कुछ अधिक सवेदनशील ढग से विचार किये जाने की आवश्यक्ता है।

जहा तक साप्ताहिको का सम्बन्ध है, जिला स्तरीय दैनिको की तुलना मे उनकी आर्थिक कठिनाइया प्रकटत उपयोगिता के आधार पर अधिक हो गई हैं। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि जिस प्रदेश मे दैनिक पत्र पनपने लगत हैं, साप्ताहिको की वाणिज्यिक कठिनाइया बढती हैं। सामाजिक प्रभाव भी कम हो जाता है जब तक कि किसी साप्ताहिक की अपनी उल्लेखनीय विशेषतायें ही न हो।

दिल्ली और बम्बई के साप्ताहिको के प्रभाव के बीच छोटे पैमाने पर विशेषता पनपाना आर्थिक दृष्टि से साधारणत सम्भव नहीं हो पाता।

इस कशमकश मे या तो पत्र अपने को जीवित रखने के सघर्ष मे ऐसे नये क्षेत्र ढूढता है जहा तक पहुचने म दैनिक पत्र अपनी ताजगी खो देता है या दैनिको से अधिक आकर्षण पैदा करने म इसे सनसनी खेज समाचारों की टोह रहती है।

"राजस्थान मे साप्ताहिको ने कडे सघर्ष के साथ दोना मार्ग अपनाये हैं। यह निर्विवाद तथ्य है कि सार राजस्थान में किसी समाचार, सूचना या सन्देश को केवल दैनिक पत्रो के सहारे दूरस्थ स्थानो तक नहीं पहुचाया जा सकता। इसके लिए सामूहिक रूप से साप्ताहिकों और पाक्षिको की मदद लेनी ही होगी। किन्तु इसके लिए उन्हे समर्थ बनाना होगा।[1]

---

1 श्री छत्रपतिसिंह, हिन्दुस्थान समाचार स्मारिका, 1975, पृ० 122-23

परिशिष्ट-1

राजपूताना-मालवा टाइम्स के विरुद्ध बाबू कान्तिचन्द्र मुकर्जी द्वारा दायर किये गये मान हानि के दावे की प्रतिलिपि

In the Court of H V COBB, Esq , *C S*, *District Magistrate of Ajmere.*

CRIMINAL JURISDICTION

The QUEEN-EMPRESS at the instance of Rai Bahadur Kanti Chander Mukerji, C I E

Plaintiff

Versus

(1) Bakhshi Lachhman Dass resident of the city of Ajmere, and (2) Sayed Mumtaz Ahmad, resident of the city of Ajmere ... Defendants

Charges under Sections 500, 501, 502 and 109 of the penal Code

THIS PETITION SHEWETH—

(1) That the above named complainant is the chief member of the Council of His Highness the Maharaja of Jeypore, and held *that office at the time of the publication of the defamatory matters* hereinafter complained of

(2) That the accused No 1, Bakhshi Lachhman Dass, is the proprietor, manager printer and publisher of the "Rajputana Malwa Times" and held these offices at the time of the publication of the defamatory *matters hereinfter* complained *of,* or he held and holds some one or more of the above-mentioned positions

(3) That the accused No 2, Sayed Mumtaz Ahmed, was described as being the printer and publisher of the aforesaid 'Rajputana Malwa Times" for the proprietor in the issues filed herewith of the said paper and dated respectively the 20th July, 1896, and the 2nd and the 9th of November, 1896.

(4) That accused No 1, shortly before the 24th day of February, 1896, visited the abovenamed complainant at Jeypore and employed various arts, blandishments and threats in order to obtain money from and through the instrumentality of the complainant as and for hush money, and gave the complainent at the same time to understand that if the said hush money was not paid to or procured for him that he being in possession of certain documentary and other information which was highly prejudicial to the credit of the administration of the Jeypore State and of the complainant would publish the same in the "Rajputana Malwa Times', and furthermore the said accused intimated to the complainant that in default of payment to him by the complainant of hush money as aforesaid . he would publish or cause to be published of and concerning the complainant va ious defamatory matters in the 'Rajputana Malwa Times "

(5) That the complainant indignantly refused to accede to the request of the accused and ended the interview forthwith by ordering the accused No 1, out of the house and forbade him from again visiting him on any pretence whatsoever

(6)T hat on the 24th day of February 1896, the complainant communicated the facts concerning the above-mentioned visit of the accused No 1, set forth in para 4 of the complaint to Colonel V E Law, the British Resident at Jeypore

(7) That thereafter the accused Nos 1 and 2, to wit the said Bakhshi Lachhman Dass and Sayed Mumtaz Ahmed, caused to be printed and published, and printed and published certain defamatory matters concerning and of the complainant

(8) That the complainant charges the said accused that they on or about the 20th day of July, 1896, in the issue of the "Rajputana Malwa Times" of that data did at Ajmere defame the

complainant by causing to be printed and published and by printing and publishing the following defamatory articles to wit—

'We should invite the attention of His Highness the Maharaja Jaypore as well as of the Agent to the Governor-General Ra putana that Rai Bahadur Kanti Chander is too old now to be intrusted with the arduous task of the administration of the Jeypore State as he has passed his sixtieth year At that age a man can hardly be expected to show signs of vigour energy and enthusiasm of his earlier age It is for this reason if for nothing else that the Government pension off their servants and officials before they attain the good old age of sixty More than two years ago Colonel Peacock the British Resident at Jeypore had given a friendly advice to the Durbar of Jeypore for the removal of Kanti Chander and even went so far as to report the matter to the Agent to the Governor General Again Colonel Trevor in a personal interview with His Highness informed the *Maharaja* about the subject At the time it was quite settled that Rai Bahadur Kanti Chander was to continue in the office for two years more after which period he should be made to retire The two years have already passed away and the Rai Bahadur is still in full charge of the administration of the State Since the last two or three years all the local papers have made a determined stand against the Babu and have not failed to shower forth sharp criticisms upon his conduct of affairs The Rai Bahadur has hardly got any voice in his favour within recent times We are of opinion that nearly 90 per cent of the *jagirdars* 80 per cent of the officials and 80 per cent of the bankers and other subjects of Jeypore are always ready to vote against Babu Kanti Chander s management of the State affairs Notwithstanding the fact that the Raja of Ketri had some frailties of his own to account for the fell disease he suffered from some months back it was Babu Kanti Chander who was mainly instrumental in causing that severe brain affection which that popular Raja had unfortunately contracted for so many months and for which he had to pay so dearly on hearing the *false fabricated and groundless statement made by the Rai Bahadur against him of mixing with the Thakur of Surajgarh*

Colonel Law the Resident from whose lips the Raja we are informed came to know of such unfounded statement was informed by the Babu and one of his favourites holding a high position in the State service through him This favourite of the Rai

Bahadur is always working underneath and now and then informs the Resident whatever he is taught by his patron

We are extremely surprised that the Jeypore Durbar should entertain the services of a Minister who is embued with such bitter feelings against everything passing within the State If His Highness the Maharaja thinks that such an experienced Minister like Babu Kanti Chander could hardly be found there He is surely sadly mistaken The Rai Bahadur has nearly run the all circle of his life He does not bestow a little thought upon the subject even now, that his first and important duty is to please the subjects and his master s power of arms brothers *jagirdars &c* In so old an age we are of opinion that an Indian brain cannot work properly If Pandit Suraj Kul can be retired from the Kashmere State Service then there is no reason why Babu Kanti Chander should not be made to retire from the service taking his age and his present want of ability into consideration He may be allowed a handsome pension and be asked to retire from the service in which he is unable to work with satisfaction to those concerned with the weal and prosperity of the Jeypore State

(9) That the complainant charges the accused that they on or about the 2nd day of November 1897 in the ' Rajputana Malwa Times of that date did at Ajmere defame the complainant by causing to be printed and published, and printing and publishing the following defamatory matters *to wit* —

' One word about Rai Bahadur Kanti Chander Mukerji the Prime Minister of Jeypore seems to us extremely necessary in this connection Babu Kanti Chander, although has run up gray hairs in the State service, has signally failed to please his own subjects owing to his adoption of selfish principles and an internal policy in the political administration of the principality entrusted to his care From the very commencement of his career as Prime Minister his deliberate aims have been to centralise in himself all authorities and influences in the State and take an exclusive possession of the Maharaja s heart by dividing the Royal house against itself, and it must now be stated to be a patent fact that he by ingratiating himself into His Highness' favour through foul means or fair, has eminently succeeded in carrying his ignoble design into practical

tration of the Jeypore State But with all deference to his respected authority we do most earnestly ask our present Agent to the Governor General what are the principal elements that constitute an excellent or prosperous regime or, in short what is his definition of a really beneficent rule ? We are not at all sanguine whether our humble opinion would agree with that of his We are not at all sanguine whether understanding stretches in this direction, one essential circumstance that stands at the botton of all sound administrations of all flourishing Governments is winning the hearts of its subjects and seeking their prosperity and general weal The people must consider their ruler as living in themselves for themselves and by themselves before any State can aspire to the honored appellation of a wisely governed principality, such is at least our view of an excellent administration with which Mr Crosthwaite seems to flatter the present Prime Minister of Jeypore But has our worthy Agent Governor General even for a moment taken into his serious consideration this bare fact at the time of his preparing the Jeypore Administration Report ? We have grave doubfs on the point Has he enquired whether even the smallest section of the entire Jeypore subjects is favourably disposed with Baub Kanti Chander s management of State affairs ? We can almost assure Mr Crosthwaite that he must have placed all common sense within his pocket before holding his pen to eulogize Rai Kanti Chander in the fashion he did in the Report It is now an open secret that the Prime Minister by his personal eccentricities has literally created a host of enemies within his own territories commencing from the very richest and most influential of Thakurs and Sardars and ending in the very poorest and humblest of peasants The intermediate ranks of bankers and others cherish an implacable hatred for him on account of his most *abject venality* and harsh treatment with them Babu Kanti Chander is all in all within the State he is to all intents and purposes the Chief of Jeypore , the Council is but a sham mockery and the position of the titular Maharaja is nothing better than that of a tool in the hands of the Prime Minister to accomplish his own selfish ends He is practically the ruling despot in the land with the Resident Colonel Law and the Maharaja himself as his right and left arms by which he strikes terror into the hearts of all individuals far off or near about or around The people inhabiting Jeypore and its adjoining feudatories have got no other alternative but to drag on a course of miserable existence under the

undisputed sway of Babu Kanti Chander They shudder at the merest sight of their Prime Minister whose heart is but a forbidden ground to *all honesty and sense of justice* Even the meanest private grudge he does not disdain to with an unduly severe Stale punishment, and instances are not rare of such unworthy policy on the part of the said Kanti Chander In the internal administration of the State his determined effort being, as we have reiterated more than once in our columns, to keep the Royal house divided against itself the only inevitable consequence has been the creation of some internal factions in o der that he might be able to wield his uncompromising influecne all the more powerfully By foul means or fair he has got the Maharaja perfectly within his control and even in his advanced old age he is deliberately intent upon holding it over the Jeypore soil without feeling even the least compunction for the besetting sins of past years

' Wonderful is the Prime Minister whom no amount of barbarity and cruel despotism yields any surfeit, wonderful is the Maharaja himself who never feels sick of the overpowering influence under which he is constrained to live move and have his being, and wonderful is the Resident Colonel V E Law who is ever ready to pamper Babu Kanti Chander s evil genius with his lignominiously accommodating temperament ? We are extremely astonished that whatever the Prime Minister proposes the State Council passes blindly, and the Resident takes care to lend his special support to the measure No 'ifs and buts' can ever be pronounced against Babu Kanti Chander's conduct of affairs Whatever he might do he is perfectly right Can it be that the worthy Resident is unable to scrutinize the merits of the Minister s workings or is it that understanding everything he sleeps over and even connives at them simply for his own personal aggrandisement ? 'There must be something rotten in the State of Denmark', cried Shakespear through the mouth of one of his best heroes in his immortal Drama of *Hamlet* , and the present state of affairs in Jeypore necessarily puts into our mind the same scenes, and naturally leads us to conclude that Jeypore might very truly be compared to a Sink where despotism of a Prime Minister is simply unparalleled (*sic*) *Mr.* Chosthwaite has informed the public that the long-standing case of Udaipurwali Bhumiahs has been settled It takes us by *surprise* how could the Agent, Governor-General, disseminate *incorrect*

about the whole affair! The Resident has dared not to put into black and white so unpleasant fidings as that the contentious case remains as undecided as ever He only pens a line to the effect that a fresh petition has reached me since this was written but the higher authority of Mr Crosthwaite without taking any note of it *definitely lays down that all disputes are over* The real position of the Udaipurwali Bhumiahs is not at all touched in the Report presumably with a view to hush up the matter But unfortunately for the endeavours of our authorities the Bhumiahs grievances can hardly be left in utter neglect any further If the petition of some twenty to twnty five thousand Bhumiahs against the oppression and tyranny of the Jeypore Prime Minister is unable to speak much about his administration we do not quite see what would be the significant features of a chronic misgovornment We have repeatedly asked the Maharaja Sahib to be a little cautious about his dealings with the Prime Minister If His Highness continues to be so much unmindful of the sufferings of his own State subjects matters are sure to come to a head and we can almost assure the Maharaja that time is not far distant when a terrible catastrophe would visit his dominion His Highness should take heed that internal dissensions are the producers of all serious evil Dynasties and Dynasties have been shattered to wreck and ruin the gigantic Roman Empire has been dismembered and the deep rooted Mahomedan Rule vanished into thin air for the same reason Civil hostility must be made up anyhow for that is the remarkable pitfall where all administrations are drowned to destruction if no special cares are taken to avaid it We hope the Maharaja would be guided by reason s call in all his future admininistraive policies and would see his way to dispose of the Ministerial portfolios in some impartial and able hands in the State service

(11) That the said accused No 1 Bakhshi Lachnman Das is responsible in any event as proprietor of the Rajputana Malwa Times for the printing and publishing of the defamatory matters above set forth as also the printer and publisher for their print and publication

(12) That the complainant avers that the said accused Bakhshi Lachhman Dass and Sayed Mumtaz Ahmed have by the prints and publications aforesaid been guilty of offences under Sections 500 501 502 and 109 of the Indian Penal Code and

have falsely and maliciously defamed him, and the complainant prays that warrants for the arrest of the accused may be, in the ordinary course, issued, and that they may after trial be punished according to Law.

(Sd.) KANTI CHANDER MUKERJI. *Chief Member Jeypore State Council*

(Sd) W. M, COLVIN, *Counsel for Complainant.*

14th January, 1897.

(Sd) SUKHAN LAL, *Vakil, High Court.*

Certified to be a true copy.

(Sd.) MITHUN LAL, *Head Clerk, Assistant Commissioner's Office Ajmere.*

उक्त मुकदमे पर डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट मिस्टर एच. वी कॉब द्वारा दिये गये निर्णय का हिन्दी सार-सक्षेप :

"मैं यहा अपना यह निष्कर्ष भी लिपिबद्ध करना चाहूगा कि वादी के लम्बे और विस्तृत 'क्रास एक्जामिनेशन' के दौरान भी ऐसी कोई बात प्रकट नही हुई जिससे सिद्ध होता कि उसने कौंसिल से अलग, स्वतन्त्र रूप से कोई कार्यवाही की या अनुचित और अवैधानिक रूप से कोई कदम उठाया। प्रतिवादी की, जहा तक मैं समझ पाया हू, यही जताने की कोशिश थी कि किन्ही मामलो मे जयपुर सरकार ने बाबू कान्तिचन्द्र मुकर्जी के माध्यम से पक्षपात और अन्याय किया, लेकिन वह साबित कुछ भी नही कर पाया। यह मान भी लिया जाय कि एक-दो मामलों में जयपुर सरकार ने ठीक काम नही किया, फिर भी वादी पर व्यक्तिश कोई आरोप लगाने या उसे बदनाम करने का कोई आधार नहीं बनता। वादी का पूरे सात-घन्टे तक कडा 'क्रास एक्जामिनेशन' हुआ है और ऐसे-ऐसे सवाल पूछे गये है जो बदनीयत से पूछे जा सकते थे, किन्तु न्यायालय की राय मे उनका एक ही परिणाम निकला और बचाव पक्ष या प्रतिवादी ने जो भी मामला उठाया था, वह एकदम खोखला निकला। मैंने 'बदनीयत' शब्द का प्रयोग पिछले वाक्य मे जानबूझकर किया है क्योकि अपने 'क्रास एक्जामिनेशन' के दौरान प्रतिवादी ने यह आरोप लगाने तक मे सकोच नही किया कि रियासत द्वारा सरक्षित एक युवा सरदार के धन का अपहरण करने के बाद वादी ने या तो स्वय उसे मार डाला या उसकी हत्या की साजिश की। इस अवाछनीय आक्षेप के लिए प्रतिवादी को रोका गया और उसके वकील का ध्यान इण्डियन एवीडेन्स एक्ट की धारा 149 की ओर आकर्षित किया गया, लेकिन न्यायालय की इस चेतावनी के बावजूद इस मामले को आगे चल कर फिर उठाने का

जान बूझ कर प्रयत्न किया गया। ऐसे हथकण्डे अपने आप मे निन्दनीय हैं और मुझे इसम कोई टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नही है।

"इस लम्बे फैसन को मैं वादी के सम्बन्ध मे कुछ शब्द कहे बिना समाप्त नही कर सकता। बाबू कातिचन्द्र अब 60 साल से ऊपर है और वर्षो से वे जयपुर रियासत मे बडी ऊची हैसियत मे रहे हैं। जयपुर के महाराजा और ब्रिटिश सरकार, दोनो ही ने उनकी विशिष्ट सेवाओ को सराहते हुए सम्मानित किया है। उन पर जो भी आक्षेप लगाये गये, बचाव पक्ष की लीपापोती के लिए ही लगाये गये जिनसे यह भी जाहिर नही होता कि उनकी दीर्घ राज्य सेवा की किस अवधि से इनका सम्बन्ध हैं। प्रतिवादी ऐसा एक भी उदाहरण देने मे असफल रहा है जिसमे वादी का दुराचरण सिद्ध हाना हो या उसकी कार्यवाही का अनौचित्य प्रकट होता हो। यह अपने आप म वादी की निष्ठा, ईमानदारी और निष्पक्षता का एक ठोस प्रमाण है। यह मामला दायर कर—और ऐसा वादी ने जयपुर के महाराजा की इच्छा से ही किया—वादी ने इस न्यायालय की राय मे अपने देशवासियों का धन्यवाद अर्जित किया है, विशेषत: उन लोगो का जो भारतीय पत्रकारिता के सर्वोत्तम हितो की रक्षा करने के पक्षधर हैं।"

परिशिष्ट-2

।।श्री एकलिंगजी।। श्रीरामजी

इश्तिहार मजरिया राज श्री महकमहखास श्री दर्बार उदयपुर मुल्क मेवाड़
मकूमा द्वितीय जेठ सुदी 7 ता० 21 जून सन् 1923 ई० स० 1979
नम्बर-10433

गुजिश्ता चन्द सालो से प्रताप, राजस्थान-केसरी, व नवीन राजस्थान नामी हिन्दी हफ्तेवार व रोजाना अखबारो मे खिलाफ वाकेआत वा मुगालता आमेज मजामीन शाया किये जाते हैं, जिससे कमफहम लोगो को मुगालता होता है और कितने ही मजामीन इस किस्म के पुर जोश अलफाजो मे लिखे जाते हैं जिससे सरासर शाया करने वालो का इरादा यह पाया जाता है के अहालियाने रियासत के निस्बत आम लोगो की तबीयत मे नफरत व हिकारत के खयालात पैदा हो और बद अम्नी फैले वा हुक्म जायज की तामील मे बेपरवाही और गुजारी मे रोक अमल मे आवे इसलिये यह मुनासिब ख्याल किया जाता है कि इन अखबारो की आमद कतई तौर पर इलाके मेवाड मे बन्द किया जावे। लिहाजा जरिये इश्तिहार हाजा हर खास व आम को आगाह किया जाता है कि आयन्दा अगर किसी शख्स का 'प्रताप' 'राजस्थान केसरी' और 'नवीन राजस्थान' अखबारो का मगाना या किसी के पास इन अखबारो का मौजूद होना या इन अखबारो का कटिंग (कटा हुआ मजमून) या हैंडबिल पाया जावेगा तो वह सजा का मुस्तोजिब होगा जिसकी मयाद एक साल कैद सख्त वा 1,000 00 एक हजार रुपया जुर्माना तक होगा। फखत

प्रभाशचन्द्र चटर्जी

HOME DEPARTMENT

Notification

Dated Jaipur, the 18th July, 1936

No 5327-H/G.-14-107 --It is here by notified for general information that the Council of State has decided that the

(1) Keeper of a Printing Press, and

(2) Printer and/or Publisher of a Newspaper or Periodical, should file his Declaration in the following prescribed form, and that declaration on this form should be obtained from the—

(a) *Keepers of all existing Printing Presses in the State of* Jaipur and of those to be opened here after; and

(b) Printers and Publishers of all existing news papers and periodicals in the Jaipur State and of those to be started here after

2. All concerned are here by directed to act accordingly. The Declaration should be filed in the Court of the Magistrate of the District in which the Printing Press is situated or the news paper or periodical is published In the case of Printing Presses situated in Jaipur City and of news papers and periodicals published in Jaipur City, the Declaration should be filed in the Court of the City Magistrate (Faujdar)

3 Copies of the printed Form of Declaration can be obtained from the office of the Inspector-General of Police, the City Magistrate or the District Magistrate

Declaration to be filed by the—

(a) Keeper of a Printing-Press,

(b) Printer and or Publisher of a Newspaper or Periodical,

Government established by law in British India or/the Government of Jaipur, or the administration of justice in British India or Jaipur State, or any class or section of His Majesty's subjects or of His Highness's subjects, or to excite disatisection towards His Majesty the King-Emperor or His Highness the Maharaja of Jaipur or the said Governments, or

(c) to put any person in fear or to cause annoyance to him and there by induce him to deliver to any person any property or valuable security or to do any act which he is not legally bound to do, or to omit to do any act which he is legally entitled to do, or

(f) to encourage or incite any person to interfere with the administration of the law or with the maintenace of law and order, or to commit any offence, or to refuse or defer payment of any land-revenue, tax, rate, cess or other due or amount payable to the Government established by law in British India or the Government of Jaipur or to any local authority in British India or Jaipur State

[Extract true why]

/ This blank should be filled up with a trne and precise description of the place where the work of printing or publication of the newspaper or periodical is conducted

परिशिष्ट–3

राजस्थान से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रो की सूची

मेर जिला

मारतभूमि, दैनिक, अजमेर
हिन्दू, दैनिक, अजमेर
याय, दैनिक, अजमेर
नवज्योति, दैनिक, अजमेर
क्टेटर साप्ताहिक ब्यावर
रदूत, साप्ताहिक, ब्यावर
ाजाद, साप्ताहिक, अजमेर
ार्यप्रेमी, साप्ताहिक, अजमेर
ाजाद हिन्द, साप्ताहिक, अजमेर
ादित्य कैतु, साप्ताहिक, अजमेर
ादिवासी जागृति, सा०, अजमेर
रबार, साप्ताहिक, अजमेर
ैन गजट, साप्ताहिक, अजमेर
राष्ट्रभूमि, साप्ताहिक, अजमेर
राष्ट्रवाणी, साप्ताहिक, अजमेर
ल्वैमैन, साप्ताहिक, अजमेर
वीर विजय, साप्ताहिक, अजमेर
मिहद्वार, साप्ताहिक, पुष्कर
हल्दीघाटी, साप्ताहिक, ब्यावर
ानून, साप्ताहिक, अजमर

21 अमरलाज, साप्ताहिक, अजमेर
22 किशनगढ, एक्सप्रेस, किशनगढ
23 जयहिन्द, साप्ताहिक, अजमेर
24 रविश, साप्ताहिक, अजमेर
25 वीकली ट्रासपोर्ट एक्सप्रेस, साप्ताहिक, किशनगढ
26 साईकिल समाचार, अर्द्ध० सा० अजमेर
27. अभयघोष, साप्ताहिक, अजमेर
28 हरी रोशनी, साप्ताहिक, अजमेर
29 ख्वाजा अजमेर, सा०, अजमेर
30. सजय एक्सप्रेस, सा०, अजमेर
31. आता ए-रसूल, सा०, अजमेर
32 लाल कलम, सा०, अजमेर
33 ब्यावर एक्सप्रेस, सा०, ब्यावर
34 युवा राजस्थान, सा० अजमेर,
35. लगन एक्सप्रेस, सा०, अजमेर
36 गरीब प्रचार, साप्ताहिक, अजमेर
37 अजयपाल, साप्ताहिक, अजमेर

38. लवाना जागृति सदेश, साप्ताहिक, अजमेर
39. हिन्द भूमि, साप्ताहिक, अजमेर
40 उजाला, साप्ताहिक, अजमेर
41 सीधी टक्कर, साप्ताहिक, अजमेर
42 जालिम, साप्ताहिक, ग्राम नाद (पुष्कर)
43 निम्बाई पाक्षिक, किशनगढ
44 मयूर, पाक्षिक, अजमेर
45 राष्ट्रीय एकता, पाक्षिक, ब्यावर
46 सिने पत्र, पाक्षिक, अजमेर
47 अहिंसक लोकतत्र, पाक्षिक, अजमेर
48 हमराही, पाक्षिक, अजमेर
49 युवा छात्र टाइम्स, पाक्षिक, अजमेर
50 न्याय की पुकार, पाक्षिक अजमेर
51 जैन ज्योति, पाक्षिक, अजमेर
52 सीला सिने सहयोग, पाक्षिक, अजमेर
53 भभक, पाक्षिक, अजमेर
54 नसीराबाद मिशन स्कूल, मा०, नसीराबाद
55 आर्य प्रेमी मा०, अजमेर
56 आदर्श विद्यालय मैगजीन, मा०, अजमेर
57 कालेज टाइम्स, मासिक, अजमेर
58 गुर्जर गौड सदेश मासिक, अजमर
59 ग्रामहित, मासिक, अजमेर
60 मियो कालेज मैगजीज, पाक्षिक, अजमेर
61 मीरा मिडिल स्कूल मैगजीज, मा०, अजमेर
62 परोपकारी, मासिक, अजमेर
63. प्रबुद्ध अम्बेडकर, मासिक, अजमे
64 सुल्तान-एल हिन्द, मासिक, अज
65. सैन्ट मैरीज यूथ फैलोसिक, मासि अजमेर
66 सविता, मासिक, अजमेर
67 समग्र सेवा, मासिक, अजमेर
68 सम्यक दृष्टि, मासिक, अजमेर
69. स्वास्थ्य, मासिक, कालेडा
70 लहर, मासिक, अजमेर
71 वैष्णव ब्राह्मण मार्तण्ड, मासिक अजमेर
72. वीर रावत, मासिक, अजमेर
73 राजस्थान माध्यमिक परीक्षा, मासिक, अजमेर
74. सेन्ट पाल्स पत्रिका, मा०, अजमेर
75 राज्य कर्मचारी सदेश, मासिक, अजमेर
76 काग्रेस समाचार, मासिक, अजमेर
77 इडियन कार्माशयल टैक्स ला मासिक, अजमर
78 भारतीय व्यापार टैक्स, मासिक, अजमेर
79 बाहुबली सदेश, मासिक, नसीराब
80 भारतीय रेल्वे विद्युत पत्रिका, म अजमेर
81 मैकिल बन्धु, मासिक, अजमेर
82 आत्म दर्शन, मासिक, अजमेर
83 हिन्द वली, मासिक, अजमेर
84 दी होली सैन्ट, मासिक, अजमेर
85 काठास सदेश, मासिक, ब्यावर
86. नागरिक सेवा सघ, मासिक, अजमेर
87. उद्घोष, मासिक, अजमेर

88 आल वर्ल्ड न्यूज, मासिक, पुष्कर
89 रिसालत, मासिक, अजमेर
90. औद्योगिक चेतना, मासिक, ब्यावर
91 कानून भारती मासिक, अजमेर
92. चरित्र और व्यायाम, मासिक, अजमेर
93. ख्वाजाजान, मासिक, अजमेर
94 आर्थिक कृषि कार्यक्रम, मासिक, अजमेर
95 राम सखा सदेश, मासिक, पुष्कर
96 महेश्वरी समाज स्मारिका, मा०, किशनगढ़
97. पुष्कर प्रदीप, मासिक, पुष्कर
98 गेरत ए-ख्वाजा, मासिक, अजमेर
99 लघु रश्मि, मासिक, अजमेर
100. फुलवारी, मासिक, अजमेर
101. कोली राजपूत, मासिक, अजमेर
02 आर्यवीर, मासिक, अजमेर
03 आई० एम० एल० सेन्टीनैल, मा०, अजमेर
04 एज्यूकेशन ट्रेंड, त्रै० मा०, अजमेर
05 स्वास्थ्य विद्या, त्रै० मा०, अजमेर
06 दी राजस्थान बोर्ड जनरल, त्रै०, अजमेर
107. टेन डेज यूनिवर्सल शार्टहैंड, त्रै० मा०, अजमेर
108 विट्ठल स्मारिका, त्रैमासिक, अजमेर
109 राविरा, त्रैमासिक, अजमेर
110. क्वाटरली जनरल, त्रैमासिक, ब्यावर
111 सम्यक मनोविज्ञान, त्रैमासिक, ब्यावर
112. राजस्थान न्यूज, त्रैमासिक, अजमेर
113. आर० सी० ई० न्यूज, त्रैमासिक, अजमेर
114 आयुर्वेद प्रकाश, त्रैमासिक, अजमेर
115 एच० ए० न्यूज, त्रैमासिक, अजमेर
116 अन्नोदय श्री नगर स्कूल मैगनीज, अर्द्धवार्षिक, श्रीनगर
117 आजा-ए-रसूल, अ० वा०, अजमेर
118 उदिची, अर्द्धवार्षिक, अजमेर
119 दयानन्द विद्यालय पत्रिका, अ वा, अजमेर
120. गोर्वमेंट कालेज मैगनीज, अ० वा०, अजमेर
121. राजस्थान ओसवाल स्कूल पत्रिका, अ० वा०, अजमेर
122 दी कैम्पस क्रौनिकल, अ० वा०, अजमेर
123 सर्वोदय ग्रन्थ, अर्द्धवार्षिक, अजमेर
124. समाजकल्याण, अर्द्धवार्षिक, अजमेर
125 सरस्वती बालिका विद्यालय, अर्द्धवार्षिक, अजमर
126. सिन्धी गुलना, अर्द्ध वार्षिक, अजमेर
127 जनरल आफ लेगुएज एज्यूकेशन, अर्द्ध वार्षिक, अजमेर
128 सेन्ट्रल पुलिस ट्रेनिंग कालेज, वा० अजमेर
129 सनातन धर्म कालेज, वार्षिक, ब्यावर

130 एस० डी० राजकीय मा विद्यालय, वा०, ब्यावर

131 एस० सी० बी० माध्यमिक विद्यालय, वार्षिक, ब्यावर

132. राजस्थान पटेल एम० टी० एच० एस० स्कूल, वार्षिक, ब्यावर

133 राज० बालिका मल्टीपरपज स्कूल मैगनीज, वार्षिक, ब्यावर

134 जैन गुरुकुल विद्या मदिर, वार्षिक, ब्यावर

135 राज उच्च मा. विद्यालय मैगनीज, वार्षिक, भिनाय

136 लक्ष्मी पूजा, वार्षिक, ब्यावर

137 राज० जैन हाई स्कूल मैगनीज, वा०, ब्यावर

138 देवली स्कूल मैगनीज, वार्षिक, ब्यावर

139 गोविन्दगढ स्कूल मैगनीज, वा०, गोविन्दगढ

140 राज० माध्यमिक विद्यालय उनियार मैगनीज, वा०, उनियार

141 किशनगढ स्कूल मैगनीज, वार्षिक, किशनगढ

142 गया स्कूल वाडेल, वार्षिक, ग्राम वाडेल

143 चेतना वार्षिक किशनगढ, वार्षिक, किशनगढ

144 राज० जूनिया उ० मा० वि०, वार्षिक ग्रजमेर

145. राजस्थान केलारिकी, वार्षिक, केकडी

146 गवर्नमेंट ए० मी० एच० एस० स्कूल, मैगनीज, केकडी

147. राजकीय नवाई स्कूल मैगनीज, वा०, नवाई

148 व्यापारिक कालेज मैगनीज, वा०, नसीराबाद

149 राजकीय स्कूल पुष्कर, वा०, पुष्कर

150 गवर्नमेंट एम० बी० एच० स्कूल मैगनीज, वार्षिक, पीसागन

151 राजकीय स्कूल रुपनगढ, वार्षिक, रुपनगढ़

152 वाणी विलास, वा०, सावर

153 राजकीय स्कूल मैगनीज, वा०, सराफना

154. गर्वनमेंट एस. ए एच एम स्कूल मैगनीज, वा०, विजयनगर

155. ग्रादित्य, वार्षिक, ग्रजमेर

156 ग्रार्यपुत्री विद्यालय "प्राची", वा०, ग्रजमेर

157 दयानन्द विद्यालय मैगनीज, वा०, ग्रजमेर

158. डी० ए० वी० एच० सैकण्डरी स्कूल मैगनीज, वा०, ग्रजमेर

159 दीपमालिका, वार्षिक, ग्रजमेर

160 डी० ए० वी० कालेज मैगनीज, वार्षिक, ग्रजमेर

161. शिक्षा ज्ञानोदय, वार्षिक, ग्रजमेर

162 राजकीय कालेज मैगनीज, वार्षिक, ग्रजमेर

163 गौतम हाई स्कूल पत्रिका, वार्षिक, ग्रजमेर

164. गुरुनानक स्कूल पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
165. हरीश स्कूल पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
166. ज्योतिष शक्ति टिप्पणी, वार्षिक, अजमेर
167. के. डी. ए. वी. स्कूल पत्रिका, वा., अजमेर
168 किंग जार्ज स्कूल मैगनीज, वा०, अजमेर
169. महात्मा गाधी उ. मा. स्कूल पत्रिका, वा०, अजमेर
170. ज्ञानलोक स्कूल पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
171. मियो कालेज मैगनीज, वार्षिक, अजमेर
172. जनरल आफ मैडिकल कालेज, वार्षिक, अजमेर
173. जनरल आफ अजमेर पोलिटेकनिक, वार्षिक, अजमेर
174. राजस्थान मोहनिया इस्लामिया स्कूल पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
175. राजकीय राजेन्द्र स्कूल पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
176. राजकीय उच्च विद्यालय पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
177. राजकीय कालेज "नवप्रमाण", वार्षिक, अजमेर
178. गर्वनमेंट एम. बी. एच. एस. स्कूल मैगनीज, वार्षिक, अजमेर
179. सोफिया गर्ल्स कालेज पत्रिका, वा. अजमेर
180. सीता कन्या विद्यालय पत्रिका, वा. अजमेर
181. सावित्री गर्ल्स कालेज पत्रिका, वा. अजमेर
182. मेरीकन्वैंट स्कूल मैगनीज, वा०, अजमेर
183. टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल मैगनीज, वा, अजमेर
184. टीकम स्कूल मैगनीज, वार्षिक, अजमेर
185. वीरजानन्द स्कूल मैगनीज वा०, अजमेर
186. विजयसिंह कालेज पत्रिका, वा०, अजमेर
187. साइन्सटिक पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
188. शिवता सावित्री कन्या विद्यालय पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
189. कामर्स एज्युकेशन बाई आर. सी. ई, वार्षिक अजमेर
190. प्रगिकि हिन्दी, वार्षिक, अजमेर
191. ज्ञान सधा मनीशी, वार्षिक, अजमेर
192. राजकीय महा वि. पत्रिका, वा., नसीराबाद
193 मथुराप्रसाद गुलाब देवी आर्य कन्या पाठशाला पत्रिका, वार्षिक, अजमेर
194. ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण पत्रिका, वार्षिक, अजमेर

बांसवाड़ा जिला

1. धनुर्धर, साप्ताहिक, बासवाडा
2. बासवाडा एक्सप्रेस, पाक्षिक, बासवाडा
3. वागड टाइम्स, पाक्षिक, बासवाडा

जैसलमेर जिला

1 महाज्ञान, सा , जैसलमेर/बीकानेर

चित्तौड़गढ जिला

1. ललकार, साप्ताहिक, चित्तौडगढ
2 जय मेवाड, साप्ताहिक, चित्तौडगढ
3. चित्तौड सदेश, साप्ताहिक, ,,
4. जगजू, पाक्षिक, ,,
5. उजाले की ओर, पाक्षिक, ,,
6. राज्यालय किरण, पाक्षिक, माहुना

पाली जिला

1. तूफान मेल, साप्ताहिक, पाली
2. गोडवाड टाइम्स, साप्ताहिक, रानी
3 मेरी धरती, साप्ताहिक, मारवाड जक्शन
4. सिन्धी प्रकाशक, साप्ताहिक, पाली
5. विगतवार, साप्ताहिक, पाली
6. फालना सदेश, साप्ताहिक, फालना
7. हलकारा, पाक्षिक, सादडी
8. अमरवाणी, साप्ताहिक, पाली,
9. राणकपुर सदेश, पाक्षिक, फालना
10 पाली टाइम्स, साप्ताहिक, पाली
11. पाली वायल मार्केट रिपोर्ट, सा०, पाली
12. सुमन, दैनिक, पाली
13. सीधी टक्कर, साप्ताहिक, पाली
14. करवट, दैनिक, सोजत
15. मारीवाड एक्सप्रेस, सा०, फालना

भीलवाड़ा जिला

1 लोकजीवन, दैनिक, भीलवाडा
2 लोकजीवन, साप्ताहिक, भीलवाडा
3. भीलवाडा सदेश, दैनिक, भीलवाड
4. भीलवाडा सदेश, साप्ताहिक, भीलवाडा
5. क्रातिमार्ग, साप्ताहिक, भीलवाडा
6. प्रभावित, साप्ताहिक, भीलवाडा
7. मेनाल, साप्ताहिक, भीलवाडा
8. ग्राम समाज, साप्ताहिक, भीलवाड
9. सज्जावात, साप्ताहिक, भीलवाडा
10. नोजम, साप्ताहिक, भीलवाडा
11. दो अक्टूबर, साप्ताहिक, भीलवाडा
12. भीलवाडा सम्राट, साप्ताहिक, भीलवाडा
13 आदित्य सदेश, साप्ताहिक, गुलाबपुरा
14. तरुण सदेश, दैनिक, भीलवाडा
15 ऊपरपाल सदेश, पाक्षिक, माडलग
16. राजस्थान साहित्यकार, पाक्षिक, भीलवाडा
17. प्राणवाद, पाक्षिक, भीलवाडा
18. चित्तौड सदेश, पाक्षिक, भीलवाडा
19 मेवाड चैम्बर पत्रिका, मासिक, भीलवाडा
20 धर्मज्योति पाक्षिक भीलवाडा

नागौर जिला

१. मजदूर ललकार, साप्ताहिक, मारवाड मूंडवा
2. तुलसी प्रज्ञा, त्रैमासिक, लाडनूं
3. युवा दृष्टि, मासिक, लाडनू
4. गौतमदूत, मासिक, मारवाड मुंडवा।

चूरु जिला

1. युवक, साप्ताहिक, चुरू
2. लोकमच समाचार, पाक्षिक, चुरू
3. चुरू केसरी, साप्ताहिक, चुरू
4. विशाल मरुधर, पाक्षिक, चुरू
5 न्यायतन्त्र, पाक्षिक, रतनगढ़
6. सरदारशहर टाइम्स, सा०, सरदारशहर

जिला जोधपुर

1. प्रतिनिधि, दैनिक, जोधपुर
2. तरुण राजस्थान, दैनिक, जोधपुर
3. जलतेदीप, दैनिक, जोधपुर
4 जनगण, दैनिक, जोधपुर
5. मारवाड टाइम्स, साप्ताहिक, जोधपुर
6 प्रजासेवक, साप्ताहिक, जोधपुर
7. ललकार, साप्ताहिक, जोधपुर
8. अभयदूत, साप्ताहिक, जोधपुर
9 ज्वाला, साप्ताहिक, जोधपुर
10 लोकजीवन, साप्ताहिक, जोधपुर
11 बलिदान, साप्ताहिक, जोधपुर
12. सीमा सपूत, साप्ताहिक, जोधपुर
13. किराणा मार्केट, साप्ताहिक, जोधपुर
14 तरुण जैन, साप्ताहिक, जोधपुर
15. कन्ट्रोलर, साप्ताहिक, जोधपुर
16 चैतनधारा, साप्ताहिक, जोधपुर
17 प्रेरणा, साप्ताहिक, जोधपुर
18 राजस्थान लॉ वीकली, साप्ताहिक, जोधपुर
19 जनगण, साप्ताहिक, जोधपुर
20. जनता की क्रांति, साप्ताहिक, जोधपुर
21. गरीब साथी, साप्ताहिक, जोधपुर
22. बढते चरण, साप्ताहिक, जोधपुर
23. स्पष्टमत, साप्ताहिक, जोधपुर
24. औधाणा प्रकाश, सा०, जोधपुर
25 रैल दूत, साप्ताहिक, जोधपुर
26. प्रजाजन, साप्ताहिक, जोधपुर
27. सीमा सन्देश, साप्ताहिक, जोधपुर
28, स्वायत शासन, साप्ताहिक, जोधपुर
29. सामाजिक आजादी, साप्ताहिक, जोधपुर
30 ज्वाला, साप्ताहिक, जोधपुर
31. निराला, साप्ताहिक, जोधपुर
32. श्रमिक समाचार, साप्ताहिक, जोधपुर
33. विस्फोट, साप्ताहिक, जोधपुर
34. क्यामत, साप्ताहिक, जोधपुर
35. राजस्थान, स्वायत शासन, सा०, जोधपुर
36 लोकमत, साप्ताहिक, जोधपुर
37. गति के साथ, साप्ताहिक, जोधपुर

38 वीर संतान, साप्ताहिक, जोधपुर
39. नव प्रवाह, साप्ताहिक, जोधपुर
40 बिदाई लीग, साप्ताहिक, जोधपुर
41 निर्णय, साप्ताहिक, जोधपुर
42 सैनिक सदेश, साप्ताहिक, जोधपुर
43 मौन वैध, साप्ताहिक, जोधपुर
44 उलाहना, साप्ताहिक, जोधपुर
45. सैनी गगा, साप्ताहिक, जोधपुर
46 खानदान, साप्ताहिक, जोधपुर
47 शुद्धिकरण, पाक्षिक, जोधपुर
48 दी ग्रनरिपोर्टर जजमेन्ट, पाक्षिक जोधपुर
49 पीपा क्षत्रिय सदेश, मासिक, जोधपुर
50 राज० करेन्ट स्टेट्स, मासिक, जोधपुर
51. राजस्थान श्रमिक सदेश, मासिक, जोधपुर
52 श्रीमाली सदेश, मासिक, जोधपुर
53. कृषि लोक, मासिक, जोधपुर
54. करेन्ट टैक्स रिपोर्ट, मासिक, जोधपुर
55. सीरटी सदेश, त्रैमासिक, जोधपुर
56. कम्परेटीव फीजिक्स एण्ड इकोलोपी, त्रैमासिक, जोधपुर
57. रुद्रमाल, त्रैमासिक, जोधपुर

जिला झुंझुनू

1. झुंझुनूं समाचार, साप्ताहिक, झुझनू
2 चिट्ठी, साप्ताहिक, नवलगढ़
3. महाप्राण, पाक्षिक, चिरावा
4 टाल गजट, साप्ताहिक, झुझुनू
5. नागरिक प्रहरी, पाक्षिक, झुंझुनू
6. वरदा, त्रैमासिक, बिसाऊ
7. मरुभारती, त्रैमासिक, पिलानी

जिला जालौर

1. सोनग भूमि, साप्ताहिक, जालौर
2. सहमत, साप्ताहिक, जालौर

जिला बूंदी

1 राजमार्ग, साप्ताहिक, बूंदी
2 दकाल, साप्ताहिक, बूंदी
3 राष्ट्र निर्माण, पाक्षिक, बूंदी
4 चित्तौडा दीपिका, मासिक, नैनवा

जिला ग्रलवर

1. राजस्थान टाइम्स, दैनिक, ग्रलवर
2. ग्ररानाद, दैनिक, ग्रलवर
3. विश्व विजय, दैनिक, ग्रलवर
4. मत्स्य सदेश, साप्ताहिक, ग्रलवर
5. कैरियर मास्टर, साप्ताहिक, ग्रलवर
6. मत सम्वत, पाक्षिक, ग्रलवर
7. हल्ला गुल्ला, पाक्षिक, ग्रलवर
8. किंग एक्सप्रैस, पाक्षिक, ग्रलवर
9. कार्यानुभव पत्रिका, मासिक, ग्रलवर
10. शिक्षा सघठन, मासिक, ग्रलवर
11. बालहित शिक्षा समाचार, त्रैमासिक ग्रलवर
12 कमर तोड़, साप्ताहिक, ग्रलवर

13. राजकेशरी, साप्ताहिक, अलवर
14 बल की आवाज, साप्ताहिक, अलवर
15 जनता जीवन, साप्ताहिक, अलवर
16. अलवरसमाचार, साप्ताहिक, अलवर
17. राजपूताना एक्सप्रेस, सा०, अलवर
18. मानव विकास, साप्ताहिक, अलवर
19. युवा क्रानिकल, साप्ताहिक, अलवर

जिला बाड़मेर

1. बाडमेर टाईम्स, साप्ताहिक, बाडमेर
2. शाक द्वितीय जागृति, मासिक, बाडमेर

जिला कोटा

1 जननायक, दैनिक, कोटा
2 दैनिक अधिकार, कोटा
3 सोशलिस्ट समाचार, दैनिक, कोटा
4. देश की धरती, दैनिक, कोटा
5 धरती करे पुकार, दैनिक, कोटा
6. राष्ट्रदूत, दैनिक, कोटा
7. मातृदूत, साप्ताहिक, कोटा
8 तकनीकी समाचार, साप्ताहिक, कोटा
9 मजदूर चेतना, साप्ताहिक, कोटा
10 युग दर्पण, साप्ताहिक, कोटा
11. एकात्मक, साप्ताहिक, कोटा
12 आज का भारत, साप्ताहिक, कोटा
13. किसान सदेश, साप्ताहिक, कोटा
14. चम्बल, साप्ताहिक, कोटा
15. जागृति, साप्ताहिक, कोटा
16. मुमट, साप्ताहिक, कोटा
17. जयपुर एक्सप्रेस, साप्ताहिक, कोटा
18 कोटा समाचार, साप्ताहिक, कोटा
19 नवयुवक टाइम्स, मासिक, कोटा
20. ग्रामीण, पाक्षिक, कोटा
21 टाइकार्ड मजरी, पाक्षिक, कोटा
22 श्रीराम पत्रिका, पाक्षिक, कोटा
23. जीनगर सदेश, पाक्षिक, कोटा
24. शोषण की ज्वाला, मासिक, छब
25. औदिच्य सदेश, मासिक, कोटा
26. एस. एफ. सी न्यूज, मासिक, को
27. मीना संसार, मासिक, कोटा
28. जय श्रृ ग, मासिक, काटा
29. चिदम्बरा, मासिक, कोटा
30. श्रीराम न्यूज लैटर, मासिक, कोट
31. दी बाइबिल रिमाइन्डर, मासिक,
32. माली बना, मासिक, कोटा
33 विजयवर्गीय सदेश, मासिक, कोट
34. बगेरवाल सदेश, मासिक, कोटा
35. सनाढ्य सौरभ, मासिक, कोटा
36. धाकड बन्धु, मासिक, कोटा
37. मैनेजमेन्ट बुक, त्रैमासिक, कोटा
38 सतरग चम्बल, त्रैमासिक, कोटा
39. टाइकार्ड जनरल, त्रैमासिक, को
40. कचनार, त्रैमासिक, अन्ता जिल कोटा
41. हाडोती दर्शन, वार्षिक कोटा

सवाई माधोपुर

1 सन ऑफ इण्डिया, साप्ताहिक, सवाई माधोपुर
2 वज्रपात, साप्ताहिक, हिण्डौन
3. विजय सन्देश, साप्ताहिक, गगा
4. प्रजा-जन, साप्ताहिक, गंगापुर

5. अमर इण्डिया, पाक्षिक, सवाई माधोपुर
6. ग्रामवाणी, साप्ताहिक, हिण्डौन
7. निराला राजस्थान, साप्ताहिक, हिण्डौन
8. प्रयोजन वाणी, मासिक, गंगापुर
9 बूँदी संदेश, पाक्षिक, सवाईमाधोपुर
10. तलहटी के प्रथम से, साप्ताहिक, सवाई माधोपुर
11 एम० के० समाचार, साप्ताहिक, सवाई माधोपुर
12. उठती हुई जन पुकार, पाक्षिक, गंगापुर
13 न्यूज विंग, पाक्षिक, करौली
14 हिण्डौन दिग्दर्शन, पाक्षिक, हिण्डौन

जिला उदयपुर

1 जय राजस्थान, दैनिक, उदयपुर
2. उदयपुर एक्सप्रेस, दैनिक, उदयपुर
3 प्रतिहार, दैनिक, उदयपुर
4. पोलिटिशन, दैनिक, उदयपुर
5 शिखर संदेश दैनिक, उदयपुर
6. न्याय की पुकार, साप्ताहिक, उदयपुर
7. कोलाहल, साप्ताहिक, उदयपुर
8 हमारा हिन्दुस्तान, साप्ताहिक, उदयपुर
9 उदयपुर साप्ताहिक, साप्ताहिक, उदयपुर
10 युवा पुकार, साप्ताहिक, [illegible]
11. मेरो मेवाड़, साप्ताहिक, मावली
12 [illegible] साप्ताहिक, उदयपुर
13 [illegible], साप्ताहिक, उदयपुर
14. मार्तण्ड, साप्ताहिक, उदयपुर
15. शेरवाड़ा समाचार, साप्ताहिक, उदयपुर
16. नेता, साप्ताहिक, उदयपुर
17. राजस्थान साप्ताहिक, साप्ताहिक, उदयपुर
18. पुकार, साप्ताहिक, उदयपुर
19. अरावली, साप्ताहिक, उदयपुर
20 आश्वासन, साप्ताहिक, उदयपुर
21 उदयपुर टाईम्स, साप्ताहिक, उदयपुर
22. जनमत, साप्ताहिक, उदयपुर
23. पन्द्रह अगस्त, साप्ताहिक, उदयपुर
24. हमारी मातृभूमि, साप्ताहिक, उदयपुर
25 युग-दृष्टा, साप्ताहिक, उदयपुर
26. दिवाना, साप्ताहिक, उदयपुर
27. सलूम्बर संदेश, साप्ताहिक, सलूम्बर
28 बदलता राजस्थान, साप्ताहिक, उदयपुर
29 नया, साप्ताहिक, उदयपुर
30 मेरे राजस्थान, साप्ताहिक, मावली
31 इकोनोमिक स्टडी पाक्षिक, उदयपुर
32. मोरा बादल, पाक्षिक, उदयपुर
33. पत्रकार पाक्षिक, उदयपुर
34. पोस्टमार्टम, पाक्षिक, उदयपुर
35. मारा बाप, पाक्षिक, उदयपुर
36 इन्द्रलोक, पाक्षिक, उदयपुर
37 कौशिका, पाक्षिक, [illegible]
38 ऋद्धि सिद्धि, पाक्षिक, उदयपुर
39. शिखर संदेश, पाक्षिक, उदयपुर

40 युग की मांग, पाक्षिक, उदयपुर
41 माहेश्वरी बाल विकास, मासिक, उदयपुर
42 वैष्णव सेवक, मासिक, उयमपुर
43. ब्रह्म सम्बन्ध, मासिक नाथद्वारा
44. समाज शिक्षा, मासिक, उदयपुर
45 कला शृंखला, मासिक, उदयपुर
46 सर्व धर्म सनातन, मासिक, उदयपुर
47. अपना पत्र, मासिक, उदयपुर
48. ओस और जीवन, मासिक, उदयपुर
49 समाज शिक्षा, मासिक, उदयपुर
50 तरलाग्नि, मासिक, उदयपुर
51 गरजती आवाज, मासिक, उदयपुर
52 रसायन, मासिक, उदयपुर
53 जनरल आफ पार्लियामेंट्री पोलिटिक्स, मासिक, उदयपुर
54. मधुमति, मासिक, उदयपुर
55. आगार-ए-जहीद, मासिक, उदयपुर
56. लोक विज्ञान, मासिक, उदयपुर
57 कला हुना मसूर, मासिक, उदयपुर
58 सस्थान, मासिक, उदयपुर
59. कर्मचारी कल्याण सन्देश, मासिक, उदयपुर
60 पन्ना धाय, मासिक, उदयपुर
61. बन्धन तोडो, मासिक, उदयपुर
62 मेवाड एक्सप्रेस, मासिक, उदयपुर
63. पर्यटन दिग्दर्शन, मासिक, उदयपुर
64 अनवेक्षण, त्रैमासिक उदयपुर
65. सुदर्शन प्रकाशन, त्रैमासिक, उदयपुर
66. शोध पत्रिका, त्रैमासिक, उदयपुर
67. बिन्दु, त्रैमासिक, उदयपुर
68. सम्बोधन, त्रैमासिक, काकरोली
69 ट्राईब, त्रैमासिक, उदयपुर
70 बलीस्तान, त्रैमासिक, उदयपुर
71 धूला, त्रैमासिक, उदयपुर
72 लोकनिधि, त्रैमासिक, उदयपुर
73. लोक कला, छ माही, उदयपुर
74 भारतीय जनरल आफ साइकलोजी एण्ड प्लाण्टस् कल्चर पाथलोजी, छ माही, उदयपुर
75 मेवाड दर्शन, वार्षिक उदयपुर
76 धगपावर, पाक्षिक, उदयपुर
77. बाप्पा रावल, दैनिक, उदयपुर

जिला सीकर

1 समाज की पुकार, साप्ताहिक, सीकर
2. मरुधरा, साप्ताहिक, सीकर
3 लक्ष्मण शिला पत्रिका, पाक्षिक, लक्ष्मणगढ
4. पचपुत्र, पाक्षिक, फतेहपुर
5. मारवाडी लोक हित, साप्ताहिक फतेहपुर
6. योगीराज, साप्ताहिक, सीकर
7. धुरी, साप्ताहिक, सीकर
8 सुरत शब्द योग, साप्ताहिक सीकर
9. सीकर सन्देश, साप्ताहिक, सीकर
10. समाज दूत, साप्ताहिक, रामगढ सेठाणा
11. प्रजापालक, पालक सीकर
12 शेखावाटी जन प्र[illegible] रामगढ़ सेठाणा

जिला गंगानगर

1. सीमा संदेश, दैनिक, गगानगर
2. गगानगर पत्रिका, दैनिक गगानगर
3. तेज, दैनिक, गगानगर
4. प्रशान्त ज्योति, दैनिक, गगानगर
5. सीमावर्ती, दैनिक श्रीगगानगर
6. भारतजन, साप्ताहिक, सूरतगढ
7. पचदूत, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
8. स्टोर पौयम, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
9. क्राति शील, साप्ताहिक नोहर
10 सीमा सदेश, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
11 शहजादा, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
12. गगानगर ज्योति, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
13. गगानगर टाइम्स, साप्ताहिक श्रीगगानगर
14. दास, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
15. भोर, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
16. प्रियदर्शिका, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
17. अन्तरिक्ष, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
18. तूफानी दौर, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
19. भारत गननायक, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
20 हिन्द ज्योति, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
21. गगानगर गजट, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
22. अनुशासित समाज, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
23. शोषित समाज, साप्ताहिक, रायसिंहनगर
24. जन सम्मत, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
25. सिने लीडर, द्विसाप्ताहिक, श्रीगंगानगर
26. अम्बिका, पाक्षिक, श्रीगगानगर
27. धर्म चर्चा, साप्ताहिक श्रीगगानगर
28. हैलन न्यूज, साप्ताहिक, श्रीगगानगर
29. जन सुधा, पाक्षिक, श्रीगगानगर
30. तेज केसरी, पाक्षिक, मादरा,
31. श्रीविजय नगर ज्योति, पाक्षिक, श्रीविजयनगर
32. श्री जम्भेश्वर पत्रिका, पाक्षिक, हनुमानगढ
33. अरोड वश पत्रिका, मासिक, श्रीगगानगर
34. आयुर्वेद मार्तण्ड, मासिक, श्रीगगानगर
35. अग्रवाल ज्योति, मासिक, श्रीगगानगर
36. वैद्यदूत, मासिक, सादुलशहर
37. बालिया बिरादरी, मासिक, श्रीगगानगर

जिला डूंगरपुर

1. बागडदूत, साप्ताहिक, डूंगरपुर
2. टाइम एण्ड टाइड, साप्ताहिक, डूंगरपुर
3. बागड चेतना, साप्ताहिक, सागवाडा
4. बागड गौरव, साप्ताहिक, सागवाडा
5. दिगम्बर जैन सेवक, त्रैमासिक, डूंगरपुर
6. बागवड, त्रैमासिक, डूंगरपुर
7. राजस्थानी रत्नाकर, त्रैमासिक, डूंगरपुर

जिला झालावाड़

1. सजय, साप्ताहिक, झालरापाटन
2. हाड़ौती केसरी, पाक्षिक, भवानीमण्डी
3. पसीना, साप्ताहिक, झालावाड

जिला बीकार

1. राजस्थान सवाद, दैनिक, बीकानेर
2. सैनानी, साप्ताहिक, बीकानेर
3. वर्तमान साप्ताहिक, बीकानेर
4. सप्ताहात, साप्ताहिक, बीकानेर
5. लोकमत, साप्ताहिक, बीकानेर
6. मरुदीप, साप्ताहिक, बीकानेर
7. टाइम्स आफ राजस्थान, साप्ताहिक बीकानेर
8. मठाधीश, साप्ताहिक, बीकानेर

10. महाज्ञान, साप्ताहिक, बीकानेर
11. गणराज्य, साप्ताहिक, बीकानेर
12. बीकानेर एक्सप्रेस, साप्ताहिक, बीकानेर
13. सीमा समीक्षा, साप्ताहिक, बीकानेर
14. श्रमिक सदेश, साप्ताहिक, बीकानेर
15. बीकाणा सदेश, साप्ताहिक, बीकानेर
16. मगरा, साप्ताहिक, बीकानेर
17. रोट्रक्ट न्यूज, साप्ताहिक, बीकानेर
18. जन पतवार, साप्ताहिक, बीकानेर
19. जन जन, साप्ताहिक, बीकानेर
20. बीकानेर, ज्योति, साप्ताहिक बीकानेर
21. थार ज्योति, साप्ताहिक, बीकानेर
22. क्रांति बिगुल, साप्ताहिक, बीकानेर
23. अनुशासित वाणी, साप्ताहिक, बीकानेर
24. धार दीप, साप्ताहिक, बीकानेर
25. उत्थान चक्र, साप्ताहिक, बीकानेर
26. अनुवीक्षक, साप्ताहिक, बीकानेर
27. युगयुद्ध, साप्ताहिक, बीकानेर
28. गणतंत्र मोर्चा, साप्ताहिक, बीकानेर
29. श्रमणोपासक, पाक्षिक, बीकानेर
30. फ्रन्टियर टाइम्स, पाक्षिक, बीकानेर
31. कोहिनूर, पाक्षिक, बीकानेर
32. कामधेनू, पाक्षिक, बीकानेर
33. बालधर, पाक्षिक, बीकानेर

125. अग्रगामी, मासिक, जयपुर
126. राजस्थान पैन्सर, मासिक, जयपुर
127. क्रांतिकारी शिक्षक, मासिक, जयपुर
128. चित्र सारिका, मासिक, जयपुर
129. राजस्थान पुलिस पत्रिका, मासिक जयपुर
130. श्रीपालीवाल जैन पत्रिका, मासिक, जयपुर

जिला भरतपुर

1. भरतपुर लीडर, दैनिक, भरतपुर
2. उदयभानू, दैनिक, धौलपुर
3. पूर्वी राजस्थान, साप्ताहिक, भरतपुर
4. समाजवाद की ओर, साप्ताहिक भरतपुर
5. लाल निशान, साप्ताहिक, भरतपुर
6. वीर सैनिक, साप्ताहिक, भरतपुर
7. वज्र प्रहार, साप्ताहिक, वाडी
8. क्रान्तिगढ, साप्ताहिक, भरतपुर
9. राष्ट्र की भाषा, साप्ताहिक, भरतपुर
10. सच्चा दूत, साप्ताहिक, भरतपुर
11. झांकी राजस्थान की, साप्ताहिक, भरतपुर
12. नेहरू पुकार, साप्ताहिक, भरतपुर
13. नवयुग सदेश, साप्ताहिक, भरतपुर
14. आवाज, साप्ताहिक, भरतपुर
15. शान्त प्रहरी, साप्ताहिक, धौलपुर
16. नेहरू के सपने, साप्ताहिक, भरतपुर
17. भरतपुर गजट, भरतपुर
18 रेड इण्डिया, साप्ताहिक, भरतपुर
19. गरीबों की पुकार, साप्ताहिक, कुम्हेर
20. वीर जनता, साप्ताहिक, भरतपुर
21, लैम, साप्ताहिक, भरतपुर
22. युग समाचार, साप्ताहिक, भरतपुर
23. भरतपुर टाइम्स, साप्ताहिक, भरतपुर
24. धौलपुर गजट, साप्ताहिक, धौलपुर
25. समाचार विज्ञप्ति, मासि, धौलपुर
26. द्रष्टा, मासिक, बयाना
27. जय भैरव, मासिक, बयाना
28. गर्दिश, साप्ताहिक, भरतपुर
29. चौरासी खम्भा, साप्ताहिक, कामा
30 शाहीन, साप्ताहिक, धौलपुर

72. शेखावाटी प्रवासी, साप्ताहिक, जयपुर
73 पाशुपत, साप्ताहिक, जयपुर
74. जयपुर क्रानिकल, साप्ताहिक, जयपुर
75 आर्य मार्तण्ड, पाक्षिक, जयपुर
76. खडेलवाल महासभा पत्रिका साप्ताहिक, जयपुर
7। पैरोल, मासिक, जयपुर
78 अन्तर्मन, पाक्षिक, जयपुर
79. युवा भारती, पाक्षिक, जयपुर
80. जोशीली आवाज, पाक्षिक, जयपुर
81 ग्रामीण दूत, पाक्षिक, दौसा
82. राजस्थान केहरी, पाक्षिक, जयपुर
83. न्यूज लिंक, पाक्षिक, जयपुर
84. खुलाराज, पाक्षिक, जयपुर
85 श्रुति सदर्भ, पाक्षिक, रैनवाल किशनगढ
86. बैनेट, पाक्षिक, जयपुर
87. श्रमिक विकास, पाक्षिक, जयपुर
88 गुप्त दूत, पाक्षिक, जयपुर
89. कुमार सभव, पाक्षिक, जयपुर
90 सहकार विकास, पाक्षिक, जयपुर
91. चेतक सदेश, पाक्षिक, जयपुर
92 नवयुग, पाक्षिक, जयपुर
93. इन्टरव्यू, पाक्षिक, जयपुर
94 जनपद, पाक्षिक, जयपुर
95 बैंक कर्मचारी ललकार, पाक्षिक, जयपुर
96. विद्यार्थी की पुकार, पाक्षिक' जयपुर
97. लुक्बैल, पाक्षिक, जयपुर
98. स्वास्थ्य त्रिवेणी, मासिक, जयपुर
99 बिजली व्यवसाय, मासिक, जयपुर
100. अमेटी इन्टर नेशनल, मासिक, जयपुर
101. आर० आई० ए० डी० आई० एस० ई०, मासिक, जयपुर
102. इकोनोमिक रिव्यू, मासिक, जयपुर
103. होम्यो सेवक, मासिक, जयपुर
104 समाज सस्कार, मासिक, जयपुर
105 कृषि समाचार, मासिक, जयपुर
106. राजस्थान विकास, मासिक, जयपुर
107. स्वच्छता सदेश, मासिक, जयपुर
108. दी प्रेक्टीकल लायर, मासिक,
109 अर्थ सत्ता, मासिक, जयपुर'
110. अर्थ सैनिक, मासिक, जयपुर
111 वैज्ञानिक बालक, मासिक, जयपुर
112 पशु विज्ञान, त्रैमासिक, जयपुर
113 आरोग्य भारती, मासिक, जयपुर
114. नेशनल ट्रैवल मैगजीन, त्रैमासिक, जयपुर
115. तरुण विश्वकर्मा, मासिक, जयपुर
116. कुमावत क्षेत्रीय, त्रैमासिक, जयपुर
117 खण्डेलवाल सेवक, त्रैमासिक, जयपुर
118. राजस्थान दिग्दर्शन, मासिक, जयपुर
119 भक्ति योग, मासिक, जयपुर
120 बैरवा सदेश, मासिक, जयपुर
121. व्यापार समाचार, मासिक, जयपुर
122 राजस्थान होम्यो मैसेन्जर, त्रैमासिक, जयपुर
123 टैक्स रिपोर्टर, मासिक, जयपुर
124. तकनीकी दर्शन, मासिक, जयपुर

125 अग्रगामी, मासिक, जयपुर
126. राजस्थान मैसेंजर, मासिक, जयपुर
127. क्रांतिकारी शिक्षक, मासिक, जयपुर
128. चित्र सारिका, मासिक, जयपुर
129 राजस्थान पुलिस पत्रिका, मासिक जयपुर
130 श्रीपालीवाल जैन पत्रिका, मासिक, जयपुर

जिला भरतपुर

1. भरतपुर लीडर, दैनिक, भरतपुर
2 उदयभानू, दैनिक, धौलपुर
3. पूर्वी राजस्थान, साप्ताहिक, भरतपुर
4 समाजवाद की ओर, साप्ताहिक भरतपुर
5. लाल निशान, साप्ताहिक, भरतपुर
6 वीर सैनिक, साप्ताहिक, भरतपुर
7. वज्र प्रहार, साप्ताहिक, बाडी
8 क्रान्तिगढ़, साप्ताहिक, भरतपुर
9. राष्ट्र की भाषा, साप्ताहिक, भरतपुर
10 सच्चा दूत, साप्ताहिक, भरतपुर
11. झांकी राजस्थान की, साप्ताहिक, भरतपुर
12 नेहरू पुकार, साप्ताहिक, भरतपुर
13 नवयुग संदेश, साप्ताहिक, भरतपुर
14 आवाज, साप्ताहिक, भरतपुर
15 शान्त प्रहरी, साप्ताहिक, धौलपुर
16. नेहरू के सपने, साप्ताहिक, भरतपुर
17 भरतपुर गजट, भरतपुर
18 रेड इण्डिया, साप्ताहिक, भरतपुर
19. गरीबा की पुकार, साप्ताहिक, कुम्हेर
20 वीर जनता, साप्ताहिक, भरतपुर
21, लैंस, साप्ताहिक, भरतपुर
22 युग समाचार, साप्ताहिक, भरतपुर
23. भरतपुर टाइम्स, साप्ताहिक, भरतपुर
24. धौलपुर गजट, साप्ताहिक, धौलपुर
25 समाचार विज्ञप्ति, मासि, धौलपुर
26 इष्टा, मासिक, बयाना
27 जय भैरव, मासिक, बयाना
28 गर्दिश, साप्ताहिक, भरतपुर
29. चोरासी खम्भा, साप्ताहिक, कामा
30 शाहीब, साप्ताहिक, धौलपुर -

संदर्भिका

अंग्रेजी

Freedom of Information	*Herbert Breucker*
Rise and Growth of Hindi Journalism	*Ram Ratan Bhatnagar*
Travels in Mughal Empire	*Burnier*
Indian Press	*M Barnes*
Jaipur and the Later Mughals	*H C Tikkiwal*
History of the Press in India	*S Natrajan*
Development of Hindi Prose Literature	*S D Vedalankar*
Press and Politics in India	*Prem Narain*
Press Public opinion and Government in India	*S Agarwal*
The News Paper in India	*H P Ghose*
News Paper Press in India	*A R Iyengar*
A History of Indian Nationalist Movement	*Lovett Fraser*
The Press Laws of India	*K B Menon*
A New Survey of Journalism	*George Fox Mott*
The Press and its Problems	*Mirinal Kanti Bose*
Freedom of Press in India	*N. R. Roy*
The Press	*Steed Wickham*
Journalism in Modarn India	*Roland E Wolseley*
Indian National Evolution	*A C Majumdar*
The March of Journalism	*Harold Herd*
What ails the Indian Press	*D.R Mankekar*

हिन्दी

हिन्दी के सामयिक पत्रों का इतिहास — राधाकृष्णदास
गुप्त निबन्धावली — बालमुकुन्द गुप्त
समाचार पत्रों का इतिहास — अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
पत्रकार कला — विष्णुदत्त शुक्ल
पत्र और पत्रकार — कमलापति त्रिपाठी
आधुनिक पत्रकार कला — रा० र० खाडिलकर
हिन्दी समाचार पत्र निर्देशिका — वेंकटलाल ओझा।
स्वाधीनता आन्दोलन मे जयपुर की पत्र-पत्रिकाओं का योगदान — महेन्द्र लोढा
राजस्थान की पत्र-पत्रिकाए — महेन्द्र लोढा
हमारा राजस्थान — पृथ्वीसिंह महता
डिंगल गीत — सपा० रावत सारस्वत
हाडौती का स्वतन्त्रता आन्दोलन — सपा० डा० शान्ति भारद्वाज
आधुनिक राजस्थान का उत्थान — रामनारायण चौधरी

पत्र-पत्रिकाएँ

(अ) देश के विभिन्न भागो से प्रकाशित राजस्थान की पत्रकारिता और राजनीति से सम्बंधित सदर्भो युक्त प्रमुख अग्रेजी तथा हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ।

(ब) गत एक शताब्दी मे राजस्थान की सभी उपलब्ध हिन्दी पत्र पत्रिकाए और समाचार पत्र।

विशिष्ट ग्रन्थागारों से सन्दर्भ सहायता

(1) भारतीय पुरा लेखागार, नई दिल्ली
(2) राजस्थान पुरालेख विभाग, बीकानेर
(3) राष्ट्रीय ग्रन्थागार, कलकत्ता
(4) सरस्वती भण्डार, उदयपुर
(5) सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर
(6) श्री अगरचन्द नाहटा का व्यक्तिगत पुस्तकालय, बीकानेर

(7) श्री रावत सारस्वत का व्यक्तिगत पुस्तकालय, जयपुर
(8) श्री जयनारायण भासोपा का व्यक्तिगत पुस्तकालय, जयपुर
(9) राजस्थान सूचना केन्द्र, दिल्ली, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर

विशिष्ट पत्रकारों से साक्षात्कार

(1) पंडित भावरमल शर्मा, जयपुर
(2) स्व० श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, जोधपुर
(3) श्री शोभालाल गुप्त, दिल्ली
(4) श्री चन्द्रेश व्यास, उदयपुर
(5) श्री बनार मधुकर, उदयपुर
(6) श्री कर्पूरचन्द कुलिश, जयपुर
(7) श्री नन्द किशोर पारीक, जयपुर